...सिक प्रकाशन • अक्तूबर '९२

...ी पुस्तकें

कादम्बि...

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट प...



जीवन का अर्थ है जीना और मजे में जीना

...जनीतिक
...द्धिकरण
... लिए
...ी को रक्त
...िए

...य और
...क... की
...म्मेदारी

...वाह जो
...गवाह बनती
...ही है !

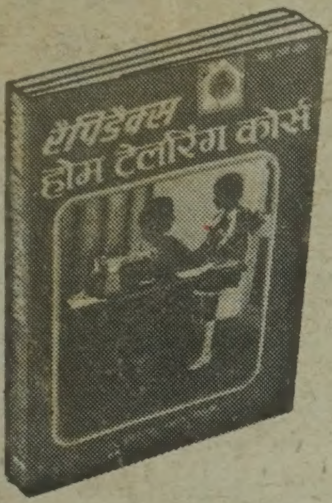
...हा बने नौकर,
...दी के बाद

१ रुपए

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

घर-घर के लिए महिलोपयोगी पुस्तकें

रैपिडैक्स होम टेलरिंग कोर्स



श्रीमती आशारानी व्होरा द्वारा लिखित इस कोर्स से आप घर बैठे दर्जियों जैसी टेलरिंग सीख सकती हैं। पुस्तक में घर भर की पोशाकों.... अर्थात् नन्हें-मुन्नों की नेपकिन से लेकर पुरुषों की कमीज-पैंट तक .... कुल मिलाकर 175 से अधिक डिजाइनों एवं नमूनों वाले पोशाकों की प्लानिंग, कटाई व सिलाई की सचित्र जानकारी। *मनमोहक फ्राकें* गृह-सज्जा के लिए परदे, कुशन आदि * पुराने कपड़ों से बच्चों के कपड़े बनाना * भांति-भांति की डॉट्स, चुन्नट, प्लीट्स, जेबें, आस्तीन, कालर योक, बटन आदि * कलपुर्जों की जानकारी भी।

आ टी आई, गवर्नमेन्ट पालिटेक्निक्स एवं सैकड़ों टेलरिंग इन्स्टिट्यूटों में अपनाया गया कोर्स।

पृ. 320, मूल्य: 48/-

लेडीज़ हैल्थ गाइड



श्रीमती आशारानी व्होरा द्वारा एवं 25 विशेषज्ञ डॉक्टरों के इंटरव्यूज पर आधारित इस पुस्तक में आपकी हर सौन्दर्य समस्या का समाधान किया गया है जैसे *** सौन्दर्य-समस्याएं :** बेडौलपन, अपुष्ट वक्ष, छोटा कद, बालों का झड़ना, चेहरे की कमियां आदि। *** आम शिकायतें :** मासिक धर्म की गड़बड़ियां, बेजा थकान व तनाव, पीठ-दर्द, हीन-भावना, यौन रोग आदि। ***शिशु-जन्म प्रक्रिया:** गर्भाधान से लेकर प्रसवोपरांत थकान, सतर्कताएं एवं समस्याएं॥ ***सामान्य स्वास्थ्य** - नारी शरीर-संरचना की संपूर्ण जानकारी, फर्स्ट-एड, मीनूपाज, बांझपन आदि।

पृ. 410, मूल्य : 48/-

होम ब्यूटी क्लीनिक

आज केवल सुंदर चेहरे को ही सौंदर्य नहीं मानते। सौंदर्य का मानी है- भव्य और दिलकश व्यक्तित्व।

इस पुस्तक में नारी सौंदर्य के सारे पहलुओं- चेहरे की त्वचा, झुर्रियां, शृंगार-प्रसाधन, केशकला, शारीरिक-सुंदरता, संतुलित आहार का विवेचन सैकड़ों फोटोग्राफ्स तथा रेखाचित्रों सहित वर्णित किया गया है। पुस्तक पढ़कर आप अपनी ब्यूटीशियन स्वयं बनें या फिर अपना होम ब्यूटी क्लीनिक खुद चलाइए।



पृ. 140, मूल्य : 28/-
अंग्रेजी में भी उपलब्ध।

आधुनिक उषा बुनाई शिक्षा

इस पुस्तक में तरह-तरह की बुनाइयों का वर्णन है - सलाइयाँ व जालीदार क्रोशिये की बुनाई तथा नये फैशन की कशीदाकारी।

नए सिरे से प्रारंभिक बुनाई सीखने की इच्छुक महिलाओं के लिए बुनाई संबंधी प्रथमिक जानकारी जैसे : फंदे डालना, सीधी-उल्टी बुनाई, फंदे घटाना-बढ़ाना, व ऊनी वस्त्रों की सिलाई, ऊनी वस्त्रों की सार-संभाल, धुलाई व सभी प्रकार के दाग-धब्बे छुड़ाने संबंधी उपयोगी सुझाव। बुनाइयों के 200 से अधिक डिजाइन्स भी दिए गए हैं।



पृ. 336 मूल्य : 40/-

न्यू लेडीज़ स्लीमिंग कोर्स

मोटापा एक अभिशाप है- पुरुषों के लिए भी, महिलाओं के लिए भी। स्त्रियों के लिए तो यह मौत समान है। पर आप घबराएं नहीं। आप भी मोटापे से छुटकारा पा सकती है। जरूरत है आपको लेडीज़ स्लीमिंग कोर्स पढ़ने की और इसमें दी गई हिदायतों का पालन करने की। आप केवल 15 मिनट प्रतिदिन व्यायाम कीजिए। पुस्तक में बताई गई डायटिंग कीजिए। आप देखेंगी छह सप्ताह में ही आपका वजन कम हो जाएगा। एक अचूक कोर्स, जो आपको अपना यौवन लौटा सकता है।



पृ. 116, मूल्य ; 20/-
अंग्रेजी में भी उपलब्ध।

अपने निकट व ए.एच.व्हीलर के रेलवे व बस-अड्डों के बुकस्टॉलों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता-

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006, फोन : 239314

शोरूम: 10 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 *फोन:* 3268292, 3268293

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

● ज्ञानेन्दु

१. गौरवासन— क. आकर्षक स्थान, ख. सम्मानित पद, ग. सिंहासन, घ. जिस पद की कामना हो ।

२. चित्तवृत्ति— क. स्वभाव, ख. इच्छा, ग. मन का भाव, घ. प्रेरणा ।

३. परिख्यात— क. परीक्षित, ख. अनुभवी, ग. चर्चित, घ. बहुत प्रसिद्ध ।

४. तमिस्त्र— क. कालिख, ख. अंधकार, ग. निराशा, घ. बुरा मिश्रण ।

५. चिरनिद्रा— क. गहरी नींद, ख. देर से आयी नींद, ग. मृत्यु, घ. आलस्य में पड़े रहने की आदत ।

६. परिजन— क. संबंधी, ख. दूर के लोग, ग. भरण-पोषण के लिए आश्रित लोग, घ. पड़ोसी ।

७. उपदिष्ट— क. उपदेश किया हुआ, ख. शिक्षित, ग. जिसकी नजर कमजोर हो, घ. जो कम स्वादिष्ट हो ।

८. चित्रजल्प— क. बिगड़ा हुआ चित्र, ख. बुरा दृश्य, ग. अनाप-शनाप बात, घ. बदसूरती ।

९. संपूर्णस्पृह— क. इच्छित, ख. जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो, ग. संतुष्ट, घ. पूरी तरह सफल ।

१०. हस्तालंब— क. लंबे हाथ, ख. दानी, ग. हाथ का सहारा, घ. हाथ भर की दूरी ।

११. संपृक्त— क. मिलावटी, ख. संयुक्त, ग. पूछा गया, घ. जो अच्छी तरह से प्रकट हो ।

१२. हतजीवन— क. मृत्यु, ख. पूर्व जीवन, ग. दुःखमय जीवन, घ. जिसका वैभव नष्ट हो गया हो ।

उत्तर

१. ख. सम्मानित पद । उसकी योग्यता के कारण ही उसे **गौरवासन** प्राप्त हुआ है । (गौरव+आसन) । गौरव—व्युत्. गुरु, आसन—व्युत्. आस् ।

२. ग. मन का भाव, चित्त की दशा, संवेग । संकट के समय **चित्तवृत्ति** शांत रखना हितकर है । (चित्त-व्युत. चित्, वृत्ति-व्युत. वृत्)

३. घ. बहुत प्रसिद्ध । समाज-सेवा में वह **परिख्यात** है । (परि-उपसर्ग, ख्यात—व्युत्. ख्या) संज्ञा—**परिख्याति** ।

४. ख. अंधकार, अज्ञान । ज्ञान के दीप से मन का **तमिस्त्र** दूर करो । **(तमिस्त्र=अंधेरी रात)**

५. ग. मृत्यु, महानिद्रा । **चिरनिद्रा** जीवन की अनिवार्य परिणति है । (चिर+निद्रा)

६. ग. भरण-पोषण के लिए आश्रित लोग (संबंधी, अनुचर आदि) । प्रत्येक मनुष्य को **परिजनों** के प्रति उत्तरदायित्व का बोध होना चाहिए । (परि+जन)

७. क. उपदेश किया हुआ; जिसे उपदेश किया गया हो, दीक्षा प्राप्त । **उपदिष्ट** ज्ञान हृदयंगम होना चाहिए । **उपदिष्ट** छात्र ज्ञान के प्रति सजग हैं । (व्युत्.-उप, दिश्)

८. ग. अनाप-शनाप बात, बकवास, असंबद्ध बात । **चित्रजल्प** ने गोष्ठी की कार्रवाई को निरर्थक कर दिया । (चित्र, जल्प)

९. ख. जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो । **संपूर्णस्पृह** भाग्यवान ही होते हैं । (संपूर्ण— व्युत्. सम्, पूर् । स्पृह=इच्छा करना)

१०. ग. हाथ का सहारा, हस्तावलंब । प्रत्येक मनुष्य को कभी न कभी किसी के **हस्तालंब** की आवश्यकता होती है । (आलंब—व्युत्. आ, लम्ब्)

११. ख. संयुक्त, संबद्ध । दर्शन और धर्म **संपृक्त** विषय हैं । (सं+पृक्त)

१२. ग. दुःखमय जीवन । **हतजीवन** से कौन निराश नहीं होता ! (हत+जीवन)

पारिभाषिक शब्द

Oath of office	=पद शपथ
Oath of secrecy	=गोपनीयता की शपथ
Steering committee	=संचालन-समिति
Launching	=संतरण
Confirmation	=पुष्टि/ अभिपुष्टि
Corroboration	=संपुष्टि
Compensatory allowance	=प्रतिपूरक भत्ता/मुआवजा भत्ता
Gratuity	=उपदान/आनुतोषिक
Formation	=निर्माण/रचना
Computer	=संगणक

ज्ञान-गंगा

स्त्रीणां कौतूहलं मलम् ।

(महाभारत, शांतिपर्व ३२८/२०)

स्त्रियों के लिए कुतूहलप्रिय होना दोष है ।

सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् ।

(नीतिशक ३०)

कष्ट में पड़ने पर भी सब लोग अपने अनुरूप ही लाभ चाहते हैं ।

सर्वः स्वार्थं समीहते ।

(शिशुपाल वध २/६५)

सब लोग अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं ।

भोजनस्यादरो रसः ।

(प्रियंकर नृपकथा १३)

भोजन का रस आदर है । अर्थात आदर के साथ जो भोजन मिलता है वही रसयुक्त है ।

वाचा दुरुक्तं वीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ।

(महाभारत, उद्योगपर्व ३४/७९)

वाणी के दुष्प्रयोग से जो घाव हो जाता है, वह बहुत ही भयंकर होता है और भरता नहीं है ।

अवश्यमेव लभते फलं पापस्य कर्मणः ।

(वाल्मीकि रामायण)

पाप के काम का फल अवश्य मिलता है ।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

आस्था के आयाम

पुरुषोत्तम दास टंडन : त्याग की प्रतिमूर्ति

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन का निर्वाण १ जुलाई १९६२ को हुआ था उस समय उनकी अवस्था लगभग ८० वर्ष थी । वह नाम एवं कर्म से सच्चे राजर्षि थे ।

जब पुरुषोत्तमदास जी कक्षा-९ के विद्यार्थी थे, तब एक बार उनकी कक्षा में अंगरेजी के नये अध्यापक आये । उन्होंने कक्षा के विद्यार्थियों को हिंदी का एक अनुच्छेद लिखवाना प्रारंभ किया जिसे विद्यार्थियों को अंगरेजी में अनुवाद करना था । अध्यापक महोदय धीरे-धीरे बोल रहे थे और बालक पुरुषोत्तमदास साथ ही साथ उसका अनुवाद अंगरेजी में करते जा रहे थे । जब हिंदी बोलने के बाद अध्यापक ने उसे अंगरेजी में अनुदित करने के लिए आदेश दिया । सब बच्चे तो अनुवाद करने लगे परंतु बालक पुरुषोत्तमदास अपनी कापी लेकर अध्यापक के पास पहुंचे तथा उसको जांचने का अनुरोध करने लगे । परंतु अध्यापक ने उन्हें डांट-डपटकर भगा दिया । बाद में अध्यापक ने झुंझलाकर उनकी कापी देखी तो वह आश्चर्यचकित रह गये । उन्हें शक हुआ कि हो सकता है बालक को अनुच्छेद पहले से याद हो, तब अध्यापक ने दूसरा अनुच्छेद बोला जिसे पुनः बालक ने साथ ह साथ अनुवाद कर लिया । अध्यापक को विश्वास हो गया कि बालक पुरुषोत्तम वास्तव कुशाग्र बुद्धि का बालक है ।

राजनीतिक आदर्श

पुरुषोत्तमदास जी राजनीति में स्वस्थ परंपराओं को जन्म देना चाहते थे उनका मंत था कि राजनीतिक स्तर पर व्यक्ति के कुछ आदर्श होने चाहिए उसे त्याग एवं निस्वार्थ भावना से काम करना चाहिए । इस संबंध मे उन्होंने एक बार एक कहानी सुनायी थी—

'एक गड़रिये की सत्यनिष्ठा और न्यायप्रि से प्रभावित होकर एक राजा ने उसे अपना मं बनाया । मंत्री के रूप में उसे जो घर दिया ग था उसमें से एक कमरा वह हमेशा ताला बंद करके रखता था (उस कमरे में वह कभी कि को लेकर नहीं जाता था) राजा के अधिकांश सभासद, जो इस गड़रिये मंत्री के कारण मनमानी नहीं कर पाते थे—उससे वैमनस्य रखते थे । इन्हीं सभासदों में से कुछ ने राजा कान भरने शुरू किये । उन्होंने राजा से कहा, 'यह मंत्री अपने घर के एक कमरे में सदैव ताला बंद रखता है तथा उसमें उसने बहुत-स धन और जवाहरात छिपाकर रखा है इसीलिए इस कमरे में वह किसी को नहीं ले जाता है । बराबर ऐसी शिकायतें सुनते-सुनते राजा को उसके प्रति संदेह होने लगा और एक दिन अचानक राजा ने मंत्री के घर पहुंचकर वास्तविकता जानने का विचार बनाया । राजा मंत्री से उस कमरे का ताला खोलने का आदे दिया । मंत्री ने कमरा खोला । राजा चकित र गया क्योंकि उस कमरे में केवल उस गड़रिये

वह कपड़े थे जो वह मंत्री बनने के पूर्व पहना करता था । राजा ने पुराने कपड़ों को इतनी सुरक्षा में रखने का कारण पूछा ।

मंत्री ने उत्तर दिया, 'महाराज मैं जानता था कि किसी दिन दूसरों की शिकायतों को सुनकर आप मेरे प्रति संदेह करेंगे और तब मैं अपने इन्हीं कपड़ों को पहनकर वापस चला जाऊंगा ।' यह कहकर उसने मंत्री के परिधान और पद को त्यागकर अपने उन्हीं पुराने कपड़ों को पहना और राजा से यह कहकर कि जब आपको भी मुझ पर संदेह होने लगा है तो अब मैं यहां नहीं रह सकता हूं और वह अपना पद छोड़कर चला गया ।'

यह है राजर्षि का राजनीतिक आदर्श—परंतु आज सत्ता में बैठे कितने महान लोग हैं जो इस आदर्श पर चलने की हिम्मत करते हैं । पुरुषोत्तमदास जी चाहें जिस पद पर रहे हों वह इलाहाबाद का नगरपालिका अध्यक्ष, पंजाब बैंक का प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष पद सब में उपरोक्त आदर्श को लेकर चले । उन्होंने अपने पुत्रों को ऐसे पद पर नहीं जाने दिया, जिससे उन पर संदेह किया जाता । यद्यपि उनके पुत्र उन पदों के लिए सर्वथा योग्य थे, परंतु आज उच्च पदों पर बैठे व्यक्ति के पुत्र एवं नजदीकी केवल रिश्ते के बल पर पद प्राप्त कर लेते हैं तथा मंत्री/उच्च पदस्थ का संबंधी होना ही उनकी एकमात्र योग्यता होती है ।

काश हमारे राष्ट्र-निर्माता राजर्षि के आदर्शों पर चलने का संकल्प ले पाते ।

—दिव्या आनन्द

द्वारा : विनोद कुमार, १२, विनय नगर,
दिल्ली रोड, सहारनपुर

हिंदी के लिए समर्पित

स्वामी श्रद्धानंद (युवक मुंशीराम) ने गुरुकुल द्वारा हिंदी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की । भारत में उस समय (सन १८८९) संभवतः यही एकमात्र ऐसी संस्था थी, जहां शिक्षा का माध्यम यदि कोई भारतीय भाषा थी तो वह थी—हिंदी । उस समय भी हिंदी में वैज्ञानिक शब्दों और पुस्तकों का सर्वथा अभाव था ।

इन्हीं से प्रेरणा लेकर गुरुकुल के अध्यापकों ने भौतिकी, रसायन व विद्युत शास्त्र पर संस्कृत आधारित नये शब्द गढ़े और वे शब्द आज हिंदी में एकदम घुलमिल गये हैं । इसके अतिरिक्त दैनिक व्यवहार के कई शब्द गुरुकुल की ही उपज हैं ।

उन दिनों उत्तर भारत में हिंदी की कोई स्वतंत्र सत्ता न थी । इसे उर्दू की चेरी के रूप में तुच्छतापूर्वक 'स्त्रियों की भाषा' कहा जाता था । किंतु फिर भी श्रद्धानंदजी ने उस सबकी उपेक्षा करते हुए अपना हिंदी संबंधी पुनीत कार्य जारी रखा ।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उनका 'प्रचारक' दैनिक पत्र सन १९१२ से गुरुकुल भूमि से ही निकलता था, हालांकि उन्हें तार-डाक की कोई सीधी व्यवस्था सुलभ न थी । क्योंकि वह कार्यालय जंगल में अवस्थित था ।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी उनका हिंदी के प्रति प्रेम व सत्कार्य हिंदी जगत के लिए एक उदाहरण व 'मील का पत्थर' सिद्ध हुआ ।

प्रस्तुति : प्रदीप शुक्ले



प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

'कादम्बिनी' वास्तव में एक ज्ञानवर्धक, मनोरंजक व प्रेरणादायक पत्रिका है जिसमें सारी अपेक्षित सामग्री एक ही जगह उपलब्ध है ठीक उसी सुपर बाजार की तरह जहां सारी अपेक्षित सामग्री उपभोक्ता को एक छत के नीचे ही मिल जाती है । विषय-वस्तुओं का स्तरीय चुनाव व सज्जा-शृंगार मर्म-स्थल को स्पर्श कर जाता है । बहुत-बहुत बधाइयां ।

अगस्त '९२ के अंक में संपादक आदरणीय राजेन्द्र अवस्थी के लेख 'अमरीकी युवा पीढ़ी : विद्रोह के स्वर' में आक्रोश-ध्वनि "व्हाई, माम, आई केन नाट डू इट व्हेन यू केन डू" (मां, मैं क्यों नहीं कर सकती, जब आप कर सकती हैं) के भीतर अमरीका स्थित भारतीय मूल के सभी किशोर-किशोरियों के विद्रोह-स्वर प्रतिध्वनित हैं । बालकों के निर्माण को उनके चारों ओर के परिवेश से अलग नहीं किया जा सकता । उन्हें 'फ्री सोसाइटी' की आधुनिकता और मशीनी अकेलेपन में अनियंत्रित पनपने के लिए छोड़कर उनसे सुसंस्कृत भारतीय बालकों के चरित्र की अपेक्षा करना न युक्ति-संगत है न ही व्यावहारिक । वस्तुतः उनका अनुशा व मर्यादित पालन-पोषण और संतुलित वि ही इस समस्या का निदान है । आत्मीयता शीतल छाया तो परम आवश्यक है ही ।

इस दिशा में कुछ सुझाव-शीर्ष इस प्रक जिन्हें विचार-विमर्श के माध्यम से विकसि किया जा सकता है :—

(१) शिक्षा व संस्कार केंद्रों की भारत स्थापना की जाए । ये केंद्र इस प्रकार के भारतीय मूल के विदेशी बालकों को निर्धारि आयु सीमा तक प्रवेश दें । इन केंद्रों में शि के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्य तथा ललित कला आदि का भी पाठ्य-क्रम हो और इनका संचालन चरित्रव एवं प्रतिभाशाली शिक्षाविदों के हाथ में होन चाहिए । भारतीय मूल के अनेक समृद्ध प्रव ऐसी शिक्षा व संस्कार-सृजन का भारी व्यय सहर्ष वहन कर लेंगे ।

(२) शैक्षिक देशाटन इस शिक्षा-संस्कार-प्रणाली का अभिन्न अंग होन चाहिए जिनमें विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी, बद्रीनाथ—केदारनाथ तीर्थ, राजस्थान स्थित ऐतिहासिक कीर्ति-स्तंभ, सालारजंग अजायब तथा वृंदावन गार्डन-जैसे दर्शनीय स्थानों को सविवरण दिखाना चाहिए ।

(३) इन केंद्रों को कुछ सुसंस्कृत परिवा अपनाकर, समय-समय पर बालकों को एक दिन के लिए इन परिवारों में भेजना चाहिए ज वे पारिवारिक सूत्रों की दृढ़ता, पारस्परिक स्नेह तथा मान-सम्मान का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकें ।

इस प्रकार के रचनात्मक कदम उठाये बिना अमरीका में भारतीय परिवारों से किया

गया आपका प्रश्न 'व्हाई माम' अनुत्तरित ही रहेगा ।

—प्रभुदयाल माहेश्वरी
—७३ बी, सी-४-डी जनकपुरी, नयी दिल्ली ५८

इस संदर्भ में उमेश कुमार; तेतरी बाजार, नीति अग्निहोत्री; इंदौर, संतोष कुमार मिश्र; बंबई, आनंदमणि त्रिपाठी; मोतिहारी, कृष्णमुरारी गोयल; गढ़वा आदि के भी पत्र प्राप्त हुए हैं)

प्रोत्साहन पत्र

नहीं लिखने का दुःख

पिछले दो-तीन वर्षों से मैं 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक रहा हूं और अब अनेक पत्रिकाओं को पढ़ चुकने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि मन को तृप्त कर सकनेवाली इसकी टक्कर की कोई दूसरी पत्रिका बाजार में नहीं है । हो सकता है कि कुछ अन्य पत्रिकाएं राजनीति का विश्लेषण इससे बढ़िया प्रस्तुत करती हों, हो सकता है कि कोई पत्रिका साहित्य-समीक्षाओं को इससे बेहतर ढंग से सामने रखती हो पर जहां तक आम पाठक को हर क्षेत्र के बारे में उच्च-स्तर की जानकारी देने का प्रश्न हो, उस मामले में 'कादम्बिनी' का कोई जोड़ नहीं । भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि पत्रिका यदि कोई है तो वह 'कादम्बिनी' ही है ।

आज अगस्त अंक को सामने रखकर यह पत्र लिख रहा हूं । 'नहीं लिखने का दुःख' ने तो झकझोर कर रख दिया । शायद श्री राधाकृष्ण प्रसाद की कहानी उतना प्रभावित न करती जितना इस 'आत्म-विश्लेषण' ने कर दिया । एक ही लेख में कितनी हृदय-स्पर्शी बातों का समावेश हो गया है कि यदि इस लेख को 'गागर में सागर' की उपमा दी जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी । सच बात तो यह है कि आज लिखा जा रहा अधिकांश साहित्य सतही है । ऑस्कर वाइल्ड ने अपनी एक प्रसिद्ध कहानी 'द नाइटेंगल एंड द रोज' में कहना चाहा है कि साहित्यकार अपने खून से साहित्य की रचना करता है । साहित्यकार के 'खून' से रचा गया साहित्य ही पाठकों का हृदय-परिवर्तन करने में सक्षम होता है और ऐसा साहित्य ही कालजयी होता है, युग-युग तक संपूर्ण विश्व को मार्ग दिखा सकता है । आज तक क्यों वेद इतने आदरणीय बने हुए हैं ? क्योंकि वेद-स्रष्टा ऋषियों ने अपने संपूर्ण जीवन की साधना का निचोड़ इनमें प्रस्तुत किया, अपनी अथक साधना से सत्य को उन्होंने जैसा जाना, वैसा लिखा ।

—अरविंद देव
बंगला नं. ९, ई.एस.आई. मेटरनिटी हॉस्पिटल, सर्वोदय नगर, कानपुर (उ.प्र.)

'कादम्बिनी' का स्वाधीनता अंक '९२ अप्रतिम लगा । सभी लेख, कहानियां हमारे देश के प्रति विदेशी यात्रियों का दृष्टिकोण, स्थायी स्तंभ, एक-से-बढ़कर-एक लगे । लघु कथा 'स्वतंत्रता से बड़ी कौन-सी नियामत है !' बहुत ही बेहतरीन प्रस्तुतिकरण अनुवाद के रूप में हुआ है ।

—डॉ. प्र. वि. आचार्य
रायपुर (म.प्र.)

'कादम्बिनी' उस वृक्ष के समान है जो शरणागत को बहुत कुछ देता है । मैं १९७८ के वर्षांत अंक से 'कादम्बिनी' के आंचल तले हूं । मेरी हिंदी जो भी है बस इसी की कृपा से

—मनोज कुमार
दिल्ली

देश और विदेश की ताजा घटनाओं से भरी किसी सम-सामयिक पत्रिका के बाद यदि मैं किसी पत्रिका को पसंद करता हूं, तो वह 'कादम्बिनी' है । पिछले कुछ समय से इसमें और निखार आया है । कृपया अपनी सृजनात्मक मुहिम जारी रखें ।

—राघवेन्द्र पाठक सतना

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सामग्री वाली पत्रिकाओं में वयस्कों, प्रौढ़ों के लिए 'कादम्बिनी' एकमात्र ऐसी श्रेष्ठ पत्रिका है जिसमें अन्य रोचक सामग्री, देश-विदेश की ज्ञान-विज्ञान, सामयिक लेखों के साथ, साहित्यिक कहानियों, लेखों को साहित्यिक विधा के रूप में ही स्थान दिया जाता है । मैंने भी इसका पाठक बनने का निर्णय लिया है कुछ सीखने के लिए, कुछ प्राप्त करने के लिए, एक नवोदित लेखक होने के नाते । अन्य अखिल भारतीय हिंदी पत्रिकाएं जिनका एक बहुत बड़ा पाठक वर्ग है वे 'कादम्बिनी' के आगे फीकी, नीरस लगती हैं, ऐसी पत्रिकाएं मात्र मनो व्यवसाय करने के लिए हैं । कुल मिलाकर 'कादम्बिनी' का चिंतन करने, श्रेष्ठ साहित्य व पाठक के सामने लाने का योगदान सर्वश्रेष्ठ है

—प्रीतम सिंह चौली शाहबुद्दीनपुर

विदेशी यात्रियों के दस्तावेज

हिंदी प्रकाशनों में 'कादम्बिनी' का अपना अलग आकर्षण है । हर अंक की तरह अगर ९२ अंक भी इसी धारणा की चमकदार कड़ी

अफनासी निकीतिन का यह कथन कि "हिंदुस्तान में रहने का मतलब, वह सब कुछ खर्च कर देना होगा, जो मेरे पास है, क्योंकि य हर चीज महंगी है ।" आज लगभग छह सौ साल बाद भी आश्चर्यजनक रूप से सत्य है । यह ऐसा कटु सत्य है जिसे हमारी प्रगति के दावेदारों द्वारा आत्मसात करना नितांत असहज होगा । हां हम एक बिंदु पर प्रगति के संदर्भ मे अवश्य ही झंडा ऊंचा कर सकते हैं वह यह कि यहां आदमी हर रोज कुछ न कुछ सस्ता होता

जाता है। उसे खरीदना भी आसान है और बेचना भी सहज।

भारत आते ही उसे धर्म परिवर्तन के हादसे से गुजरना पड़ा। वह प्रसन्न था कि प्रभु ने दया कर उस अभागे को ईश्वर विहीनों के बीच नष्ट होने से बचा लिया। स्वदेश वापसी पर उसी ने लिखा है कि "मैं धर्मभ्रष्ट हो चुका हूं।" सदियां बीत जाने पर भी यह खेल भारत में आज भी जारी है।

—ब्रजकिशोर शुक्ल
भोपाल

(इस विषय में डॉ. शकुनचंद गुप्त आर्य; लाल गंज तथा कुमारी राजेश शर्मा; जयपुर के भी पत्र मिले हैं।)

'कादम्बिनी' के अगस्त '९२ अंक में राधानाथ चतुर्वेदी का लेख 'अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रों का शिकार-भारत' पढ़ा। यह बिल्कुल सत्य है कि भारत, विशेषकर स्वतंत्र भारत के विकास में पश्चिम के विकसित राष्ट्र हमेशा रोड़े अटकाते रहे हैं। लेकिन भारत अपेक्षित उन्नति नहीं कर पाया, इसका दोष सिर्फ विदेशी राष्ट्रों के माथे नहीं मढ़ा जा सकता है। बहुत दोष यहां की सरकारें, नेताओं एवं आम जनता का भी है।

—सुधीर कुमार सुमन आरा

(इनके साथ सुरेश प्रकाश शुक्ल; लखनऊ, जय प्रकाश मिश्र; सीतामढ़ी, अशीश कुमार चौधरी; दरभंगा, कुमार दुष्यंत; हरिद्वार, पद्मश्री नरेन्द्र; दुर्ग, डॉ. विश्वमोहन प्रसाद सिंह; गया आदि के पत्र भी प्राप्त हुए हैं)

हिंदी सेवा में

जिस दृढ़ता से आप हिंदी के पत्र का समर्थन करते हैं वह अनुकरणीय है। यह दृढ़ता राजर्षि टंडनजी में थी, सेठ गोविंददास में थी। डॉक्टर सम्पूर्णानंद में थी, आचार्य शिवपूजन सहाय में थी, राहुल जी में थी, डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सुधांशु में थी।

इन महारथियों के आप योग्य उत्तराधिकारी हैं। अतः पुनः मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

आप स्वस्थ रह हिंदी सेवा में हमारा मार्गदर्शन करते रहें, यह कामना है।

— महेश नारायण, मधुबनी, पूर्णिया (बिहार)

ब्राह्मण लड़े थे इमाम हुसैन के लिए

हमेशा की तरह नयी कादम्बिनी (अगस्त-'९२) प्राप्त हुई। स्तरीय साहित्य एवं सत्यप्रद लेखों के कारण ही इस लघु पुस्तिका ने आज अपना सर्वोत्कृष्ट स्थान बनाये रखने में सफलता प्राप्त की है। ज्ञानवर्धक लेखों की श्रृंखला में एक लेख 'ब्राह्मण लड़े थे इमाम हुसैन के लिए' पर प्रतिक्रिया के माध्यम से आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा।

लेखक द्वारा उल्लेखित 'मोहम्मद सैयद सुलेमान नदवी की पुस्तक इंडो अरब रिलेशन में जत्त' शब्द पर आधारित यह लेख अनुचित दिशा में मोड़े जाने का प्रयास मात्र ही जान पड़ा। जत्त शब्द को कदाचित दत्त (ब्राह्मण) कहकर ब्राह्मणों को हुसैन साहब से जोड़ने का प्रयास हास्यास्पद है। लेख में जत्त शब्द की सत्यता और प्रासंगिकता दोनों ही 'कदाचित' लिखकर क्षण में समाप्त कर दी गयी है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि इराक में जत्त शब्द का प्रयोग जट्ट (जाटों) के लिए किया जाता है।

आशुतोष कुमार आरा

☆ (इस लेख के संबंध में चन्द्रमणि शर्मा; बड़वाह, महेन्द्र कुमार शर्मा; इंदौर तथा मनोज कुमार श्रीवास्तव; पटना के पत्र भी प्राप्त हुए हैं)

कादम्बिनी

वर्ष : ३२, अंक :
अक्तूबर, १९

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्ष

निबंध एवं लेख

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेंद्र अवस्थी

सार-संक्षेप

कविताएं

स्थायी स्तंभ

आवरण पारदर्शी : फाल एस. गिरोटा

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
भगवती प्रसाद डोभाल
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेन गुप्त

•

शुल्क वार्षिक ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १८५ रुपये; विदेशों में (डाक व्यय बढ़ने के कारण) पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; वायुसेवा से ३४० रु., समुद्री जहाज से १४० रु. । अन्य सभी देशों के लिए; वायु सेवा से ५१० रु., समुद्री जहाज से १९० रु. । शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि.; १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

☆ ☆

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

काल-चिंतन

—विसंगतियां !

—प्रसंग प्राचीन है । आश्वस्त मुनि अपने सहचरों और श्रमकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे :

- *मुझमें विश्वास रखो, शक्ति विरक्त नहीं होगे*
- *विश्वास नहीं रख सकोगे तो एकाकार नहीं होगे*
- *एकाकार नहीं होगे तो लक्ष्मण-रेखा भयभीत करेगी*
- *भय से त्रासदी*
- *त्रासदी से विपत्ति*
- *विपत्ति से पराजय*

—यह कहकर मुनि ने आश्रम-कक्ष छोड़ा । छोड़ते हुए कहते गये :

- *विश्वास शरणागत नहीं है !*

□

—प्रांगण प्रश्नमय हो उठा : 'विश्वास शरणागत नहीं है !' एक में अनेक उत्तर अवतरित होने लगे । उत्तरदाता वहां नहीं था, इसलिए विभिन्न मस्तिष्कों की ज्ञान-शिराएं अपने-अपने विवेक में खो गयीं ।

—विवेक खो जाता है या बंट जाता है एकता नहीं रहती ।

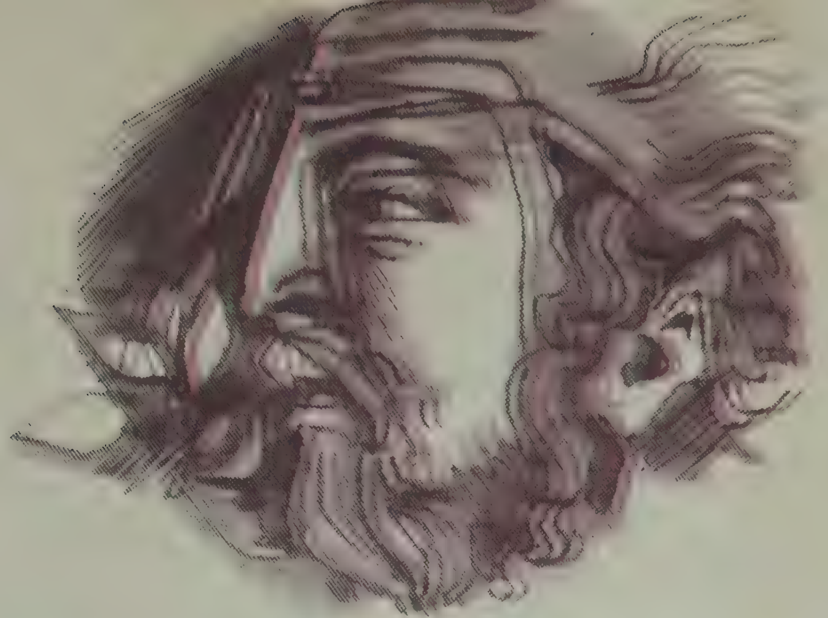
—अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि संपूर्ण एकता कल्याणकारी है । वह शुभदा है ।

—शुभदा में अपरिमेय आनंद है । आनंद इसलिए कि विभाजित अंकुरों का प्रत्यांगण वह नहीं बन पाता ।

—एक स्वर, एक रस, एक प्रसंग, एक बुद्धिबल और अंततः प्रेम की एकात्म अनुभूति—शरणागत हुए बिना कैसे होगी !

—मुनिश्री विवेकी थे इसलिए कह गये, विश्वास शरणागत नहीं है ।

—सत्य की परिधि में देखिए— विश्वास संपूर्णता है । अंतर मात्र इतना है कि विश्वास का आधार दृढ़ होना चाहिए; ऐसा न हो कि जहां जिस पर विश्वास



किया गया है वही रिक्त है ।

—रिक्त पात्र योग्यता की किसी सीमा, संभावना में नहीं आता ।

—खोखला बौनापन है और बौनेपन का मापक संभव नहीं है ।

—इसलिए विश्वास को शरणागत माने या न माने, उसकी स्वीकृति आधार-शिलाओं पर उसी तरह कसनी चाहिए जैसे स्वर्ण की शुद्धता के लिए उसे कसौटी पर कसा जाता है ।

—उसके बाद जो परिणाम हो स्वीकार्य ।

□

—व्यतीत से वर्तमान के झरोखे को देखें : नहीं लगेगा कि परिभाषाओं के संतुलन के लिए किसी नये मार्गदर्शक की आवश्यकता है ।

—विश्वास का बल देनेवाला स्वयं अविश्वासी होने लगे तो ?

—एकाकार का एकात्म बहुजन में बदलता दृष्टिगोचर हो तो ?

—श्रद्धेय स्वयं विपत्ति की व्यापकता बन जाए तो ?

□

—सत्य सनातन है ।

—सत्य नहीं बदलता, सत्य की व्याख्याएं बदलती हैं ।

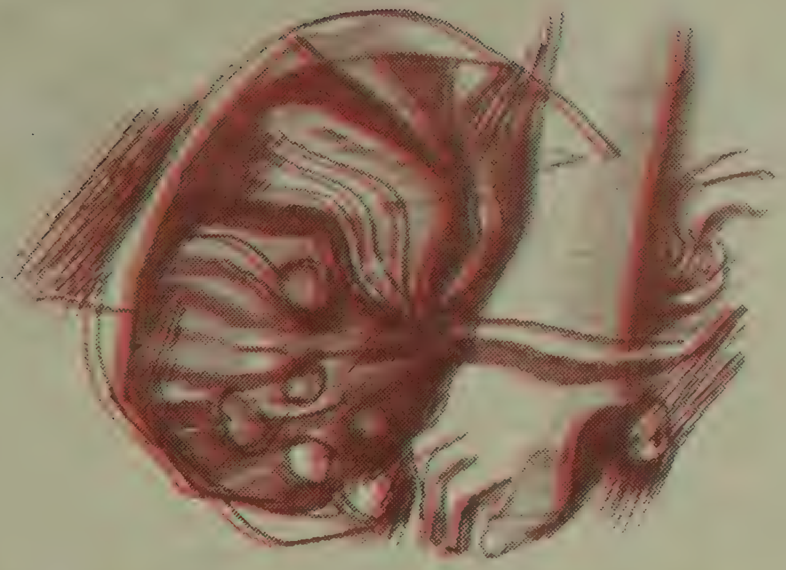
—नये प्रयोगों और प्रतीकों के पूर्व भी मनुष्यता पर्वत-वाहिनी की तरह प्रवाहित रही है ।

—प्रवाह अवरूद्ध हो जाता तो शेष शुष्क होता ।

—शुष्क नहीं है कुछ, अर्थ हुआ हम अविचल सचल हैं और निर्धारित सत्य-मूल्यों की मूल अवधारणा को हमने छोड़ा नहीं है ।

—तब स्थिति रह जाती है क्षणिक मदांधों की क्रियाशीलता का दीमक की तरह प्रजनन ।

—दीमक अकसर मिट्टी का एक पहाड़ बना लेती है । फिर वह आगे बढ़ती है और क्रमशः महाप्रासादों में भी प्रवृष्टि हो जाती है ।



—इस प्रवेश से महा-प्रासाद ढहते नहीं । मस्तिष्क की उर्वरता ने कीटनाशकों की खोज की और विनष्टकारी जातियों को पराजित किया ।

□

—पैरों में जूते पहनकर चलना सभ्यता और संभवतः आवश्यकता का अंग बन गया है ।

—कभी नंगे पैर चलकर धरती को पहचानिए तो ?

—नंगे पैरों का सुख कुछ और है । धरती की धड़कन और कंपन का आभास सहज ही लिया जा सकता है ।

—धरती के दर्द को सहज पहचाना जा सकता है ।

—हम धरतीपुत्र हैं, नंगे पैर चलकर पितृ ऋण चुकाना हमारा धर्म है ।

—युद्ध, महायुद्ध, भूचाल, दावानल और अंततः शांति ।

—अंततः शांति यही तो सत्य है ।

—क्रोध के क्षण अंगुलियों की पोरों में गिने जाने योग्य हैं, शांति के क्षण अनगिनत हैं ।

—अंततः शांति के द्वार पर पहुंचना होगा ।

—शांति का द्वार ही सत्य है ।

—अंत में सत्य ही शेष रहेगा ।

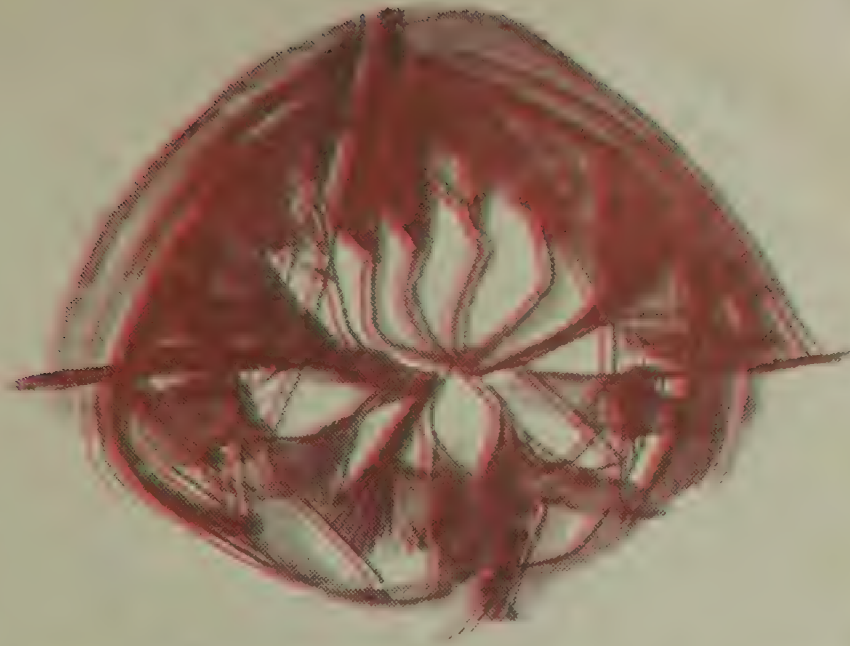
□

—भ्रांतियां न भय हैं न भटकावा ।

—भ्रांतियां मानसिकता की सहज वेदना हैं । रात्रि के घटाटोप अंधेरे में मुरली के स्वर या समवेत लोक गीतों की ध्वनि बरबस खींच लेती है ।

—रोग और शोक सोच के सामने दीवार खड़ी कर देते हैं । किंतु अंततः न स्वरों का स्वर और शोक की संतप्ति सनातन सत्य है ।

—नियति ने मनुष्य के साथ अत्यंत गहन खेल खेला है, खेलती है अब भी और क्रम चलता रहेगा आगे भी ।



—नियति संभवतः निरंतर परीक्षा लेती रहती है । असफल व्यक्ति, अकाल काल-ग्रसित होते हैं; जो नियति के खेल के चक्रव्यूह को भेदते हैं विजयश्री उन्हीं को मिलती है ।

—इतिहास विजेताओं की शौर्यगाथा है, पराजितों का मात्र दस्तावेज है ।

□

—बहुत कुछ बना है ।

—बहुत कुछ बिगड़ा है ।

—बहुत टूटा है, बहुत जुड़ा है ।

—कुछ दस्तावेज लिख रहे हैं, कुछ स्वयं शांत हैं, उन्हें इतिहास लिखेगा ।

—लिखा सब कुछ जाता है— काला हो श्वेत । काला कृष्णवर्ण है अमिट है । श्वेत धवल है, धवल सौंदर्य-प्रिय है; सौंदर्यप्रिय ही नहीं उसमें धारक शक्ति है— वह स्वर्ण कलश भी बन सकता है !

□

—कृष्ण वर्ण की वृद्धि मनुष्य-शरीर में श्वेत-कीटों का बढ़ना है । धवलता रक्त-कीड़ों का द्योतक है ।

—जब स्थितियां बिगड़ती हैं तो स्वास्थ्य के परिमाजनार्थ उपचार करने होते हैं ।

—'आज' उपचार केंद्र में है । उसे रक्त चाहिए ।

—समय के इस शिलाखंड को रक्तदान दीजिए, विसंगतियां नष्ट होंगी, विश्वास जागृत होगा और सत्य की प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

—आगे आएं हम :

□ रक्त चाहिए मनुष्य को

□ रक्त चाहिए धरा को

□ रक्त चाहिए कृष्णवर्णी संकटग्रस्त समाज-सेवियों को ।

—हमारे इतिहास में कालिख नहीं लगेगी, विश्वास एक बल है ।



राजनीतिक शुद्धिकरण के लिए देवी को रक्त चाहि

● विनायक सहस्त्रबुद्धे

वे एक वयोवृद्ध अनुभवी पत्रकार हैं । उनके लिए पत्रकारिता कैरियर नहीं, बल्कि देश-सेवा व समाज-सुधार का मिशन रही है । आजादी की लड़ाई में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कारागार भी जाना पड़ा । हाल ही में देश की समसामयिक राजनीतिक सामाजिक आ स्थितियों पर काफी देर चर्चा होती रही । के दौरान उन्होंने एक ऐसी बात कही, जि चौंका-सा दिया । उन्होंने कहा कि राजनी

शुद्धिकरण के लिए देवी को रक्त चाहिए ।

मैंने उनसे पूछा कि आपके कथन का तात्पर्य क्या यही है कि अब हिंसा के माध्यम से ही राजनीतिक शुद्धिकरण संभव हो सकेगा । वे हंस पड़े । बोले, "मैंने अपने मन की बात कह दी है, अब तुम्हें जो अर्थ लगाना हो लगा लो । हां, यह जरूर कहना चाहूंगा कि यह बात मैंने भावावेश में नहीं कही है और इसका अर्थ हिंसा भी लगाया जा सकता है और नहीं भी ।" फिर उन्होंने मुझसे पूछा, "दुर्गासप्तशती पढ़ी है ?"

मैंने कहा, "हां, नवरात्र के दिनों में मैं सप्तशती का पाठ करता हूं ।"

उन्होंने पूछा कि सिर्फ पाठ ही करते हो या उसका अर्थ भी ग्रहण करते हो ?

मैं कोई उत्तर नहीं दे पाया ।

अकसर बुरे विचार भारी पड़ते हैं, तो उनके प्रवाह में अच्छे विचारों को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है । यदि तुमने दुर्गासप्तशती पढ़ी है, तो तुम्हें याद होगा कि जब देवताओं और असुरों में पूरे सौ वर्ष तक घोर संग्राम हुआ और समस्त देवताओं को पराजित कर महिषासुर इंद्र बन बैठा, तब निरीह और हताश देवता ब्रह्मा के नेतृत्व में शंकर और विष्णु के पास गये । उन्होंने उनसे अपनी व्यथा-कथा कही । महिषासुर के अत्याचारों से विष्णु क्रोधित हो गये और उनके मुख से एक महान तेज प्रकट हुआ । इसके बाद ब्रह्मा, शंकर तथा इंद्र आदि देवताओं के शरीर से भी बड़ा भारी तेज निकला और वे सब मिलकर एक हो गये । बाद में यह तेज एक

यदि अनाचार-अत्याचार—भ्रष्टाचार और शोषण-उत्पीड़न का समाज में वर्चस्व बढ़ गया है तो सही दिशा में सोचनेवाले लोगों को संगठित होना ही चाहिए न केवल समाज हित के लिए वरन अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए भी ।

वे बोले, "दुर्गासप्तशती में भगवती की स्तुति और उनके शौर्य का वर्णन तो है ही साथ ही उसमें प्रतीकों के माध्यम से लिखा गया इतिहास भी है । समाज में सदैव से अच्छे और बुरे के बीच संघर्ष चलता रहता है । यह बात व्यक्ति के बारे में भी कही जा सकती है । व्यक्ति के मन में अच्छे और बुरे दोनों विचार आते हैं ।

नारी के रूप में परिवर्तित हुआ और इस प्रकार कल्याणमयी देवी का आविर्भाव हुआ । हर देवता ने इस देवी को अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र दिये और इसके बाद इस देवी ने महिषासुर, चंडमुंड, शुंभनिशुंभ, धूम्रलोचन व रक्तबीज आदि असुरों का संहार किया । और इस तरह संसार को दैत्यों से मुक्ति मिली ।

उनकी इन बातों को सुनकर अनायास ही दुर्गा सप्तशती के अष्टम अध्याय का वह अंश याद आया जहां देवी ने रक्तबीज से युद्ध कर उसका अंत किया। दुर्गा सप्तशती में लिखा है—

"मातृगणों से पीड़ित दैत्यों को युद्ध से भागते देख रक्तबीज नामक महादैत्य क्रोध में भरकर युद्ध के लिए आया। उसके शरीर से जब रक्त की बूंद पृथ्वी पर गिरती, तब उसी के समान शक्तिशाली एक दूसरा महादैत्य तत्काल पृथ्वी पर पैदा हो जाता। महासुर रक्तबीज हाथ में गदा लेकर इंद्रशक्ति के साथ युद्ध करने लगा। तब इंद्रशक्ति अर्थात ऐंद्री ने अपना वज्र रक्तबीज पर दे मारा। वज्र से घायल होने पर उसके शरीर से बहुत-सा रक्त चूने लगा और उससे उसी के समान रूप तथा पराक्रमवाले योद्धा उत्पन्न होने लगे। उसके शरीर से रक्त की जितनी बूंदें गिरीं, उतने ही पराक्रमी योद्धा उत्पन्न हो गये। वे सब रक्तबीज के समान ही वीर्यवान और बलवान तथा पराक्रमी थे। रक्त से उत्पन्न होनेवाले वे पुरुष भी अत्यंत भयंकर अस्त्र-शस्त्रों से प्रहार करते हुए वहां मातृगणों के साथ घोर युद्ध करने लगे थे। ऐंद्री के पुनः वज्र के प्रहार से जब उसका मस्तक घायल हुआ, तब और अधिक रक्त बहने लगा और उससे



हजारों पुरुष उत्पन्न हो गये। वैष्णवी
रक्तबीज पर चक्र का प्रहार किया त
उस दैत्य सेनापति को गदा से चोट
वैष्णवी के चक्र से घायल होने पर उ
से जो रक्त बहा और उससे जो उसी
आकारवाले सहस्रों महादैत्य प्रकट हु
दैत्यों से संपूर्ण जगत व्याप्त हो गया।
शक्ति से, वाराही ने खड्ग से और मा
त्रिशूल से महादैत्य रक्तबीज को घायल
क्रोध में भरे हुए उस महादैत्य रक्तबीज
गदा से सभी मातृशक्तियों पर पृथक-पृ
प्रहार किया। शक्ति और शूल आदि
बार घायल होने पर जो उसके शरीर से
धारा पृथ्वी पर गिरी, उससे भी निश्चय
असुर उत्पन्न हुए। इस प्रकार उस महा
प्रकट हुए असुरों द्वारा संपूर्ण जगत व्या
गया। इससे देवताओं को बड़ा भय हु
देवताओं को उदास देख चंडिका ने का
शीघ्रतापूर्वक कहा, "चामुंडे ! तुम अप
और बड़ा फैलाओ। तथा मेरे शस्त्रपात
वाले रक्तबिंदुओं और उनसे उत्पन्न होने
महादैत्यों को तुम अपने इस उतावले मु
खा जाओ। इस प्रकार रक्त से उत्पन्न हो
महादैत्यों को भक्षण करती हुई तुम रण
विचरती रहो। ऐसा करने से उस दैत्य
रक्त क्षीण हो जाने पर वह स्वयं भी नष्ट
जाएगा। उन भयंकर महादैत्यों को जब
जाओगी, तब दूसरे नये दैत्य उत्पन्न नहीं
सकेंगे।" यों कहकर चंडिका देवी ने शू
रक्त बीज को मारा और काली ने अपने
उसका रक्त ले लिया। तब उसने चंडिक
गदा से प्रहार किया, किंतु उस गदापात
को तनिक भी वेदना नहीं पहुंचायी। रक्त

एकदिन रात को मैं अपने अखबार का काम देख रहा था । रात के दस साढ़े दस बजे होंगे । उप-संपादक टेलीप्रिंटर से समाचार का एक तार लेकर आया । उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की हैदराबाद में दिये गये भाषण की रिपोर्ट थी । वह समाचार मुझे भुलाये नहीं भूलता । पैंतीस-छत्तीस वर्ष उन्होंने उस भाषण की माध्यम से समूचे देश को एक चेतावनी दी थी । उन्होंने कहा था, कि इस देश पर तरह-तरह के संकट आ रहे हैं, पर एक संकट जो दिन ब दिन गहराता जा रहा है, उस पर किसी का ध्यान नहीं है । यह है 'क्राइसिस ऑव कैरेक्टर' अर्थात चरित्र का संकट ?''

घायल शरीर से बहुत-सा रक्त गिरा, किंतु ज्यों ही यह गिरा त्यों ही चामुंडा ने उसे अपने मुख में ले लिया । रक्त गिरने से काली के मुख में जो महादैत्य उत्पन्न हुए, उन्हें भी वह चट कर गयीं और उसने रक्तबीज का रक्त भी पी लिया । तदनंतर देवी ने रक्तबीज को जिसका रक्त चामुंडा ने पी लिया था, वज्र, वाण, खड्ग तथा मुष्टि आदि से मार डाला । इस प्रकार शस्त्रों के समुदाय से आहत एवं रक्तहीन हुआ महादैत्य रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा । नरेश्वर ! इससे देवताओं को अनुपम हर्ष की प्राप्ति हुई ।''

इस प्रसंग की चर्चा करते हुए उन वयोवृद्ध पत्रकार ने मुझसे कहा, ''देखो, कभी-कभी आसुरी शक्तियों को समाप्त करने के लिए हिंसा का आश्रय लेना ही पड़ता है । यह हिंसा अशुभ नहीं शुभ होती है । इस हिंसा के बाद जो शेष रहता है, वह सबके लिए कल्याणकारी होता है । महाभारत भी एक तरह से अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष का ही महाकाव्य है । बिना हिंसा के पांडव कौरवों को परास्त नहीं कर सकते थे । स्वयं कृष्ण को अर्जुन को युद्ध के लिए हिंसा के लिए उपदेश देना पड़ा । यदि हम सप्तशती और महाभारत को मात्र साहित्य ही मान लें, और उन सारे प्रसंगों को कवि की कल्पना, तो यह कल्पना भी ठोस सत्य पर आधारित है । हम शंका कर सकते हैं कि देवी और असुरों के बीच भयानक संग्राम नहीं हुआ होगा । कुरुक्षेत्र में कौरव और पांडवों के मध्य संग्राम शायद कवि की कल्पना हो तथापि हमने इस बीसवीं सदी में असुरों जैसे ही मदांध व्यक्तियों का और राष्ट्रों का उत्कर्ष और पराभव भी देखा है । उदाहरण के लिए हिटलर को ले लें । हिटलर जरमनी के उत्थान को लेकर सामने आया और अपने देश की जनता का प्रेम और विश्वास भी उसने पाया लेकिन अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण समूचे विश्व के लिए वह एक भयानक खतरा बन गया । उसने आसपास के कमजोर देशों को पराजित किया और समूचे संसार पर शासन करने का स्वप्न देखने लगा । उसने यहूदियों पर भयानक अत्याचार किये । अंततः उसके खिलाफ भी अन्य देशों को संगठित होना पड़ा और हिटलर का क्या अंत



हुआ, इतिहास इसका साक्षी है ।

हिटलर के भी पहले अनेक तानाशाह खूंख्वार शासक हुए हैं जैसे चंगेज खां, तैमूर लंग, नादिरशाह इत्यादि, लेकिन अंततः उन सबको काल के गाल में समाना पड़ा । उनके अत्याचारी शासन की अवधि अधिक समय तक नहीं चली । तो मैं यह कहना चाहूंगा कि कोई भी अत्याचारी शासन, कोई भी अनाचार लंबे समय तक नहीं चल सकता । उसके खिलाफ सभी सच्चे लोग एक दिन संगठित होकर उठ खड़े होते हैं और उनके आक्रमण के फलस्वरूप अशुभ शक्तियों का नाश होता ही है ।''

क्षणभर रुककर वे बोले, ''महिषासुर की शक्ति के सामने देवता परास्त हो गये थे । यही नहीं, अकेले विष्णु भी शायद उसका अंत करने में असमर्थ थे, इसलिए ब्रह्मा, शंकर एवं अन्य

देवताओं को अपने-अपने तेज को
एक महातेज की रचना करनी पड़ी
में यदि अनाचार-अत्याचार-भ्रष्टाच
शोषण-उत्पीड़न का समाज में वर्च
है तो सही दिशा में सोचने वाले लो
संगठित होना ही चाहिए, न केवल
के लिए वरन अपने अस्तित्व की र
भी । देवताओं ने यही किया । द्विती
के दौरान अमरीका-ब्रिटेन, फ्रांस आ
यही किया । अकेले वे हिटलर का
में असमर्थ थे, लेकिन जब वे संगठि
तो हिटलर को पराजित होना पड़ा ।'

मैंने उनसे पूछा, ''आप कहना क्
है ?''

वे बोले, ''क्या तुम्हें हर बात खोल
बतानी पड़ेगी । खैर, तुम चाहते हो त
मैंने जब अपना जीवन शुरू किया तो
पराधीन था । समाज में भ्रष्टाचार, का
रिश्वतखोरी आदि तब भी थी । वह द्वि
युद्ध की देन थी । लेकिन उसके खिल
आंदोलन-सा छिड़ा हुआ था, आजाद
लड़ाई अंगरेजों से मात्र स्वतंत्रता-प्राप्ति
ही नहीं, बल्कि उनके कारण इस देश
में दिनोंदिन बढ़ रहे भ्रष्टाचार की समा
लिए भी थी । नैतिक मूल्यों का पतन
रहा था, लेकिन गांधीजी के नेतृत्व में
शक्ति पैदा हो रही थी, जो नैतिक मूल्य
स्थापना के लिए प्रयत्नशील थी । हमा
यह देश पहाड़ों, वनों, नदियों, निर्झरों
धरती मात्र न था । वह मां के समान
उसे भारत माता कहते थे । तत्कालीन
में तुम इस भावना का प्रतिबिंब देखोगे
वंदेमातरम कहते-कहते ही हमारे सामने

जब राजनीतिक सत्ता ही भ्रष्ट हो जाए तो समाज के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार की बाढ़ को कौन रोक सकता है !

देश का समूचा चित्र उपस्थित हो जाता था, और उसे हम जड़ नहीं, चेतन मानकर स्नेह करते और पूरी श्रद्धा रखते थे, लेकिन आजादी के बाद देश के प्रति यह धारणा समाप्त हो गयी। देश इस तरह पतन के रास्ते पर जाएगा और उसे पतन की ओर ले जाने में हमारे शासक ऐसी भूमिका निभाएंगे, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि साने गुरुजी आज जीवित होते तो क्या करते ? सानेगुरुजी के बारे में शायद तुम्हें पता हो। आजादी की लड़ाई में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया था और आजादी के बाद जब उन्होंने राजनीति के भ्रष्टाचार को बढ़ते देखा, तब एक दिन उन्होंने विष खाकर आत्महत्या कर ली। मैं कभी-कभी उनकी वेदना को समझने का प्रयत्न करता हूं। निश्चय ही आत्महत्या समस्या का समाधान नहीं थी। आत्महत्या किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकती। पर साने गुरुजी अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति थे। जिन पर उन्हें आस्था थी, वे ही उनके विश्वास को भंग कर रहे थे। निस्संदेह निराशा और हताशा की चरम सीमा पर पहुंच कर ही उन्होंने विषपान किया होगा। लेकिन उनका बलिदान भी तत्कालीन नेताओं को सतर्क नहीं कर पाया। तुम्हें एक बात बताऊं। एक दिन रात को मैं अपने अखबार का काम देख रहा था। रात के दस साढ़े दस बजे होंगे। उप-संपादक टेलीप्रिंटर से समाचार का एक तार लेकर आया। उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की हैदराबाद में दिये गये भाषण की रिपोर्ट थी। वह समाचार मुझे भुलाये नहीं भूलता। पैंतीस-छत्तीस वर्ष उन्होंने उस भाषण के माध्यम से समूचे देश को एक चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था, कि इस देश पर तरह-तरह के संकट आ रहे हैं, पर एक संकट जो दिन ब दिन गहराता जा रहा है, उस पर किसी का ध्यान नही है। यह है 'क्राइसिस ऑव केरेक्टर' अर्थात चरित्र का संकट ?"

डॉ. राधाकृष्णन की वह चेतावनी कितनी सामयिक थी, यह आज मालूम होता है। पर तब किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। फलतः आज चरित्र का संकट ही सब संकटों की जड़ बन गया है। आज यह वाक्य हो गया है कि देश में चरित्र ही नहीं रहा। देश कौन है, क्या हिमालय, क्या गंगा, क्या धरती देश है। देश है हम लोग—हम सब, नेता, अफसर, व्यापारी, कर्मचारी ! चरित्र हम सबका नहीं रहा है !"



"आज रिश्वतखोरी को एक नाम दिया गया है सुविधा-शुल्क। हमने मान लिया है कि हमें अपना कार्य कराने के लिए रिश्वत देनी ही पड़ेगी। उसके बिना काम नहीं चलेगा। छोटा कर्मचारी या छोटा अफसर यह कहकर अपनी रिश्वत को उचित और आवश्यक ठहराता है कि अब बड़े-बड़े नेता भी तो सुविधा-शुल्क लेते हैं। बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी सुविधा-शुल्क देती हैं। तो आज समाज में चारों ओर हम जिन बातों को गलत समझते आये हैं, उनको सही सिद्ध करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयत्न होते देखते हैं, तो लगता है कि कहीं न कहीं इन सबका अंत होना ही चाहिए। पर यह अंत करेगा कौन ? कैसे होगा यह सब ! मेरा अपना एक चिंतन है। हो सकता है, वह गलत हो। पर तुमने बात छेड़ी है तो कह दूं। मैं सोचता हूं कि आजादी के पूर्व आर्थिक भ्रष्टाचार ही अधिक था। राजनीतिक नेतृत्व में यदि भ्रष्टाचार था भी तो बहुत कम। उस पर सहसा दृष्टि नहीं जाती थी। लेकिन जैसे-तैसे आजादी मिलने की संभावना बढ़ने लगी, जिन्हें हम हिकारत से 'टोडी बच्चा' कहा करते थे, वे सब-के सब सत्तारूढ़ होनेवाले दल में घुस गये और उत्तरोत्तर हावी होते चले गये। इसी खतरे को भांपते हुए गांधीजी ने 'कांग्रेस आजादी पाने के अपने लक्ष्‍ कर चुकी है, लिहाजा उसे भंग कर जाए।' लेकिन उनकी किसी ने नहीं आजादी के बाद आर्थिक भ्रष्टाचार ने नेतृत्व को अपने रंग में रंग लिया। अ विडंबना यह कि किसी ने इस रंग को किया नहीं, सब उसे और गाढ़ा क ने गये। जब राजनीतिक सत्ता ही भ्रष्ट ह फिर समाज के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार क कौन रोक सकता है ! इसीलिए मैं क राजनीतिक नेतृत्व का, किसी दल का राजनीतिक सत्ता की, वह किसी भी प न हो, शुद्धि निहायत जरूरी है। अनिव यह राजनीतिक शुद्धिकरण कैसे होगा रक्त से। नया रक्त अर्थात नयी पीढ़ी हमने आज की नयी पीढ़ी को संभाल मुझे पूरा विश्वास है देश का भविष्य उ है। लाख राजनीतिक नेतृत्व भ्रष्ट हो ज न कोई गांधी, कोई न कोई सुभाष जरू आएगा ? गालिब ने ठीक ही कहा है- का हद से गुजरना है, दवा हो जाना।'

प्रस्तुति :

भीतवत् संविधातव्यं यावद्
भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमभीतवत् ॥
(महाभारत, आदि पर्व १३९/८२)

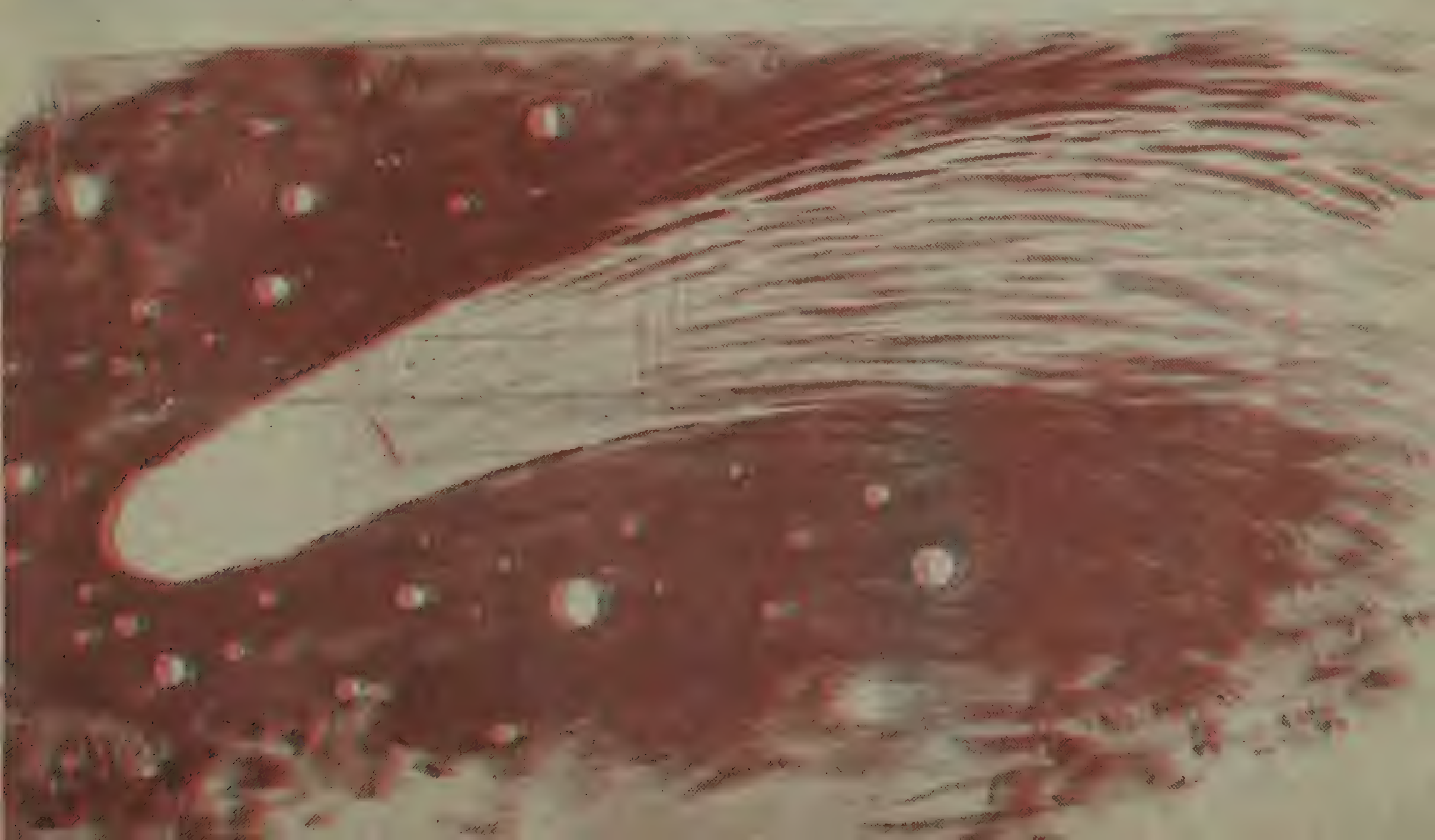
जब तक अपने ऊपर भय खतरा न तभी तक डरते हुए उसको टालने का प्र करना चाहिए। परंतु जब खतरा सामने जाए, तो फिर निडर होकर उसका यशो प्रतिकार करना चाहिए।

दैत्याकार धूमकेतु : पृथ्वी के विनाश का कारण न बन जाए

● रॉबर्ट मैथ्यू

यह समय है समुद्र तट की पार्टियों, जंगली फलों, गरम हवाओं के झोंकों और गरमियों की मंद शामों का । तब सूर्य की परिक्रमा करते हुए हमारा ग्रह एक दैत्याकार धूमकेतु द्वारा बिखेरे गये अंतरिक्षीय मलबे के एक बड़े भाग को पार करता है । शायद यही मलबा एक दिन हमारे विनाश का कारण बन सकता है ।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एक खगोल-भौतिकीशास्त्री हैं, विक्टर क्लबे । उनके अध्ययन का मुख्य विषय टॉअरिड्स है । टॉअरिड्स वह उल्का-वृष्टि है जो पृथ्वी पर हर वर्ष अक्तूबर या नवंबर माह में प्रहार करती है । यह उल्का-वृष्टि 'अगस्त की परसिड्स' नामक उल्का-वृष्टि जितनी भव्य नहीं होती । और जून



में तो वह दिखायी भी नहीं पड़ती क्योंकि वह ग्रह के दिनवाले भाग की तरफ से आती है, परंतु टॉअरिड्स की विनाशक शक्तियों को पहचाना नहीं गया है । क्लबे का कहना है कि इस उल्का धारा में एक मील की दूरी जितनी लंबी चट्टानें होती हैं, जिनके पास आने का अर्थ है एक शहर, एक महाद्वीप या उससे भी अधिक के क्षेत्र का विनाश ।

इतिहास गवाह है

इस बात का थोड़ा-सा प्रमाण इतिहास के पन्नों में भी मिलता है । तीस जून, १९०८ की सुबह, साइबेरिया के ऊपर एक अति विशालकाय, बीस मैगाटन नाभिकीय बम की शक्ति वाले अग्नि गोले का विस्फोट हुआ । उसके कारण टगुंसका नदी के चारों तरफ फैला चार सौ वर्ग मील का वन नष्ट हो गया । इसकी चमक से पश्चिमी यूरोप तक का आकाश प्रज्वलित हो उठा । यह कहा जाता है कि डेढ़ सौ फुट लंबा यह टुकड़ा टॉअरिड्स धूमकेतु का ही एक भाग था ।

चांद पर जलती ज्वाला

ऐसे ही सन ११७८ में हम लोग फिर बाल-बाल बचे । जून के अंत की एक रात्रि में कैंटरबैरी के प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार उन्होंने नये चांद के ऊपरी सिरे पर एक जलती ज्वाला को देखा जो इसके पश्चात एक घायल सांप के समान कांपने लगी । यह अनुमान लगाया गया कि यह कंपन शायद किसी उल्का-पिंड [illegible] उड़ाया गया धूलि बादल था । साथ ही [illegible] जलती हुई ज्वाला की शायद वही जगह [illegible] जहां पर कि गायरडैनो ब्रूनो नामक ज्वाल[illegible] स्थित है । अगर यह सत्य है तो फिर पृ[illegible] उल्कीय पिंड के विनाशकारी प्रहार से बाल-बाल बची । इस प्रकार से एक स[illegible] महाद्वीप का विनाश संभव था ।

ऐसा पता चला है कि संभवतः सन [illegible] के आसपास तक टॉअरिड्स ने चांद पर [illegible] प्रहार किया होगा । यह जानकारी अपोल[illegible] अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा चांद पर रखे गये [illegible] मापी यंत्रों से पता चली । इन यंत्रों ने ही [illegible] शिलाखंडों पर हुए संघातों के स्रोत का प[illegible] लगाया ।

क्लबे और उनके सहयोगियों का मा[illegible] कि इन सब घटनाओं के पीछे कोई एक [illegible] ब्रह्मांडीय शक्ति है । अंतरिक्ष में घूमते हु[illegible] धूमकेतु पत्थर के टुकड़ों को मलबे के स[illegible] बिखेरते हुए जाते हैं, जिसे उल्का-वृष्टि क[illegible] हैं । यह टुकड़े कुछ इंचों से ज्यादा बड़े न[illegible] हैं । लेकिन क्लबे के कथनानुसार इन धूमकेतुओं की उल्का-धारा में कुछ टुक[illegible] आकार के भी होते हैं और करीब आधा [illegible] पूर्णविकसित ग्रहिकाओं के पथ भी इसी [illegible] धारा के अंदर आते हैं । इन सबके ग्रह [illegible] दूरी यह बताती है कि यह सब एक ही ध[illegible]

अंतरिक्ष में एक धूमकेतु निरंतर टूट-टूटकर बड़ी-बड़ी चट्टानों को बिखेर रहा है । जब ये चट्टानें पृथ्वी पर गिरती हैं तो वनों में आग लग जाती है । इन चट्टानों में एक समूचे महाद्वीप को भी नष्ट कर देने की क्षमता है ।

के भाग हैं, जो मूलतः सौ मील या उससे अधिक की दूरी पर स्थित हैं और जिसने संभवतः २०,००० साल पहले ही सौर मंडल के भीतरी भाग में प्रवेश किया है ।

इस धूमकेतु का ग्रहपथ उसे बुध ग्रह के अंदर ले गया, जो सूर्य के नजदीक है । करीब दस हजार साल पूर्व उसका निर्जलीकरण हो जाने से वह क्षीण पड़ गया और तब से सूर्य के पास से गुजरने पर हर बार उसके कुछ टुकड़े टूटते जाते हैं । वैज्ञानिकों का कहना है कि इनमें से एक टुकड़ा 'एन्के' नामक एक धूमकेतु है, जिसका मूल अंश शायद अभी भी अंतरिक्ष में स्थित है । क्लबे कहते हैं कि —''हमें संदेह है कि टॉअरिड्स का आधार 'एन्के' के ग्रहपथ से मिलते-जुलते ग्रहपथ में है, जो ३.३९ सालों में एक बार सूर्य की परिक्रमा करता है । हम सोचते हैं, कि हम उसे शीघ्र ही खोज लेंगे ।''

यह मारक धूमकेतु कुछेक हजार सालों में हमारे रास्ते में विशाल आकार के पदार्थ बिखेरता है, जिनसे उत्पन्न धूलि-बादलों ने अतीत में पृथ्वी को 'कॉस्मिक जाड़ों' और शायद 'शीत युगों' में डुबो दिया था ।

हावर्ड-स्मिथसोनियन के खगोलभौतिकी शास्त्री ब्रायन मार्सडन का कहना है कि ''यह संभव है कि जून माह की कुछ घटनाएं सही हों मगर मेरा मानना है कि क्लबे शायद इसे कुछ ज्यादा ही सत्यता का प्रमाण देने की कोशिश में हैं ।'' इसके बावजूद बहुत-से वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि हमारी पृथ्वी पर एक बड़े संघात की संभावना हमेशा है (जो कि शायद इतनी बड़ी न हो जितना कि क्लबे बताते हैं) और इसे गंभीरता से लेना चाहिए । इस संदर्भ में नासा विशेषज्ञों की समिति ने सुझाव दिया कि



संभावित संघातकों को तलाशने के लिए समस्त पृथ्वी पर टेलिस्कोप यंत्रों का जाल होना चाहिए । एक दूसरी समिति नासा से आग्रह करके ऐसा मार्ग विकसित करने को कहेगी जिससे कि आनेवाले पत्थरों को हमारे मार्ग से हटाया जा सके —शायद न्यूट्रान बम की सहायता से ।

इस बात से इनकार नहीं कि करीब एक दशक से लोगों में इस तथ्य के प्रति जागरूकता पैदा हुई है कि हमारी पृथ्वी अतीत में अनेक विस्फोटों से प्रभावित हुई है । इन विस्फोटों की संभावना भविष्य में भी बनी हुई है । इस जागरूकता से उत्पन्न आम राय यह है, ''अगर हम डायनासौरों के रास्ते पर नहीं जाना चाहते हैं तो संघात के प्रहारों की उपेक्षा करना मूर्खता होगी और अब हमें इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना होगा ।''

अनु. : तूलिका

मनोचिकित्सक होने के नाते मेरी क्लिनिक में सैकड़ों मरीज आते हैं, इनमें कई रोगी ऐसे भी होते हैं, जिनके रोग के लक्षण तो कुछ और हैं, परंतु गहराई में जाने पर मूल तौर पर यौन संबंधी समस्याएं ही सामने आती हैं ।

आज हम अपनी क्लिनिक के बाहर के लोगों की बातें कर रहे हैं, जो हर प्रकार से

लगाये जाते हैं, उतने किसी और पर न
एक सीमा तक प्रतिबंध आवश्यक भी
क्योंकि, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है
प्रतिबंधों को बिलकुल नकारा भी नहीं
सकता लेकिन जब समाज हद से ज्याद
प्रतिबंध लगाता है, तो ऐसा प्रतिबंध न
व्यक्ति के रचनात्मक स्रोत को नष्ट करत

जब समाज हद से ज्यादा प्रतिबंध लगाता है, तो ऐसा प्रतिबंध न केवल व्यक्ति के रचनात्मक स्रोत को नष्ट करता है, बल्कि उसे तरह-तरह के रोगों का शिकार भी बना देता है ।

स्वास्थ्य और सेक्स की साझेदारी

• डॉ. सतीश मलिक

स्वस्थ हैं, पर स्वस्थ होते हुए भी, एक प्रकार के रोगी । वे जीवन को पूरी तरह से जीने में असमर्थ हैं या फिर पुराने दकियानूसी विचारों के शिकार हैं । वे अपने जीवन को उस चरमसीमा तक नहीं ले जा रहे, जहां तक उसे ले जाने की उनमें क्षमता है ।

यौन संतुष्टि प्राणी मात्र के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितनी भूख या प्यास की संतुष्टि । यौन प्रक्रिया एक स्वाभाविक, प्राकृतिक प्रक्रिया है । लेकिन, खेद इस बात का है कि इस प्रक्रिया पर जितने अंकुश, जितने प्रतिबंध

बल्कि उसे तरह-तरह के रोगों का शिकार
बना देता है । अतः यह कहना उचित होग
इस विषय में लगाम की तो आवश्यकता
लेकिन चाबुक की नहीं, ताकि इन ऊर्जाओं
सही दिशा मिल सके ।

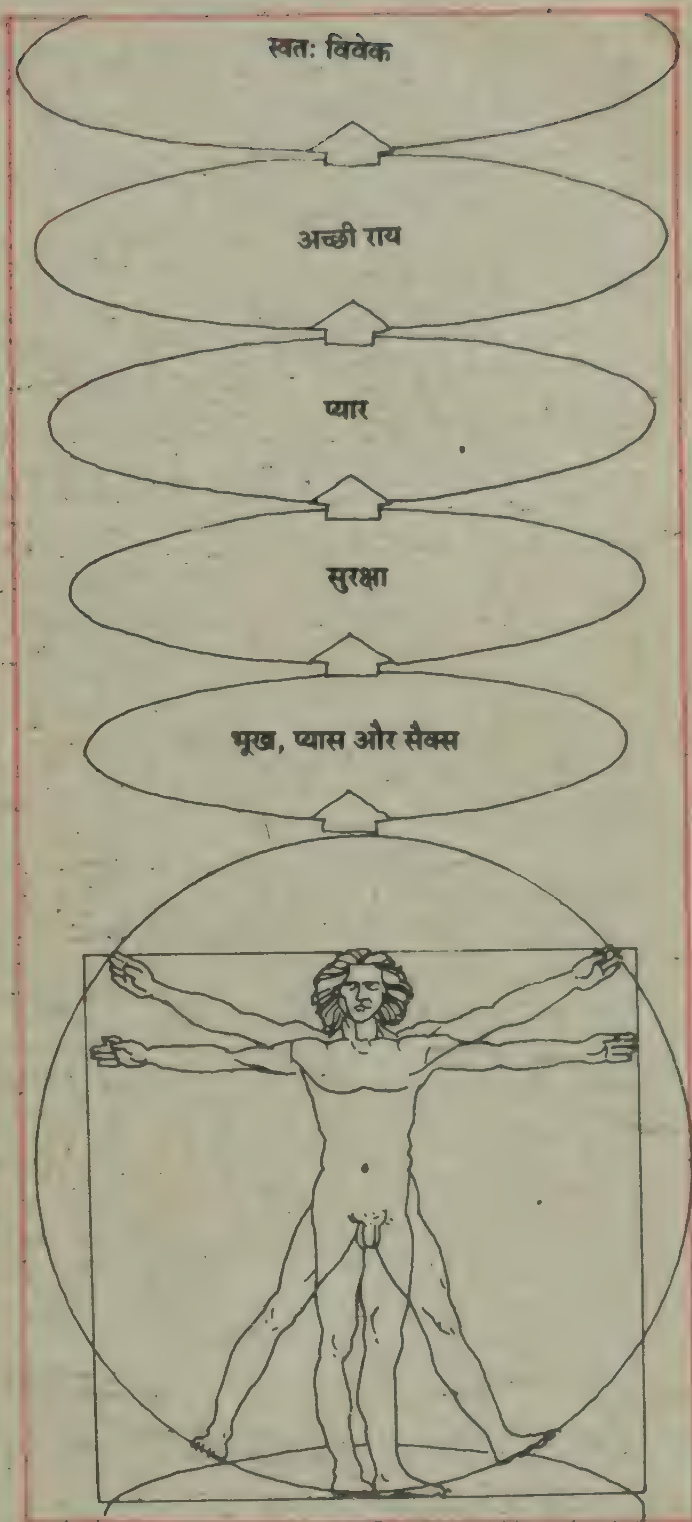
सेक्स या काम की ऊर्जा व उसकी शक्
भारत प्राचीनकाल से ही परिचित रहा है ।
सूत्र के रचयिता वात्सायन भारत में ही हुए
कोणार्क एवं खजुराहो की मिथुन मूर्तियां इ
तथ्य की पुष्टि करती हैं कि तत्कालीन समा
काम या सेक्स को कितना महत्वपूर्ण माना

था । उस समय पाश्चात्य देशों को इस विषय में भारत जितना ज्ञान नहीं था और वे एक तरह से पिछड़े हुए थे । कालांतर में हमारे समाज पर अन्य देशों की सभ्यता, सामाजिक, सांस्कृतिक रीतियों, विश्वासों का प्रभाव पड़ा और काम संबंधी दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया । हम अपना वास्तविक ज्ञान भूल गये । आज हम वही ज्ञान पाश्चात्य देशों से पुनः ग्रहण कर रहे हैं ।

हम से आगे हैं

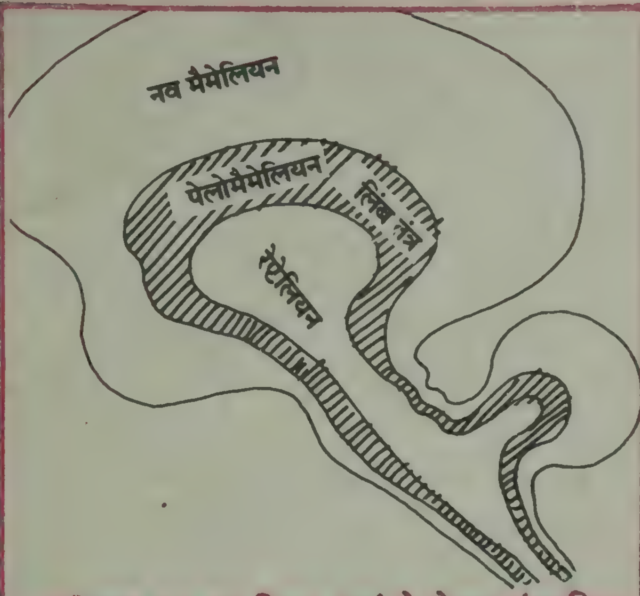
पाश्चात्य देश अब इसलिए हमसे आगे हैं कि उन्होंने दकियानूसी विचारों और रूढ़ियों को छोड़कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना लिया है । मनोविज्ञान एवं शारीरिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि शिशु के जन्म से ही उसके व्यक्तित्व के बनने की शुरूआत हो जाती है । पाश्चात्य देशों में आज बच्चों को यौन-विज्ञान की शिक्षा देने में कोई परहेज नहीं किया जाता । इसके कारण उनकी अनेक जिज्ञासाएं सहज रूप से शांत हो जाती हैं जिससे वे व्यर्थ की भटकनों व उलझनों से बच जाते हैं । बच्चों व किशोरों के मन में यौन संबंधी अनेक प्रश्न उठते हैं, अपने स्वयं की जननेन्द्रियों या यौन-प्रक्रिया को लेकर उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठते हैं । माता- पिता या तो उन्हें डांटकर चुप करा देते हैं, या फिर अपनी ही गलत धारणाएं उनके मन में बसा देते हैं । परिणाम यह होता है कि बच्चों का सही व्यक्तित्व उभरकर सामने नहीं आ पाता और उनमें कई मानसिक ग्रंथियां तथा मानसिक कुंठाएं उत्पन्न हो जाती हैं जो आगे चलकर उनके दांपत्य जीवन में बाधाएं उत्पन्न करती हैं ।

सेक्स अथवा काम की स्वाभाविक प्रक्रिया



मानवीय आवश्यकता और उनके विभिन्न स्तर

को लेकर युवक-युवतियों के मन में भी तरह-तरह की गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं । फलतः वे भय, चिंता, शरम से आक्रांत हो जाते हैं और विवाह के बाद की प्रथम रात्रि उनके लिए एक इम्तहान बन जाती है, ऐसी परीक्षा जो उन्हें जिंदगी की सबसे बड़ी परीक्षा प्रतीत होती है । युवकों की तरह युवतियों के मन में भी इस



मस्तिष्क का वह हिस्सा जहां से सेक्स संचालित होता है ।

पहले अनुभव के संबंध में झिझक, भय, असह्य दर्द की काल्पनिक आशंकाएं होती हैं । गलत धारणाओं और भ्रमों की शिकार ऐसी युवतियों का कोई गलत शब्द या व्यवहार, या ठंडापन या प्रोत्साहन का अभाव युवक को भी असमंजस में डाल देता है और वह पराजित-सा अनुभव करता है । कई घरों में पूर्ण 'प्राइवेसी' का भी अभाव होता है । जरा-सा शोर, जरा-सा खटका, या इस क्रिया में लिप्त पाये जाने का भय भी इस 'परीक्षा' पर असर डालता है और फलतः कामेच्छा की तृप्ति आनंद का स्रोत न होकर एक 'रस्म अदायगी' बनकर रह जाती है । कुछ लोग पूर्ण आनंद के लिए शराब का सेवन करते हैं । उनका विश्वास होता है कि शराब उन्हें पूर्ण आनंद की प्राप्ति में वर्चस्व स्थापित करने में सहायक होगी, लेकिन ऐसे लोगों को शेक्सपीयर का यह कथन याद रखना चाहिए कि 'शराब इच्छा में वृद्धि तो करती है पर क्रियात्मक क्षमता को छीन लेती है ।' (इट इनक्रीजेस द् डिजायर बट टेक्स अवे द् परफारमेंस)

मनोवैज्ञानिक कारण

सेक्स विज्ञान कहता है कि जहां पुरुष
यौनेच्छा उसके अंग विशेष में उत्तेजना भ
वहां स्त्री के संपूर्ण शरीर में, रोम-रोम में ऐ
जागृति होती है । पशुओं में सूंघने से यह
प्रक्रिया जागृत और प्रबल होती है, वहां
स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के प्रति शरीर के अ
मनोवैज्ञानिक कारणों से भी आकर्षित होते
कतिपय सामाजिक मूल्य भी इसमें महत्त्व
भूमिका निभाते हैं ।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि काम
अथवा सेक्स का प्रथम चरण उत्तेजना
(एक्साइटमेंट) का है और उसके महत्त्व
कम नहीं आंकना चाहिए । यह उत्तेजना क
तरह से पैदा होती है या की जाती है । पुरुष
अथवा स्त्री एक-दूसरे की रुचि के अनुसार
आचरण कर यानी पूर्ण-केलि कर (फोर प
कामेच्छा को जागृत कर सकते हैं । पूर्ण सं
और आनंद के लिए यह प्रथम चरण आव
भी है । लेकिन आम तौर पर लोग इस
महत्त्वपूर्ण चरण को भुला देते हैं और अपने
साथी की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं क
ध्यान नहीं रखते । फलतः सारी प्रक्रिया ए
'यांत्रिक कार्य' बनकर रह जाती है— आन
और रस से शून्य ।

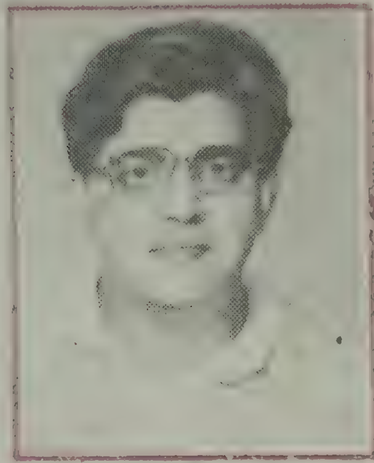
लिंबिक सिस्टम

वास्तव में, कामेच्छा का मूल मस्तिष्क
है । (सेक्स आर्गेन ब्रेन है) ब्रेन या मस्तिष
बीचोबीच एक क्षेत्र होता है, जिसे लिंबिक
सिस्टम कहा गया है । यही लिंबिक सिस्टम
काम-प्रक्रिया (सेक्सुअल फंकशंस्) को
नियंत्रित करता है तथा स्पाइनल कॉर्ड (सु
के माध्यम से हमारी ज्ञानेंद्रियों, जननेंद्रियों

परिवर्तन लाता है ताकि कामेच्छा की पूर्ति संभव हो सके ।

कामेच्छा के कारण पुरुष की जननेंद्रिय का उत्थान उसकी नसों में रक्त भर जाने के कारण होता है । वैज्ञानिक दृष्टि के अनुसार इस अवस्था में छोटी-से-छोटी जननेंद्रिय भी काफी बड़ी हो जाती है । इसलिए जननेंद्रिय की सुप्तावस्था में उसके आकार को लेकर चिंतित नहीं होना चाहिए । आमतौर पर जननेंद्रिय के आकार को लेकर पुरुषों के मन में तरह-तरह की हीन भावनाएं उत्पन्न हो जाती हैं जो उसकी कामेच्छा तृप्ति में बाधक भी होती है । स्त्री की जननेंद्रिय में रतिक्रिया के दौरान एक चिकने व तरल द्रव का स्राव होता है । यह इसलिए कि उसे कष्ट न हो, रतिक्रिया बिना पीड़ा के संभव हो सके । स्त्री की जननेंद्रिय में एक छोटा-सा आर्गन या अंग होता है, जिसे भगांकुर (क्लाइटोरिस) कहते हैं । इसकी स्नायुविक शक्ति (नर्व सप्लाय) पुरुष की जननेंद्रिय से तीन गुना अधिक ही होती है । क्लाइटोरिस के स्पर्श एवं घर्षण द्वारा साथी को आनंद की चरमसीमा पर लाया जा सकता है । स्त्रियों में मल्टीपल आर्गज़म की क्षमता भी अधिक होती है ।

हमारे देश में अधिकांश स्त्रियों के मन में यह धारणा भी गहरे पैठी हुई है कि यौन-प्रक्रिया केवल पुरुषों की संतुष्टि और आनंद के लिए है और उन्हें केवल समर्पित ही होना है । यह धारणा गलत है । मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि में किसी स्त्री द्वारा चरमसीमा का आनंद न ले पाना एक 'साइकोलाजिकल डिस आर्डर' या मनोरोग ही मानते हैं । कामेच्छा यौनेच्छा पर अत्यधिक प्रतिबंध या उनका घोर दमन सेक्स संबंधी रोगों



इस लेख के लेखक डॉ. सतीश मलिक से 'कादम्बिनी'-पाठक अपरिचित नहीं । 'कादम्बिनी' के माध्यम से डॉ. मलिक ने अनेक मनोरोगियों की सफलतापूर्वक चिकित्सा की है । डॉ. मलिक देश के प्रतिष्ठित मनोचिकित्सक हैं । संप्रति वे नयी दिल्ली के लेडी हार्डिंग्ज मेडिकल कॉलेज में मनोचिकित्सा विभाग में निदेशक एवं प्रोफेसर हैं । वे भारत सरकार एवं राष्ट्रसंघ की स्वास्थ्य समितियों के सलाहकार भी हैं । वे इंडियन साइकेट्रिक सोसाइटी के सन १९९३ के लिए अध्यक्ष भी चुने गये हैं । डॉ. मलिक न केवल देश के अन्य विश्वविद्यालयों में वरन विदेश के विश्वविद्यालयों में भी 'विजिटिंग प्रोफेसर' के रूप में जाते रहते हैं ।

का कारण बनता है । वस्तुतः यौन-प्रक्रिया स्त्री-पुरुष दोनों के लिए लाभदायक है, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी और मानसिक दृष्टि से भी । यदि यौन-प्रक्रिया बिना किसी अपराध-बोध यानी 'गिल्ट' के संपन्न होती है, तो वह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी ही होती है ।

रतिक्रिया के दौरान हृदय गति बढ़कर १७५-१८० प्रति मिनट हो जाती है । रक्तचाप में भी सिस्टोलिक २०-८० एवं डायस्टोलिक में १०-४० तक हो जाती है । सांस की गति बढ़कर चालीस प्रति मिनट हो जाती है । स्त्री के गर्भाशय एवं जननेंद्रिय में भी एक प्रकार का

संकोचन होता है । यह सब आनंद की चरमसीमा की ओर ले जाता है । यही नहीं, इसे स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद माना जा रहा है । इस तरह सेक्स और अच्छे स्वास्थ्य में गहरी साझेदारी भी है । चिकित्सकों की राय में सेक्स शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है, विशेषकर हृदय के लिए । पाश्चात्य देशों में हर प्रकार के रोगी को, चाहे वह हृदय रोगी या पक्षाघात का शिकार क्यों न हो, यह सलाह दी जाती है कि यदि वह कामेच्छा को संतुष्ट करने की क्षमता रखता है, तो उससे कतराये नहीं ।

हमारे देश में अब 'सेक्स एज्यूकेशन' या यौन शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा है और अब इसकी चर्चा इतनी 'अछूत' नहीं मानी जाती । स्वस्थ सुखी जीवन के लिए यौन प्रक्रिया की सही जानकारी का होना आवश्यक है । चाहे स्त्री हो या पुरुष, उच्च वर्ग से हों या निम्न वर्ग से, विवाहित हों या अविवाहित, सबको सेक्स के विषय में पूर्ण जानकारी होना जरूरी है

सेक्स का संबंध मस्तिष्क से है, मानसिक है । हमने साठ साल के जवान भी देखे तीस साल के बूढ़े भी । स्त्रियों में एक उम्र रजोनिवृत्ति (मेनोपाज़) के कारण कुछ मनोवैज्ञानिक व शारीरिक परिवर्तन होते वे सेक्स के प्रति उदासीन हो जाती हैं । दृष्टिकोण बदल वे भी पुनः आनंद ले स हैं ।

सारांश में हमें सेक्स के प्रति एक स्व दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यक शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ ब के लिए कामेच्छा की तृप्ति समाज के नि अंतर्गत आवश्यक है । कामेच्छा का दम केवल मनोरोग वरन शारीरिक रोग भी पै करता है । जीवन में विकृतियां लाता है त यौन अपराध को भी जन्म देता है । ●

'मैं उनके बिना नहीं रह सकती' — एक पत्र

मोहब्बत की टीस अब भी महसूस करती हूं

जनाब एडीटर साहब,

इस महीने की 'कादम्बिनी' में 'मैं उनके बिना नहीं रह सकती' नामे मजमून मैंने बड़े शौक से पढ़ा । इसे पढ़कर ही आपको यह खत लिखने का इरादा मैंने किया । आपका यह रिसाला काबिले तारीफ है । मैं इसे कई बरस से पढ़ रही हूं । क्यों, इसका जिकर आगे आएगा । मैं एक मुसलिम युवती हूं । मेरी जबान उर्दू है । उर्दू रिसाले ही पढ़ती हूं और उनमें ही लिखती हूं । 'कादम्बिनी' अकेला हिंदी रिसाला है जो मैं पढ़ती हूं । खत (लिखावट) भी मेरा अच्छा नहीं है । लफजों के हिज्जे भी गलत हो सकते हैं । मुझे माफ करें । खुशकत लिखना बहुत मुश्किल है ।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा मैं एक मुसलिम युवती हूं । हमारा खानदान बतौर मुहाजिर हिंदोस्तान आया था जब यह अजीम मुल्क आजादी के लिए तकसीम हुआ था । चौंकिए मत, हम भी पंजाबी, हिंदू और सिखों की तरह पनाह लेने भारत आये थे, जनरल शाहनवाज के खानदान के साथ । हमारा खानदान चूंकि कांग्रेसी था, मेरे श्वसुर पंजाब सूबा के कांग्रेस के सदर थे । इस वजह से हम लीगी मुसलमानों के निशाना थे । मेरे श्वसुर अदम तशद्दुद के कायल थे और फिरकावाराना दंगों में हिंदू-मुसलमानों में सुलह-सफाई कराने के लिए हमेशा आगे रहते थे । पाकिस्तान बनाने की मांग करनेवाले लीगियों की डटकर मुखालफत करते थे । आखिर आजादी आने के पहले ही पिंडी से लाहौर आते हुए स्टेशन के पास ही उनको कतल कर दिया गया । बंटवारे से पहले

एडिटर साहब, उस दिन अपने शौहर की मौजूदगी में ही मेरा मन गुनहगार बन गया था ।

भड़के दंगों में हमारा घर जला दिया गया । हम वह खाली कर चुके थे । सियालकोट में मेरे शौहर के मामू रहते थे । वह भी लीगी थे और पागलपन की हद तक । बहरहाल, वहां से हम किसी तरह लाहौर पहुंचकर जनरल शाहनवाज साहब के साथ ही भारत आ गये ।

अब इधर मशरिकी पंजाब में हमें सिखों और हिंदुओं को झेलना पड़ा । लेकिन अल्लाह के रहमोकरम से हम कानपुर पहुंच गये । मैं कानपुर की बेटी हूं । मेरे वालदैन यहां थे चुनांचे कानपुर के अलावा हमें पनाह कहां मिलती ?

मेरा निकाह कोई चौदह-पंद्रह बरस की उमर में हो गया था । लेकिन कई बरस तक वालदैन ने मुझे ससुराल नहीं भेजा था । मेरे शौहर की पहली बीवी का उनकी शादी के कुछ महीने बाद ही इंतकाल हो गया था, एक हादसे में । ये कहते हैं कि उसकी सूरत भी नहीं देखी थी ठीक तरह से । मेरे खाविंद निहायत शरीफ और नेकदिल तबियत के इनसान हैं । मिजाज से नरम और शरमीले हमेशा से रहे । पंजाबियत इस कदर है कि यू.पी. की लड़की से रिश्ता करना इनको पसंद नहीं था । लेकिन शरमीले इतने जियादा थे कि यू.पी. की लड़कियां भी शरमा जाएं । अम्मी से बड़ा खौफ खाते थे । अब्बू के चहेते थे । शायद लिहाज और शरम की वजह से ही मेरी तरफ कुछ कम ही तवज्जो दे पाते थे । अम्मी का दबदबा भी बहुत था । हालांकि वह नेकजादी मेरे हुस्न को देखकर ही निहाल हो जाती थीं । मेरे शौहर वाकई हसीन थे । उनके आरिजों पर गुलनारी साया हमेशा दमकता रहता था । अब इस उमर में भी अपनी खूबसूरती की वजह से अपनी उमर से कम ही लगते हैं । लेकिन अम्मी कहतीं, 'बहू पर जो नूर है वह बेटे पर कहां ?'

शायद अम्मी का यह फिकरा भी इनको नागवार लगता होगा । बस, इसी तरह मेरे और इनके बीच दूरी अगर बढ़ी नहीं तो हम जियादा करीब भी नहीं आ सके । अब्बू के न रहने के बाद अम्मी भी जियादा दिन नहीं चलीं । जब हम अकेले रह गये तो मेरे शौहर की बड़ी आपा गालिब हो गयी । वह मुझसे बेहद इश्क करती थीं । चुनांचे उन्होंने भी हमारी दूरियां कुछ जियादा ही बढ़ा दीं । मुल्क का बंटवारा हो गया तो खुदा का शुक्र है कि वह सियालकोट में ही रह गयीं और हम यहां आ गये । लेकिन हमारे रिश्तों में कोई जियादा बेहतरी नहीं आयी । हम मुसीबत में थे । किसी तरह से गुजारा होने लगा । फिर मेहरचंद खन्ना साहब वजीरे आबादकारी बने । पुराने खानदानी ताल्लुकात की बिना पर सरकारी इमदाद में कामयाबी हासिल की और अपने काम में संजीदगी से लग गये । लेकिन मुझसे अपने रिश्तों में कोई संजीदगी फिर भी नहीं दिखा सके । वैसे मुझसे बदसलूकी इन्होंने कभी नहीं की । लेकिन जिसे मोहब्बत कहते हैं, वह कभी इनसे नहीं मिल सकी । अब मैं कुढ़ने लगी थी । लेकिन इनकी बेहद शराफत और शरमीले अंदाज की वजह से कुछ कर भी नहीं पाती थी । ये बस अपने मतलबभर

एक गुजारिश यह जरूर करना चाहूंगी । अगर आप अपने रिसाले के इस अदीब को किसी तरह पहचान सकें तो मेरा पैगाम उन तक पहुंचा दें कि मैं अभी जिंदा हूं और उनकी मोहब्बत की टीस को अब भी महसूस करती हूं । एडीटर साहब बड़ा करम होगा ।

की मोहब्बत मुझसे रखते थे । इस तरफ तो कुछ ठंडी ही तबियत पायी थी ।

ऐसे माहौल में अपना मन लगाये रखने के लिए मैंने पढ़ने का मन बनाया । दसवीं जमात तक कानपुर के हलीम इंटर कॉलेज में मैं हमेशा अव्वल दरजे से पास होती रहती थी । मेरी इस मंशा की खबर मेरे शौहर को भी लग गयी । बस, एक दिन अचानक ये जल्दी घर आ गये और अपने साथ एक अपने-जैसे ही एक हसीन नौजवान को मेरे सामने लाकर खड़ा कर दिया । मुझसे कहने लगे, 'लो इनको सलाम करो । ये तुम्हारे उस्ताद हैं । उमर में मुझसे काफी छोटे हैं तो क्या हुआ, मेरे अजीज दोस्त हैं । इनके पास इल्म है इनका नाम.... है ।' फिर उस नौजवान की तरफ मुखातिब हुए और कहा, 'इन्हें जबानें सीखने का बड़ा शौक है । इनको जितनी हिंदी आती है मुझे तो उतनी उर्दू भी नहीं आती । मेरे अब्बू गांधीजी के चेले थे लेकिन मुझे पढ़ने भेजा पब्लिक स्कूल में । अंगरेजी जबान तो आ गयी लेकिन उर्दू नहीं आयी । पीछे रह गया ।'

मुसलमानों में जितना परदा होता है इतना तो हमारे यहां कभी नहीं हुआ, ताहम एक आड़ तो रहती ही थी । एकाएक उस नौजवान को सामने देखकर मैं चिलमन की आड़ लेकर परदे में होने की कोशिश करने लगी । बरामदे में हमारे साथ खड़ी शरीफन बुआ, घर की नौकरानी, भी मेरे मियां के ये कारनामे हैरत से देख रही थीं ।

लेकिन यह क्या ! मुझसे जियादा तो यह नौजवान शरमा रहा था । उसकी गरदन तो ऊपर ही नहीं उठ रही थी । मैं चिलमन में आधी छिपी उसके रुखसार लाल होते देख रही थी । उस नौजवान की वह दिलकश तसवीर आज भी मेरे तसव्वुर में मौजूद है और मुझे खुशियां दे जाती है । फिर मेरे शौहर ने कहा, 'कहो पंडत, क्या खातिर करें तुम्हारी । लाइए बेगम, इनके लिए फिरनी लाइए ।' इस पर वह नौजवान घबराकर बोला, 'नहीं-नहीं, मेरी कुछ भी खाने की तबीयत नहीं है ।' उस जमाने में चाय का इतना चलन नहीं था । शरीफन फिरनी ले आयी तो उसने फिर मना किया । अब मेरे शौहर उबल पड़े, 'क्या बात है, पंडत, मुसलमानों से परहेज करते हो ? छुआछूत के पाबंद हो ? तुम्हारा धरम चला जाएगा ? हमारे खाने से नापाक हो जाओगे ?' अब उस बेचारे ने कांपते हाथों से रकाबी थाम ली । चमचे मुंह में डाले तो लग रहा था बाहर आ जाएंगे । फिर शायद मीठी होने की वजह से सब खा गये और बेखौफ हो गये । उस दिन ये भी बड़े बेतकल्लुफ थे और अब नौजवान भी सहज हो चुका था । बहुत अच्छा

लगा । पहले जिस खौफ से वह खा रहे थे उसका मजा मेरे शौहर, शरीफन और मैं बहुत देर तक लेते रहे ।

एडिटर साहब, उस दिन अपने शौहर की मौजूदगी में ही मेरा मन गुनहगार बन गया था ।

शायद दूसरे ही दिन से पढ़ाने के लिए वह आनेवाले थे । मुझे बताया गया था कि वह अखबारनवीस हैं । हिंदी के किसी अखबार में काम करते हैं, और कॉलेज में पढ़ते भी हैं । अब कहां बैठकर पढ़ा जाए यह तय नहीं हो पा रहा था । कमरे में बैठने और शरीफन के मौजूद रहने से बेअदबी होगी । सोच सकते थे कि मुझ पर नजर रखी जा रही है । आखिर तय हुआ कि कोठी में पीछे के बरामदे में बैठा जाए और शरीफन वहीं बगिया में बैठी रहेगी या आती-जाती रहेगी । इसमें एतराज वाली कोई बात नहीं होगी ।

शरीफन एक दिन कहने लगी, 'बीबी, ये आपके मुदर्रिस तो ऐसे ही खौफजदा से रहते हैं । शरमाते ज़ियादा हैं । पढ़ाते क्या होंगे ?' मैं भी उसके साथ हंस पड़ी । लेकिन अपने मन की चोरी को मैं अपने से ही छिपाने की कोशिश कर रही थी । कहीं मुझसे कोई गुनाह न हो जाए, इसी तरह की उधेड़बुन मन में होती रहती थी । बरामदे में बैठकर पढ़ने का यह इंतजाम कुछ ही हफ़्ते चल सका । गरमियां आ गयीं । लू चलने लगी थी ।

हम कमरे में बैठकर पढ़ने लगे । वहां शरीफन की आमदरफ़्त भी उस कदर नहीं हो पाती थी । अकेले में बैठकर मेरे मन की वह लड़ाई जियादा तेज हो गयी जिसे 'कादम्बिनी' के उस मजमून, जिसका जिकर मैंने शुरू में ही किया है, में नैतिकता और अनैतिकता कहा गया है । अब मन पर काबू रखना मुमकिन नहीं हो पा रहा था । गुनाह होने के इमकानात बढ़ गये थे । एक तरफ अपने शौहर का खयाल करती थी तो दूसरी तरफ मेरी अपनी मजबूरियां थीं । मेरी भी कुछ बायोलाजिकल जरूरतें थीं । आखिर एक दिन गुनाह हो ही गया । शरीफन तेज बुखार की हालत में नीम बेहोशी की हालत में बाहर चारपाई पर पड़ी थी । इसी वखत साइकिल आने की आवाज हुई । कुछ ही लमहों में वह नौजवान कमरे में दाखिल हुआ । फिर न जाने किन वहशी हालात में एक जबरदस्त झटके से उसे अपने आगोश में जकड़ लिया और उनकी आंखों में झांकते हुए अपनी जबान से उनको नापाक कर दिया । बाद में तो वह इसे 'अमृत का जायका' बताकर याद करते रहे । लेकिन मुझे वह बहिश्ता आबे जिंदगी आज भी कल की सी बात की तरह याद है । उसकी मिठास अब भी महसूस होती रहती है ।

उस दिन जो गुनाह हुआ तो झिझक खुल गयी और फिर तो अकसर ही मुझे आबेहयात मिलने लगा जिससे आगे चलकर जो बीज पड़ा वह अब एक मुकम्मल

दरख्त बन चुका है और माशाअल्ला उसकी कई शाखाएं भी निकल चुकी हैं । मुझे जिंदगी जीने का सहारा मिल गया । हर सिम्त खुशियां छा गयीं । किसी से छिपती नहीं थीं ये खुशियां । वह समझते थे शायद बेटे की खुशी है । ।

फिर उनकी शादी हो गयी । धीरे-धीरे घर आना-जाना भी कम हो गया । मुझसे कटने लगे । मैं रोती तो दिलासा देते । लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि उनकी मोहब्बत में कमी आयी । कुछ बरस बाद आपके शहर दिल्ली चले गये । किसी सफीर के दफतर में मुलाजमत मिल गयी । मैंने अपने आंसुओं का उन्हें वास्ता दिया कि कभी-कभी आते रहें । लेकिन यह सिलसिला भी जियादा नहीं चला । अल्लाह जानता है कि मेरे दिल से वे कभी नहीं गये ।

मेरे शौहर मुझसे मोहब्बत करते हैं लेकिन, जैसा कि इन दो खतों में भी कहा गया, क्या प्यार कर लेना ही काफी है । उस नौजवान जैसे प्यार की खलिश, वह छटपटाहट कहां है । आज भी उनकी याद आ जाने पर ठंडी हवा का झोंका-सा आता है जो दिल और दिमाग को ताजगी बख्शता है ।

एक दिन इत्तफाक से 'कादम्बिनी' देखने को मिली । उसमें उनके नाम का एक मजमून साया हुआ था । लो जी, वह दिन है और आज का दिन है, यह रिसाला मुझसे नहीं छूटा ।

एडिटर साहब, मैंने अपने घर में अपना घर का पता, शौहर का नाम और अपना भी नाम सही-सही लिखे हैं । आप पर पूरा यकीन है कि आप इस खत के सभी नाम पोशीदा रखेंगे । लेकिन उस नौजवान का नामरोशन नहीं किया है । उसे किसी परेशानी से बचाने के लिए ऐसा किया है । एक गुजारिश यह जरूर करना चाहूंगी । अगर आप अपने रिसाले के इस अदीब को किसी तरह पहचान सकें तो मेरा पैगाम उन तक पहुंचा दें कि मैं अभी जिंदा हूं और उनकी मोहब्बत की टीस को अब भी महसूस करती हूं । एडीटर साहब बड़ा करम होगा । शुक्रिया, तसलीम !

— आपके रहम की मुंतजर

—ज.

आत्मनिर्भरता

वेल्ज ब्रिटेन का एक कृषि प्रधान प्रांत है । यहां के किसान कृषि-विज्ञान में निपुण होते हुए भी भेड़ पालन का उद्योग कर रहे हैं । वेल्ज की जनसंख्या से भेड़ों की संख्या कहीं अधिक है । दूध का उत्पादन इतना बढ़ गया है कि गाय के बछड़ों और भेड़ों के मेमनों को कंडेंस्ड दूध पिलाया जाता है ।

कहानी

नौकरी

● डॉ. हरनाम प्रसाद बाजपेयी

दिनभर की भागदौड़ के पश्चात, जब शेखर घर पहुंचकर दरवाजे की कुंडी खटखटाने लगा, तो उससे उत्पन्न मध्यम शोर भी, सिर पर हथौड़ों की मार की तरह, उसको अर्ध विक्षिप्त करने लगा। अभी उसकी छोटी बहन ईना दरवाजा खोलेगी, फिर उसके चेहरे की नाकाम प्रतिच्छाया देखते ही, चुपचाप दरवाजे के एक ओर सरक जाएगी, ताकि वह घर के अंदर जा सके। घर के अन्य सदस्यों की प्रतिक्रिया भी वैसी ही होगी। वह एम.ए. पास है, शिक्षा का कैरियर भी ठीक है, पर वह बेकार बैठा है। पूरे सात महीने हो गये हैं, उसे नौकरी पाने के प्रयत्न करते हुए, पर वह है कि हाथ से छूटे हुए मेंढक की भांति, पकड़ में ही नहीं आ रही है। दो सयानी बहनें, बूढ़े मां-बाप, एक वही है, जिस पर घर चलाने के लिए सभी चार पैसों की अपेक्षा करते रहते हैं, पर नौकरी अभी तक नहीं मिली। अपना दायित्व न निभा पाने के कारण वह अपराध भावना से टूटता जा रहा है।

पढ़ाई के दौरान, वह डिबेट में अच्छा बोल लेता था, और स्वभाव शांत-निर्मल था। मध्यावधि चुनाव होनेवाले थे। पड़ोसी माता बदल पंसारी, पैसेवाले थे, और बड़ी पार्टी के विधायक उम्मीदवार। उनका बुलावा उसके



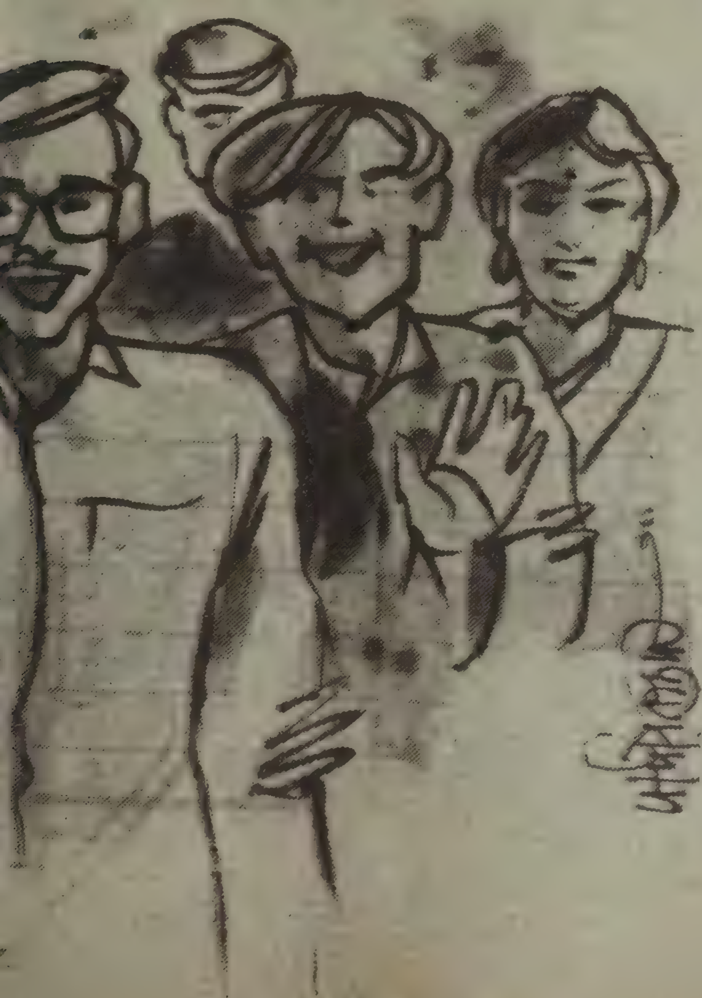
पास पहुंचा ।

रजवाड़ों की भांति, माता बदल चमचों से घिरे बैठे हुए थे । उनमें अधिकांश, शेखर को शुद्ध मल्लाही बोलनेवाले, व कुछ खादी वेषधारी सज्जन दिख पड़े ।

शेखर को देखते ही माता बदल बोले, ''अरे, आ गये शेखर बेटे, कैसे हो, सब ठीक-ठाक हैं ?''

''सेठजी, सुना था घूरे के दिन भी बारह वर्षों में बदल जाते हैं पर एक मेरा भाग्य है । बेकार निकम्मा बैठा हूं । घर... ।''

''निराश क्यों होते हो । बारह बरस क्या, बारह हफ़्ते और इंतजार कर लो । समझ लो, घूरे क्या सोने के दिन बदलनेवाले हैं । चुनाव आ गया है, अपने दिमाग की हरियाली का कुछ अंश, मेरे ऊपर डाल दो । मैं विधायक बना नहीं, कि तुम्हारा परिवार ही ठंडाएगा, और तुम्हारी नौकरी तो बस चुटकियों में ।'' और उन्होंने अपनी तर्जनी और अंगूठे से चुटकी बजा दी ।



उत्साहित होकर उसने कहा, ''एक क्षेत्र है, पूरे पांच-सात सौ वोट पक्के समझिए ।''

''मानिक नोट करो ।''

एक लड़के ने कापी पर क्षेत्र और समय नोट कर कहा, ''विधायकजी, शाम पांच बजे का रखिए ।''

तब तक झटपट नाश्ता शेखर के सामने आ गया था । आज महीनों बाद शेखर स्वस्थ और निश्चिंत होकर खा रहा था ।

मौके पर माता बदल ठीक पांच बजे आ गये । पतली गली के अंतिम छोर की चढ़ाई पार कर वह, शेखर के साथ, बायीं ओर मुड़ गये । शेखर ने एक आदमी से पूछा, ''मुखिया कहां हैं ?''

''लकड़ी की जो टाल है, वहीं मुखियाजी बैठे हैं ।'' कहकर उसने आवाज दी, ''बरसाती बाबू ।''

मुखियाजी बाहर निकले ।

शेखर ने कहा, ''सेठ माता बदलजी हैं । अपने क्षेत्र के विधायक उम्मीदवार ।''

इतना कहनाभर था, कि माता बदल और शेखर के आसपास पंद्रह-बीस मर्द-औरतों और बच्चों की भीड़ एकत्रित हो गयी ।

अपनी कड़कदार मूंछों से शब्दों को छानता हुआ, बनारसी मुखिया बोला, ''चुनाव के साथ, सब वोट मांगने आ जाते हैं, पर बाद को कोई झांकने तक नहीं आता । हम लोग तो उसी की वोट डालेंगे जो काम करेगा ।''

यह सुनकर सेठ माता बदल, गंभीर हो गये, शेखर को लगा कि बाजी हाथों से निकली जा रही है ।

''अरे बताओ और मौका तो दो ।'' माता बदल बोले ।

पढ़ाई के दौरान, वह डिबेट में अच्छा बोल लेता था, और स्वभाव शांत-निर्मल था । मध्यावधि चुनाव होनेवाले थे । पड़ोसी माता बदल पंसारी, पैसेवाले थे, और बड़ी पार्टी के विधायक उम्मीदवार । उनका बुलावा उसके पास पहुंचा ।

"एक नल, यहां की नाली और जो वह कूड़े का ढेर है, उसे पहले हटवा दीजिए ।"

माता बदल ने सामने देखा कि छोटे-मोटे टीले-जैसा कूड़े का ढेर लगा था ।

"मानिक ! ट्रक तो यहां तक आ नहीं पाएगी ।"

सुनकर बरसाती बोला, "गली के नुक्कड़ तक ट्रक आ सकती है, सेठजी ।"

क्षणभर की चुप्पी, फिर सेठजी बोले, "मानिक हैंड-पंप और नाली बनाने की व्यवस्था अभी करवा दो, और कूड़े के लिए राजपूत ट्रांसपोर्ट कंपनी से कहना, शीघ्रातिशीघ्र ट्रक भेजने का प्रयास करे ।"

इतना सुनना था, कि आसपास की भीड़ ने जोरों का नारा लगाया, "माता बदलजी जिंदाबाद ।"

"मैं तो आप सबका सेवक हूं, बस एक बार मौका दीजिए ।"

"निश्चिंत रहें, सेठजी," बरसाती ने कहा, "कुछ पोस्टर-बैनर और झंडे भिजवा दीजिए ।"

"मानिक ।" सेठजी ने इशारा किया ।

कार से, चुनाव की सामग्री बांट दी गयी । फटाफट बच्चों ने ध्वज सजाना शुरू कर दिया ।

लौटते समय सेठजी, शेखर से बोले, "इन सालों का कोई भरोसा नहीं । शाम को दारू पिलेंगे, और सब पार्टियों के उम्मीदवारों को आश्वासन देंगे ।"

"शाम को आफिस आना शेखर ।" अ सेठ माता बदल की कार लौट गयी ।

शेखर ने शाम को, सेठ माता बदल के आफिस में देखा कि वहां स्कॉच का दौर चा था । उसने सोचा कि छोटा एक पाई निगल तो वह चोर कहलाता है, पर बड़ा रुपया भी निगल जाए, तो हाजमे का चूरन बन जाता है पर इससे उसे क्या लेना-देना था । उसे तो ब नौकरी की फिकर थी, जिसकी नकेल माता बदल पंसारी के हाथों में थी । उसने उनके चुनाव में दिन-रात एक कर दिया । वे जीत गये । मात्र चार सौ वोटों से ।

तीन महीनों बाद, बड़ी कठिनाई से वह विधायक माता बदलजी से मिल सका । उस उन्हें नौकरी की याद दिलायी ।

फोन उठाकर विधायकजी ने, नगर प्रशास से कहा, "अपना लड़का है, नगर महापालिक में लगा दें ।"

फिर शेखर से बोले, "जाओ तुम्हें नौकरी मिल जाएगी ।"

उत्साहित और आशा से परिपूर्ण, शेखर प्रशासक के बंगले पहुंचा । चपरासी से बोल "साहब से मिलना है ।"

"मिलने का समय लिया था ?"

"मुझे विधायकजी ने भेजा है ।"

"साहब, अभी तो नहा-धो रहे हैं ।"

शेखर बाहर बेंच पर बैठ गया । एक, दो

और तीन घंटे बीत गये । यह प्रतीक्षा की घड़ियां, जैसे किसी अपराधी को जज के फैसले के मानसिक अंतर्द्वंद्व के समान, शेखर ने बितायीं ।

तभी प्रशासक महोदय बाहर निकले । तपाक से शेखर, उन तक पहुंचकर बोला, "मुझे विधायक माता बदलजी ने आपके पास भेजा है ।"

उपेक्षा से शेखर को, नगर प्रशासक ने देखा, फिर बोले, "मैं आफिस में दो से तीन तक जनता से मिलता हूं ।" और वह कार में जा बैठे ।

शेखर उनके आफिस का चक्कर लगाने लगा । कभी मीटिंग में वे व्यस्त होते, तो कभी नगर से बाहर होते, और शेखर थककर निराश होकर बैठ गया ।

उसने माता बदल सेठ को सारा ब्यौरा बता दिया ।

"चिंता मत करो । बड़ा अफसर व्यस्त रहता है ।"

इस व्यस्तता ने शेखर की मानसिक शून्यता को और गहरा दिया ।

"जिला अधिकारी को पी.ए. की आवश्यकता है । फोन कर देता हूं । उनसे मिल लेना कल ही ।"

जिला अधिकारी के आफिस में चार अन्य प्रत्याशी आये थे । उसका आखिरी नंबर था । तीसरा प्रत्याशी मुसकराता हुआ साक्षात्कार के पश्चात, उसके पास आ बैठा ।

शेखर ने उससे पूछा, "कैसा रहा ?"

"साले ने हमको इंजन ड्राइवर समझ रखा था । पूछने लगा, "अगर कानपुर से दिल्ली, उत्तर-पश्चिम की ओर है तो दिल्ली से कानपुर की क्या दिशा होगी । भला बताओ । क्या मैं भूगोल का मास्टर हूं । नौकरी करनी है कि दिशा बतानी है ?"

उस साधारण से प्रश्न का उत्तर न देने के बावजूद वह कितना आश्वस्त था । शेखर का आत्मविश्वास और बढ़ गया ।

पूरे बीस मिनट, जिला अधिकारी ने उसका इंटरव्यू लिया । हर प्रश्न का सही उत्तर उसने दिया था । नौकरी पाने का पूर्ण विश्वास, उसके दिल-दिमाग में परिंदों की भांति, ऊंची उड़ानें भरने लगा । थोड़ी देर बाद, उसी भूगोल-मास्टर



हर प्रश्न का सही उत्तर उसने दिया था । नौकरी पाने का पूर्ण विश्वास, उसके दिल-दिमाग में परिंदों की भांति, ऊंची उड़ानें भरने लगा । थोड़ी देर बाद, उसी भूगोल-मास्टर संकटा प्रसाद आर्य को, जिला अधिकारी ने, अंदर बुला भेजा । उसे नौकरी मिल गयी, आरक्षण के तहत ।

संकटा प्रसाद आर्य को, जिला अधिकारी ने, अंदर बुला भेजा । उसे नौकरी मिल गयी, आरक्षण के तहत ।

चार दिन बाद, स्वतंत्रता दिवस था । विधायकजी को कई जगहों पर जाकर, ध्वज फहराना था, फिर कुछ-न-कुछ छोटी-मोटी तकरीर भी देनी थी । यह उनके बस की बात न थी । शेखर को बुलाकर, उससे उन्होंने अपने भाषण लिखने का अनुरोध किया । शेखर की निजी नौकरी की समस्या के लिए, वही एकमात्र तिनके का सहारा थे । एक वर्ष से नौकरी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह भी थक, व पूर्ण निराश हो चुका था । मरता क्या न करता, उसने संक्षिप्त कुछ लाइनें उन्हें लिखकर दे दीं । लड़कियों के एक स्कूल में झंडा रोहण करने के बाद विधायकजी बोल रहे थे, ''हमारे परिवार ने, इसी दिन के लिए भूत, भविष्य और वर्तमान में कितनी कुर्बानियां दी थीं । बच्चो... ।'' उनका इतना कहना भर था, कि सब ओर खिलखिलाहट व खुसर-फुसर होने लगी । प्रधानाचार्या भी विचलित-सी जान पड़ीं । माता बदल, क्या भूल हो गयी समझ न पाये । बोले, ''कई अन्य स्थानों पर अभी झंडा रोहण करना है । मैं चलता हूं ।'' और किसी प्रकार वहां से वे खिसक गये ।

''शेखर, यह सब... ।''

''विधायकजी, मैंने तो लिखा था... देश के लाखों परिवारों ने, इसी दिन के लिए, अतीत में कितनी कुर्बानियां दी थीं । आज हम आजाद हैं... ।''

''अच्छा-अच्छा ।'' शेखर चुप हो गया ।

सोते समय शेखर सोच रहा था, उस देश का क्या होगा, जहां माता बदल-जैसे व्यक्ति विधायक व नेता बने बैठे हैं । देश का सुचारु संचालन योग्यता पर होता है । वहां आरक्षण, अनुसूचित जातियों, निम्न व पिछड़ा वर्ग —इन सबों का नारा बुद्धिजीवी नेता क्यों लगाते हैं ? इसका निराकरण —आरक्षण वैसे ही है, जैसे कि साम, दंड-भेद किसी प्रकार से माता बदल-जैसे मूढ़ व्यक्तियों को शीर्षस्थ स्थान पर ला बैठाना । योग्यता के लिए, विशेष नीति नहीं, वरन साधनों का जुटाना अनिवार्य है । योग्यता तो पानी की भांति है । उसका अपना कोई विशेष रूप-आकार नहीं होता । जिस आकार में पानी भरिये, वही पानी का आकार भी होगा । उसके अपने आकार का कोई अस्तित्व नहीं होता, उसी भांति योग्यता भी किसी से बंधी हुई नहीं है । योग्यता किसी नीति से नहीं बांधी जा सकती, और योग्यताहीन समाज व देश, सदैव अंधा होता है । हाथ लग जाए तो बटेर,

वरना शिलाखंड ।

बचपन में ही जब चाणक्य से राजनीति की परिभाषा पूछी गयी थी, तो उसने उत्तर दिया था कि राजा, नीति और अनीति के परिणाम अंतर द्वारा, जब स्वस्थ और कल्याण परिकल्पनाओं को उजागर करता है, तो उसे ही राजनीति कहते हैं, तो आज का समय क्या है ? ठीक वैसा ही जैसे किसी अंधे को हाथी टटोलकर, उससे पूछा जाए कि यह क्या है ? वह अंधा हाथी की टांग को पकड़कर, उसे खंभा बता देगा, या उसका कान छूकर उसे 'सूप' बता दे । और उसने अंधा बनना ही निश्चित कर लिया ।

अगले दिन ही, उसने अपना दाहिना अंगूठा गंडासे से काट दिया । अब वह प्रत्येक 'रोजगार समाचार' को पढ़ने लगा । फिर विकलांगों के लिए आरक्षित रिक्त स्थान हेतु, उसने एक आवेदन पत्र दिया । 'इंटरव्यू काल-लेटर' भी उसके पास आ गया । पूर्ण आश्वस्त होकर वह, इंटरव्यू देने गया । पढ़ने में तेज था ही, उसकी 'जी.के.' भी परिपक्व थी । उसे पूर्ण विश्वास था, कि अब उसे नौकरी तो मिल ही जाएगी ।

उसका इंटरव्यू अच्छा रहा । अंत में इंटरव्यू बोर्ड के एक सदस्य ने उससे उसकी विकलांगता के बारे में पूछा, तो उसने उन्हें अपना कटा हुआ अंगूठा दिखा दिया ।

यह देखकर वे सज्जन बोले, "मि. शेखर आई एम सॉरी । क्या आपको विकलांग किसे कहते हैं, नहीं मालूम ?"

शेखर चुप रहा ।

सदस्य फिर बोला, "यह स्थान आर्थोपेडिक विकलांग के लिए है । आर्थोपेडिक विकलांग उसे कहते हैं, जिस व्यक्ति में न्यूनतम ४० प्र.श. शारीरिक दोष या विरूपता हो, जिसके कारण हड्डियों, मांसपेशियों और जोड़ों को सामान्य रूप से कार्य करने में बाधा पड़ती हो । ऐसा तो कुछ आपके साथ नहीं है । और न ही आपके प्रमाण पत्र में स्पष्ट है । आप जा सकते हैं ।"

शेखर का मन वर्तमान परिस्थितियों की त्रासदी से भर उठा । उसके प्रत्युत्तर में उसने, एक गंभीर व भयानक योजना की निश्चयात्मक परिकल्पना की ।

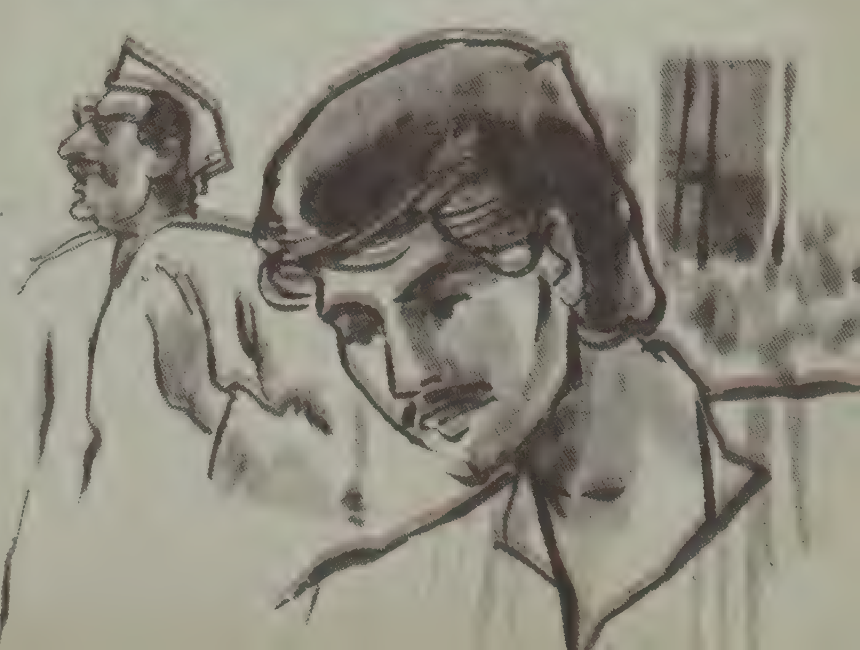
पर वह सीधा-सादा युवक था । ऐसी भयंकर योजना को वह कार्यान्वित भी कर पाएगा, उसमें उसे शंका थी । इसका भी समाधान उसने सोच लिया । शाम होते ही वह, किराना भांगवाले की दूकान पर जा पहुंचा । विधायक माता बदलजी से अब तक वह जुड़ चुका था । इसी कारण आसपास वाले सब उसे जान गये थे ।

"आइये बाबू, बड़ी कृपा की ।"

"एक लंबी वाली, साथ में शंकरजी का बड़ा गोला ।"

"कालिया," किशना ने आवाज लगायी, "बाबू को, मलाई-केसर पिस्ते का बड़ा गिलास और प्रसाद का मल्लाही गोला ।"

गोला निगलकर, शेखर ने ठंडाई की चुस्कियां लेना शुरू कर दिया । थोड़ी देर बाद वह हवा में उड़ने लगा, शेष बौने बन गये ।



फिर पानी में शराब पिये हुए घोड़े की भांति, वह मस्ती में, विधायकजी के बंगले की ओर चल पड़ा।

फाटक खुला था, बाहर तीन-चार कारें खड़ी थीं।

"सेऽऽठ माता बदल", अपने गले की नसों को चटकाता हुआ, वह चीखने लगा, "बाहर निकल ! साला फर्जी वोटों को डलवाकर विधायक क्या बन गया, कि अपने को पहलवान नेता समझने लगा। माल चीर रहा है, काम दिलाएगा। दिमाग से पैदल, भाषण देगा।"

माता बदल की ऐसी सार्वजनिक तौहीन ! लोग हैरान थे, आज शेखर को क्या हो गया है ? क्या वह पागल हो गया है ?"

"देखते क्या हो" उन लोगों को संबोधित करता हुआ, शेखर और गरजने लगा, "सावन लग गया है, वरना तुम्हारी... ।" शुद्ध, भद्दी गालियां अनवरत वह बके जा रहा था।

माता बदल अपनी साख को ढहते हुए बरदाश्त न कर सके। वे भी चीखे, "बांके, बन्ने-तारू, मारो साले को। उसकी हड्डियां तो[ड़] दो।"

शेखर पर लाठियां बरस पड़ीं।

पूरे चार महीने वह अस्पताल में भरती रहा[।] घर लौटा तो उसने देखा, कि उसकी एक टांग छोटी पड़ गयी है। बिना बैसाखियों के वह च[ल] नहीं सकता।

अब वह पूर्ण रूप से आर्थोपिडिक विकलां[ग] बन चुका था। शारीरिक विकृति के दुख से, कहीं अधिक उसे प्रसन्नता थी, कि अब तो नौकरी उसे अवश्य ही मिल जाएगी।

—१०८/१६८, पी. रोड, कानपु[र]

मकड़ी : दुश्मन नहीं, मित्र

मकड़ी सब जगह पाया जाने वाला साधारण जीव है, परंतु इसका जाला असाधारण होता है। इसके शरीर में एक विशेष ग्रंथि होती है, जिससे 'एमिनो एसिड' स्रावित होता है। उसी के कारण यह धागा बुनता है। जाला इसका शिकार को फंसाने का साधन है। इसके जाले की विशेषता यह है कि जीव इसमें से निकलने के लिए जितना छटपटाता है, उतना ही उलझता जाता है, परंतु मकड़ी पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता है। जाले का धागा चिपचिपा होता है तथा टूटता नहीं है।

लोग मकड़ी के जालों को गंदगी समझकर मकड़ी से घृणा करते हैं, परंतु वास्तविकता में मकड़ी हमारी अभिन्न मित्र है। यह उन्हीं गंदे स्थानों पर जाला बनाती है, जहां मच्छर, जीवाणु पिस्सू इत्यादि बीमारी फैलानेवाले कीटाणु होते हैं।

मकड़ी हमें अनेक बीमारियों से बचाती है तथा जाला बुनकर हमें सूचित करती है कि यहां पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई गंदगी अवश्य है।

'प्रेम' के लिए सही शब्द ?

'प्रेम' को 'प्रेम' ही रहने दो !

• मुकेश वि. जोशी

'प्रेम' अत्यंत पवित्र शब्द है और जीवन के साथ इसका गहरा संबंध है। 'प्रेम' की कोई सीमा नहीं है, इसलिए उसका अर्थ भी किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। इसके विपरीत कुछ शब्दकोशकारों ने 'प्रेम' को विभाजित कर दिया है। यह विभाजन उनकी दृष्टि में सही हो सकता है, लेकिन सच पूछा — 'प्रेम' एकार्थी है। अंगरेजी का शब्द 'लव' भी बहु अर्थी नहीं हो सकता। इस संदर्भ को सामने रखते हुए कुछ शब्दकोशों में 'प्रेम' के अर्थों की विवेचना यहां प्रस्तुत की जा रही है।

'ऑक्सफोर्ड हिंदी शब्दकोश' में प्रेम शब्द का अर्थ है—प्रियता, प्यार और स्नेह। 'भार्गव हिंदी शब्दकोश' में इसका अर्थ है—प्रियता, प्रीति, अनुराग। 'नालंदा अद्यतन कोश' में इसका अर्थ है—प्रीति, प्यार, माया, लोभ और—

(१.) किसी के बहुत अच्छा लगने पर सदा उसे पास रहने के लिए प्रेरित करनेवाली मनोवृत्ति।

(२.) स्त्री और पुरुष का पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, तथा काम वासना के कारण होता है।

भ्रामक अर्थ

विभिन्न शब्दकोशों में प्रेम शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ निश्चित रूप से शब्दकोशकारों के मस्तिष्क की निजी उपज हैं। इन विभिन्न अर्थों में रूढ़ शब्द 'प्रेम' के लिए सही एवं सटीक अर्थ कौन-सा है यह जानने के लिए हमें निश्चित रूप से इस रूढ़ शब्द प्रेम के भ्रामक अर्थों के मूल तक पहुंचना होगा। आरंभ यदि हम 'प्रियता' से करें तो प्रियता नामक शब्द प्रिय होने का भाव मात्र है, यद्यपि इस शब्द का प्रेम के साथ संबंध है, किंतु 'प्रेम' के साथ संबंध बनाये रखनेवाले प्रत्येक शब्द को प्रेम नहीं कहा जा सकता यदि हम भी 'प्रिय' होने के भाव मात्र को ही कतिपय शब्दकोशकारों की भांति 'प्रेम' मान लें तो क्या यह हमारी सुशिक्षित, साक्षर अज्ञानता का प्रमाण न होगा ? बहरहाल दूसरा शब्द है प्यार ! शब्दकोशकारों ने 'प्यार' को भी 'प्रेम' की संज्ञा दे दी है किंतु क्या 'प्यार' कभी पवित्र प्रेम का स्थान ग्रहण कर सकता है ? प्यार शब्द का अर्थ है—'प्रेम प्रदर्शन के लिए किया गया स्पर्श, चुंबन आदि। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि प्रेम पवित्र शब्द है तो प्यार उसके प्रदर्शन का माध्यम होने के कारण उसे हम 'प्रेम' क्यों नहीं मान लेते ? चूंकि प्यार

में एक चाह है; एक प्यास है; प्रदर्शन की भावना है; एक कामना है; एक आस है अतः हम प्यार को 'प्रेम' नहीं कह सकते ।

प्रीति 'प्रेम' है ?

तीसरा शब्द है प्रीति ! इस शब्द की व्युत्पत्ति 'प्री धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय लगाकर हुई; जिसका अर्थ है—आनंद; संतोष; हर्ष । अब हम इन तीन अर्थों में से किसी को भी प्रेम कहें तो किस आधार पर ? आनंद का अर्थ होता है—हर्ष; खुशी और सुख । दूसरा शब्द है संतोष; जिसका अर्थ है—'सदा प्रसन्न रहना तथा किसी बात की इच्छा न करना; और किसी बात की चिंता या शिकायत न होना । क्या इन शब्दों में या इनके अर्थों में आपको 'मूल-प्रेम' का अर्थ दिखायी दे रहा है ? नहीं । मात्र भाव है यह क्योंकि सदा प्रसन्न रहना संतोषी की और किसी बात की इच्छा न करना लोभ से मुक्ति की प्रवृत्ति है । इन प्रवृत्तियों को तो प्रेम नहीं कहा जा सकता । तीसरा शब्द है—हर्ष ! इसका अर्थ कोशकारों ने लिखा है—सुखात्मक भाव, आनंद, प्रसन्नता, रोमांच । क्या आपको इन शब्दों में कहीं कुछ प्रेम दिखायी दे रहा है ? जब प्रीति शब्द के अर्थों से तथा उन अर्थों के भी अर्थों से प्रेम शब्द का सामंजस्य नहीं बन पा रहा है । तब हम प्रीति शब्द को प्रेम कहें भी तो कैसे ? और क्यों कहें ?

अनुराग और स्नेह

चौथा शब्द है अनुराग ! वैसे तो शब्दकोशकारों ने 'बच्चन के हालावाद' के साम्य पर हालीवाद के प्रवर्त्तक का श्रेय लेते हुए अनुराग को भी प्रीति; प्रेम घोषित कर दिया है । यदि हमं इन शब्दकोशों पर आंख मूंदे विश्वास ...ने लगे तो यह, हमें केवल भ्रमित ही करते रहेंगे, जैसे आज कर रहे हैं । खैर; अनुराग शब्द की व्युत्पत्ति 'राग' धातु में 'अनु' प्रत्यय लगाने से हुई है जिसका अर्थ है मोह, इच्छा । अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या हम मोह और इच्छा को ही प्रेम मान लें ? नहीं; यह कदापि संभव नहीं ।

पांचवा शब्द है—'स्नेह ।' स्नेह का मूल अर्थ है—चिकनाई ! दुर्भाग्यवश शब्दकोशकारों ने इसे भी प्रेम की संज्ञा दे दी है जो निश्चित रूप से भ्रामक और त्रुटिपूर्ण है । वै स्नेह शब्द का प्रयोग बड़े भाई अथवा बहन के हृदय में अपने छोटे भाई अथवा बहन के लिए जो भाव होते हैं उन भावों के लिए किया जाता है । यदि हम इस स्नेह भाव को प्रेम की संज्ञा दे तो क्या यह न्यायसंगत होगा ? क्या एक पति का अपनी पत्नी पर या एक प्रेमी का अपनी प्रेयसी पर स्नेह हो सकता है ? खैर; इस विवा में न पड़ते हुए हम केवल इतना ही कहेंगे कि स्नेह शब्द 'प्रेम' शब्द का अर्थ नहीं प्रकट कर सकता ।

माया और लोभ

छठा शब्द है—माया । इस शब्द के अर्थ होते हैं—लक्ष्मी; धन; द्रव्य; भ्रम; धोखा; छल जादू । क्या यह सब शब्द 'प्रेम' का स्थान ग्रहण कर सकते हैं ? क्या इनमें से किसी को भी; किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए तो इनमें कहीं प्रेम दिखायी देगा ? इसके पूर्व शब्दों के अनुसार शब्दकोशकारों ने यहां भी न्याय नहीं किया । खैर, 'माया' को छोड़ यदि हम आगे बढ़ें तो हमारे सम्मुख—

सातवां शब्द है—लोभ ! 'नालंदा अधतन कोश' के संपादक श्री पुरुषोत्तम नारायण अग्रवाल ने उक्त कोश में लोभ का

'प्रेम' के व्यापक अर्थ हैं । वह पवित्र है और ईश्वर से भी साक्षात्कार कराता है । लेखक ने उसके मात्र सामान्य प्रचलित अर्थों की विवेचना द्वारा अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । यह विश्लेषण विवादास्पद हो सकता है—हम अपने पाठकों की प्रतिक्रिया जानना चाहेंगे ।

अर्थ-'लालसा, लिप्सा, कृपणता और कंजूसी' बताया है जिनका सामंजस्य 'प्रेम' के साथ कभी हो ही नहीं सकता । इच्छा की भूखी लालसा और लिप्सा ! कंजूसी और क्षुद्रता' लादकर चलनेवाली कृपणता तथा विशेषण को धारण कर धन को खर्च न करके बचा-बचाकर रखनेवाली कंजूसी को हम विद्वान संपादक श्री पुरुषोत्तमजी की भांति प्रेम नहीं मान सकते क्योंकि दूर-दूर तक लोभ का प्रेम अथवा लालसा, लिप्सा, कृपणता, कंजूसी आदि के साथ कोई संबंध नहीं है । लोभ मात्र वस्तुओं के प्रति होता है व्यक्तियों के प्रति नहीं । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने निबंध संग्रह 'चिंतामणि' के 'लोभ और प्रीति' नामक निबंध में लोभ की व्याख्या करते हुए कहा है—'किसी-प्रकार का सुख या आनंद देनेवाली वस्तु के संबंध में मन की ऐसी स्थिति को जिसमें उस वस्तु के अभाव की भावना होते ही—प्राप्ति, सान्निध्य या रक्षा की प्रबल इच्छा जग पड़े; लोभ कहते हैं ।'' उक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि लोभ शब्द का प्रयोग वस्तु के प्रति होता है न कि व्यक्ति के प्रति । अतः लोभ व्यक्ति और व्यक्ति के प्रेम से संबंधित न होने के कारण इसे 'प्रेम' अथवा 'प्रेम' का पर्यायवाची शब्द नहीं कहेंगे ।

आठवां शब्द है—'वात्सल्य' ! अधिकांश विद्वान प्रेम के लिए 'वात्सल्य' शब्द का भी प्रयोग करते हैं अथवा उसे प्रेम का पर्यायवाची मानते हैं । जबकि वात्सल्य का अर्थ है—स्नेह; माता-पिता के हृदय में संतान के प्रति उत्पन्न होनेवाला भाव ! माता-पिता के हृदय में अपनी संतान के प्रति जो भाव होते हैं यदि हम उन्हें 'प्रेम' मानें तो फिर प्रेम को क्या मानें ? यदि हम वात्सल्य को प्रेम अथवा उसका पर्यायवाची ही मानें तो हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि वात्सल्य पति-पत्नी के बीच भी उत्पन्न हो सकता है । क्या यह संभव है ? कदापि नहीं । अतः इस असंभवता के कारण ही हम वात्सल्य को न प्रेम मानेंगे और न ही प्रेम का पर्यायवाची ।

नौवां शब्द है— प्रणय ! 'प्रेम' के लिए कहीं-कहीं प्रणय शब्द का भी प्रयोग किया जाता है । यह शब्द 'नी' धातु में प्र और अच् प्रत्यय के योग से बना है । यथा अच्+नी+अच् । इसमें 'प्र' का अर्थ होता है मूल, नी का अर्थ होता है पहुंचाना और अच् का अर्थ होता है सम्मान करना । इन अर्थों के आधार पर प्रणय शब्द की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है—'हृदय के मूल भाव को व्यक्ति-विशेष तक पहुंचाकर उसके सम्मान करने की प्रक्रिया प्रणय कहलाती है ।' इस व्याख्या के आधार पर हम कह सकते हैं कि हृदय के उस भाव के लिए जिस प्रणय शब्द का प्रयोग किया जा रहा है वह भ्रामक एवं त्रुटिपूर्ण

है । प्रणय में व्यक्ति अपने हृदय के मूल-भाव को व्यक्ति विशेष तक पहुंचाता है अर्थात इसमें किसी पात्र की उपस्थिति अनिवार्य है । हृदय के मूल भाव के संप्रेषण की यह प्रक्रिया प्रणय कहलाती है । यह तो मात्र एक प्रार्थना है जिसे हम व्यक्ति विशेष के सम्मुख कर सकते हैं । इस शब्द की इसी प्रकृति के कारण हम इसे प्रेम नहीं मान सकते ।

'प्रेम' के लिए 'प्रेम' शब्द का प्रयोग

अब तक जिस प्रेम शब्द को हमने भिन्न-भिन्न रूढ़ शब्दों में समीक्षात्मक दृष्टि से देखा वही मूल शब्द 'प्रेम' प्रिय विशेषण का भाव-वाचक रूप है जिसकी व्युत्पत्ति 'प्री' धातु में 'क' प्रत्यय लगाने से हुई है । 'प्री' का अर्थ है—प्रसन्न करना और कः (कच्+ड) का अर्थ है आत्मा । मूल धातु और प्रत्यय के जो अर्थ दर्शाये गये हैं उनके आधार पर यदि हम प्रेम शब्द की व्याख्या करें तो—'वह कार्य जिससे आत्मा प्रसन्न हो; प्रेम कहलाता है ।' प्रेम की इस समष्टिगत व्याख्या से हृदय का वह भाव प्रकट होता है जो नम्रता सिखाता है; अहंकार का नाश करता है; शीलवान बनाता है; श्रद्धाभाव जगाता है; भक्ति के पथ पर चलनेवाला पथदृष्टा बन जाता है । जनकल्याण की प्रेरणा देनेवाले इस पवित्र भाव को ही हम प्रेम की संज्ञा दे सकते हैं, जो सार्थक भी है और न्यायोचित भी ।

'प्रेम शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई; इस प्रश्न को गहन एवं चिंतनातीत बनाने का श्रेय इस शब्द को विभिन्न अर्थों में रूढ़ करनेवाले शब्दकोशकारों को ही जाता है ।'

प्रेम की उत्पत्ति के संबंध में सूरदासजी ने अपना मत प्रकट करते हुए कहा है—

'प्रेम-प्रेम ते होइ प्रेम ते पारहि पड़ये ।'

अर्थात ! प्रेम की उत्पत्ति प्रेम से ही होती है ।

विभिन्न शब्दकोशों में प्रेम के भिन्न-भिन्न अर्थ दिये गये हैं जिन्हें निज-स्पष्टीकरण द्वारा हमने त्रुटिपूर्ण एवं भ्रामक सिद्ध किया है । ये समस्त शब्द न प्रेम के लिए उचित हैं न उसके पर्यायवाची रूप के लिए ।

अतः जैसा हमने आरंभ में कहा है 'प्रेम' का समानार्थी शब्द है ही नहीं । प्रेम, प्रेम है, बस, प्रेम !

नया महल्ला, गोविन्द बाबू के मकान में,
बुरहानपुर, जिला— खंडवा
(म.प्र.)—४५०३३१



हाथियों को नयी जिम्मेदारी

हाथियों के श्रम का उपयोग अब केवल जंगलों व वनों की लकड़ियां ढोने तक सीमित नहीं रह गया है । आज पैट्रोलियम ईंधन के अभाव को देखते हुए केरल में भारतीय रेलवे ने हाथियों को अपने भारी-भरकम वैगनों की शटिंग के काम में लगा लिया है । भारतीय रेलवे का कहना है कि थोड़ी-सी ट्रेनिंग के बाद ये हाथी अपने काम को बखूबी अंजाम देते हैं ।

गोष्ठी

पिन बिहारी टंडन, लखनऊ

पोलैंड में सॉलिडैरिटी आंदोलन कब प्रारंभ हुआ ?

सन १९८० में ।

नेश कौशल, बांदीकुई

: बांस वृक्ष है या घास ? इसकी अधिक ावार कहां होती है ?

यह एक प्रकार की घास है । यह 'ग्रैमिनिये' मक वनस्पतिक परिवार का अंग है । दक्षिण ी एशिया, भारतीय उप-महाद्वीप और प्रशांत ासागर के द्वीपों में बहुतायत से पाया जाता ।

नंदन कौशिक, नारनौल

: एक बार ओलंपिक खेलों में आतंकवादियों यारह इस्राइली खिलाड़ियों की हत्या कर दी । यह कहां और कब हुआ था ?

यह घटना १९७२ में म्युनिख (जरमनी) लंपिक की है । इसके बाद से ही ओलंपिक ेलों में खिलाड़ियों की सुरक्षा के प्रबंध पर तिथेय देश विशेष ध्यान देने लगे थे ।

न्द्र प्रसाद सिंह, किशनगंज (बिहार)

: चित्रांगदा का प्रसंग महाभारत में कहां मिल ता है ?

महाभारत के आदि पर्व में चित्रांगदा की ा दी गयी है ।

ा कुमार, दिल्ली

: बंबई की बस सेवा 'बी.ई.एस.टी.' (बेस्ट) या तात्पर्य है ?

☐ इसका पूरा नाम है 'बांबे इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट ।

मनमथनाथ, कोटा

प्र. : मोटर वाहन दिल्ली में अधिक हैं या बंबई में ?

☐ दिल्ली में तो बंबई, मद्रास और कलकत्ता के मोटर वाहनों को मिला करके भी अधिक हैं । यहां इनकी कुल संख्या १९,९२,०६६ है ।

प्रवीण कुमार यादव, बलिया

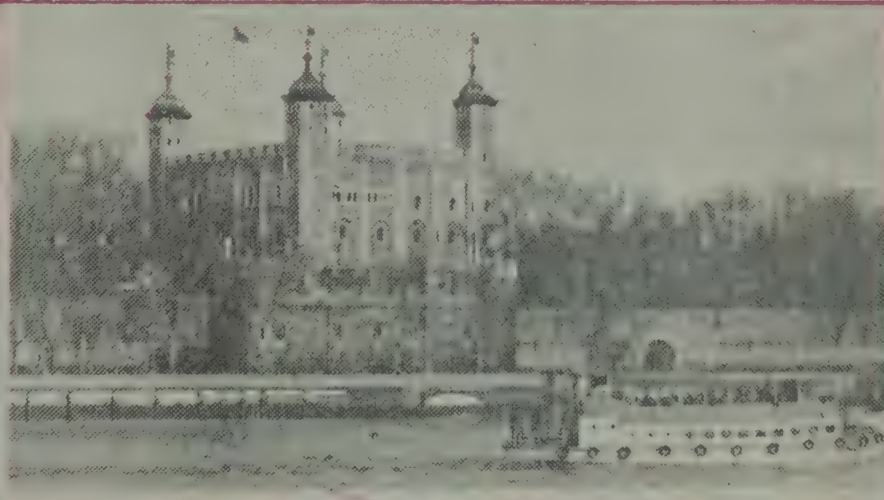
प्र. : राजसत्ता में वृषभ का क्या महत्त्व है ?

☐ हमारी परंपरा में वृषभ को शक्ति का प्रतीक माना गया है ।

चंद्रेश स्वामी, सूरतगढ़; नजमा अंसारी (बहराइच)

प्र. कोहिनूर हीरा कितना पुराना है, भारत से बाहर कैसे गया, अब कहां है ?

☐ कोहिनूर हीरा १३०४ में प्राप्त हो चुका था । आगे चलकर यह मुगल राजाओं के पास रहा, फिर १७३९ में फारस का शहंशाह नादिर शाह इस अप्रतिम हीरे के तत्कालीन मुगल बादशाह से छीनकर ले गया । इसके बाद सिख शासक इसे पुनः प्राप्त करने में सफल हो गये थे, किंतु १८४९ में पंजाब के आत्मसमर्पण के समय ईस्ट इंडिया कंपनी ने इसे सिख शासक से झटककर महारानी विक्टोरिया को भेंट कर दिया । अब यह ब्रिटिश राजमुकुट की शोभा बढ़ा रहा है । (स्रोत : चेंबर्स एनसाक्लपीडिया)



लंदन स्थित व्हाइट टावर जहां विश्वविख्यात 'कोहिनूर' हीरा रखा है



नीरज जैन, जलपाईगुड़ी

प्र. : क्या साँप सींगोंवाले भी होते हैं ?

□ अफरीका और मध्यपूर्व के रेगिस्तानों में एक वाइपर पाया जाता है जो विषैला तो अधिक नहीं होता किंतु डरावना जरूर होता है । इसकी प्रत्येक आंख के ऊपरी भाग पर सींग होते हैं । वाइपर भी सर्प परिवार का एक जंतु है जिसके विषदंत उत्थानशील होते हैं जिनको आवश्यकता न होने पर वह मोड़ लेता है ।

प्रह्लाद जसवानी, मंडला

प्र. : चींटियां पंक्तिबद्ध होकर क्यों चलती हैं ?

□ जब किसी चींटी को कहीं कोई भोज्य पदार्थ मिल जाता है तो वह अन्य चींटियों को उस स्थान तक रास्ता दिखाने के उद्देश्य से आगे-आगे चलती हुई 'फेरोमोन' नामक एक रासायनिक द्रव्य छोड़ती जाती है । इसका सहारा लेकर अन्य चींटियां आगे बढ़ती हैं और इस प्रकार पंक्तिबद्ध हो जाती हैं ।

कुणाल पंडित, नागपुर

प्र. : भारत-वेस्ट इंडीज १९७४ श्रृंखला के अंतर्गत बंगलूर टेस्ट में खेले भारतीय खिलाड़ियों के नाम क्या थे ?

□ सुनील गावस्कर, इंजीनियर, कनिटकर, विश्वनाथ, पटौदी (कप्तान), बी.पी. पटेल, सोलकर, आबिद अली, वेंकटराघवन, प्रसन्ना और चंद्रशेखर ।

योगेन्द्र कुमार सोनी, बारां (राज.)

प्र. : यहूदी धर्म की उत्पत्ति कब की है ?

□ यहूदी धर्म की उत्पत्ति के बारे में कोई सहमति नहीं है । एक अनुमान है कि कोई शताब्दियों से यह चला आ रहा है । इसकी कोई केंद्रीय सत्ता नहीं है और न कोई आधिकारिक धर्म-सिद्धांत । वे मनुष्य के उ व्यवहार को ही अपना धर्म मानते हैं । (स्रो चेंबर्स एनसाइक्लपीडिया) ।

शिप्रा बनर्जी, उज्जैन

प्र. : जेबरा काला होता है और उस पर सफेद धारियां होती हैं, या इसके विपरीत ?

□ जेबरा का अपना रंग सफेद होता है जि धारियां काली होती हैं ।

मोहन कुमार सरकार, अररिया (बिहार)

प्र. : दूरदर्शन पर वक्ता या समाचारवाचक ए छोटा-सा पिन-जैसा यंत्र अपने गले के पास व में लगाये रहते हैं, वह क्या है ?

□ माइक्रोफोन ।

राजेन्द्र नारायण सिंह, भागलपुर

प्र. : मगरमच्छ और घड़ियाल क्या एक ही हैं इनकी कितनी प्रजातियां हैं ?

□ ये दोनों एक ही परिवार, या वर्ग (अथ ऑर्डर) के जरूर हैं किंतु इनकी शारीरिक आकृतियां भिन्न हैं । मगरमच्छ की २० अ घड़ियाल की २ प्रजातियां बतायी जाती हैं इनमें भी भारतीय घड़ियाल सबसे भिन्न त अपने प्रकार का अकेला है ।



विजय शंकर पांडेय, बस्ती

प्र. : मांडव्य ऋषि ने धर्मराज को क्यों शाप दिया था ?

☐ एक भ्रमवश राजा ने मांडव्य ऋषि को शूल पर चढ़ाये जाने का दंड दिया था । किंतु कई दिनों तक भी वह नहीं मरे । अतः राजा ने उनसे क्षमा मांगकर उन्हें मुक्त कर दिया । ऋषि सीधे धर्मराज के पास गये और पूछा कि यह यातना उन्हें किस पाप-कर्म के कारण भोगनी पड़ी (धर्मराज ने उन्हें बताया कि बचपन में उन्होंने एक पतंगे की पूंछ में शूल चुभोया था । ऋषि ने कहा कि १२ वर्ष की अवस्था तक बालक अबोध होता है । इसके लिए उन्होंने धर्मराज को शूद्रयोनि में जन्म लेकर मनुष्य बनने का शाप दिया । अतः द्वापर में वह विदुर के रूप में पृथ्वी पर आये थे । (स्रोत : महाभारत—आदि पर्व) ।

सिकंदर जहां, कानपुर

प्र. : क्या कोई पक्षी कंकड़ भी खाता है ?

☐ शुतुरमुर्ग कंकड़ भी खाते हैं ।

जयसिंह राही, रीवा

प्र. : ताजमहल कितनी लागत से और कब बना था ?

☐ ताजमहल का निर्माण कार्य १६३२ में प्रारंभ हुआ था और १६५२ में बनकर तैयार हो सका था । इसको बनाने के लिए २० हजार मजदूर लगाये गये थे तथा इस पर चार करोड़ रुपयों की लागत आयी थी ।

वंदना कुलश्रेष्ठ, औरंगाबाद महाराष्ट्र

प्र. : रेलगाड़ी जब पुल पर आती है तो उसकी आवाज तेज हो जाती है । ऐसा क्यों ?

☐ रेलवे लाइन के आसपास पड़े पत्थर, धरती की मिट्टी तथा वृक्ष आदि ट्रेन की आवाज को अवशोषित कर लेते हैं, जबकि पुल का लोहा उसकी आवाज का अवशोषण नहीं कर पाता । इसीलिए शोर अधिक होता है ।

वेद प्रकाश मोदी, औरंगाबाद (बिहार)

प्र. : विश्व का सबसे ऊंचा नगर कौन है, और यह कितनी ऊंचाई पर बसा है ?

☐ चिंघाई-तिब्बत मार्ग पर १९५५ में स्थापित वेंचुअन नामक नया नगर विश्व का सबसे ऊंचा नगर है । यह समुद्र की सतह से १६,७३२ फुट की ऊंचाई पर स्थित है । (स्रोत : गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रेकॉर्ड्स) ।

शंकर सुवन अग्रवाल, जालौर

प्र. : मुगलों की राजभाषा क्या थी ?

☐ फारसी (यदुनाथ सरकार), सामान्य जन से संबोधन के लिए हिंदी (स्रोत : 'बारहवीं सदी से राजकाज में हिंदी', ले. डॉ. राम बाबू शर्मा)

साजिद अली अंसारी, भदोही

प्र. : वेस्ट इंडीज का यह नाम कैसे पड़ा ?

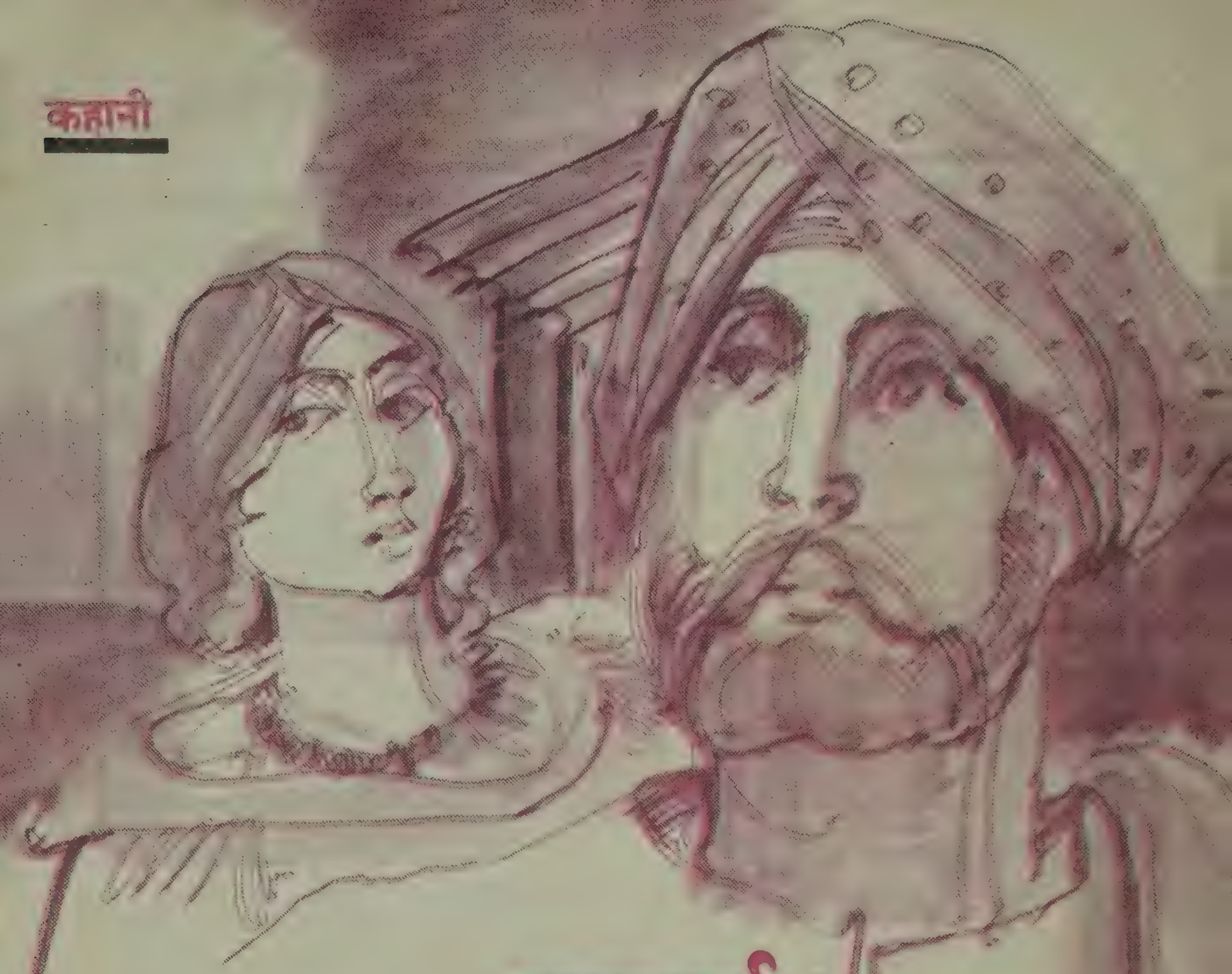
☐ भारत (इंडिया) की खोज करते हुए जब कोलम्बस बहामाज (जो नयी दुनिया के बाह्य भाग पर स्थित है) पहुंचा तब वह यही समझ बैठा था कि अंततः वह इंडिया पहुंच गया है, किंतु वस्तुतः वह पूर्व के बजाय पश्चिम दिशा में आ गया था । बहरहाल, तब ही से ये द्वीप समूह वेस्ट (पश्चिम) इंडीज कहलाते आये हैं ।

चलते-चलते

कोई लड़की मुझसे यदि 'मान्यवर' कहे तो मैं उस 'मान्यवर' का क्या अर्थ समझूं ?

☐ उ. स्पष्ट है कि वह आपसे प्रेम नहीं करना चाहती ।

—सूत्रधार



सच्चाई

• क्रांति त्रिवेदी

चारों तरफ के खेतों में मक्की के पेड़ चार फीट के हो चुके थे । रेड ब्लड माल्टा के फूलों की महक लिये हवा धीरे-धीरे डोल रही थी । अंधेरा होने को ही था । ऐसे में रोज़ उसका पति खेतों से लौटता था । वीरां बाहर खेलते बच्चों को बुला रही होती थी, और वह आना नहीं चाहते थे । तब आने न आने से इतना अंतर नहीं पड़ता था, इसलिए वीरां उन्हें थोड़ी देर और खेल लेने देती, लेकिन अब वे घर के अंदर या बाहर नहीं हैं । उन्हें ननिहाल भेज दिया गया है । वह दोनों भी चले गये होते । क्योंकि अमृतसर से कुछ आगे अटारी सीमा चौकी से कुछ किलोमीटर इधर को उनका गांव और बाग था ।

गुरुशरण ने कहा, "मैं अपनी लहलहाती खेती छोड़कर नहीं जाऊंगा । तुझे जाना हो तो जा ।"

वीरां भला कैसे जाती । आधा काम तो उसे निपटाना होता था । अभी भी वीरां देखने आयी थी कि दरवाजे के बाहर कुछ छूट तो नहीं गया है । यह काम उसे नियम से करना होता था । बच्चे तो बच्चे, गुरुशरण भी सामान बाहर छोड़ आता था ।

आंगन के कोने में उसे घास काटने का

फरसा पड़ा दिखा । यों तो वह छोड़ भी देती, पर थोड़ी-थोड़ी ओस पड़ने लगी थी । रात में पड़ा रहा, तो फिर दिन में भी पड़ा रहेगा । और एकाध जंग का छींटा पड़ गया तो बढ़ता ही जाएगा । उसका गृहणीत्व माना नहीं ।

एक मिनट में जाकर आ भी जाऊंगी । सोचकर वीरां बिल्ली की तरह छलांग लगाती गयी और वैसे ही लौटी ।

उसने दरवाजा बंद किया । हाल में लगाया हुआ मजबूत कुंडा, और लकड़ी का ठेका बंद किया । फिर पलटी तो ठिठककर खड़ी हो गयी । ईंटों की बिछायत से बने फर्श पर जूते के निशान बने थे । उसे मालूम था कि गुरुशरण के पास कोई आया नहीं है । अभी कुछ देर पहले वह उसे रोटी और साग खिलाकर, हाथ-मुंह धुलवाकर नीचे आयी है । घर है ही कितना बड़ा, जो कोई आये और उसे पता न चले । नीचेवाले कमरे तो कोठरियां हैं, बस एक बड़ा कमरा है । वही बैठक है, उसी में मेहमान ठहरते हैं । ऊपर के कमरे में गुरुशरण है । उसके नीचे आने का प्रश्न ही नहीं उठता । उसके पैर में चोट लगी है, वह धरती पर पैर ही नहीं रख पा रहा है ।

स्वयं जाकर देखने को वीरां आगे बढ़ गयी । पहले देख ले तब साफ करेगी ।

दरवाजा ठेलकर अंदर गयी, तो एक उष्ण खुरदरे पंजे ने उसके होंठों को बंद कर दिया । वह तड़पकर दूर हो इसके पहले ही किसी के हाथ ने उसे जकड़ दिया । उसको कानों के पास किसी की गरम सांस का आभास हुआ, फिर कठोर शब्दों की लौहशलाका उसके कानों में प्रवेश करने लगी ।

"देख बीबी, चिल्लाने से कोई फायदा नहीं होने का । जो मैं कहूं, वह करती जा नहीं तो ऊपर की मंजिल पर जितने लोग हैं सबों को भून डालूंगा ।"

वीरां को लगा कि अभी वह चेतना रहित हो गिर पड़ेगी । उसका शरीर निश्चेष्ट-सा हो ही गया था । इसे आगंतुक ने भी महसूस किया होगा । उसने केवल मुंह दबा रखा, दूसरे हाथ से उसने स्टैनगन सामने कर दी । वीरां जाट की लड़की थी । एक क्षण की निर्बलता के बाद उसने शरीर और मस्तिष्क को संभालना आरंभ कर दिया ।

...इसने मुझे मारा नहीं, जरूर कोई बात

कोई राह नहीं थी । वीरां को समय बिताना था । मृत्यु के क्षण को आगे ढकेलने में शायद बीच में कोई राह प्रगट हो जाए । मन में दुर्गाजी की बिनती दोहराती, वह ऊपर चढ़ रही थी ।

होगी । अभी भी आशा है वीरां, अभी भी आशा है । घबरा मत कुछ सोच...

वह इतना तो समझ गयी थी कि वह उसे चिल्लाने नहीं देगा । चुप रहने पर ही कोई बात बन सकती है ।

"घर में कोई हथियार है ?"

वीरां ने एक क्षण सोचकर कहा —"नहीं जी ।"

"अच्छा तुझे इसी कमरे में बंद कर मैं जाकर देखता हूं । मिला तो सबको उसी समय

खतम कर दूंगा ।"

वीरां के हाथ-पैर ठंडे थे, पर उसने अपने हृदय और मस्तिष्क को संभाल लिया था ।

उसे याद आया । बंदूक तो गुरुशरण के तकिये के नीचे है । उसका कुंडा बाहर है ।

यह ऊपर जाते ही देख लेगा । गुरुशरण के जाग उठने की उसे उम्मीद नहीं थी । उसके खर्राटों की आवाज यहां तक आ रही थी । बाहर झींगुर भी बोल रहे थे, पर वह खर्राटों की आवाज पहचानती थी शायद, आततायी ने भी सुन ली होगी ।

'बुरा हो इस नींद का' यह वह हमेशा कहा करती थी । गुरुशरण की जगह यह सो जाए तो... तो वह कुछ न कुछ कर ही लेगी । गुरुशरण की आंख तो अब सुबह ही खुलेगी ।

उसने अपनी बुद्धि संभालते हुए कहा —"ऐसा हथियार तो नहीं, एक पुरानी बंदूक है । चलती नहीं है, डराने को रखी है ।"

"मैं सब समझता हूं । चल ऊपर और वह बंदूक ले आ । मैं तेरे पीछे हूं । देख कोई गड़बड़ न करना ।"

वीरां को उसने छोड़ दिया था, लेकिन स्टेनगन की नली पीठ में चुभी थी ।

कोई राह नहीं थी । वीरां को समय बिताना था । मृत्यु के क्षण को आगे ढकेलने में शायद बीच में कोई राह प्रगट हो जाए । मन में दुर्गाजी की बिनती दोहराती, वह ऊपर चढ़ रही थी ।

उसके स्वस्थ गुलाबी होंठ सीपी से बंद थे, उनके अंदर 'ओ माता शेरांवाली, ओ माता शेरांवाली' शब्द थे । इसके आगे वह कुछ नहीं बोल पा रही थी ।

उसने बहुत संभालकर बंदूक निकाली । गुरुशरण ने नींद में डूबे हुए ही हाथ से टटोला था । उसके हाथ का वीरां के हाथ से स्पर्श हुआ ।

"अच्छा तू है ।" कहकर उसने करवट बदल ली ।

वीरां चाहती भी नहीं थी कि वह जागे ।

सामने आग जल रही थी । उसमें कोई ढकेल दे, तब तो मरना ही मरना है । अपनी इच्छा से तो कूदा नहीं जाता । संपूर्ण अवधि में वीरां को पीछे खड़े हथियारबंद व्यक्ति की उपस्थिति का आभास होता रहा था । उसका शरीर यंत्रचालित-सा हो रहा था । केवल मस्तिष्क सक्रिय था ।

अब वह फिर नीचे और उसी कमरे में जाने को विवश थी ।

वह समझ गयी थी, यह कोई साधारण चोर अथवा बलात्कारी नहीं है, आतंकवादी ही हो सकता है, लेकिन उसे आश्चर्य यह था कि इसने अभी तक उसे मारा क्यों नहीं ।

कमरे में पहुंचकर उसने कहा —"कुछ रोटी-वोटी रखी है । जब घर में रुका हूं, तो खाना भी चाहिए ।"

वीरां ने कुछ उत्तर नहीं दिया तो वह चिढ़ उठा और दांत पीसते हुए कहा —"कुछ बोलती क्यों नहीं । ऐसी गाय-जैसी आंखों से मेरी तरफ क्या देख रही है । मैं तुम लोगों को इसलिए नहीं मार रहा कि दो बजे मेरा एक साथी आनेवाला है, उसके पहले मैं कोई आवाज नहीं कर सकता हूं । अब समझ गयी । जा रोटी ला ।"

वीरां को उसकी मां ने सिखाया था—

"रोटी बन जाए तो एक रोटी कुत्ते की और एक गाय की जरूर निकालना बेटी । बरकत होती है ।" इसलिए नित्य के नियमानुसार उसने

ाल दी थी । यद्यपि अब न यहां गाय थी न
ा । सुबह उठकर उन्हें किसी और के घर
कर खोजना पड़ता था ।

वीरां ने कहा —"अजी दो रोटी रखी हैं,
ा है । आप कहें तो और बना दूं ।"

"यह अजी-अजी क्या लगा रखी है, नहीं
ठीक है, ज्यादा खा लूंगा तो सो नहीं
ऊंगा ? चल जल्दी से ले आ ।"

वह साथ ही गया, ताकि वीरां कुछ न कर
 ।

दो बड़ी और घी में डूबी मोटी रोटी वह दो
ट में खा गया । मानो कई दिन से भूखा
।

पानी की बारी आयी तो फिर स्टेनगन का
ाना बनी वीरां रसोई तक गयी । लौटने पर,
े में खड़ी खाट उठाकर वह उस पर बैठ
ा ।

"कोई रस्सी है क्या ?"

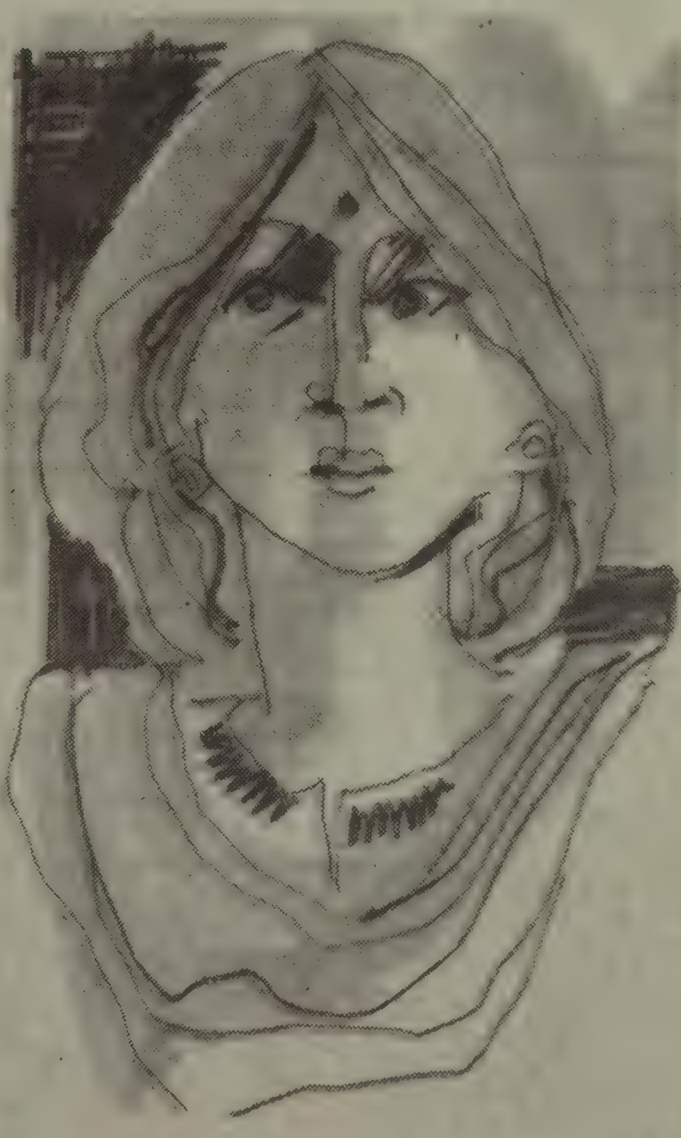
वीरां समझ गयी, वह क्या करना चाहता
इस बार उसने झूठ बोलना उचित समझा
"रस्सी-वस्सी अब कहां । सामान तो चला
ा । हम भी जानेवाले थे, बच्चे चले गये
"

"अच्छा तो यह बात है । अच्छा तू उस
े में बैठ मैं भी बैठा हूं । आखिर तू जाएगी
ं । मेरा निशाना बड़ा पक्का है । साथी का
ा, जाने कहां रह गया, नहीं तो अब तक तो
अमृतसर पहुंच गये होते ।"

वीरां ने भोलेपन का अभिनय करते हुए पूछा
"वहां क्या काम था जी ?"

वह गुर्राया —"तुझे क्या मतलब । उधर
कोई और बात कर । वीरां चुप हुई, तो
का मस्तिष्क बोला ।

सामने आग जल रही थी । उसमें कोई ढकेल दे, तब तो मरना ही मरना है । अपनी इच्छा से तो कूदा नहीं जाता । संपूर्ण अवधि में वीरां को पीछे खड़े हथियारबंद व्यक्ति की उपस्थिति का आभास होता रहा था । उसका शरीर यंत्रचालित-सा हो रहा था । केवल मस्तिष्क सक्रिय था ।



"इसको किसी तरह सुलाना है ।"

उसे ऊपर सोते हुए पति का ध्यान आया —"रब्बा उसे सोते रहने दो —उसे बचा लो । वह बच्चे पाल लेगा ।"

एकाएक उसे यह भी याद आया कि उसका पति सबसे गहरी नींद में कब सोता है ! उसने मन ही मन दोहराया —इसे सुलाना ही होगा । वही एक रास्ता है ।

वीरां ने कहना प्रारंभ किया —"साहब जी, मेरा घरवाला छै महीने से बीमार है जी । आप-जैसा मर्द पहली बार घर में आया है । मैं... मैं ।

जिह्वा लड़खड़ा गयी । आगे के शब्द वीरां कह नहीं पायी ।

"चुप रह मैं-मैं मत कर, मेरी नसें झनझनाती हैं ।" फिर कुछ सोचकर बोला —"अच्छा इधर आ, जरा पैर दबा । चलते-चलते थक गया हूं ।"

वीरां जल्दी से उठी । उसे भय लगा कि कहीं यह विचार न बदल दे ।

वीरां को स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि वह अपने सुन्न से शरीर को लेकर इतनी फुरती से कैसे उठ सकी ।

पैरों के पास, खाट के नीचे ही वह बैठ गयी । और हाथ अजनबी की पिंडलियों पर रखे । उसे फिर आश्चर्य हुआ कि हाथों का कंपन कहां गया ।

स्वर से जितनी मृदुता और लालित्य सम्भ सकता था, वह इकट्ठा कर वीरां ने कहा —"आप लेट जाओ न जी, तब देखना, मैं कैसे पैर दबाती हूं ।"

"नहीं, मुझे नींद आ जाएगी ।"

वीरां ने सोचा उसका अधिक आग्रह संदेह जगाएगा । चुपचाप दबाने लगी । क्रमबद्ध दबाने, रात के घनघोर सन्नाटे, और क्लांति ने उस व्यक्ति की पलकों पर नींद को लाकर बै दिया । एक-दो सेकेंड को वह नींद के वश होता, उसकी गरदन लटकती, फिर वह झट से उठ जाता ।

वीरां ने सोचा ऐसे तो काम नहीं चलेगा बज जाएंगे । इसका साथी आ गया, तब तो जरूर हम लोगों को मार देगा । उसको ऐसी एक छोटी झपकी आयी थी, कि वीरां ने द्रुत से अपना कुरता ऊपर किया और उसके गा को वक्ष की गरमी में डुबो दिया । दस वर्षों विवाहित वीरां खूब जानती थी कि उस गरम कितनी मादकता हो सकती है । एक बार पै बढ़ाकर वह लौटी नहीं चेहरे को सहारा दिये ही उसी खाट पर लेट गयी ।

वह कोई तपस्वी महात्मा तो था नहीं । इ प्रलोभन से बच सकना उस हिंसा और अप के पथ पर चलनेवाले पथिक के लिए असं था । तृप्त होकर थोड़ी देर में वह नींद में डू गहरी निशब्द सांसें ले रहा था, जागती वीरां उसकी नींद को इच्छित गहराई पर पहुंचते महसूस किया, वैसे ही वह उठ खड़ी हुई । उसने एक क्षण को भी आंखें बंद नहीं की थ इसलिए वह उस अंधेरे में आकृतियां पहचा रही थी ।

एक क्षण को उसकी सांस रुकने को हो गयी । नरपिशाच बंदूक और स्टेनगन के ऊ हाथ रखे सो रहा था । वह उसके जाग उठ संकट नहीं उठाना चाहती थी । उसे याद आ फरसा वहीं-कहीं दरवाजे के पास गिरा था । वीरां ने ध्यान से देखा तो खिड़की की दरारों आती चंद्रमा की कुछ किरणों के धीमे प्रका

फरसे का फाल चमकता दिख गया ।

चार डग में वह वहां पहुंच गयी थी, लौटने में तीन डग ही लगे, चौथे में, हाथों की पूरी ऊंचाई, शरीर की पूरी शक्ति, और आत्मा के बल के साथ किसान कन्या वीरां के चरी काटने के अभ्यस्त हाथों ने फरसे से उस नरपिशाच की खोपड़ी के दो टुकड़े कर दिये थे । वीरां किसी भी अनुभूति से परे केवल सोचा हुआ काम करती जा रही थी । उसके माथे से पसीना चू रहा था, लेकिन हाथों में कंपन नहीं था ।

इसके बाद उसने योजना के अंतिम अंश को कार्यान्वित करने के लिए मृतदेह के हाथ को हटाकर बंदूक उठा ली । नली का सिरा अपनी छाती पर रखकर, बंदूक के कुंडे तक अंगुली पहुंचाने का प्रयत्न कर रही थी । पूरा हाथ फैलाने पर भी नली छाती में सीधी नहीं बैठ रही थी, तभी दरवाजे पर एक वेगभरा धक्का लगा और उसकी सांकल खट से नीचे गिर गयी । दरवाजे पर गुरुशरण लालटेन लिए खड़ा था ।

उसने लंगड़ाकर दो डग भरे और वीरां के हाथ से बंदूक छीनकर दूर फेंक दी ।

वीरां गुरुशरण के वक्ष में सिर रखकर बिलख उठी —"अब मुझे मर जाने दो । तुम रहोगे बच्चे पल जाएंगे । मैं अब तुम्हारे लायक नहीं रही । उसे सुलाने को, मैं खुद उसके साथ सोयी थी ।"

गुरुशरण की आंखें दो हिस्सों में बंटी खोपड़ी और उससे बहते खून पर केंद्रित थीं ।

गुरुशरण का गला भर आया । उसके मुंह से बड़ी मुश्किल से शब्द निकले —"वीरां, सोहणिये, तू काहे को मरेगी, मरेंगे ऐसे ही दुश्मन । तू तो मुझे पहले से भी ज्यादा प्यारी हो गयी है । हिम्मत कर, जा कपड़े बदल । हम खेतों ही खेतों पुलिस स्टेशन चलते हैं । टार्च ले आना-लाठी भी । मैं धीरे चल पाऊंगा ।

गुरुशरण के पौरुष भरे संयत शांत स्वर से वीरां एक बार फिर चैतन्य हो उठी ।

बोली —"चलें, जल्दी चलें । वह कह रहा था, दो बजे मेरा साथी आएगा —इसीलिए,.. इसीलिए,.. तो मुझे यह सब करना पड़ा ।"

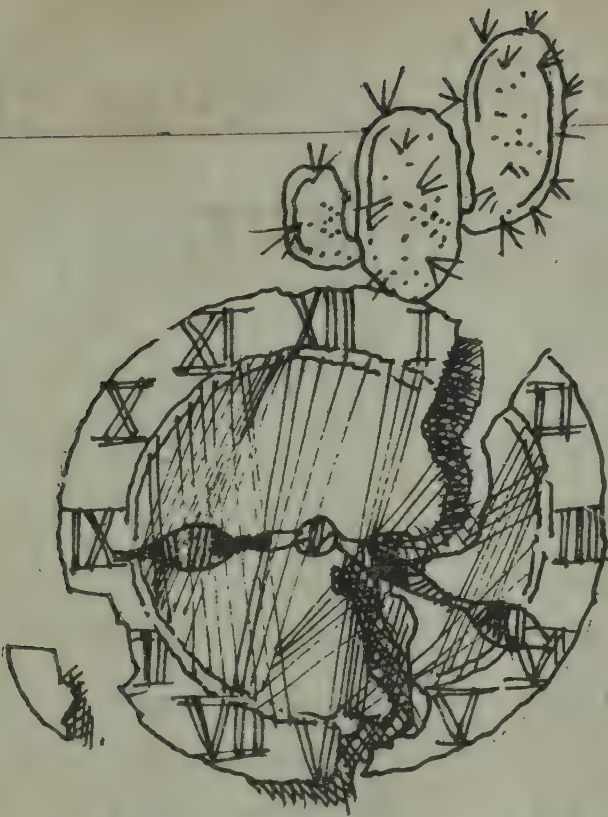
गुरुशरण ने उसे हाथ से आगे बढ़ाकर कहा —"जा वीरां, जल्दी कर ।"

—आर १२/३
नया राज नगर
गाजियाबाद

लंबा जीवन कैसे

अमरीका में सैनिकों की औसत मृत्यु-दर आम नागरिक की अपेक्षा आधी है । एक अमरीकन मेडिकल एसोसिएशन के बुलेटिन के अनुसार जहां एक लाख में सैनिकों की मृत्यु दर १०९ है, तो वहीं सामान्य नागरिक की २१५ है ।

एक मनोवैज्ञानिक जोसेफ एम. रोथबर्ग का यह मानना है निःशुल्क चिकित्सा-सुविधा व स्वच्छ आवास व्यवस्था के साथ-साथ ऐसा वातावरण जहां उद्दंड व्यवहार के विरुद्ध कड़ा कानूनी प्रशासन हो, वहां मृत्यु दर कम करने में बड़ा सहायक रहा है ।



सीढ़ियां नहीं होतीं

नाम में शहीदों के डिग्रियां नहीं होतीं
बदनसीब हाथों में चूड़ियां नहीं होतीं
सबको उस रजिस्टर पर हाजिरी लगानी है
मौतवाले दफ़्तर में छुट्टियां नहीं होतीं
ढूंढ़ते हो क्यों ममता खाड़कू की आंखों में
सिगरटों के पैकिट में बीड़ियां नहीं होतीं
जो तलाश में खुद की चल रहे अकेले हैं
यार उनके पांवों में जूतियां नहीं होतीं
मत करो बुढ़ापे में इश्क की तमन्नाएं
क्योंकि फ्यूज बल्बों में बिजलियां नहीं होतीं
जब से यह पुलिसवाले गश्त पर नहीं आते
तब से इस महल्ले में चोरियां नहीं होतीं
इतनी ऊंची मत छोडो गिर पड़ोगे धरती पर
क्योंकि आसमानों में सीढ़ियां नहीं होतीं
कर्म के मुताबिक ही फल मिलेगा इंसां को
आमवाले पेड़ों पर भिंडियां नहीं होतीं
बूंद में समंदर को जिसने पा लिया 'हुल्लड़'
मंजिलों से उस मन की दूरियां नहीं होतीं

● हुल्लड़ मुरादाबादी

ए- ५९ जिगर विहार दमदमा कोठी, मुरादाबाद
(उ.प्र.) —२४४००१

राख के ढेरों की वसीयत

आग की तू कोई बात न कर
धुएं में ही सारी जिंदगी बितायी है ।
राख के ढेर ही इकट्ठे किये हैं उम्रभर,
इन्हीं की वसीयत बनायी है ।
इनसे मुकरकर मैं इन्हें रुसवा कर नहीं सकती !
हकीकत की आंधी ने जब-जब
इन राख के ढेरों को उड़ाया है,
मेरे त्यागी मन ने बड़े हौसले से इन्हें अपनाया है ।
मैं अपने संस्कारों की मिट्टी से उखड़कर,
सपनों के इस कोहरे से इनकार कर नहीं सकती !
तुम अपने झूठ को भी अपना कह नहीं पाये,
मुझे तो मान केवल अपने सच पर है,
तुम शायद यह भी सह नहीं पाये ।

● शामा

बी-११३ चित्तरंजन पार्क, नयी दिल्ली-११००१९





किशोरावस्था

के सिंहद्वार पर
आये
ले-सुनहरे केशनाग
की मरुभूमि में
ल चपला-सी
न उठी
की फुहार
ागत की आशंका
क्षण उबलती रही
ी में हो गयी
-धवल

चून कणों की बौछार
परिवर्तन का पवन
झुलाता रहा
हौले-हौले
अस्तित्व के आंगन में
फैले हुए
जामुन की डाल
प्रथम परिचय
प्रणय से
स्पंदन और स्पर्श का
संधिस्थल
संक्रमण काल

● जब्बार ढांकवाला

क कलेक्टर, एफ-३, सर्किट हाउस के पास, बस्तर
(म. प्र.)

कतरा-कतरा

दोस्तों की बात मत कर शहर में,
ख्वाब थे, आते रहे, जाते रहे ।

इक परिंदा था जो कब का उड़ गया,
कांपती है शाख़ दिल की आज तक ।

मुसकराकर कत्ल कर डाला मुझे,
अपने कातिल की अदा अच्छी लगी ।

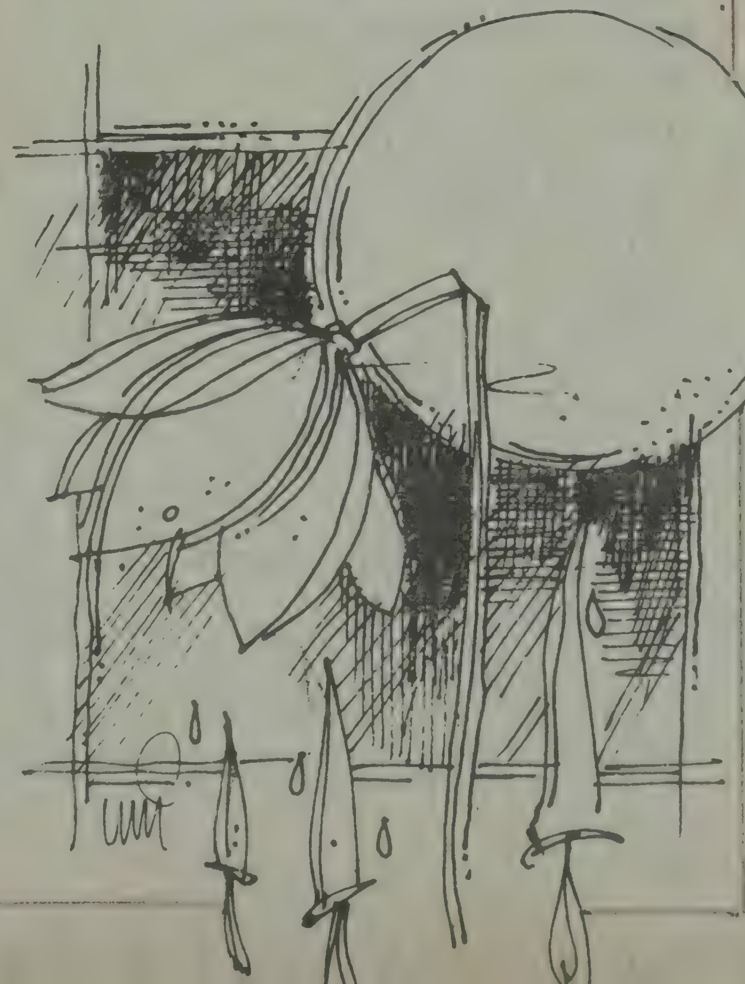
शाहजहां की बातों में अब मत आना ऐ मेमारो,
ताजमहल तामीर कराकर हाथों को कटवा देगा ।

तूफां की तड़प और कभी गहरी खामोशी,
अंदाज समंदर का तेरे दिल को मिला है ।

याद के समंदर में झांकता हूं मैं जिस दम,
एक अक्स पानी में बार-बार हिलता है ।

● नरेन्द्र वशिष्ठ

एच-१९, साउथ एक्सटेंशन-१, नयी दिल्ली-४९



'लइय्या है, चूरा है, चना है—' यह आवाज तीसरे-चौथे मेरे कानों में पड़ती रहती है पर उस ओर कभी ध्यान नहीं जाता। आज मैं उस भुजवा को बुलाता हूं। वह गेट खोलकर अंदर आता है। ठिगने कद का यह काला-कलूटा बनमानुष—जैसा इनसान अपने सर पर एक मजे की वजनदार झल्ली लादे मेरे सामने खड़ा है। वह कांख कर झल्ली उतारता है। तीन बड़े-बड़े झोलों में लइय्या, चूरा और चना भरे हैं। उसके चने उसी की तरह मरजिया हैं, बहुत ही छोटे-छोटे।

"तुम्हारे ये चने तो घुने लगते हैं।"

"ना बाबू, नवा चना है, हां कुछ छोटा जरूर है।"

तभी मैं दो दाने उठाकर तोड़ता हूं तो अंदर घुन देव समाधिस्थ हो चुके थे। उसे दिखा[ता] तो वह लाज के कारण सर नीचा कर लइय्[या के] झोले को संभालने लगता है। मैं थोड़ी ला[ई] खरीद लेता हूं। उसकी वजनदार झल्ली उठवाकर उसके सर पर रखवा देता हूं।

वह लइय्या-चना वाला तो चला जाता [है] मन में न जाने क्यों और कैसे गंगाचरन भुज[वा] की आकृति कौंध जाती है। मेरे अपने गांव [के] पीछे की गली में नीम का एक पुराना हाहाभू[त] पेड़ था। उसके नीचे कुछ गोल-गोल चटरे-बटरे रखे थे। गांव के लोग उन्हें देवी शीतला मैया कहते थे। इसी नीम के बगल [में] एक लदुआ और छप्परवाला मकान था। मकान के सामने एक छप्पर के नीचे भाड़ ब[ना] था। यह घर था गंगाचरन का।

अथ भड़भूजा माहात्म्य

जब तक गांव रहेंगे तब तक भाड़ रहेगा

● डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा

भाड़ हमारे ग्राम्य-जीवन का एक अभिन्न अंग बना हुआ है। बिना भाड़ के किसी गांव की कल्पना ही नहीं की जा सकती। आज मेरे गांव में गंगाचरन नहीं हैं। पर उनके पुत्र गंगासागर तो हैं। भाड़ जीवित है। भुजाई का काम यथावत है। गंगासागर न रहेंगे तो उनका पुत्र रहेगा जो भाड़-संस्कृति को जीवित रखेगा। जब तक गांव रहेंगे तब तक भाड़ रहेगा।

गंगाचरन को कभी मैंने जूता पहने नहीं
ा । भार (भाड़) के धुएं से काली हुई धोती
र मारकीन की बनियाइन— ये ही वे सभी
ुओं में पहनते थे । वे सप्ताह में दो
—बुधवार और रविवार को तीसरे पहर
ना भाड़ जलाते थे । गांव की लड़कियां,
यां अपनी-अपनी डलियों में चना, गेहूं,
रा, चावल, भटवांस, अरहर, जुआर, मकई
दि लेकर गंगाचरन के द्वार पर आ जाती
। गंगाचरन का लड़का गंगासागर
ड़-झोंकता था; गंगाचरन और उनकी पत्नी
ना भूजते थे । भाड़ के एक ओर गंगाचरन
ते थे, दूसरी ओर उनकी पत्नी । दोनों हाथों
ड़े-बड़े करछुले पकड़े भाड़ के मेटुकों से
ू निकालकर कूंड़ी में डालते और उसी में
के दाने डालकर ऊपर से दो करछुला बालू
तकर खूब चला देते । दाने उछलते, खूब
लते पर उछल-उछल कर बार-बार कूंड़ी की
ू में ही गिरते । बिलकुल उसी तरह जैसे

गांव के गरीब लोग साहूकारों से ब्याज पर रुपया लेते, ऋण-मुक्ति के लिए खूब उछल-कूद करते पर फिर उन्हीं के पास जाना पड़ता— *'मारौ-तोरौ गोसैयां, इज्जति तुमरे हाथ ।'* सूफी कवि जायसी को भी नागमती के विरह-वर्णन में 'भाड़' का उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ा :—

''लागिउं जरै, जरै जस भारू। बहुरि जो भूंजसि तजौं न बारू ॥''

उन दिनों भुजाई के बदले में पैसे नहीं दिये जाते थे । गंगाचरन को यह अधिकार-सा था कि वे अंदाज से भुजौनी के बदले डलिया से अन्न पहले ही निकाल लेते थे । कभी-कभी दो-एक कंजूसों से उनकी तकरार भी हो जाती थी । पर भुजौनी वे अपने मन से ही निकालते थे । सूर्यास्त के बाद मुंह अंधेरे तक भुजाई का काम चलता रहता । ये तीनों प्राणी—गंगाचरन, उनकी पत्नी और लड़का—बड़ी तन्मयता के साथ अपने काम में लगते थे । जब भाड़ बंद



हो जाता था तो भुजौनी में प्राप्त अन्न एकत्रित कर गंगाचरन की पत्नी अलग-अलग मटुकियों में भर देती। इसी से तो परिवार का गुजर-बसर होता था।

वर्ष में कुछ विशेष अवसर आते थे जिनमें गंगाचरन के भाड़ पर भीड़ अधिक हुआ करती थी। भादौं के महीने में हरछठ का त्यौहार पड़ता है। सभी घरों में पुत्रवती माताएं यह त्यौहार व्रत के साथ मनाती हैं। हरछठ का भित्ति चित्र बनाकर नीचे छोटे-छोटे कुलै कुड़ैलों में छह प्रकार का भुना हुआ अन्न भरकर पूजा करती हैं। आंगन में कुश और ढाक की डाल गाड़कर उसके नीचे भी अन्न भरकर कुड़ैले रखती हैं। हरछठ को गंगाचरन प्रातः चार बजे ही भाड़ जला देते थे। लोगों का तांता लग जाता था पर गंगाचरन प्रथम आगत प्रथम स्वागत के अनुयायी थे। क्या मजाल कि कोई बाद में आये और पहले भुजाने की कोशिश करे। ऐसा करनेवाले को वे फटकार देते थे। हां, गांव के नंबरदार और उपरहित महाराज के लिए यह नियम लागू नहीं थे। वे जैसे ही आते कि गंगाचरन पहले उनका चबेना भूजते फिर दूसरे का। भाई, नंबरदार सारे गांव के मालिक थे। उन्हीं की जमीन सब जोतते थे। उन्हीं को सभी लोग लगान देते थे। और उपरहित महाराज पूरे गांव के पूज्य थे। सत्यनारायण की कथा वे सुनाते थे, लगन वे विचारते थे, शादी-ब्याह वे कराते थे, गया तथा बदरीनाथ के तीर्थों का ब्रह्मभोज वे कराते थे। इसलिए ये दोनों लोग तो गांवभर में वी.आई.पी. थे। पर इनके अलावा कोई भी नंबर के पहले नहीं भुजा सकता था। इस मामले में गंगाचरन धुन्नी साह, जिनके दो दुकानें थीं, तक को नहीं सेटते थे।

हरछठ के दिन लगभग ग्यारह बजे दिन त गंगाचरन के द्वारे चबेना भुजानेवालों की भीड़ लगी रहती थी। लोग नीम के पेड़ की छाया मे बैठे बतियाया करते—औरतें औरतों से बतलातीं, मरद मरदों से। कभी-कभी गांव के एक-दो छैला दबी जबान से अपनी भाभियों से कुछ चुहल कर लेते। गंगाचरन का अनुशास बड़ा कड़ा था। जहां वे कुछ बेजा देखते, कह देते—"भाई, भुजावै आए हौ तौ चुप्पै बइठौ अइसी-वइसी लबराव ना। नहीं तौ हमरे दुअ तेने रस्ता नापौ। हम का सोहदई नहीं परसंद।

इसी प्रकार मकर संक्रांति में सकठ के पर्व के समय गंगाचरन के यहां एक सप्ताह पहले ही भुजाई का कार्य शुरू हो जाता। लगातार छह-सात दिन भाड़ जलता था। गरीब-अमीर सभी लोग लइय्या, चना, बाजरा, मक्का, जुआ आदि डेलवा भर-भरकर भुजाते थे। गुड़ के जलाव में इनके धूंधे बनाये जाते और सकठ माता की पूजा के बाद पंद्रह-बीस दिन तक लो उन्हीं का नाश्ता करते। सकठ के समय गंगाचरन को कई बोरा अन्न भुजाई में प्राप्त होता। एक ही आसन पर बैठे-बैठे वे करछुल से बालू निकालते रहते, कूंड़ी में डालकर करछुला से चलाकर झट तारवाले झन्ना में डालकर चाल देते। हाथ थे कि मशीन। एक ओर वे भुजाई में जुटते उधर दूसरी ओर उनकी पत्नी। वह भी बड़ी फुर्तबाज थी।

गंगाचरन तो रूप-रंग में करिया और काठ के बेडौल थे पर उनकी पत्नी गोरी-चिट्टी और अच्छी श्री वाली थी। भुजाई करते-करते कभी-कभी गंगाचरन अपने माथे का पसीना पोछते हुए उसके कपोलों पर मोती जैसी पसीने की बूंदों को देखकर दूने उत्साह से करछुला

वलाने लगते । कभी-कभी दोनों की आंखें चार हो जातीं तो वह बेचारी लजा जाती । उधर गंगासागर पाती-खरफूस झोंकने में लगा रहता । राब की चुपरी रोटी काट-काट कर खाता जाता और झोंकाई करता रहता ।

बैसाख मास की अष्टमी को सत्तू अष्टमी का पर्व मनाया जाता है । उस दिन हर घर में सत्तू ही खाये जाते हैं । कोई राब मिले गीले-गीले सत्तू चाटता है, कोई गुड़ के टोरों से मिले पिड़िया बना-बनाकर खाता है, कोई नमक-मिर्च के सत्तू गीलपट्टा बनाकर खाता है । अपनी-अपनी रुचि । मेरे गांव में गंगाचरन न होते तो सत्तू दुर्लभ हो जाते । वे ही तो जौ-चना तथा खालिस जौ वाली गुरी को भूजते थे । गुरी की भुजाई में गंगाचरन बड़ा ध्यान रखते । गुरी जरा-सी खरी भुन गयी तो पिसाई के बाद सत्तू खरस्याइन्धि देने लगते और जरा-सी सेवर हो गयी तो सत्तू कचियाइन्धि देने लगते । गुरी की भुजाई में गंगाचरन और उनकी पत्नी दोनों बड़ी सावधानी बरतते थे । अष्टमी के एक सप्ताह पूर्व से ही लोग गुरी भुजाने लगते थे । गांव में एक भी ऐसा परिवार न बचता था जो गुरी न भुजाता हो । इस समय भी गंगाचरन को कई बोरा अन्न भुजाई का मिल जाता ।

आषाढ़ का प्रथम दौंगरा गिरते ही लोग कचवांसी (अरहर के छोटे-छोटे दाने) भुजाने के लिए गंगाचरन के द्वार पर पहुंच जाते । कचवांसी के भी सत्तू बनते हैं, जो केवल बरसात में खाये जाते हैं और केवल मिर्चावाले नमक से सिरका में पिड़िया बोर-बोर कर खाये जाते हैं । इन दिनों भी गंगाचरन को अच्छी अन्न की राशि मिल जाती थी ।

खेतों में जब रबी की फसल कटती और



खलियानों में भड़ाई के बाद राशि तैयार होती तो किसान सात अंजुरी अन्न देवीजी का निकाल देता और एक टोकरी गेहूं प्रसाद के लिए निकाल देता, शेष घर में रख देता । प्रसाद वाला गेहूं भुजवाया जाता, उसमें गुड़ मिलाया जाता । तब गुरधनियां तैयार हो जाती । यह गुरधनियां पहले महादेव बाबा के मंदिर में चढ़ायी जाती फिर प्रसाद में बांटी जाती । *"लेव लरिकवऔ गुरधनियां"*— की आवाज सुनते ही लड़के गुरधनियां का प्रसाद लेने दौड़ पड़ते । इन दिनों गेहूं की भुजाई में गंगाचरन को एक-दो बोरा गेहूं मिल जाया करता था ।

मक्का की कटाई के बाद गंगाचरन के यहां लावा भुजवानेवालों की भीड़ लग जाती । जुआर के भुट्टे तैयार हुए कि लोग मुरमुरी भुजवाने भाड़ पर पहुंच जाते । जिससे गंगाचरन नाराज होते उसका चबेना या तो खरा कर देते या सेवर कर देते । जहां कोई शिकायत करता वे साफ-साफ कहते— "अपने घर मां भूजि लीन करौ । हम तेने जइस भूजत बनत है वइस भूजित है । ज्यादा किमियादलाली न छांटा करौ । चले हैं हम का रिवावै ।"

गांव में गंगाचरन का अकेला भुजवा का घर था । कोई उनसे तकरार करके कहां जाता ? चबेना कहां से भुजाया जाता, सत्तू कैसे बनते, सकठ के धूंधे कैसे बनते ? इसलिए गंगाचरन की बातें लोग चुपचाप सुन लेते थे । इस कान से सुनते उस कान से निकाल देते । मरता क्या

न करता— वाली बात थी ।

जिन दिनों भाड़ न जलता उन दिनों गंगाचरन अपने भाड़ की सफाई करते, अंदर की राखी निकालते, ऊपर लीपापोती करते और बालू भरते । ईंधन का इंतजाम भी तो करना रहता था । भाड़ में जलाने के लिए गंगाचरन पतझार के मौसम में खरहंचे से आम और महुए की सूखी पत्तियों को बटोरकर घूहा लगा देते । वे कई बागों में अपने घूहे लगा देते । चैत शुरू होते ही जैसे ही सरसों और गोहुआ कटता, लोग पीट-पाट कर सरसों तो घर उठा ले जाते और पिंजर वहीं पड़ा रहता । यह पिंजर गंगाचरन खारा में भरकर अपने दरवाजे के छप्पर के नीचे जमा कर लेते । वर्षा के दिनों में इसी से वे भाड़ जलाते । इस प्रकार उन्हें जलाने के लिए ईंधन मुफ्त में ही मिल जाता था ।

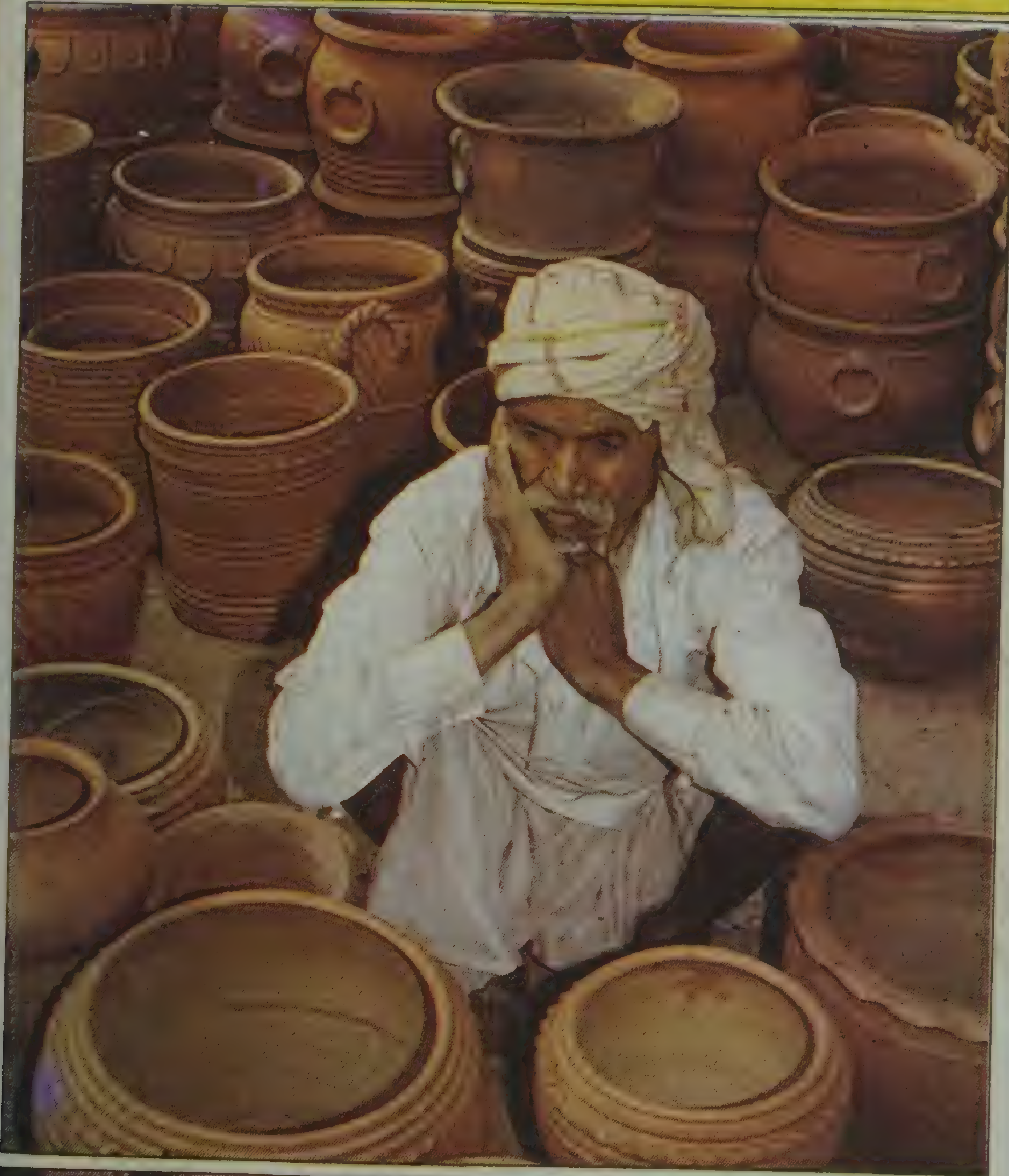
गंगाचरन भाड़ की राखी से कभी-कभी सकरकंद और आलू भी भूजते थे । जिससे उनका बहुत अच्छा व्यवहार था केवल उसी को वे उपकृत करते थे । हां, नम्बरदार और उपरहित महाराज को वे कभी इनकार न करते थे । वे बड़ी विधि के साथ आलू-सकरकंद भुजाई का कार्य करते थे । भाड़ से राखी निकालकर बाहर डालते, उसके ऊपर आलू या सकरकंदें रखते और फिर राखी निकालकर ऊपर से डाल देते । मंद-मंद आंच में आलू-सकरकंदी भूजकर तैयार हो जातीं । भूजी हुई सकरकंदों के स्वाद का क्या कहना ? केवल वही जान सकता है, जिसने कभी भुनी हुई सकरकंदें मट्ठा या दूध में मींजकर खायी हों । गंगाचरन जब कभी सकरकंदें भूजते थे, मुझे जरूर देते थे क्योंकि उनके यहां, चार-छह महीने में जब कभी कोई चिट्ठी आती थी तो वे मुझसे ही उसे पढ़वाते थे और उत्तर भी लिखवाते थे । उन दिनों गांव में चिट्ठी चुपके पढ़वायी और लिखवायी जाती थी । गंगाचरन का मुझ पर विश्वास था तभी वे मुझसे ही यह काम लेते थे और बदले में सकरकंदें खिलाते थे ।

भाड़ हमारी संस्कृति का एक अंग बन गया है । गांवों में बरात जाने के पूर्व वर भड़भूजे के द्वार पर लाई भुजाने के लिए जाता है । गंगाचरन के द्वार पर जब सजा-सजाया दूल्हा पेरी-झंगवा पहने, पटुका बांधे, शीश पर मौर धरे गंगाचरन के दरवाजे लाई भुजाने आता तो गंगाचरन भी सफेद धराऊं धोती और कुरता पहनकर पल्लेदार टेढ़ी टोपी लगाकर उसका स्वागत करते थे । लाई भुजौनी गंगाचरन को नेग के रूप में एक या दो रु. मिलते थे । नंबरदार से तो वे चिह्न के रूप में आम का एक पेड़ लेते थे । धुत्री साह से वे एक पीतल का थाला या बटुआ लेते थे । गरीब-अमीर सभी लाई भुजाने भाड़ पर जाते थे । गांवों में आज भी यह प्रथा जीवित है ।

भाड़ ने लोक साहित्य को बहुत-कुछ दिया है । 'भाड़ में जाए', 'भाड़ में झोंक दो', 'अलहनि गईं भुजावै भाड़ गया फूट', 'भाड़ जस तपना' आदि लोकोक्तियां पूरे हिंदी क्षेत्र में प्रचलित हैं । स्त्रियों का 'दुरकइयां' का पूजन भी तो भाड़ पर ही निर्भर रहता है । चने भुजाकर गुड़ के साथ रख कर पूजा होती है फिर निमंत्रित सात सुहागिनों को दुरकइयां चबवायी जाती हैं । *'धीरे धीरे दुरकीं चबायो रे सुहागिल, जियरा भरा हुलास रे ।'*

भाड़ हमारे ग्राम्य-जीवन का एक अभिन्न अंग बना हुआ है । बिना भाड़ के किसी गांव की कल्पना ही नहीं की जा सकती । आज मेरे

मिट्टी एक : रूप अनेक : काम अनेक, मिट्टी से दीपक बनते हैं, गमले बनते हैं, बरतन बनते हैं और अब तो गरीबों के रेफ्रीजरेटर भी । यही मिट्टी भड़भूजे के लिए भी बड़े काम की होती है ।







गांव में गंगाचरन नहीं हैं । पर उनके पुत्र गंगासागर तो हैं । भाड़ जीवित है । भुजाई का काम यथावत है । गंगासागर न रहेंगे तो उनका पुत्र रहेगा जो भाड़-संस्कृति को जीवित रखेगा । जब तक गांव रहेंगे तब तक भाड़ रहेगा ।

—सी-१०, के रोड, महानगर (विस्तार)
लखनऊ-२२६००६



जीवन का अर्थ है जीना और मजे में जीना

• डेविड फ्रेंड

क्या आपने कभी मानसिक एकांत भोगा है ? क्या आपने सोचा है कि हम इस ब्रह्मांड के अंश के रूप में जीवित हैं, तो इस 'जीवन' का क्या अर्थ और उद्देश्य है ? क्या हम स्वेच्छा से उत्पन्न और जीवित हैं, या फिर इस जीवन को बनाये रखना हमारी इच्छा पर निर्भर है ? 'हम' आखिर हैं क्यों ? न होते तो क्या होता ?

इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हम स्वेच्छा से उत्पन्न नहीं हुए हैं अर्थात, हमारा 'जीवन' किसी 'अन्य' का पुरस्कार है। यह भी निश्चित है कि हम जो भी नानाविध क्रियाएं सहज या प्रयत्नज करते रहते हैं, वह भी अधिकांशतः कहीं से नियंत्रित हैं। तथा यह मानने में भी कोई आपत्ति न होगी कि इस 'जीवन' का समापन हमारे स्वयं के द्वारा नियंत्रित क्रिया नहीं है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न सहज उपस्थित हो जाता है कि फिर हम 'अपने' 'कितने' हैं ? मैं प्रश्न को दार्शनिकता की सीमा तक खींचने का प्रयास नहीं कर रहा हूं। यह जो हाहाकार-चीत्कार, आक्रमण-बचाव, हर्ष-विषाद आदि का खेल हम नित्य प्रति देख रहे हैं, वह 'जीवन' के लिए ही तो है। उस जीवन के लिए, जिसकी उत्पत्ति और जिसके समापन पर हमारा नियंत्रण नहीं।

क्या जीवन यही है कि 'शरीर' नामक पदार्थ की सुरक्षा और सुविधा के लिए कुछ भी कर डाला जाए ? क्या एक 'जीवन' दूसरे से अधिक मूल्यवान सिद्ध किया जा सकता है ?

यह निर्विवाद है कि इन प्रश्नों का समापन

जीवन का अर्थ क्या है ? उसका उद्देश्य क्या है ? कौन-सा जीवन सार्थक है और कौन-सा निरर्थक ! क्या जीवन ईश्वर की देन है या मात्र एक संयोग ! आखिर हम क्यों जिंदा हैं ? किसलिए ?

ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जो मानव मस्तिष्क को पिछले ढाई हजार वर्षों से परेशान करते आये हैं। लोगों ने अपने-अपने ढंग पर इन प्रश्नों के उत्तर भी खोजे हैं। हाल ही में छत्तीस देशों के विभिन्न वर्गों के लोगों से यह एक प्रश्न पूछा गया— 'जीवन का अर्थ क्या है ?'

यहां प्रस्तुत हैं, इसी प्रश्न के उत्तर में प्राप्त कुछ विचार—



नहीं है, साथ ही यह भी कि इनके उत्तर विभिन्न 'जीवित' विभिन्न प्रकार से दे सकते हैं। आइए, देखें विभिन्न लोगों ने जीवन को कैसे समझा है— परिस्थितिगत सत्य के रूप में या नियंता के प्रसाद के रूप में।

कार्यपूर्ण जीवन

विक्की खानो जेरुसलम में जन्मे एक फिलिस्तीनी ट्रेवल एजेंट हैं और आजकल जोर्डन की राजधानी अम्मान में रहते हैं। 'जीवन क्या है ?' प्रश्न के उत्तर में वह कहते हैं, 'हर व्यक्ति का एक उद्देश्य होता है और वह उसे प्राप्त करना चाहता है। मैं लगभग हमेशा अपने कार्यालय में रहता हूं। घर जाता हूं, कुछ देर समाचार सुनता-देखता हूं और तब सोने चला जाता हूं। प्रातः ७.३० बजे मैं कार्यालय में होता हूं। मुझे टाइप करना पसंद है। मुझे अपने काम से बेहद प्यार है। .... यही मेरा चरित्र है। मेरा जीवन हमेशा से कार्यपूर्ण रहा है। दूसरे शब्दों में, मेरा काम ही मेरा जीवन है। .... मैं यात्रा करना पसंद नहीं करता। दफ़्तर में कुरसी पर बैठे रहना ही मुझे पसंद है। .... विवाह, ओ' कभी नहीं। मेरा व्यवसाय ही मेरा वैवाहिक साथी है। और फिर विवाह किसलिए ? तुम्हारा स्वास्थ्य ही तुम्हारा विवाह है। तुम्हारा स्वास्थ्य ही तुम्हारे बच्चे हैं। तुम्हारा स्वास्थ्य ही तुम्हारा जीवन है। ..... अगर तुम स्वस्थ्य हो, तो तुम खुश रह सकते हो ! मुझे अकेला रहना ही अच्छा लगता है। यही जीवन है।'

प्यार ने जीवित रखा

अब बीजिंग में अनुवादक के रूप में कार्यरत दिंग लिली (छद्म नाम) से मिलिए। जीवन का अर्थ पूछने पर इन्हें 'तियाननमन स्क्वेअर' की घटना याद हो आयी। बताया, '३ जून, १९८९ की रात थी। मैं प्यार के आगोश में थी। मैंने एक प्रतिष्ठित पद के लिए परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। उस रात मैं अपने शोध— प्रबंध को अंतिम रूप दे रही थी। तब तक मैंने यह कतई नहीं सोचा था कि मैं क्यों जी रही हूं ? अचानक गोलियां चलने की आवाजें आने लगीं। मैं अवाक्। अपने पुरुष— मित्र का ख्याल आया। कहीं उसे कुछ न हो जाए ! बस, पागलों की तरह भागने लगी— उसकी सोच में। मैं जानती थी कि इतनी भीड़ में वह मुझे नहीं मिलेगा, तो भी मैं अपने मन पर



नयंत्रण न कर पा रही थी । अचानक एक गोली नेरे कान के पास से सनसनाती हुई निकल गयी । एक लड़का भागा जा रहा था । उसकी पीठ से खून की धार बह रही थी । मैं भी लगभग यंत्रवत् भाग रही थी । पर मन में एक विश्वास था— मैं मरूंगी नहीं, मेरा पुरुष—मित्र भी नहीं मरेगा । .... मैं अपने कमरे पर किसी प्रकार पहुंच गयी । इंतजार, चिंता में सो नहीं पायी । अगली शाम वह आया । ... यह हमारा प्यार ही था, जिसने हमें एक-दूसरे के लिए जीवित रखा ।बाद में हम पति-पत्नी बन गये ।'

ईश्वर की इच्छा

मारवा किसारे तंजानिया की लुओ जनजाति के पहले बिशप हैं । कहतें हैं, 'मैं, मारवा एक प्राणी (मानव) क्यों बना ? उत्तर सहज है—यदि ईश्वर न होता तो मैं, मारवा, भी न होता । ईश्वर मेरे अस्तित्व का उद्देश्य (क्यों) और विधेय (कैसे) दोनों है । .... ईश्वर ही उत्पन्न करनेवाला, उद्भावक और स्रोत है । ..... यदि कोई स्त्री गर्भवती हो गयी या कोई व्यक्ति मगरमच्छ अथवा सांप से बच गया, तो लोग यही कहेंगे कि सब ईश्वर की इच्छा है ।'

मैं 'कुछ नहीं' हूं

लाय पैरॉस फिलीपींस के दंत—चिकित्सक हैं । विनाशकारी तूफान के कारण वे गृहहीन हो गये हैं । 'जीवन' की व्याख्या के प्रसंग में वह उलझ जाते हैं, —'मुझे लगता है कि हम कहीं खो गये हैं । मैं इसकी व्याख्या नहीं कर सकता । संभव है कि हम मनीला जाएं, पर किस मार्ग से ? दो पुल बह गये हैं, नदियों में बाढ़ आ गयी है । मैं सोचता हूं कि मैं इस समय ईश्वर के अधिक निकट हूं ।

.... प्राकृतिक आपदा न आये तो आपको ईश्वर का ध्यान कभी नहीं आयेगा । यही कारण है कि अब मैं स्वयं को अर्थहीन अनुभव कर रहा हूं ।

.... मैं 'कुछ नहीं' हूं । मैं स्थिति पर नियंत्रण नहीं कर सकता, कोई बुद्धिमान भी नहीं । ईश्वर ही विश्व का नियंता है । हम यहां ईश्वरीय अस्तित्व को ही सिद्ध कर रहे हैं । हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब स्वयं को 'कुछ नहीं' मानें ।

... कुछ घंटे पूर्व मेरा घर बाढ़ में बहा जा रहा था । ... यदि कीचड़ और पानी बहते हुए आकर मुझे समेट ले जाते हैं, तो मैं मृत्यु का वरण कर लूंगा । ..... आखिर और चारा भी क्या है ? बाकी शेष का अर्थ भी क्या है ?'

आत्मा का भोजन

अब सुनते हैं इ डेवा न्यूमेन बटुआन की कि ये क्या सोचते हैं जीवन के बारे में । ये पेंटर और बाली के निवासी हैं, हिंदू हैं । कहते हैं, 'मेरा विश्वास है कि सर्वोत्तम जीवन वह है, जिसमें इस बात पर विचार किया जाए कि तुम्हारे अंतर्जगत में क्या है,न कि बाह्य जगत पर ध्यान केंद्रित किया जाए । आपको शरीर और आत्मा के भोजन के मध्य संतुलन बैठाना है । बाली में हमेशा धर्म, संस्कृति और प्रथाओं की

'रावण' शब्द का अभिप्रेत अर्थ होता है—रूलानेवाला। बाल्मीकि रामायण में प्रयुक्त 'रावणः लोक-रावणः' पद से यही भाव अभिव्यंजित होता है। रावण निंद्यकर्मा तथा मादुष्ट था क्योंकि, उसने एकांत में बैठी हुई एक नारी को धोखे में डालकर उसका अपहरण किया था। उसने अपने सौतेले भाई कुबेर की पुत्र-वधु तथा अप्सरा पुंजिकस्थला के साथ दुराचार किया था। इसके अतिरिक्त उसने दूसरे अनेक पाप-कर्म किये थे, जिनके कारण वह आज भी अनादर की दृष्टि से देखा जाता है। लोग उससे इतनी घृणा करते हैं कि कोई अपने बेटे का नाम रावण नहीं रखता।

प्रश्न उठता है कि क्या रावण में कोई प्रशंसनीय गुण नहीं था? उत्तर में कहा जा सकता है कि अनेक चारित्रिक दोषों के रहते भी रावण अनेक सद्‌गुणों से विभूषित था। वह एक उच्चकोटि का विद्वान, वेदज्ञ, शिवभक्त, शूरवीर तथा दानी था। भय तो उसके व्यक्तित्व में था ही नहीं। मृत्यु के मुख में भी वह निर्भीक बना रहता था। इन्हीं महान गुणों के कारण स्वयं भगवान श्रीराम ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

रावण आर्य था। उसके पिता का नाम विश्रवा। इसीलिए उसे वैश्रवण भी कहते हैं। कहा जाता है कि रावण के पितामह आर्य पुलस्त्य एक महान ब्रह्मवेत्ता ऋषि थे। रावण भगवान शिव का अनन्य भक्त था—इतना बड़ा भक्त कि भगवान शंकर का नाम ही पड़ गया—'रावणेश्वर वैद्यनाथ।' बिहार के विख्यात तीर्थस्थान वैद्यनाथ धाम में, भगवान शिव का जो मंदिर है, वह 'रावणेश्वर वैद्यनाथ' कहलाता है। ऐसी जनश्रुति भी है कि भगवान राम ने सेतुबंध रामेश्वर में शिवलिंग की प्राण-प्रतिष्ठा रावण से ही करायी थी क्योंकि,

क्यों भगवान राम ने रावण

युद्धभूमि में सामने आने पर रावण की भगवान राम ने जमकर भर्त्सना की और उसे मारने के बाद प्रशंसा की। प्रश्न यह उठता है कि राम ने ये परस्पर-विरोधी व्यवहार क्यों किया?

की प्रशंसा की ?

● हिमांशु शेखर झा



उस समय उससे बढ़कर शिवभक्त दूसरा कोई नहीं था ।

रावण ने संस्कृत भाषा में काव्य-रचना की थी । उसके द्वारा रचित 'शिव तांडव-स्तोत्र' शिवभक्तों के बीच आज भी लोकप्रिय है । इस स्तोत्र को पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है कि रावण ने भगवान शंकर से सांसारिक सुख प्रदान करनेवाली भौतिक वस्तुओं की नहीं, प्रत्युत त्याग आदि सद्‌गुणों की कामना की थी । अनेक विद्वानों का तो यह भी मत है कि विश्रवा का पुत्र रावण ही आदिशैव है । रावण ने चारों वेदों का अध्ययन किया था । उसे कृष्ण यजुर्वेद का मर्मदृष्टा ऋषि माना जाता है । वह सामवेद का अनन्य गायक था । ऐसे उदात्त विचारोंवाले तथा ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न रावण में भयंकर चारित्रिक दोष कैसे उत्पन्न हो गये ?

दानव-कन्या मां का प्रभाव

ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि रावण के पिता तथा पितामह यद्यपि नैष्ठिक संत और महात्मा थे, लेकिन उसकी माता कैकशी एक दानव-कन्या थी । इस प्रकार रावण का पितृकुल महान, किंतु मातृकुल हीन था । संभव है इसीलिए उसने पितृकुल के अनुरूप सद्‌गुण और मातृकुल के अनुरूप दुर्गुण पाये हों ।

रावण के चरित्र का एक अत्यंत उज्ज्वल पक्ष है—सीताजी के साथ अशोक वाटिका में उसका मर्यादापूर्ण व्यवहार । यद्यपि, उसने सीताजी का दुष्टतापूर्वक अपहरण किया था, लेकिन उसने कभी भी उनका शीलहरण करने का दुस्साहस नहीं किया । वह चाहता था कि सीताजी स्वेच्छा से उसे अपना पति स्वीकार करें । जब सीता ने इसे स्वीकार नहीं किया, तो उसने उनके अशोक-वाटिका में रहने की व्यवस्था करा दी । सीताजी ने अनेक बार रावण को अत्यंत कठोर शब्दों में दुत्कारा-फटकारा, फिर भी उसने संयम और सहनशीलता का परिचय दिया । यह उसके अक्रोधशील तथा क्षमाशीलता होने का प्रमाण है । रावण के सहायक महाबली महापार्श्व ने रावण को पथभ्रष्ट

करने की बड़ी चेष्टा की । उसने कहा—**यः खल्वपि वनं प्राप्य मृग व्यालनिषेवितम् । न पिबेन्मधु सम्प्राप्य स नरो बालिशो भवेत् ।** अर्थात, जो हिंसक पशुओं और सर्पों से भरे हुए दुर्गम वन में भी पहुंचकर वहां पेय मधु का पान नहीं करता, वह पुरुष मूर्ख बालक के समान है । महापार्श्व की इस कुमंत्रणा का भी रावण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

राम द्वारा प्रशंसा

रावण की मृत्यु पर विभीषण भ्रातृ-स्नेहवश रोने लगा । राम ने कहा, 'वैर मरने तक ही रहता है । मृत्यु के बाद वैर का अंत हो जाता है । इस समय जैसे वह तुम्हारा भाई है—वैसे ही मेरा भी है । अतः तुम शीघ्र ही अपने भाई का दाह-संस्कार कर डालो । इस पर विभीषण ने कहा— 'यद्यपि, रावण उसके ज्येष्ठ भ्राता थे, किंतु वे क्रूर, निर्दयी, असत्यवादी, सबके अहित में लगे रहनेवाले तथा परायी स्त्री का स्पर्श करनेवाले थे । अतः वह उनका दाह-संस्कार करना उचित नहीं समझता । तब राम ने रावण की प्रशंसा करते हुए ये कहा—

अधर्मानृत संयुक्तः कामं त्वेष निशाचरः ।
तेजस्वी बलवांछूरः संग्रामेष च नित्यशः ।

—वा. रा. युद्धकांड १११/९८

अर्थात, रावण भले ही अधर्मी और असत्यवादी रहा हो, परंतु वह युद्धभूमि में सदा ही तेजस्वी, बलवान और शूरवीर रहा ।

शत क्रतु मुखैर्देवैः श्रूयते न पराजितः ।
महात्मा बलसम्पन्नो रावणो लोकरावणः ।

—वा. रा. युद्धकांड १११/९९

अर्थात सुना जाता है कि इंद्रादि देवगण भी इसे नहीं जीत सके थे । समस्त संसार को रूलानेवाला रावण बलवीर्य से संपन्न और महान आत्मा था ।

राम द्वारा भर्त्सना भी

युद्धभूमि में रावण के सामने आने पर राम ने कड़े शब्दों में उसकी भर्त्सना भी की थी । उन्होंने उसे संबोधित करते हुए कहा था—**मम भार्या जनस्थानोदज्ञानाद राक्षसाधम । हृता ते विवशा यस्मात् तस्मात् त्वं नासि वीर्यवान् ।**

—वा. रा. युद्धकांड १०३/११

अर्थात, नीच राक्षस ! तुमने जनशून्य स्थान में मेरी जानकारी के बिना मेरी धर्मपत्नी का हरण किया है, इसलिए तुम बलशाली अथवा पराक्रमी तो निश्चित रूप से नहीं हो ।

अब प्रश्न यह है कि रावण के संबंध में राम ने ये परस्पर विरोधी बातें क्यों कहीं ? इस पर गंभीर रूप से विवेचना करें, तो यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाएगी कि राम की दोनों अभ्युक्तियां सही हैं, क्योंकि रावण का चरित्र परस्पर विरोधी गुणों का समुच्चय था । ऐसी जनश्रुति है कि रावण के दस सिर थे । इन दस सिरों में तीन सिर वेदत्रयी के तथा छह सिर वेदांगों के थे । परंतु दसवां सिर गदहे का था । इस दसवें सिर में निवास करनेवाले अविवेक से प्रेरित होकर ही उसने सीताजी का अपहरण तथा दूसरे अनेक कुकर्म किये । जैसे अत्यंत मजबूत तथा सभी दृष्टियों से सुंदर नौका में होनेवाला एक ही छिद्र उसे डुबोने के लिए पर्याप्त होता है, उसी प्रकार वेद-वेदांगों का ज्ञाता होने पर भी एकमात्र अविवेक के कारण ही उसका पतन हुआ ।

राम की तरह विभीषण ने भी अपने अग्रज रावण की निंदा और प्रशंसा दोनों की । रावण-वध के बाद जब राम ने उन्हें उसके दाह-संस्कार के लिए कहा तो उसने कहा—



नृशंस इति मां राम वक्ष्यन्ति मनुजा भूवि ।
श्रुत्वा तस्योगुणान सर्वे वक्ष्यन्ति सुकृतं पुनः ।।

—वा. रा. युद्धकांड १११/९५

अर्थात, श्रीराम ! मेरे इस वचन को सुनने के बाद संसार के लोग मुझे निस्संदेह क्रूर कहेंगे, परंतु जब वे रावण के दुर्गुणों को भी सुनेंगे, तब सब लोग मेरे इस विचार को उचित बतलाएंगे ।

लेकिन, जब राम के वाणों से आहत गिरे हुए अपने अग्रज रावण को विभीषण ने पहली बार देखा तो उनके मुख से अनायास ही निकल पड़ा—

गतः सेतुः सुनीतानां गतो धर्मस्य विग्रहः ।
गतः सत्वस्य संक्षेपः सुहस्तानां गतिर्गता ।
आदित्यः पतितो भूमौ भग्नस्तमसि चन्द्रमाः ।
चित्रभानुः प्रशान्तौर्चिर्व्य वसायो निरूव्यमः ।
अस्मिन् निपतिते वीरे भूमौ शस्त्रभृतां वरे ।

—वा. रा. युद्धकांड १०९/६-७

अर्थात, आज शस्त्र धारण करनेवालों में श्रेष्ठ इस वीर रावण के कालकवलित होने से सुंदर नीति पर चलनेवाले लोगों की मर्यादा टूट गयी, धर्म का मूर्तिमान विग्रह ढह गया, सत्व-संग्रह का स्थान नष्ट हो गया, सुंदर ढंग से हस्त संचालन करनेवाले वीरों का सहारा चला गया, सूर्य का पृथ्वी पर पतन हो गया, चंद्रमा अंधकार में डूब गया, प्रज्वलित अग्नि शांत हो गयी तथा उत्साह व्यर्थ हो गया ।

जब इंद्रजित द्वारा प्रयुक्त दिव्यास्त्र के बंधन में बंधकर हनुमानजी रावण के दरबार में पहुंचे तो उसके अग्नि के समान प्रज्वलित रूप को देखकर उन्होंने मन ही मन कहा था—

अहो ! रूपमहो धैर्यमहो, सत्वमहो-ध्युतिः । अहो राक्षसराजस्य सर्वलक्षणयुक्तता ।

—वा. रा. सुंदरकांड ४९/१७

अर्थात, अहो ! इस राक्षसराज का स्वरूप कितना विस्मयकारक है । कैसा अनुपम धैर्य है ! कैसी अनुपम शक्ति है ! कैसा आश्चर्य में डाल देनेवाला तेज है ! इसका सभी राजोचित लक्षणों से संपन्न होना कितने आश्चर्य का विषय है ।

रावण अत्याचारी था और उसने बड़े-बड़े क्रूर-कर्म किये, लेकिन अपने ऋषिकुल के संस्कारों के अनुरूप उसने जीवन में धर्म का संग्रह भी किया । वह शूरवीर भी था । और अपने समस्त शत्रुओं को संतप्त करनेवाला विश्व-विश्रुत सम्राट भी था । उसने समर-भूमि में कभी शत्रु को पीठ नहीं दिखायी । युद्ध उसे हर्षित करता था, शोकाकुल नहीं । उसमें ब्रह्म तेज के साथ क्षात्र बल का अद्भुत योग था । वह एक सफल शासक भी था, क्योंकि उसकी प्रजा पूर्णतया उसके वश में थी, उसके राज्य में परिपूर्ण समृद्धि थी ।

—११, पश्चिमी आनंदपुरी,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-८०००१

प्राचीन तमिल ग्रंथों से जुड़ी एक लोककथा की नायिका है—कन्नगी । सौम्यता, सहिष्णुता तथा समर्पित एकनिष्ठा की प्रतीक । कहा जाता है मंगला देवी का मंदिर कन्नगी का ही मंदिर है ।

मंगला देवी : तमिल प्राच

केरल के इंडुक्की जिले में जिला मुख्यालय इंडुक्की से लगभग ६५ किलोमीटर दक्षिण पूर्व में बसा है कुमली नाम का एक छोटा-सा कस्बा । यह स्थान तमिलनाडु की सीमा से सटे इंडुक्की जिले के पीरमेड तालुक (तहसील) का एक छोटा किंतु विकासशील कस्बा है, जो अपने व्यापारिक प्राधान्य के अतिरिक्त पेरियार वन्यजीव अभ्यारण्य के लिए विख्यात है । कोट्टायम से यह स्थान लगभग सौ किलोमीटर दूर है । बस व टैक्सियों द्वारा यातायात की अच्छी सुविधा है ।

कुमली से लगभग नौ किलोमीटर पूर्व में मनोहर पर्वत श्रृंखला के बीच अवस्थित है मंगला देवी मंदिर । इस मंदिर की महत्ता तमिल प्राच्य ग्रंथों से जुड़ी एक लोककथा से संबंधित है, यद्यपि यह मंदिर बहुत पुराना नहीं है । जिन्होंने स्वर्गीय अमृतलाल नागर के उपन्यास 'सुहाग के नुपूर' को पढ़ा है वे सौम्यता, सहिष्णुता तथा समर्पित एकनिष्ठा की प्रतीक कन्नगी को न भूले होंगे । संगम साहित्य से अभिप्रेरित, जनमानस को अभिभूत करनेवाले तमिल महाकाव्य 'चिलप्पदिकरम' के इस अनुपम पात्र की सामाजिक स्वीकृति इतनी सबल और प्रभावकारी थी कि उस समय में पट्टिणी के नाम से एक नवीन जीवनदर्शन का ही सूत्रपात हो गया था । ऐसा प्रतीत होता है कि रूपाजीवाओं के प्रति धनाढ्यों की आसक्ति के परिप्रेक्ष्य में पारंपरिक समर्पित सहधर्मिणी को उसके अधिकारों से वंचित न होने देने का या यदि वंचित हो चुकी हो, तो उन अधिकारों की पुनर्स्थापना का समष्टिगत प्रयत्न एक सनातन विषय है, अन्यथा जब महाकाव्य का चेट्टियार कोवलन माधवी एवं अपने धनधान्य से रिक्त हो जाता है तो वह कन्नगी के पास लौट आता है । इतना ही नहीं कन्नगी की एकनिष्ठा एवं चरित्रबल की उसकी आसन्न मृत्यु से रक्षा करती है । संभवतः यह मनुष्य के व्यवहार पर सामाजिक नियंत्रण का एक रूप है, जो समष्टि के सर्वतोभावेन सुख के ही उद्देश्य से प्रेरित होता है । यदि व्यष्टि पर समष्टि का नियंत्रण न हो



कन्नगी विग्रहालय के अवशेष

और समष्टि की हर इकाई उच्छृंखल हो जाए तो विनाश के अतिरिक्त और संभावना ही क्या शेष रह जाती है ?

कुमली का मंगला देवी मंदिर मुख्यतः इसी कन्नगी का मंदिर है । इस मंदिर में कन्नगी के कुलम् (छोटे जलाशय) भी थे । एक भग्न तरा (चबूतरा) पर भगवान शिव का एक उत्तराभिमुख विग्रह है । वहीं देवी दुर्गा की भी एक प्रतिमा है । मंदिर के चतुर्दिक प्रस्तर पटलों एवं खंडों द्वारा निर्मित दीवार थी । इस मंदिर में

काव्य की विरासत

● अमरेन्द्र कुमार दुबे

साथ में शिव-पार्वती एवं गणपति की मूर्तियां भी प्रतिष्ठित हैं । आज यह मंदिर जीर्णशीर्ण स्थिति में है । नवरात्रि, चैत्र पूर्णिमा आदि प्रधान अर्चना के अवसरों पर भक्त एवं श्रद्धालु काफी बड़ी संख्या में आते हैं ।

मंदिर परिसर में पूर्व एवं पश्चिम में विशाल प्रवेशद्वार—गोपुरम बने हुए थे । परिसर में ही एक सुरंग के अवशेष मिले हैं । यह सुरंग कन्नगी की प्रतिमावाले कक्ष से प्रारंभ होती थी । लोकमान्यता है कि यह सुरंग मदुरै जाने का गुप्त मार्ग रही है ।

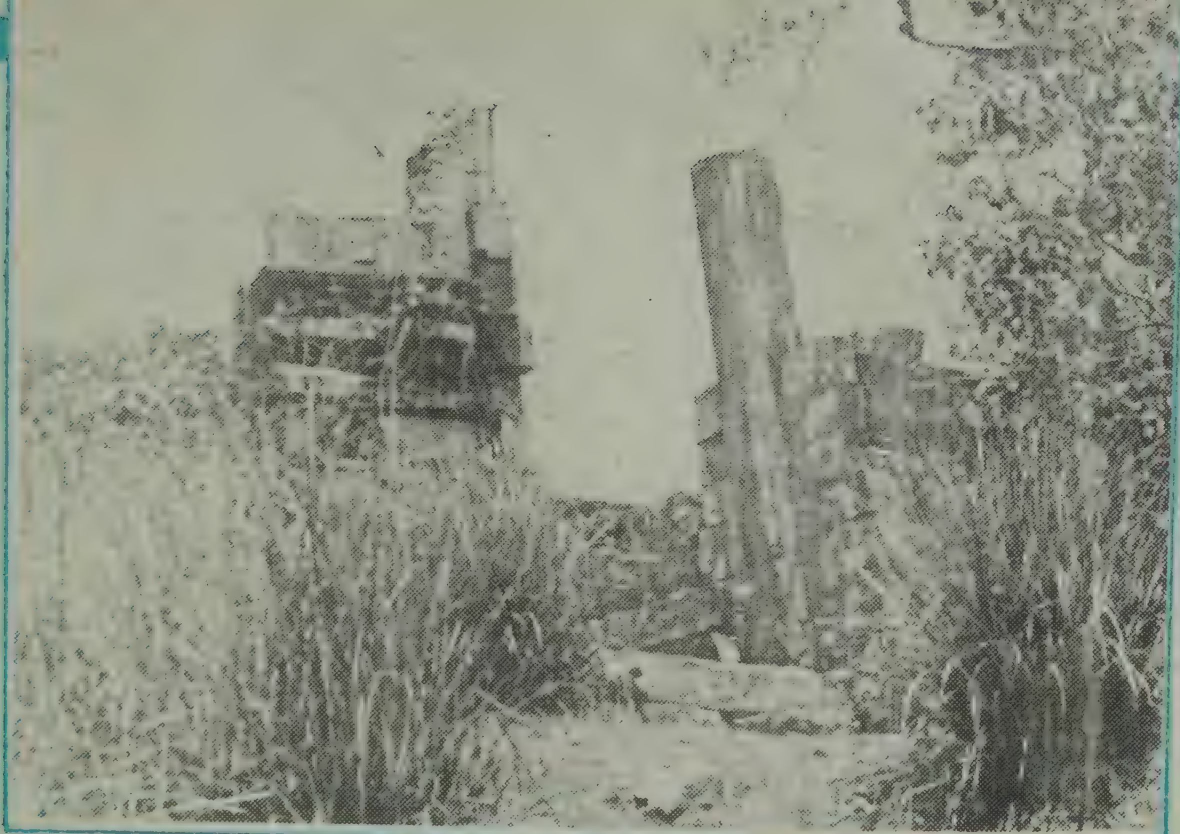
मंगला देवी मंदिर की प्रधान अराधना मूर्ति देवी कन्नगी की है या देवी दुर्गा की— इस बारे में मत वैभिन्य है । स्थानीय बोली में इसे प्रायः

देवी क्षेत्रम् कहा जाता है । इससे स्पष्ट है कि पारंपरिक रूप से यह देवी का ही मंदिर है । इस संबंध में एक किंवदंती प्रचलित है । इसके अनुसार, कन्नगी जब मदुरै के पाण्ड्यन राजा के व्यवहार से अत्यंत क्रुद्ध हो गयीं, तब ध्वंस की भावना से उन्मत्त होकर उन्होंने मदुरै नगर को अग्निसात करके पाण्ड्यन वंश का पूर्ण नाश कर देना चाहा । इसी उद्देश्य से क्रोधोन्मत्त कन्नगी का 'भद्रकाली' के रूप में अवतरण हुआ । भद्रकाली के महाप्रलयंकारी क्रोध से सभी को आशंका हुई कि कहीं पूरा विश्व ही जलकर राख न हो जाए । अतः भयभीत भक्त तथा देवगण ने तपस्वियों और महर्षियों को आमंत्रित किया कि वे भद्रकाली के क्रोध को शांत करने के उपाय बताएं । ऋषियों ने एक स्वर से कहा कि भद्रकाली वस्तुतः कन्नगी का ही अवतार हैं और विश्व में व्याप्त सामाजिक अन्याय को समाप्त कर न्याय की पुनर्स्थापना के लिए उनका अवतरण हुआ है ।

ऋषियों के परामर्श से मदुरै नगर से दूर मनोहर उपत्यकाओं के बीच एक शैल शिखर पर देवी कन्नगी के मंदिर का निर्माण किया गया । यहां का वातावरण आज भी शांति, करूणा तथा एकाग्र चिंतन के लिए उपयुक्त है । ऋषियों के यत्न से देवी का क्रोध कुछ शांत तो अवश्य हुआ, किंतु उनके भ्रूभंग की भंगिमा अपरिवर्तित ही रही । तब ऋषियों ने यह सुझाव दिया कि मंदिर परिसर में भगवान शिव एवं पार्वती की भी प्रतिमा प्रस्थापित की जाए, ताकि माता-पिता की उपस्थिति में कन्नगी अधिक समय तक क्रुद्धावस्था में न रह पायें । ऐसी मान्यता है कि कन्नगी शिव एवं पार्वती की पुत्री थी । इसी कारण से कन्नगी की मूर्ति के आगे तथा पीछे देवी मीनाक्षी (पार्वती) तथा सुंदरेशन (भगवान शिव) की प्रतिमा भी स्थापित की गयी । माता मीनाक्षी के स्नेहिल व्यवहार से कन्नगी की मुखमुद्रा में परिवर्तन आया । कन्नगी को प्रसन्न करने के ही प्रयोजन से उनके ठीक सामने उत्तर में उनके भाई विनायक (गणेश) की भी मूर्ति लगायी गयी । जनमानस मे ऐसी मान्यता है कि विनायक अपनी हास्यप्रधान बातों से कन्नगी को प्रसन्न रखते थे । कन्नगी को प्रसन्न

मंगला देवी मंदिर समूह





मंगला देवी मंदिर का गोपुरम्

देखकर उनकी माता देवी मीनाक्षी भी आह्लाद का अनुभव करने लगीं । और क्रोधांध कन्नगी अब प्रसन्न प्रशांत भद्रकाली के रूप में देवी मीनाक्षी के साथ मांगल्य की प्रतिमूर्ति बन गयीं । संभवतः इन्हीं दोनों मंगलमयी देवियों के संबोधन स्वरूप इस परिसर को मंगला देवी क्षेत्रम् कहा गया । (मलयालम एवं तमिल में मंदिर को क्षेत्रम् कहा जाता है ।)

इस मंदिर में भद्रकाली की मूर्ति दक्षिणाभिमुख है, जबकि सामान्यतः ऐसा नहीं होता । दूसरी विशेषता— यद्यपि एक विग्रह के दृष्टिपथ में दूसरा विग्रह स्थापित नहीं होता, लेकिन यहां भद्रकाली (कन्नगी) की प्रतिमा शिव मूर्ति के दृष्टिपथ में बाधा उत्पन्न करती है । लोकमान्यता है कि इन विचित्रताओं के विशेष कारण थे । जैसा कि उपरोक्त जनश्रुति के रूप में प्रचलित है, माता-पिता की उपस्थिति के कारण ही कन्नगी का बालसुलभ स्वभाव लौट आया । विशेषतः पिता की उपस्थिति में कन्नगी स्नेह, करूणा, मांगल्य एवं सरलता की प्रतिमूर्ति बन गयीं । इस लोक मान्यता के मूल में संभवतः यह मनोवैज्ञानिक कारण था कि माता-पिता सदैव अपनी संतान को अवयस्क ही समझते हैं । वयस्क मनोभाव में मनुष्य स्वतंत्र निर्णय के लिए प्रस्तुत रहता है किंतु बाल मनोभाव में माता-पिता के संरक्षण में वह स्वयं को अधिक सुरक्षित समझता है एवं क्रुद्ध संतान को माता-पिता अपने अभिभावक मनोभाव से नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं । संभवतः यह भी समष्टि के सर्वविधा कल्याण की कामना से उद्भूत होकर व्यष्टि के नियंत्रण का ही आह्वान था ।

भावस्वरूपा भद्रकाली

मंगला देवी क्षेत्रम् की भद्रकाली के संबंध में यह भी मान्यता है कि वह कोडुंगल्लूर के काली की ही भावस्वरूपा हैं । कोडुंगल्लूर में राजा चेरन चेकुत्तवन ने काली की प्रतिष्ठा की थी । इन्हीं देवी का एक अन्य भावस्वरूप चेंगन्नूर के मंदिर में भी है ।

इस मंदिर के बारे में यह भी प्रचलित है कि

वहां स्थायी निवास निषिद्ध है । लोग आते और अर्चना करके चले जाते थे । ऐसे प्रचलन का कारण संभवतः मंदिर परिसर के भव्य, शांत एवं मनोरम प्राकृतिक वातावरण का संरक्षण था । अपनी प्रसिद्धि के दिनों में मंदिर में दैनिक पूजा आदि का नियमित आयोजन होता था । मंदिर ऐसे स्थान पर है जहां से पूर्व तथा उत्तर दिशाओं में घाटी की-सी प्रतीति होती है । पश्चिम तथा दक्षिण में हरीतिमा का आच्छादन ओढ़े छोटी-छोटी पर्वत शृंखलाएं हैं, यद्यपि ये शिखर अधिक ऊंचे नहीं हैं ।

मानविक्रय के गुडल्लूर प्रत्यावर्तन के बाद इस मंदिर की उपासना विधियों में पूंजार राज्य की अराधना विधियों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होने लगा था । इस मंदिर में पूंजार राजा की श्रद्धा असीम थी । मंदिर के पश्चिमी भाग में प्रस्तर की दीवारों पर इस आशय के अभिलेख उकेरे हुए हैं कि जब तक इस मंदिर का भौतिक अस्तित्व रहेगा, तब तक पूंजार की सुख-समृद्धि एवं प्रसिद्धि बनी रहेगी ।

मंगला देवी की नित्य नियमित पूजा का क्रम तब तक चलता रहा जब तक आक्रमणकारियों द्वारा इस मंदिर का ध्वंस नहीं हो गया । मलयालम वर्ष ९४६ में (सन १७७१) हैदर अली की सेना के एक सेनापति ने पूंजार राज्य पर आक्रमण किया और इस उम्मीद में कि मंगला देवी मंदिर में अकूत संपत्ति होगी । मंदिर पर भी आक्रमण कर दिया । किंतु वहां संपत्ति न पाकर क्रोधांध सेनापति ने मंदिर को ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया । बाद में पूंजार राजा ने हैदरअली से संधि कर ली । हैदर अली को जब मंदिर नष्ट करने की सूचना मिली, तो वह बहुत ही क्रोधित हुआ और उसने उस सेनापति को कड़ा दंड दिया । किंतु मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं हो सका ।

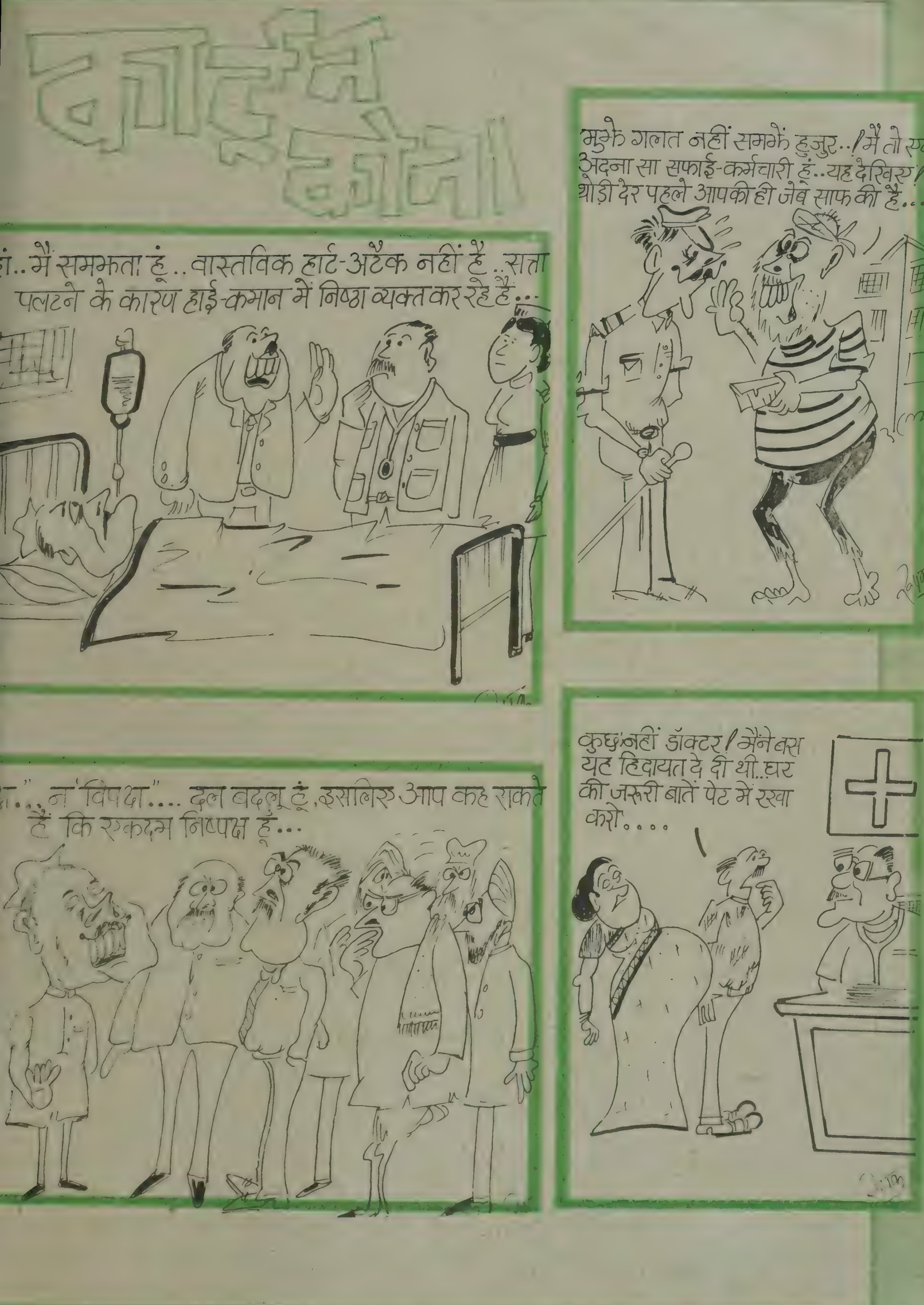
सन १८४९ में पूंजार राजा को मंगला देवी त्रावणकोर राज को दे देना पड़ा । ऐसा विश्वास किया जाता है कि पूंजार राजपरिवार के जीवित सदस्य (तेवरपुरयिल पद्मवीडु) आज भी मंगलादेवी, शिव एवं भद्रकाली की प्रतिमाह पूजा करने के नियम का पालन करते हैं । मंदिर अपनी जीर्णावस्था में भी जनमानस की निष्कंप श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है

—ए-२११ प्रगति विहार होस्टल
लोदी रोड, नयी दिल्ली-११०००३

सौर ऊर्जा चालित एयरकंडीशनर

सूर्य के ताप से बचने के लिए जापान के वैज्ञानिकों ने सौर ऊर्जा से ही चलनेवाला एक ऐसा एयरकंडीशनर तैयार कर लिया जो आकाश में बादल छाये रहने पर भी काम करता रहेगा ।

वैज्ञानिकों के अनुसार जिस समय सूर्य का ताप अपने चरमोत्कर्ष पर होता है, उस समय यह एयरकंडीशनर सौर ऊर्जा को ग्रहण कर संग्रहित कर लेता है । बाद में, रात के समय यह इसी ऊर्जा के बल पर काम करता है ।


कार्टून कोना
ां.. मैं समझता हूं.. वास्तविक हार्ट-अटैक नहीं है ..सत्ता पलटने के कारण हाई-कमान में निष्ठा व्यक्त कर रहे हैं...
मुझे गलत नहीं समझें हुजुर..! मैं तो एक अदना सा सफाई-कर्मचारी हूं..यह देखिए! थोड़ी देर पहले आपकी ही जेब साफ की है...
ा..." न "विपक्ष"... दल बदलू हूं, इसलिए आप कह सकते हैं कि एकदम निष्पक्ष हूं...
कुछ नहीं डॉक्टर! मैंने बस यह हिदायत दे दी थी..घर की जरूरी बातें पेट में रखा करो....

कहानी



आसरा

● गायत्री कमलेश्वर

शिखा ने मेज पर रखी हुई ऐश ट्रे को अपनी खास अलमारी में छिपाते हुए सोचा कि जिंदगी भी क्या चीज है, जिसमें कितने ही उतार-चढ़ाव अपने-आप चले आते हैं ? और मन भी क्या चीज है कि कभी-कभी अकेले में इतना भटक जाता है कि अपने आपको पहचानना भी मुश्किल हो जाता है । कभी-कभी अनचाहे प्रश्न अपने आप उत्तर मांगने लगते हैं । अपनी ही परछाई से इतना डरना क्योंकि देवेंद्र की हर पहचान को इतना छिपाकर रखे कि उसके बेटे विशाल को जरा-सा भी अहसास न हो कि उसकी मम्मी की जिंदगी में कोई दूसरा भी आ चुका है । उसने कभी सोचा भी नहीं था कि जिंदगी ऐसे मोड़ पर आकर इस तरह खड़ी हो जाएगी कि एक दहशत-सी मन में फैलती रहेगी । वह भी क्या करती अपने पति श्रीनिवास की मृत्यु के बाद बिलकुल अकेली हो गयी थी । उसका पुराना नौकर सीताराम और वह । पूरा बंगला भांय-भांय करने लगा था । उस समय उसका बेटा विशाल दून स्कूल में पढ़ रहा था । श्रीनिवास की मृत्यु पर उसके भाई वगैरह आये तो थे, पर अंतिम संस्कार के बाद रिश्तेदारों की तरह वापस चले गये । शिखा के पिता थोड़ा-बहुत हिचकिचाये थे, कहा था कि, 'कहो तो बेटी मैं तुम्हारे पास रह जाऊं ।' पर शिखा ने उनकी जर्जर वृद्धावस्था को देखते हुए कहा था कि 'बाबूजी, आपको भइया के पास ज्यादा आराम मिलेगा, मैं तो दिन में पढ़ाने कॉलेज चली जाऊंगी, आप अकेले नौकर के साथ क्या करेंगे ? पास-पड़ोसी अच्छे हैं । फिर सीताराम तो है ही, आप चिंता न करें ।' पर वह अच्छी तरह समझती थी कि पिताजी को भइया खुद ही नहीं छोड़ेंगे । क्योंकि, पिता की ममता कहीं बेटी की तरफ न झुक जाए, नहीं तो जमशेदपुर की पुश्तैनी जायदाद उनके हाथ नहीं लगेगी । शिखा ने जिंदगी में सब कुछ देख लिया था, सभी के कहीं न कहीं वैसाखियां लगी होती हैं । स्वार्थ सभी के मन में पनपता रहता है । वह तो स्वयं दिल्ली के एक कॉलेज में पढ़ाती है, सब कुछ करने में समर्थ है, उसे किसी की भी



बैसाखी की जरूरत नहीं ।

वह इतनी शिथिल कभी नहीं हुई थी जितनी कि आज, वैसे देवेंद्र की दोस्ती के बाद उसमें एक तरह से ताकत ही आयी थी । जिंदगी उसे खुशनुमा लगने लगी थी । पर कल जब से विशाल का अपनी पढ़ाई पूरी कर लौटकर आने का पत्र आया था, उसके माथे पर चिंता की लकीरें गहराने लगीं थीं । विशाल कल शाम की गाड़ी से आ रहा है । यही शिखा जो हमेशा विशाल को लेकर नये-नये सपने बुनती थी, सोचती थी कि वह विशाल को इतना बड़ा आदमी बनाएगी कि लोग देखते ही रह जाएंगे । पर आज वह इतनी शिथिल क्यों, विशाल को लेकर, जबकि वह आ रहा है ।

शिखा ने बैडरूम में आकर देवेंद्र का टंगा हुआ कुरता-पैजामा देखा तो सोचने लगी कि इसे कहां छिपाना चाहिए, ताकि विशाल की निगाह न पड़ सके । अगर विशाल ने इसका देख लिया तो कहीं वह उससे नफरत ही न करने लगे । उसने कुरते-पैजामे को बहुत छोटा करके तहाया और पलंग के नीचे पुराने कपड़ों की पेटी में छुपाकर रख दिया था । उसी पेटी में श्रीनिवास के पुराने कपड़े भी रखे थे । देवेंद्र के आने से उसको कहीं न कहीं श्रीनिवास के होने का भ्रम रहता था । देवेंद्र के होने से उसे लगता था कि वह अधूरी औरत एक तरह से पूरी हो गयी है । वह सोचा करती थी कि जवान मन कहीं न कहीं अपना सुकून खोजता ही है, इसमें बुरा क्या है ?

पर आज उसका मन अथाह सागर में हिचकोले खाने लगा था । एक तरफ विशाल—अपने ही खून से जाया—बेटा, और दूसरी तरफ देवेंद्र—अपने पले-छुपे प्यार की तसवीर । दोनों को वह किस तरह पकड़े कि

आपस में दोनों टकरा न जाएं ।

* * *

कितना अच्छा लगा था उसे जब देवेंद्र अपने आप उसके घर चला आया था । वैसे तो वह कॉलेज में अकसर ही मिल जाता था, और हर मोड़ पर वह अपनी चाहत का थोड़ा-बहुत अहसास दिला ही देता था । पर शिखा ने अपनी तरफ से कोई पहल नहीं की थी, हमेशा हलकी-सी रूखाई ही दिखायी थी । फिर भी उसे उसका मिलना अच्छा लगता था । उसे लगता कि देवेंद्र के रूप में श्रीनिवास फिर से जिंदा हो गया हो । एक ही कॉलेज में दोनों के लैक्चरर होने से दोस्ती का रिश्ता तो हो ही चुका था । फिर न जाने कब देवेंद्र को देखते ही एक रूमानी प्यार का अहसास भी उसके अंदर पनपने लगा था । देवेंद्र को घर आया देख उसे अपने बंगले की हर चीज सुंदर लगने लगी थी । जैसे उसकी जिंदगी में भीषण पतझड़ के बाद हरी-हरी कोपलें निकल आयी हों । उस समय विशाल का खयाल उसके दिमाग से निकल ही गया था । उसने सोचा भी नहीं था कि कभी उसका बेटा भी जवान होकर श्रीनिवास की प्रतिच्छाया बनकर उसके सामने खड़ा हो जाएगा ।

उसी दिन से देवेंद्र का आना-जाना शुरू हो गया । दोनों अधेड़-जवान थे । शिखा भी भावनाओं में बहकर अपने को रोक नहीं पायी ।

एक दिन वह अपने स्टडी रूम में एक आरामकुरसी पर बैठी कुछ पढ़ रही थी । छुट्टी का दिन था । उसके बाल धुले हुए थे । सुबह का करीब दस बज रहा होगा । सरदी की गुनगुनी-सी धूप खिड़की से होती हुई उसके बालों पर पड़ रही थी, जिससे उसके बाल सुनहरे-सुनहरे चमक रहे थे । उसी समय देवेंद्र आया था, दरवाजा खुला हुआ था । शिखा की सुंदरता देखकर वह जैसे थम गया । उसे लगा कि शिखर की बरफीली चोटी को तराशकर किसी ने संगमरमरी मूर्ति गढ़ दी हो, और उसे सुबह की धूप सुनहरी कर रही हो ।

''क्या खूबसूरती है, शिखा तुम इस समय बिलकुल तराशी हुई ईरानी देवी की मूर्ति लग रही हो ।'' शिखा को उसका यह कमेंट बहुत अच्छा लगा । सोचा कि उसकी सुंदरता में अभी भी उतनी पकड़ है जितनी कि दस साल पहले थी । उसकी सुंदरता को लेकर श्रीनिवास भी हमेशा चिंतित रहता था । उसे कभी-कभी शक भी होता था कि शिखा इतनी सुंदर है तो, इसको चाहनेवाले इसके कॉलेज में जरूर ही होंगे । यह बात उसने शिखा से की भी कई बार थी । उस समय देवेंद्र का तो कहीं नामों-निशान भी नहीं था । वह श्रीनिवास को बेहद प्यार करती थी, इसीलिए उसे औरों की तरफ देखने की फुरसत भी कहां थी । पहले जब कभी कॉलेज में पढ़ती थी, तब कई लड़के उस पर मरते थे । यह बात उसने श्रीनिवास को बतायी थी । अब वह सोचती है कि इसी शक ने श्रीनिवास को धीरे-धीरे इतना बीमार बना दिया कि उसकी छाती में कैंसर-जैसी बीमारी ने घर कर लिया । बहुत इलाज करवाया था पर सब बेकार ।

* * *

दो साल बाद, जब से देवेंद्र उसकी जिंदगी में आया तब से उसकी जिंदगी में चारों तरफ रंग ही रंग बिखर गये । पर जब से विशाल का पत्र आया तब से वह यह सोचने में लगी थी कि पता नहीं विशाल देवेंद्र को किस रूप में स्वीकार लेगा । अठारह-उन्नीस साल का विशाल

जिंदगी के हर पहलू को अच्छी तरह समझने लगा होगा ।

उसने देवेंद्र की सभी निशानियों को खूब अच्छी तरह छिपा दिया था, और श्रीनिवास की एक तसवीर को साफ करके ड्राइंग रूम के एक रैक पर लगा दिया था, ताकि विशाल को लगे कि उसके पापा की पहचान इस घर में अभी भी पहले की तरह मौजूद है । श्रीनिवास की तसवीर पर उसने जानबूझकर माला नहीं चढ़ायी थी । उसे घिसे-पिटे रीति-रिवाजों को मानना बिलकुल दकियानूसी लगता था । जो बीत गया, वह बीत गया, जो इस दुनिया से चला गया, उसे बैठकर पूजना क्यों ? जब जीना है तो क्यों न ऐसे जिएं जिससे अपना मन बहले । क्या करेगी दुनिया ? दुनिया ने उसे दिया ही क्या है ? एक अकेली जिंदगी ? फिर क्यों न वह अपनी जिंदगी खुद जैसी वह चाहे वैसी जिए । वह किसी से कुछ लेना नहीं चाहती थी, यहां तक कि देवेंद्र से भी उसने कुछ नहीं मांगा था । वह एक औरत की तरह सब कुछ देना जानती थी, लेना नहीं ।

दूसरे दिन वह सीताराम को लेकर विशाल को लेने स्टेशन पहुंची थी । जब विशाल सामान से लदा-फंदा टूरिस्टों की तरह गाड़ी से उतरा था, तो उसकी खुशी से आंखें भर आयी थीं । मां की ममता पूरी तरह जाग गयी थी ।

बंगले पर आकर विशाल ड्राइंग रूम के एक सोफे पर आराम से ऐसे बैठ गया था, जैसे बहुत दूर का सफर करके पूरी तरह थक गया हो । शिखा को उसको देखकर बार-बार लग रहा था कि श्रीनिवास की जवानी का नूर पूरी तरह विशाल पर उतर आया हो।

वह लगातार यह भी सोचे जा रही थी कि यदि इस बीच देवेंद्र का फोन आ गया तो ? वैसे उसने विशाल के आने की बात उसे बता दी थी और अपना डर भी जाहिर कर दिया था । देवेंद्र भी समझ गया था कि अब शिखा अपने बेटे के सामने एक मर्यादा से जीना चाहती है । फिर भी मन तो मन ही है, शीशे की तरह एकदम तोड़ा भी नहीं जा सकता है ।

इसी बीच देवेंद्र का फोन आ गया तो विशाल ने फोन को उसी अधिकार से उठाया जैसे वही घर का अधिकारी हो । शिखा का दिल धक-धक करने लगा था, पर देवेंद्र ने उधर से फोन काट दिया था । शिखा ने राहत की सांस ली । उसे मालूम था कि देवेंद्र इसी समय फोन करता है ।

शाम को देवेंद्र स्वयं ही चला आया । शिखा उसे देखकर एकबारगी तो सहम गयी । पर देवेंद्र के आने से विशाल खुश हुआ था । वह देवेंद्र को ऐसे ले रहा था जैसे उसके पापा का कोई दोस्त हो । शिखा ने देवेंद्र का परिचय

देवेंद्र के होने से उसे लगता था कि वह अधूरी औरत एक तरह से पूरी हो गयी है । वह सोचा करती थी कि उदास मन कहीं न कहीं अपना सुकून खोजता ही है, इसमें बुरा क्या है ?



कराते हुए कहा, "यह हमारे साथ ही कॉलेज में लेक्चरर हैं । इन्हीं से मैंने तुम्हारे बी.ए. के एडमीशन की बात कही थी । इनकी पहुंच बहुत बड़े-बड़े लोगों से है ।" यह कहकर वह थोड़ी मुसकरायी भी थी । विशाल की उन्मुक्तता देखकर वह मन ही मन कॉनवेंट की पढ़ाई को धन्यवाद दे रही थी कि वहां के बच्चे संकुचित दिमाग के शकी नहीं होते । उनमें हर तरह का खुलापन होता है ।

विशाल का अपनत्व देखकर देवेंद्र अकसर बंगले पर आ जाता था । विशाल भी उनके साथ अंकल कह-कहकर पूरी तरह घुल-मिल गया था । तीनों देर रात तक हंसते-बोलते रहते । बंगले में एक अजीब-सी रौनक छायी रहती ।

यह बात देवेंद्र में बहुत अच्छी थी कि उसने धीरे-धीरे अपने और शिखा के बीच दूरी कर ली । जब भी देवेंद्र शिखा से मिलता तो पिछले दिनों के दंश दोनों की आंखों में अपने आप उतर आते थे ।

विशाल का एडमीशन बी.ए. में हो गया । उसके लिए देवेंद्र ने बहुत भाग-दौड़ की थी । भावनाओं की नदियां किस प्रकार सूखती हुई, अपना रुख बदल लेती हैं, यह देवेंद्र व शिखा ने स्वयं अपने आप अनुभव करके देख लिया था ।

विशाल के हम उम्र दोस्तों का दायरा बढ़ने लगा । वक्त बे-वक्त उसके बंगले पर उसके दोस्त आने-जाने लगे थे । उनमें लड़कियां भी होती थीं— रूपा और शालू । रूपा वाकई में सुंदर थी, रंग गोरा, नाक-नकश उभरे हुए, आंखों में अजीब-सी चमक । वह हमेशा हल्के रंग की ताजी-ताजी बंगाली साड़ियां पहनती थी । दूसरी लड़की शालू जींस पहने स्मार्ट-सी दिखती थी । जिस तरह से शरमाती हुई बगले में घुसती, तो शिखा को अच्छा लगता । वह यही सोचती थी कि कहीं विशाल इसको चाहता तो नहीं है ?

हमउम्र दोस्तों के कारण अब विशाल को देवेंद्र के आने की इतनी चाहत नहीं रह गयी थी । शिखा ही थी, जो किसी न किसी काम के बहाने देवेंद्र को बुला लेती थी । सब कुछ होते

हुए भी देवेंद्र के आने से शिखा को ऐसा लगता था कि कोई उसका अपना आ गया है

★ ★ ★

परीक्षाएं समाप्त हो गयी थीं ।

एक दिन शिखा विशाल के साथ नाश्ता कर रही थी । शिखा ने धीरे-से अपनी बात छेड़ी, पूछा "विशाल अब आगे क्या करने का विचार है ?

'मम्मा मेरा तो आई.ए.एस. में बैठने का विचार है, फिर आप जैसा कहें ?''

'विचार तो तुम्हारा अच्छा है । जो जी में आये करो मेरी तरफ से खुली छूट है ।'' फिर कुछ रुककर पूछा, 'तुमको रूपा कैसी लगती है ?

रूपा की बात सुनकर विशाल शरमा गया । बोला, "अच्छी लड़की है ।''

मुझे भी बहुत सुदर और सुशील लड़की लगती है । मैं चाहती हूं कि उससे तुम्हारे रिश्ते की बात करूं

विशाल हडबड़ाकर बोला, ''मम्मा अभी तो बहुत जल्दी है, हमें अभी अपना कैरियर भी तो बनाना है !

''अभी तो मैं उससे बात कर रही हूं, शादी नहीं कर रही । अगर वह वास्तव में तुम्हें पसंद करती है, तो कैरियर बनाने में तुम्हारी मदद भी कर सकती है ।

' यानी, आप पूरी तरह रूपा को पसंद करती है ?

''हां, कल उसे घर ले आना ।''

दूसरे दिन विशाल रूपा को ले आया ।

रूपा ने बहुत हलके-से शिखा को नमस्कार किया । चाय-पानी के बाद शिखा ने बात शुरू की, ''अब तो तुम लोगो के एक्ज़ाम समाप्त हो गये हैं । आगे तुम्हारा क्या करने का विचार है रूपा ?''

''जो पापा कहेंगे वही करूंगी, अभी कुछ सोचा नहीं है ।''

''अच्छा बताओ, विशाल तुम्हारा कैसा दोस्त है ?''

रूपा ने विशाल की तरफ देखा और मुसकराकर आंखें नीची कर लीं । तो शिखा बहुत अपनेपन से बोली ''कॉलेज मे पढते हुए तुम इतना शरमाती हो,अच्छा यह बताओ तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं ?''

''मम्मी-पापा, मैं और मेरा छोटा भाई ।''

''तुम्हें विशाल कैसा लगता है ? '

रूपा फिर शरमाकर चुप हो गयी । उसी बीच विशाल बोला, ''मम्मा, यह कुछ नहीं बताएगी,इस बारे में इसके मम्मी-पापा से बात करनी होगी ।''

''हां जरूर करूंगी । मैं तो तुम्हारी रूपा की पसंद जानना चाह रही थी ।''

शिखा को रूपा सोफे पर बैठी हुई गोरी-गोरी गुड़िया-सी लग रही थी । उसे यकायक याद आया कि उसने रूपा के चरित्र के बारे में तो विशाल से कुछ पूछा ही नहीं । उसे अपने कॉलेज के दिन याद हो आये । कैसे लड़के इसको देखकर कमेंट कसा करते थे । वह परेशान हो उठी । उसने तुरत [illegible] से पूछा "अच्छा रूपा, मुझे एक बा[illegible]ओ विशाल के अलावा तुम्हारा और कोई ब्वाय फ्रैंड्स तो नहीं है ?'' यह पूछते हुए उसे बहुत ही [illegible]कानापन लगा, पर उसके अन्दर की बहुत बड़ी कमजोरी थी, जिसको पूरी तरह साफ कर लेना चाहती थी ।

रूपा ने दृढ़ता से जवाब दिया, ' नही

मम्मी ।''

कहीं रूपा की सुंदरता विशाल के लिए भारी न पड़ जाए । यह सोचकर उसने विशाल की तरफ गौर से देखा । उसे उसमें श्रीनिवास की झलक दिखायी दी । उसने विशाल को इशारा करके उठाया और कमरे में ले जाकर पूछा, ''विशाल, तुम रूपा के बारे में पूरी तरह जानते हो ? इसका चरित्र कैसा है ? इस बारे में भी पूरी जानकारी कर लेना, धोखा मत खा जाना— नहीं तो, मुझे बहुत तकलीफ होगी ।''

विशाल ने अपनी मां की घबराहट को देखा तो एकबारगी तो वह भी घबरा गया फिर विश्वास दिलाते हुए कहा, ''आप बिलकुल फिक्र न करें,मैं रूपा को भली-भांति जानता हूं ।''

विशाल रूपा को उसके घर पहुंचाने को उठ खड़ा हुआ । उन दोनों को जाते हुए शिखा बहुत ही प्यार से देखती रही । उसे एकाएक श्रीनिवास की याद हो आयी । अगर वह होता तो शायद... उसी बीच उसने गेट की तरफ से देवेंद्र को आते हुए देखा । उसे देखते ही वह सहम गयी, उसे लगा जैसे बना बनाया घर अचानक बिखर गया हो । वह सोचने लगी कि जब वह देवेंद्र को लेकर अपने आपको नहीं समझा पा रही है, तो उसे रूपा को इस तरह से समझाने का उसको क्या हक है ? वह देवेंद्र से अपना रिश्ता आज ही पूरी तरह तोड़ देगी । लेकिन मुसकराते हुए देवेंद्र को अपने सामने खड़ा पाकर उसे लगा कि जैसे उसे फिर से ताकत मिल गयी हो । उसने सोचा, जिंदगी तो जिंदगी है । आगे किसने देखा है, अगर विशाल रूपा से शादी करने के बाद बदल गया, तो मेरे लिए कौन होगा ? फिर से वही नितांत अकेली जिंदगी— सोचकर जैसे घबरा गयी । देवेंद्र उसके लिए एक आसरा तो है ।

**– जी-१५८, सेक्टर-२५,
नोएडा-२०१३०१**

मरने का अधिकार

माउंट वरनान (मिसौरी) की नैंसी क्रूजन बेहोशी की अवस्था में पूरे आठ वर्ष तक जीवित रही । ११ जनवरी १९८३ को वह एक सड़क दुर्घटना की शिकार हुई थी, जिससे उसका मस्तिष्क बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था । इतने लंबे अरसे तक नैंसी को कृत्रिम भोजन के जरिए जिंदा रखा गया था ।

'ऐसी जिंदगी से तो मौत भली'— नैंसी को उसके माता-पिता ऐसी जिंदगी से मुक्ति दिलवाने के लिए पिछले तीन वर्षों से अदालतों के चक्कर लगा रहे थे । अभी हाल ही में वे अपनी बेटी को मरने का अधिकार दिलवाने में सफल हुए । कोर्ट के आदेश से डॉक्टरों को कृत्रिम भोजन की नली नैंसी के शरीर से हटा लेनी पड़ी, लेकिन नली हटा लेने के बाद भी नैंसी १२ दिन और जीवित रही ।

सीमांकन का विवाद

क.ख.ग., सतना : हमारे पड़ोसी ने अपनी जमीन का नक्शा सुधारवा कर सीमांकन कराया है, जिससे मेरा आधा मकान (१०×६० वर्ग फुट) उसके पट्टे में फंस गया है । सीमांकन के बाद उसने मुझ से जमीन खाली करने को कहा । ऐसा न करने पर उसने दीवानी में दावा दायर कर दिया । पहले उसने मुझ पर नये मकान बनाने का झूठा आरोप लगाकर चिरस्थायी निषेधाज्ञा चाही । मजिस्ट्रेट ने उसकी वह याचिका खारिज कर दी, जिस पर उसने जिला जज के यहां अपील की । उसे भी खारिज कर दिया गया । अब प्रकरण मूल दावा में चल रहा है । बाद में प्रश्न व गवाही होगी । उसके सीमांकन की पुष्टिकरण अभी नहीं हो पायी है । जिस आराजी पर मेरा मकान बना है, वह आराजी मेरे चचेरे ससुर के नाम है और मकान मेरे नाम । मैं क्या करूं ? मेरा मार्ग दर्शन करें ।

आपका न्यायालय में मुकदमा चल रहा है । आपका पक्ष स्वीकार करते हुए प्रथम न्यायालय तथा अपील में जिला जज ने आपके पड़ौसी को निषेधादेश नहीं दिया । अब आपको न्यायालय में अपने सभी प्रमाण, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि जमीन आपके चचेरे ससुर के नाम है, प्रस्तुत करें । वैसे तो न्यायालय में जमीन पर स्वामित्व प्रमाणित करने का उत्तरदायित्व आपके पड़ौसी का है, परंतु आपको अपने सबूत न्यायालय के समक्ष लाने चाहिए, जिससे न्यायालय आपके पक्ष ठीक प्रकार समझ सके । मकान आपने बनाया है और आप मकान में कब से रह रहे हैं, इसके आवश्यक प्रमाण भी न्यायालय में प्रस्तुत करना उपयोगी रहेगा ।



साझीदारी में धोखा

प्रेमचंद्र गुप्ता, रामपुर : पिताजी सब्जी की आढ़त की एक रजिस्टर्ड फर्म में साझीदार थे पिताजी के स्वर्गवास के बाद फर्म के दूसरे साझीदार ने मुझे दुकान पर लगा लिया । उस समय मेरी आयु पंद्रह साल थी । उन्होंने मेरे नाम से दूसरे साझीदारी के कागज बनवा लिये । उसमें पिताजी द्वारा जमा रकम गलत लिखायी या सही, यह हमें मालूम नहीं क्योंकि हमें खाते दिखाये ही नहीं गये । हमने विश्वास किया, काम चलता रहा । हर साल फायदे की रकम यह उन्हीं कागजों में जोड़ देते तथा जो रुपया हम लेते वह घटा दिया करते ।

बाद में यह फर्म प्राइवेट लिमिटेड बनी । हमसे साझीदारी के कागज यह कहकर ले लिये गये कि हम अब प्रा. लि. में तुम्हें शेयर होल्डर बनाएंगे । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । साझीदारी के कागज देते समय हमने उनकी रसीद फर्म के लेटर पैड पर लिखवा कर ले ली थी । उस पर यह साफ लिखा है कि फर्म साझीदारी के सभी कागज इसलिए ले रही है ताकि शेयर होल्डर में इनका नाम शामिल किया जाएगा । कागजों के अनुसार हमारा करीब एक लाख रुपया फर्म पर बाकी है ।

न तो हमें रुपया दिया गया न प्राइवेट लिमिटेड में शामिल किया गया, न किताबें दिखायी गयीं । हमने जब उपरोक्त तीनों बातों की मांग की, तब हमें दुकान से हटा दिया गया । इतना ही नहीं, हमने जैसे-तैसे अपना कारोबार शुरू किया, तब भी हमें काफी नुकसान पहुंचाया गया । अब हमें क्या करना चाहिए, यदि हमें हमारे हक नहीं मिले, तब

क्या हम इनकी आयकर नियमों के उल्लंघन के लिए शिकायत कर सकते हैं क्योंकि, फर्म ने काफी आयकर चोरी की है । इसके लिए हमें क्या करना होगा ?

फर्म में साझीदारी का प्रमाण आपके पास होना चाहिए । यह प्रमाण आयकर कार्यालय, फर्म के पंजीकार के कार्यालय, बिक्रीकर कार्यालय तथा अन्य सरकारी कार्यालथों के रिकार्ड भी हो सकता है । आप फार्म से अपना हिसाब-किताब करवाने के लिए न्यायालय की शरण में जा सकते हैं । जो भी रकम साझेदारी की फर्म में आपकी निकलेगी, उसके मिलने में इस कार्यवाही से आसानी रहेगी । साझेदारी के कागज दे देने से आपका फर्म में हिस्सा समाप्त नहीं हो जाता ।

आयकर की चोरी के बारे में आप आयकर कार्यालय को सूचित कर सकते हैं । आयकर विभाग आपकी शिकायत पर आवश्यक कार्यवाही करेगा ।

नयी प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में आपको हिस्सा दिये जाने के बारे में आपके पास क्या अनुबंध है ? साधारणतया ऐसा लगता है कि कंपनी का शेयर आपको प्राप्त होना संभव नहीं हो सकेगा ।

लापता हो गये

मदनपाल, सहारनपुर : मेरे पिताजी भारतीय सेना में सिविलियन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं और उनकी सेवा २७ वर्ष हो चुकी है । यकायक मार्च ' ८९ में पिताजी चार दिन की आकस्मिक अवकाश लेकर इयूटी स्थान (अम्बाला) से घर (सहारनपुर) के लिए रवाना हुए । किंतु दुर्भाग्य से वे घर नहीं पहुंचे । छह माह बाद अंबाला से घर के पतें पर एक पत्र आया कि आप इयूटी से लेट चल रहे हैं तथा शीघ्र रिपोर्ट करें अन्यथा आपके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी । जब यह पत्र आया तो हम सभी दंग रह गये और हम तुरंत अंबाला गये और पिताजी के घर न पहुंचने के बारे में अवगत कराया । हमने अपनी सभी रिश्तेदारियों में ढूंढ़ा, किंतु पिताजी का कुछ पता नहीं चला और अब लगभग दो वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । घर में हम पांच छोटे-छोटे भाई बहन हैं माताजी चिंता में सूखती जा रही हैं । समझ नहीं आ रहा है कि क्या किया जाए ? हमने गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज नहीं करायी जबकि कार्यालयवालों ने सभी औपचारिकताएं पूर्ण कर दी हैं । अब घर का खर्च मुश्किल से चल रहा है । क्या उनका पैसा—अब तक का वेतन तथा जी.पी.एफ. आदि की धनराशि मेरी माताजी को मिल सकती है ? कार्यालयवाले कब तक प्रतीक्षा करेंगे तथा माताजी को क्या करना चाहिए ? कृपया, उचित मार्ग निर्देशन करने की कृपा करें ।

आपके पिताजी अंबाला से घर के लिए रवाना हुए, परंतु फिर कुछ पता नहीं उनका क्या हुआ—वे स्वेच्छा से कहीं चले गये या उनके साथ कोई दुर्घटना घट गयी । आपको रास्ते के थानों तथा अस्पतालों से पता करवाना चाहिए । उससे यह जानकारी मिल सकेगी कि क्या कोई दुर्घटना हुई, जिसमें कुछ लोगों की शिनाख्त न हो सकी हो । यदि किसी भी आधार पर उनकी मृत्यु की पुष्टि हो सके, तब तो ठीक है, अन्यथा लापता होने के सात वर्ष के अंदर उन व्यक्तियों को जिनको साधारणतया उनकी सूचना मिलनी चाहिए, लापता व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली, तब ही उक्त व्यक्ति को मृत माना जा सकता है ।

उनके नहीं रहने की जानकारी मिलने के बाद ही देय राशि का भुगतान किया जा सकता है । उससे पूर्व भुगतान विशेष स्थिति मानकर संबंधित अधिकारी विशेष आदेश देकर करा सकते हैं ।

ससुराल जाऊं या नहीं ?

अर्चना, मेरठ : मैं एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की हूं । शादी हुए अभी चार माह ही बीते हैं कि वहां पर दहेज के लिए मुझे शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है, जिसमें ससुर व पति की भी मौन-स्वीकृति शामिल है । सास व दो ननदों द्वारा समय-समय पर मुझे मेरे पति के सामने ही नीचा दिखाने का प्रयत्न किया जाता है । इसी कारण मैं विगत दो माह से अपने पिता के घर पर रह रही हूं । अब उन लोगों ने मेरे पिता व भाइयों पर मारपीट का झूठा इल्जाम लगाकर एफ.आई.आर. दर्ज करायी है । एक रिश्तेदार से यह मालूम होने पर हमने वकील के मार्फत एक नोटिस भेजा कि वे मुझे आकर ले जाएं, किंतु उन्होंने वह नोटिस लौटा दिया व स्वयं वकील के मार्फत एक नोटिस मुझे भेजा, जिसमें आरोप लगाया है कि मैंने सारे जेवर अपने पिता के घर रखे हुए हैं व पिता ने मेरे पति को पिटवाया है ।

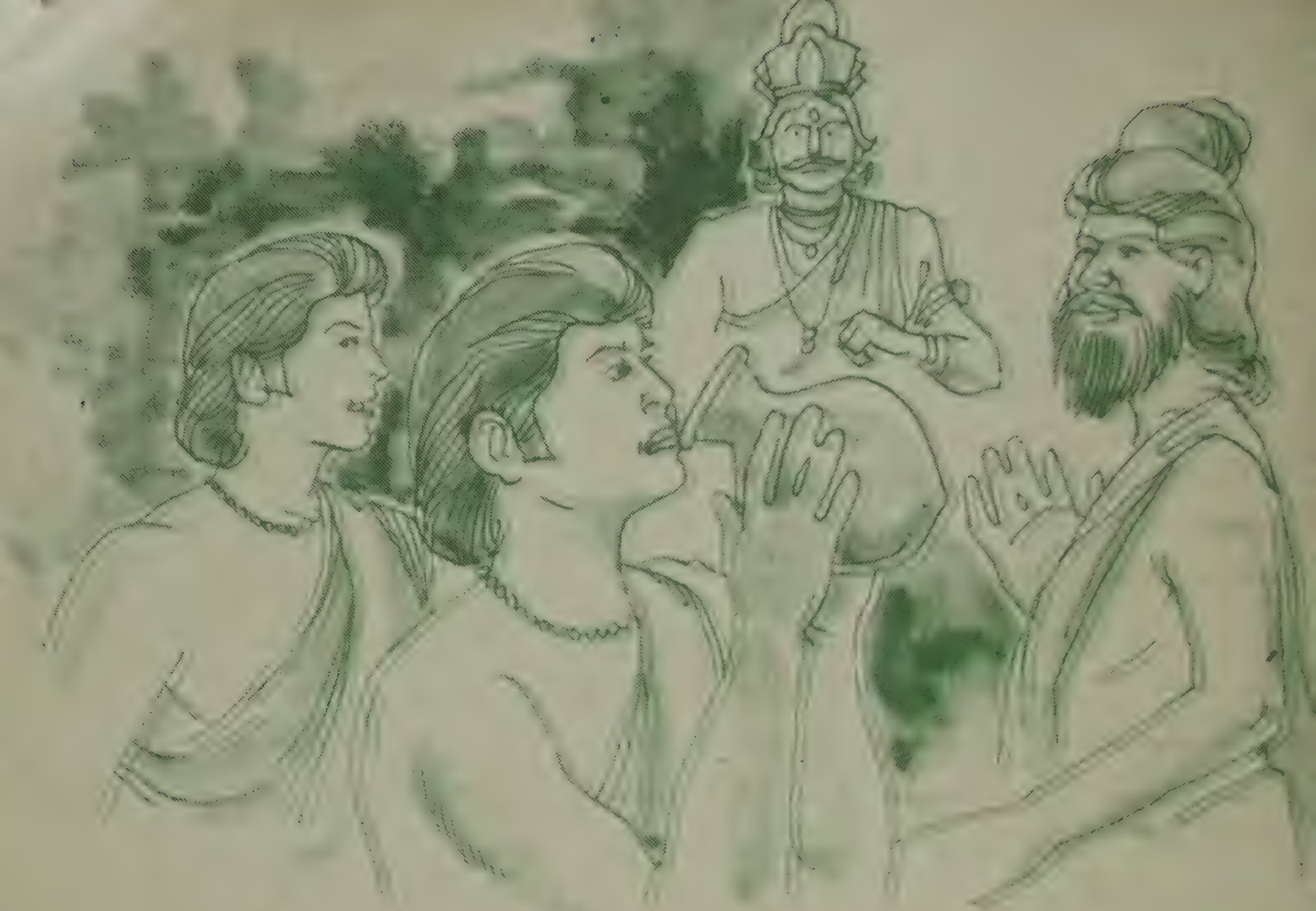
ऐसा करने पर भी अब वह लोग चाहते हैं कि हम समझौता कर लें व मैं अपने पति के घर चली जाऊं, लेकिन समझ नहीं आता है कि उन पर किस प्रकार विश्वास किया जाए ? कहीं वे मुझे या मेरे परिवारवालों को किसी प्रकार से फंसाने या मुझे शारीरिक या मानसिक रूप से चोट पहुंचाने के लिए तो ऐसा नहीं कर रहे ? कृपया, मुझे बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए ? मैं चाहती हूं कि मैं भी एक सुखी गृहस्थ जीवन जी सकूं ।

'विधि-विधान' के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्न का समाधान कर रहे हैं राजधानी के प्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त ।

आपका पत्र पढ़कर यह समझ नहीं आता कि आप क्या करना चाहती हैं । एक तरफ आपने अपने वकील के द्वारा नोटिस भिजवाया कि आप ससुराल जाना चाहती है तथा आपके पति आपको आकर ले जाएं । दूसरी तरफ जब ससुरालवाले समझौता करके आपको ले जाना चाहते हैं तब भी आप परेशान हैं । ससुराल में आपके साथ ठीक व्यवहार नहीं होता रहा । भविष्य में ससुराल में ठीक व्यवहार होगा या नहीं, कुछ नहीं कहा जा सकता ।

आपको ससुराल जाने से पूर्व अपने पिता व भाई के विरुद्ध लिखवायी गयी प्रथम सूचना रिपोर्ट को वापस करवाना चाहिए । इससे परिवारों का प्यार बढ़ेगा तथा यह भी समझा जा सकेगा कि आपके ससुरालवाले सही रास्ते पर चलने का विचार रखते हैं । ●

रोम के फुलेमिनोया जिले की श्रीमती गियांफ्रांको रोसी को यह मालूम हुआ कि उसके पति ने इतना अधिक, लगभग दस हजार डॉलर, अवैध तरीकों से कमाया है तो उसने वह सारा धन अपने घर से निकालकर कूड़े की तरह सड़क पर फेंक दिया और इसकी सूचना भी पुलिस को दे दी । बाद में पुलिस ने रोसी दंपत्ति के घर की तलाशी में नौ करोड लीरे यानि ७० हजार डालर और जब्त किये जो श्री रोसी ने अपनी ईमानदार और नेक पत्नी से छिपा कर रखे थे ।



गुरु की शरण में युवक आये, दोनों ही सुयोग्य पात्र थे । उनमें लगन थी, श्रद्धा थी । गुरु ने उनको अपना अनुभव, ज्ञान देना स्वीकार कर लिया । वर्षों बीते, शिष्यों ने गुरु से श्रेष्ठतम ज्ञान प्राप्त किया, किंतु उनका मनोभाव एक जैसा न रह सका । एक शिष्य ने ज्ञान प्राप्त करके मनन किया, उसमें श्रद्धा और सौम्यता प्रगट हुई । दूसरे ने ज्ञान का दंभ भरना शुरू कर दिया, उसमें अहंकार और उद्दंडता बढ़ी । गुरु

बोधकथा

अहंकार

• प्रभाकर जोशी

दोनों के मनोजगत की भिन्नता का आभास पा चुके थे । अहंकारी शिष्य गुरु से श्रेष्ठ होने का दावा करने लगा, जबकि सौम्य शिष्य के लिए गुरु आज्ञा ही सब कुछ थी, गुरु के प्रति उसकी आस्था निरंतर बढ़ती ही रही ।

गुरु के दोनों शिष्यों के अपार ज्ञान की ख्याति राजदरबार तक पहुंची । राजा ज्ञानीजनों का विशेष आदर करता था,पर उनकी कड़ी परीक्षा भी लेता था । राजा ने एक विचित्र परीक्षा लेने की योजना बना डाली ।

दोनों शिष्य गुरु के साथ राजदरबार में उपस्थित हो गये । योजनानुसार राजा ने उनके समक्ष दो स्वर्ण घट रखकर प्रश्न रखा, 'किस मे विष है,किसमें अमृत तुल्य गंगाजल ?' शिष्य एक क्षण स्तब्ध हो गये, पर गुरु ने चुनौती स्वीकार कर ली । अहंकारी शिष्य का अहं जाग उठा, उसने सोचा राजदरबार में स्वयं को गुरु से श्रेष्ठ सिद्ध करने का ऐसा स्वर्णिम अवसर फिर

नहीं मिलेगा । गुरु के आदेश की प्रतीक्षा किये बगैर उसने अमृत-विष का ज्ञान कर लेने की घोषणा कर दी ।

गुरु शिष्य के अहंकार से आहत हो उठे । अहंकार से वशीभूत शिष्य ने बिना सोच-विचार के एक घट उठा लिया । राजदरबार एक क्षण के लिए निशब्द हो गया । अहंकार की एक वक्र मुसकान सौम्य शिष्य पर डालकर वह गटागट घट की अबूझ वस्तु को पी गया ।

चकित राजदरबार के समक्ष वह अहंकारी शिष्य एक क्षण के लिए विजयोन्माद से भर उठा, पर दूसरे ही क्षण लड़खड़ाकर भूमि पर निश्चेष्ट पड़ गया । गुरु और सौम्य शिष्य उसे उठाने दौड़ पड़े, पर तब तक शिष्य की जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी ।

सौम्य शिष्य ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से गुरु से प्रश्न किया, "गुरुवर ! क्या गुरु भाई ने विष पान कर लिया ?"

"हां वत्स ! ..... यह अत्यंत दुखद है । अहंकार से व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है । उसका सारा ज्ञान व्यर्थ जाता है । देखो, अहंकार ने इसका विनाश किस क्रूरता से किया .... ।"

सौम्य शिष्य ने गुरु के चरण पकड़कर भावावेग में कहा, "आपको यदि ज्ञान था कि यह विष पान कर रहा है तो आपने इसे रोका क्यों नहीं ?"

गुरु एक क्षण गहरी सोच में पड़ गये फिर बोले, "मुझे स्वयं विष-अमृत का ज्ञान न था,परंतु.... मेरे शिष्य के अहंकार ने इसका निर्णय करवा दिया । एक अहंकारी, पथभ्रष्ट शिष्य खोने से मैं उतना दुखी न होता, जितना एक श्रेष्ठ सौम्य, सुयोग्य शिष्य को खोकर । निश्चित रूप से मैं यहां स्वार्थी हो गया, संभवतया यही मेरी दुर्बलता है । मैं किसी भी शर्त पर तुम्हें नहीं खो सकता था, चाहे मुझे ही विष पान क्यों न करना पड़ता ।"

गुरु के अगाध प्रेम के समक्ष शिष्य हतप्रभ हो उठा । परंतु गुरु भाई की स्मृति भी उसके मानस पटल पर सदा बनी रही । सच्चे ज्ञान की खोज में सौम्य शिष्य ने अंततः गुरु को भी त्याग दिया और हिमालय की विराटता में सदा के लिए लीन हो गया ।

—नक्षत्र वेधशाला,देवप्रयाग
जि.-टिहरी गढ़वाल (उ.प्र.)

गर्भ में बच्चे संगीत सुनते हैं

ब्रिटेन व अमरीका में हुए अनुसंधानों से पता चला है कि गर्भस्थ शिशु का मध्यस्थ श्रवण यंत्र चार-पांच माह की अवस्था के दौरान ही विकसित हो जाता है और वह विभिन्न ध्वनियों को सुन सकता है । वेलफास्ट के क्वींस विश्वविद्यालय के प्रो. पीटर हैपर ने एक अध्ययन किया । उनका अध्ययन टी.वी. से संबंधित है । उनके निष्कर्षों के अनुसार जो गर्भवती माताएं लगातार टी.वी. देखती हैं, उनके बच्चे उस धारावाहिक के संगीत को पहचान सकते हैं जो उनकी माता ने देखे थे । परीक्षण के दौरान इस परिचित संगीत को सुनकर बच्चे शांत व चौकन्ने हो गये, जबकि उन बच्चों ने उस संगीत में कोई दिलचस्पी नहीं ली, जिनकी माताओं ने उस धारावाहिक को नहीं देखा था ।

भारत में ग्रामीण पुलिस व्यवस्था

● श्रीधर पाठक

भारत की संपूर्ण जनसंख्या का अस्सी प्रतिशत भाग गांवों में रहता है । भारत के एक गाव की जनसंख्या प्रायः दो हजार तक होती है और प्रत्येक गाव स्वयं में एक 'आत्मतुष्ट इकाई' होता है । प्राचीनकाल में गांव की सुरक्षा का भार 'ग्रामणी' नाम के एक ऐसे अधिकारी पर होता था, जो गांव का मुखिया होता था । यह पद वंशानुगत था । यह 'ग्रामणी' ठगों, चोरों और राज्य के अधिकारियों के अत्याचारों से ग्रामवासियों की रक्षा करता था । ऐसी चर्चा 'शुक्र-नीतिसार' नामक ग्रंथ में आयी है । उसी ग्रंथ में गांवों के रक्षक 'प्रतिहार' नामक अधिकारी की भी चर्चा आयी है । ग्रामणी में गांव की विधायिका, न्यायिक एवं कार्यपालक शक्तियां निहित होती थीं ।

गांव दो तरह के होते थे । एक, जहां जमींदार निवास करते थे और दूसरे, जिनमें केवल प्रजा रहती थी । यह स्थिति अत्यंत प्राचीनकाल से ब्रिटिशकालीन भारत तक रही । गांव के जमींदार बल एवं प्रभाव के अनुकूल दक्षपति व शतपति जमींदार होते थे, जो क्रमश दस एवं सौ गांवों की सुरक्षा के भी उत्तरदायी थे । यदि इनके गांव में चोरी अथवा डकैती हो जाती थी तो वे उस चोरी अथवा लूटे गये सामान को वापस कराने के उत्तरदायी होते थे । राजा आवश्यकतानुसार दुर्गों में सेना को सुरक्षित रखते थे । अधिक लूटमार की स्थिति



में सेना ही पुलिस का काम करती थी। विभिन्न प्रभावशाली व्यापारिक संगठन तथा प्रभावशाली श्रीमंत भी अपने क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए अलग-अलग पुलिस बलों का गठन करते थे, जिन्हें रक्षक कहते थे। इन्हें जिस एक स्थान पर 'रिजर्व' में रखा जाता था, उसे दुर्ग अथवा खुले स्थान पर होने पर 'स्थानिक' कहते थे। यह 'स्थानिक' शब्द ही कालांतर में बदलकर 'थाना' हो गया।

उत्तरी भारत में मुसलमानों के आगमन के बाद भी गांवों की व्यवस्था यही बनी रही। इससे प्रभावशाली जमींदार को राजधानी की रक्षा का भार सौंप दिया जाता था, जो कोतवाल के नाम से जाना जाता था, शेष राज्य मनसबदारों की सेना द्वारा सुरक्षित होता था।

अंगरेजों के राज में

भारत में अंगरेजों के सत्तासीन होने के साथ-साथ संपूर्ण ग्राम-रक्षा व्यवस्था का वृहत परीक्षण हुआ। सन १८६० में गठित प्रथम पुलिस आयोग ने ग्राम-रक्षा में चौकीदार की भूमिका को यथावत रखा, साथ ही संपूर्ण देश में थानों का जाल बिछाया, जिसमें एक उपनिरीक्षक और बारह से चौदह तक कांस्टेबल रखे गये। यह व्यवस्था थोड़े-बहुत सुधार के साथ अभी भी चल रही है। सन १९०२ में पुलिस कमीशन ने गांवों की सुरक्षा-व्यवस्था का पुनः परीक्षण किया, पाया कि अधिकांश भारत में विशेषकर महाराष्ट्र और गुजरात के गांव में पटेल और एक चौकीदार होता है, जिस पर गांव की सुरक्षा का भार रहता है। पटेल राज्य-शक्तियों का प्रयोग और चौकीदार ग्रामों के बीच में गश्त का काम करता है। कमीशन ने इस प्रणाली को जारी रखने की संस्तुति करते हुए चौकीदार को अपराध-निरोध का उत्तरदायित्व भी सुपुर्द करने की संस्तुति की। आयोग ने गांव के चौकीदार को विधि द्वारा ज्ञात उत्तरदायी अधिकारी बनाने की बात कही। जमींदारों का मुख्य प्रभाव बंगाल और महाराष्ट्र में था। इसलिए उन्होंने बंगाल से ग्रामीण पुलिस व्यवस्था में सुधार के प्रयोग शुरू किये। बंगाल में कोई संगठित पुलिस संगठन नहीं था। मुगलों व नवाबों के काल में मनसबदार अपना एक नौकर गांव में रखते थे, वही नौकर मनसबदारों के दरोगा के अधीन सिपाही का भी काम करते थे। सन १८७० में बंगाल में गांव के चौकीदार मजिस्ट्रेट की अधीनता में कर दिये गये।

गांव-चौकीदार वास्तव में मुगलकालीन शब्द है, जिसे बाद में ब्रिटिश शासन द्वारा

सभी पुलिस आयोगों का मत रहा है कि गांवों की सुरक्षा में चौकीदार की भूमिका अत्यंत उपयोगी है फिर भी चौकीदार की दशा आज तक दयनीय है —क्यों ?

अपना लिया गया । इसका मुख्य काम राज्य की ओर से गांव की जासूसी करना और राज्याधिकारियों के अत्याचारों से ग्रामवासियों की रक्षा करना था । अराजकता की स्थिति में भी चौकीदार कार्यरत रहता था क्योंकि, वह प्रायः गांव का ही स्थानीय निवासी और ग्रामवासियों द्वारा ही वेतनदत्त था ।

उत्तर प्रदेश में चौकीदारी प्रथा

ब्रिटिशकालीन उत्तर प्रदेश यानी संयुक्त प्रांत के ग्राम-चौकीदार उसी प्रकार होते थे जैसे कि बंगाल में । गांव में एक मुखिया होता था, जो ज़िले के सरकारी अधिकारियों द्वारा चुना जाता था, लेकिन यह मुखिया प्रायः वही व्यक्ति होता था, जो सारे गांव को स्वीकार्य हो । मुखिया के अतिरिक्त एक चौकीदार भी होता था, जिसे पहनने के लिए कमर में चमड़े की पेटी मिलती थी । इस पेटी में पीतल का आयताकार बिल्ला लगा होता था, जिसमें उसके गांव, थाने एवं जिले का नाम अंकित होता था । चौकीदार की नियुक्ति उत्तरी-पश्चिमी सीमांत प्रांत ग्राम एवं सड़क पुलिस एक्ट १८७३ एवं अवध लाज एक्ट १८७६ के अधीन संबंधित जिले के जिला मजिस्ट्रेट द्वारा की जाती । चौकीदार की तैनाती से पूर्व पुलिस अधीक्षक की संस्तुति एवं ग्रामवासियों की इच्छा होना आवश्यक होती । उक्त एक्ट के अनुसार चौकीदार के कर्त्तव्य थे— १. चौकीदार अपने गांव में किसी भी अपराध की सूचना तुरंत थाने को देगा । वह गांव में होनेवाली किसी भी प्रकार की अप्राकृतिक, संदिग्ध और आकस्मिक मौत की सूचना थाने को तुरंत देगा । अपराधों के प्रयत्न एवं तैयारी की किसी प्रकार की जानकारी थाने को देगा । २. वह थाने को उन सारे मामलों एवं विवादों की सूचना देगा, जिससे दंगा भड़कने की संभावना हो । ३. घोषित अपराधी को गिरफ्तार कराएगा । ४. दुराचारियों के चाल-चलन के बारे में थानाध्यक्ष को सूचित करेगा । ५. थानाध्यक्ष के वैधानिक आदेशों का पालन करेगा । ६. गांव की रखवाली के लिए उत्तरदायी होगा । ७. वह अपनी योग्यता के अनुसार गांव के बारे में अन्य कोई सूचना सक्षम मजिस्ट्रेट एवं पुलिस द्वारा मांगे जाने पर प्रदान करेगा ।

उत्तर प्रदेश में चौकीदारों को लाल साफा, सफेद धोती, जाड़े के लिए खाकी कोट, खाकी गोल गले की जर्सी, कमर में बांधने वाली चमड़े की पेटी, ऊपर-नीचे पीतल लगी हुई एक लाठी मिलती थी । इनका वेतन पहले केवल पच्चीस रुपये हुआ करता था, जिसमें चार रुपया साइकिल भत्ता भी शामिल था । अब यह वेतन सौ रुपया प्रतिमाह हो गया है । उत्तर प्रदेश में केवल चौकीदारों की संख्या ४५,७३७ है, जबकि गांवों की संख्या १०,०२,००० है । इस तरह लगभग तीन गांवों पर एक चौकीदार है ।

मध्य प्रदेश में गांव चौकीदार

मध्य प्रदेश की विभिन्न रियासतों में पहले मुखद्दम नामक एक ग्राम अधिकारी होता था । उसकी अधीनता में कोतवार (चौकीदार) होता था । मुखद्दम का काम गांव में होनेवाले अपराधों की सूचना थानों पर देना था । यह प्रणाली आज भी लागू है । मुखद्दम गांव का चौधरी हुआ करता है । मुखद्दम का उत्तरदायित्व थाना एवं तहसील दोनों के प्रति होता है ।

बिहार, बंगाल, उड़ीसा

जमींदारों की अपनी अलग-अलग फौजों के अतिरिक्त सन १७९३ में बंगाल में रेगुलेशन



बारह की धारा-१२० के अधीन गांव के चौकीदार नियुक्त किये गये । इस रेगुलेशन के अधीन चौकीदार को थानों के अधीन नियुक्त किया गया, परंतु वास्तव में वे विभिन्न जमींदारों के सेवक ही बने रहे । वैसे जमींदार ही संपूर्ण शांति व्यवस्था, अपराध निरोध एवं राजस्व वसूली के उत्तरदायी होते थे । सन १८६७ में इस संबंध में एक समिति का गठन हुआ, जिसमें दो सुझाव आये— १. एक ग्रामीण पुलिस को नगर पुलिस की तरह ही संगठित किया जाए तथा २. चौकीदारों को निश्चित वेतन समय पर दिया जाए ।

सन १८७० के अधिनियम छह में इसकी व्यवस्था भी की गयी । इसके अनुसार चौकीदार को वेतन का भुगतान गांववालों द्वारा ही किया जाना था । उसे राजकोष से वेतन नहीं मिलता था । यह प्रणाली संतोषजनक नहीं पायी गयी और सन १८९२ के अधिनियम प्रथम के अनुसार चौकीदार का उत्तरदायित्व ग्रामीणों के प्रति समाप्त कर दिया गया । नया विधान लागू किया गया कि चौकीदार स्थानीय निवासी अवश्य होगा, लेकिन फिर भी उसे तैनात करने का अधिकार जिला मजिस्ट्रेट को होगा । दस से बीस चौकीदारों का पर्यवेक्षण करने के लिए एक दफादार की तैनाती की गयी । बाद में बंगाल में सन १९६३-६४ में चौकीदार प्रणाली लगभग समाप्त हो गयी और उड़ीसा में भी पच्चीस हजार चौकीदारों की जगह पर आरक्षियों की भरती की गयी । लेकिन यह प्रणाली सफल नहीं हुई । आज भी चौकीदार गांवों में बने हुए हैं । उड़ीसा में इन्हें गांव-रक्षक कहा जाता है ।

असम के गांवों में चौकीदार की व्यवस्था नहीं है । गांव और प्रजा-समूह का मुखिया ही इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करता है । विभिन्न जन-जातियों के प्रमुख ही स्वयं में कार्यपाल एवं न्यायिक अधिकारों से युक्त होते हैं । उनके अधिकारों को राजकीय मान्यता प्राप्त है ।

पंजाब में गांव की रखवाली का काम चौकीदार के जिम्मे है और गांव में होनेवाले अपराध की सूचना थाने को देने का जिम्मा नंबरदार का । कई गांव के ऊपर एक जिलेदार भी होता है ।

गुजरात में चौकीदार के स्थान पर ग्राम रक्षक दल होते हैं, जो थानाध्यक्ष के प्रति जिम्मेदार होते हैं । सन १९६४ में कर्नाटक ग्राम रक्षक दल एक्ट में संशोधन किया गया । एक ग्राम रक्षक दल में बीस सदस्य होते हैं । दल का पर्यवेक्षण उपनायक एवं नायक द्वारा किया जाता है, जिनकी तैनाती ताल्लुक स्तर पर ताल्लुक रक्षक दल अधिकारी एवं जिला स्तर पर जिला रक्षक दल अधिकारी द्वारा की जाती है । संपूर्ण ग्राम रक्षक दल जिला पुलिस दल के

प्रशासनिक एवं अनुशासनिक नियंत्रण में रहता है ।

महाराष्ट्र में सन १८५२ में पुलिस व्यवस्था जिला मजिस्ट्रेट की अधीनता में थी, लेकिन यह केवल बांबे प्रेसीडेंसी में ही लागू था । सन १८६७ में बंबई ग्रामीण पुलिस एक्ट बना, जिसमें ग्राम पुलिस का कार्य निर्धारित किया गया । पटेल के अधीन ग्राम चौकीदार तैनात किया गया । कर्नाटक में सन १९६४ में कर्नाटक ग्राम सुरक्षा दल अधिनियम बनाया गया, जिसके अनुसार ग्राम सुरक्षा दल का गठन किया गया, जो एक दलपति के अधीन कार्य करता है । इस दल का गठन संबंधित पुलिस अधीक्षक द्वारा किया जाता है, जिसमें कम-से-कम दस और अधिकतम अड़तालीस सदस्य होते हैं ।

अलग-अलग व्यवस्थाएं

समूचे भारत में ग्रामीण पुलिस की व्यवस्था एक-जैसी नहीं है । सर्वप्रथम ब्रिटिश भारत में सन १८६० में प्रथम पुलिस कमीशन ने इस प्रश्न पर विचार किया था । पुलिस कमीशन सन १९०२ ने इंगलैंड में प्रचलित व्यवस्था के अनुरूप भारत में भी ग्रामीण पुलिस व्यवस्था में परिवर्तन करने के सुझाव दिये थे । यद्यपि उन सुझावों पर अधिक अमल नहीं हो सका, फिर भी प्रायः संपूर्ण ब्रिटिश भारत में चौकीदारों की नियुक्ति करने का अधिकार जिला मजिस्ट्रेट को, काम लेने का अधिकार जिला पुलिस अधीक्षक को मिल गया, जो अभी तक जारी है ।

उत्तर प्रदेश पुलिस कमीशन सन १९६० ने यह पाया कि गांव का चौकीदार अथवा गांव का प्रधान वैसा ही काम करता है, जैसा कि जिला मजिस्ट्रेट चाहता है । अब प्रायः संपूर्ण भारत में ग्राम सुरक्षा समितियों का गठन होने लगा है । इसके बाद भी चौकीदार के कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व में कोई फर्क नहीं पड़ा है ।

राष्ट्रीय पुलिस आयोग सन १९७७ ने भी ग्राम-चौकीदार व्यवस्था पर एक दृष्टि डाली और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि ग्रामीण जनसंख्या के ५४०३ व्यक्तियों पर एक कांस्टेबल ड्यूटी देता है, जबकि नगर क्षेत्र में ६७५ पर एक कांस्टेबल । ऐसी स्थिति में ग्राम चौकीदार व्यवस्था राष्ट्र के लिए अत्यंत उपयोगी है । इसमें बहुत थोड़े से परिवर्तन की आवश्यकता है । इसके लिए आयोग ने कई उपयोगी सुझाव दिये हैं, जैसे— चौकीदार स्थानीय होना चाहिए । उसके पास उस गांव में जीवनयापन का कुछ धंधा भी होना चाहिए । उसे गांव सभा की कुछ भूमि दानस्वरूप भी दी जा सकती है, जिसे जोत-बोकर वह अपना जीवन यापन कर सके । उसे थाने के अधीन ही रखना चाहिए और उसे पुलिस विभाग से ही वेतन मिलना चाहिए । वेतन ग्राम की आर्थिक स्थिति के अनुरूप होना चाहिए और चौकीदार को अन्य विभागों के कामों में नहीं लगाना चाहिए ।

राष्ट्रीय पुलिस आयोग का दृष्टिकोण राष्ट्रीय रहा है । उसमें स्थानिक परिस्थितियों को ध्यान में नहीं रखा गया । कोई भी चौकीदार केवल राज्य के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह करके ग्राम में नहीं रह सकता । उसे ग्राम की स्थानीय परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित होते रहना पड़ेगा । अतः ग्राम सुरक्षा के लिए ग्राम चौकीदारी प्रथा को मजबूत करने हेतु एक अलग अधिनियम की आवश्यकता है ।

—उपसेना नायक, २८वीं वाहिनी पी.ए.सी. इटावा (उ.प्र.)

बुद्धि विलास

१. एक संख्या के ८० प्रतिशत में यदि ८० जोड़ा जाए तो वही संख्या प्राप्त होती है । बताइए, वह संख्या क्या है ?

२. क. महाभारत के युद्ध के १८ दिनों में सबसे अधिक दिनों तक कौरव-सेना का सेनापतित्व किसने किया था ?

ख. शेष दिनों में क्रमशः किसने सेनापतित्व किया ?

३. वह कौन पौराणिक ऋषि हुआ है जिसने सबसे पहले दक्षिण में आर्य उपनिवेश कायम किया था ?

४. क. देश में कितने लोग गरीबी-रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रहे हैं ?

ख. इनमें से कितने ग्रामीण क्षेत्रों और कितने शहरी क्षेत्रों में हैं ?

ग. किस राज्य में इस स्तर के लोग सबसे अधिक हैं ?

५. क. हाल में अधिक क्षमतावाला नया इस्पात संयंत्र कहां चालू हुआ है ?

ख. इस पर कितनी लागत आयी है और इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता कितनी है ?

६. क. इस वर्ष किस भारतीय को 'मैगसेसे पुरस्कार' के लिए चुना गया है ?

ख. इस पुरस्कार में कितनी राशि प्रदान की जाती है ?

७. क. संयुक्त राष्ट्रसंघ का नया सदस्य कौन बना है ?

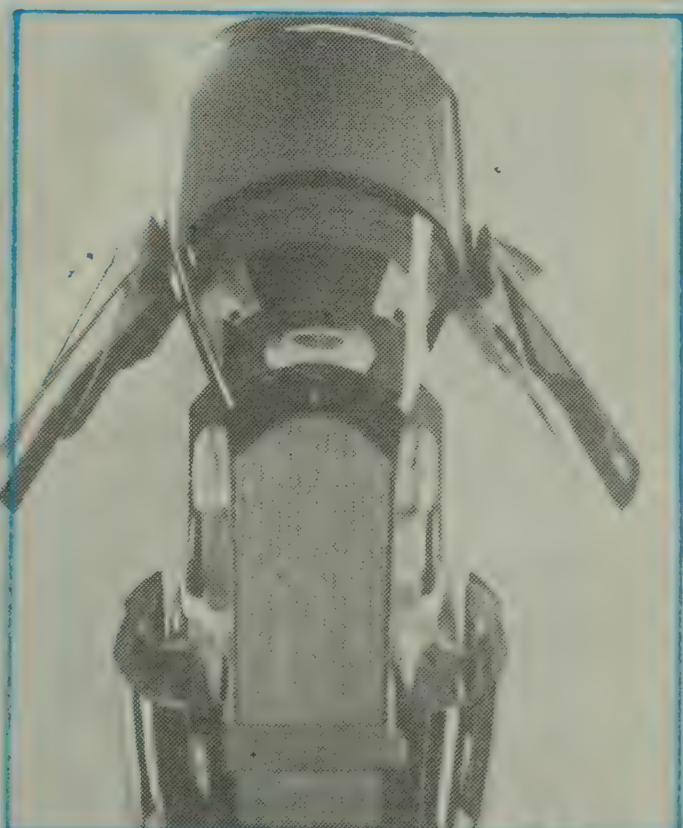
ख. अब राष्ट्रसंघ की सदस्य-संख्या कितनी हो गयी है ?

८. क. दुनिया की सबसे अमीर महिला कौन है ?

ख. इस समय दुनिया की सबसे अधिक उम्र की महिला कौन है ?

९. देश में सबसे लंबी रेल-सुरंग कहां निर्माणाधीन है ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—



अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

—संपादक

स्वीकार किया मैंने

● डॉ. प्रेमलता

एक सोच बार-बार उभरती है— अगर कभी मैंने सदल मिश्र की तरह कोई टीका लिखी होती और सारी टीका समाप्त करने के बाद मुझे पता चलता कि कोई मेरी इस समस्या में निरंतर साथ देता रहा है और मैंने उसे कोई अर्थ नहीं दिया— तो क्या मैं इस सारी टीका का श्रेय भामती को दे दूंगा ?

पता नहीं सदल मिश्र की भामती कैसी थी पर रीमा तुम ? तुम्हारे बनाये हुए मिथ मुझे निगल गये । तुम जंगलों के पार अपनी बावड़ी के जल में ताकती, वक्त काटती रही और मैं सारे मैदान को रौंद-रौंदकर अपना अकेलापन खाली करता रहा और बाकी कुछ नहीं बचा । शोर सीढ़ियों से उठता और मंजिलों तक चढ़ जाता— ऊपर और ऊपर । मेरे रक्त-रंजित मन के फिर टुकड़े होते, फिर धागे पिरोये जाते । मैं खामोश सड़क के किनारे खड़ा-खड़ा सोचता रहता— बस तुम्हारे चले जाने को महसूस करता । कैसा वीतराग-सा हो गया है न मन । यह कैसा घर है मेरा जहां पर न कुछ लाना अच्छा है न ले जाना । मैं स्वयं ही जिंदा नहीं बचता और घर के बाकी सब लोग मुझी को जिंदा रखने के लिए हर दिन इतना शोर पैदा करते रहते हैं जिसमें मैं हर आवाज के साथ कई बार मरता हूं ।

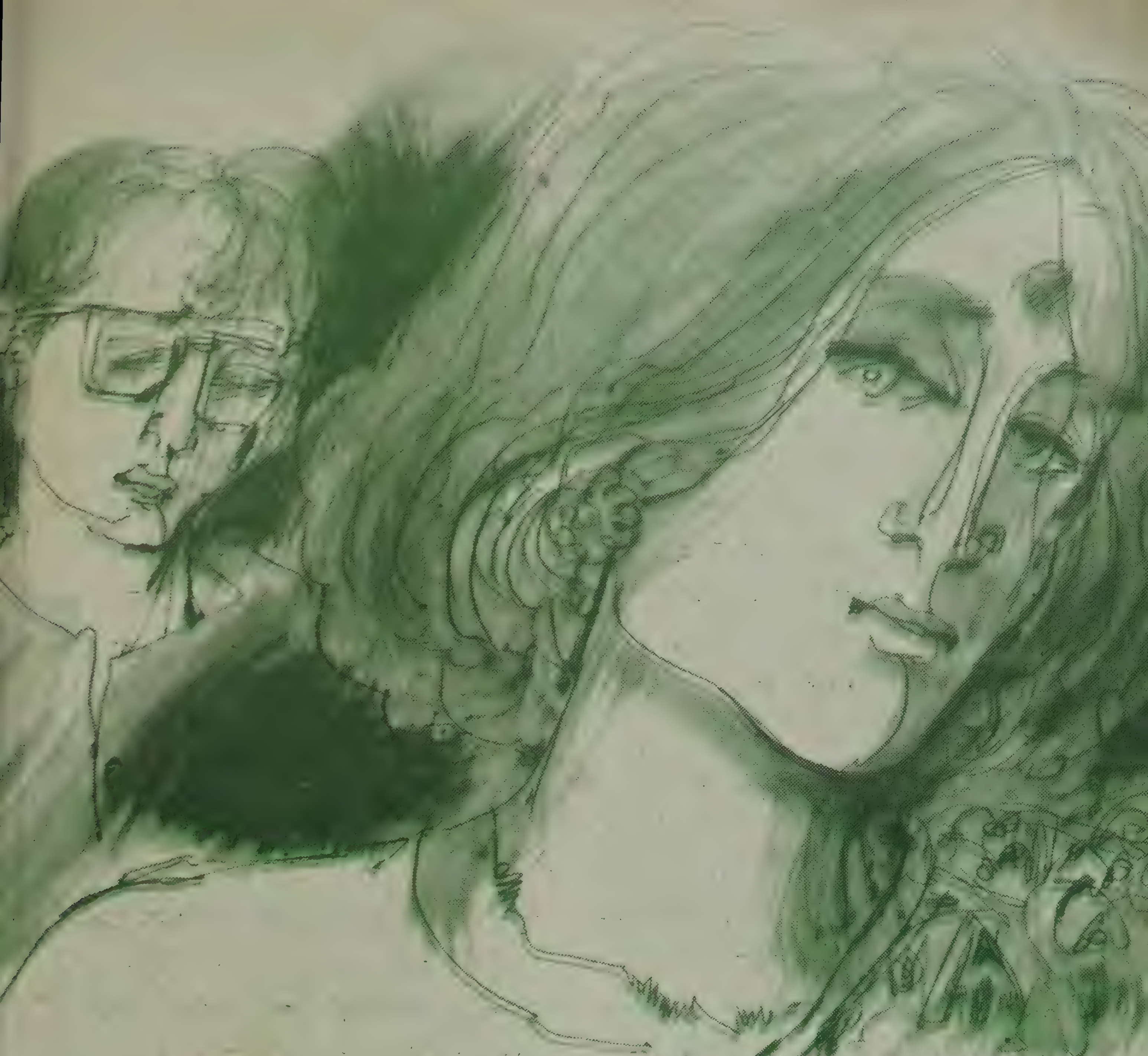
रीमा आखिर तुम चली गयीं— या तुम्हें अब जाना ही था । हम सबसे अधिक अपनी भावनाओं से शोषित होते हैं न ! मुझे मेरे अपने ही शोषित कर गये और मैंने तुम्हें खो दिया ।

मेरा नन्हा-सा मुन्नू गहरी नींद नहीं सो पा रहा, अपने अनवरत रोने को रोक नहीं पा रहा । आश्वस्त नहीं हो पाता मेरे कितना भी पुचकारने पर और बार-बार अपनी बड़ी मम्मा को खोज रहा है— अपनी दादी मां को, मेरी मां को । मेरे नन्हें ने अपनी छोटी मां खो दी है और मैं पत्नी विहीन ही नहीं हुआ असहाय-सा हो गया हूं । प्लेटफार्म पर खड़ा ऐसा मुसाफिर जिसकी गाड़ी ही नहीं छूट गयी, टिकट भी खो गया है ।

तुमने तो मुझे मेरा खोया हुआ टिकट लाकर थमाया था रीमा । मेरे बोझ को बांटा था— तुम्हें कितनी अग्नि परीक्षा देनी पड़ी, मैं जानता हूं ।

आखिर तुमने मुझे क्यों चाहा ? किस अधिकार से चाहा ? मैं क्यों करने लगा हूं ऐसे बेतुके सवाल । चाहने के लिए भी कोई अधिकार देता है क्या ये अधिकार-जैसी चीज भी चाहने न चाहने के लिए होती है ?

पर मैं कहां रक्षा कर पाया तुम्हारे किसी भी अधिकार की ? कभी-कभी आदमी अपना शव स्वयं उठाकर चलता है । मैं अब अपना शव ढो रहा हूं । रीमा । मैंने पत्र के ऊपर आज की तारीख डाली है वह ऐतिहासिक तारीख—



६-१-७८ जहां से मैं अस्त होती हुई शताब्दी का परिणाम देख रहा हूं । मैंने लिखना शुरू कर दिया है ।

"देखो रीमा । तुम्हें अब कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है । मैं सब समझ गया हूं । तुम निःसंकोच अपने निर्णय की राह चल सकती हो । मुझे कोई शिकवा नहीं होगा रीमा ।"

उस नन्हीं-सी बच्ची के हाथ में वह पत्र पकड़ा मैं आगे बढ़ने लगा । लड़की चहककर फिर सामने आ गयी—

"यह पत्र किसको देना होगा ?"

"तुम्हारी बुआ को ।"

"तुम मेरी बुआ को जानते हो ? बुआ तो घर में ही है, बुला दूं क्या ?"

उस रात जो मैंने फैसला कर लिया था, वह अचानक ही नहीं हुआ था । सारा दिन आंखों के सामने वह झील कुलबुलाती रही थी जिसके पास बैठ मैं रीमा को समझाता रहा था— देखो तुम कुछ फैसला कर लो, मैं मुक्त हो जाऊंगा । वरना मैं कभी अपने को माफ नहीं कर सकूंगा तुम कितना इंतजार करोगी मेरा । वह सुबकती रही, हथेलियों में मुंह छुपा रोती रही । नहीं मुझसे नहीं होगा । मैं निरर्थक-सा बैठा

छोटे-छोटे कंकड़ उठा पानी में फेंकता रहा। पानी तिलमिलाता, फैलता और फिर जल शांत हो जाता। अंधेरा होने लगा था और हम फिर अनिर्णय की स्थिति में उठ आये थे। मां ने आज सुबह फिर अपना फैसला दोहराते हुए ऐलान किया था।

"तुम दूसरी शादी करो तो करो, मैं मुन्नू को सौतेली मां को नहीं सौंप सकती। तब कहा था कमला की लड़की को ले आती हूं। देखी-भाली लड़की है, मुझे भरोसा तो रहेगा। किसी ने नहीं सुनी मेरी— शादी ही नहीं करनी। फिर कितना वक्त निकाल सके अब ?

अच्छा पाल लेगी मां अपनी तरह जानता तो हूं मैं। एक उदाहरण है न सामने। मामी बच्चे को जन्म देते ही मर गयी थी तो दीपक मामा एकदम असहाय हो गये थे— जन्मते बच्चे को कौन पालेगा उस पर मामा की 'टूरिंग जॉब'। मां ने पिताजी की तरफ देखा था और फिर मां ने आगे बढ़कर बच्चे को उठा लिया था— मैं पालूंगी बच्चे को और पिताजी ने अपनी शर्त भी जोड़ दी थी 'एक बार ले जाऊंगा तो फिर कोई मांगे नहीं। बच्चे को एक जमीन तो चाहिए!' पिताजी का सिद्धांत एक विचार से प्रेरित था मुझे अच्छा लगा था पर बाद में मां ने उसे जिस तरह धूप और बारिश से वंचित रख सिर्फ छाया दी— वह कभी सहज रूप से पनप न सका। अतिरिक्त सतर्कता और सबके हिस्से काट-काटकर जिस तरह उसके आगे रखे गये। वह और उसकी अधिकार भावना पनपकर जहरीली होने लगी और कभी-कभी हम तक भी उसकी कड़वाहट चली जाती पर हम लोग उसे सहन कर जाते क्योंकि उसे हमने अपने छोटे भाई की तरह पूरी तरह अपना लिया था। उसकी गीली पैंटियों को हाथों में सुखाया था जब वह बहुत बीमार हो गया था और कई-कई रातें जागकर काटी थीं। हमारा सहज मोह था उसके लिए। दीपक मामा तो मां के अहसान तले दब गये थे। विकास हमीं को अपना भाई-बहन मानता था। मामा के लाख कहने पर भी अपनी बहनों से कभी राखी नहीं बंधवायी उसने। कभी अपने भाई को भाई नहीं माना। उनकी लायी हुई चीजें लौटा देता।

तभी तो मैं रीमा को इतनी शिद्दत से समझाता रहा था कि अपने मन को आश्वसत कर सकूं मैं मुन्नू को अपने से अलग नहीं होने दूंगा।

पर घर आकर मैं एक अजीब छटपटाहट से घिर गया— मैं जो इतना 'कनविंस' कर आया हूं रीमा को और रीमा यदि वास्तव में मेरी बात मान ले और मेरे रास्ते से अलग होने की सोचती है तो एक अंधेरा आंखों के आगे घिर आया और लगा सारा खालीपन मुझे चारों ओर से घेरने लगा है। मैं निस्सहाय नितांत अकेला हो गया हूं। कहीं कुछ करने को नहीं रहेगा। किसी का अब इंतजार तक नहीं। ओह, मैंने यह क्या किया! मन हुआ अभी इसी वक्त रीमा से बात करूं, कहीं से फोन करूं पर कहां से ? रात को नौ बजने को आये हैं। मां दो बार खाने को पूछ गयी थी— मुझे भूख ही नहीं लग रही। एक अजीब-सी बेचैनी से सारी रात सो नहीं पाया, सुबह ऑफिस पहुंचते ही फोन मिलाया—

"रीमा तुम कैसी हो ?"

"ठीक हूं।"

"कल बहुत दिल दुखाया न तुम्हारा ?"

"तुमने तो कहा था फोन नहीं करोगे ?"

रीमा की जीवन की धुरियों को अपनी प्रचंड हथेलियों से उलटी दिशा को घुमाती मुन्नू की बड़ी मम्मा ने एक नकार का सृजन कर दिया था जो घर की हर चौखट पर खड़ा मिलता उसे और वह हर बार उससे टकराकर लहुलूहान हो जाती । समानांतर चलता एक युद्ध, रुके हुए अघटित घटक-तत्व, भीतर ही भीतर खेलों को तोड़ते-मरोड़ते-जैसे कोई लोहे का गोला गले में अटका पड़ा हो ।

"क्यों अच्छा नहीं लगा क्या ?" फिर मैं थोड़ी देर चुप रहा जैसे फोन करने का अधिकार मैंने खुद ही छोड़ दिया था तो सवाल कैसा ।

"बहुत अच्छा लग रहा है.....मुझे मालूम था तुम फोन करोगे ।"

मेरा मन हल्का हो आया—

"कैसे पता था ?"

"यही कि तुम जो आज कह रहे हो, वह कल तक नहीं टिकेगा । पानी की ऊपरी धारा की तरह बह जाएगा, तब तुम अपने आप से ही फोन करोगे ।"

एक हवा की तरह वह सब बीच में से गुजर गया । मैं कितना हल्का हो आया था और मैंने फैसला कर लिया था कि अब रीमा को घर ले आऊंगा ।

★ ★ ★

एक बिंब बचपन से ही रीमा की आंखों में बस-सा गया था । कभी पीठ मोड़कर खड़ी एक पुरुष आकृति जिसके मुंह की दिशा में ढेर सारे फूल लहरा रहे हैं जैसे पूरा बसंत उसके अक्स को पीले पारदर्शक सपनों से भर रहा है और उसकी पीठ के पीछे है स्याह सूना अंधेरा और उल्लुओं की चमकती गोल कंचों-सी आंखें— कैसा तो विरोध झलकता है इस बिंब से— रीमा इस बिंब का विश्लेषण कर कई-कई अर्थ लगाने की कोशिश करती, फिर घबराकर आंख बंद कर लेती, सामने फिर वही होता— स्याह डैश, आकाश पर झूलता हुआ ।

उसने जब नितिन को देखा— लगा उसका कल्पना-पुरुष यही है । ढेर सारे फूल भी दिखे उसे और स्याह काला डैश भी, पता नहीं क्यों उसने झट से स्वीकार कर लिया जैसे उसका मन चिर-प्रतीक्षित था उस काले स्याह डैश के लिए— जीवन के इतने सरल रास्ते छोड़कर उसने इतना कठिन और टेढ़ा रास्ता क्यों चुना— वह नहीं जानती । जब वह दीवारों की खामोशी, भीड़ की गुंजलक और सड़कों के शोर से परे बसंत के फूलों से और अपने आंगनभर सकती थी तो क्यों मेंहदी की पौध लगाने के लिए उसने यह वीरान शिला चुन ली ।

पर यह तो रीमा का अपना फैसला था उसके लिए वह स्वयं ही जिम्मेदार थी । इसलिए वह सहज थी । उसे कोई शिकायत नहीं ।

"मुन्नू को अपने पास ले लें ? रीमा ने पूछा । एक पल के लिए नितिन सोच में पड़ गये मां क्या लाने देगी मुन्नू को ? फिर बोला— 'रहने दो' ।

रीमा आफिस से लौटी तो कई तसवीरें, चाकलेट, रंगीन पैंसिलें थीं उसके पास मुन्नू को

देने के लिए । करीब एक घंटा मुन्नू रीमा से घुल-मिलकर हंसता-बतियाता रहा, पैंसिलें छीलता-घिसता रहा और बस सुबह होते-होते पता नहीं क्या हुआ उसके सारे पैमाने ही बदल गये । जैसे चाकलेट से दांत खराब हो जाते हैं, उसे पढ़ाई के समय तस्वीरें नहीं देखनी चाहिएं । ड्राईंग नहीं करनी चाहिए । फिर सबसे बड़ी बात रीमा ऑफिस से थकी आयी है, उसको ज्यादा तंग करोगे तो डांट पड़ेगी । पापा डांटेंगे कि नयी मां को ऑफिस से आते ही क्यों तंग किया ।

रीमा की जीवन की धुरियों को अपनी प्रचंड हथेलियों से उलटी दिशा को घुमाती मुन्नू की बड़ी मम्मा ने एक नकार का सृजन कर दिया था जो घर की हर चौखट पर खड़ा मिलता उसे और वह हर बार उससे टकराकर लहुलूहान हो जाती । समानांतर चलता एक युद्ध, रुके हुए अघटित घटक-तत्व, भीतर ही भीतर खोलों को तोड़ते-मरोड़ते जैसे कोई लोहे का गोला गले में अटका पड़ा हो ।

"आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा रीमा ।"

नितिश कितने शिथिल होते जा रहे हैं न रीमा ने नोट किया ।

"चलो, कहीं बाहर चलें ।" रीमा ने सुझाया ।

"नहीं, बाहर जाने को भी मन नहीं है । मुन्नू के टैस्ट हैं, कल से थोड़ा उसे भी देखा जाए ।"

"अपने से इस तरह नाखुश रहोगे तो बच्चे को खुशियां कहां से दोगे ?"

"यही तो सोच रहा हूं मैंने दिया क्या है इस बच्चे को ।"

इतने में मुन्नू का हाथ पकड़े साड़ियों का ढेर लिए मां क्रोध से उबलती हुई आती है और पलंग पर उन सबको पटककर बिना कुछ कहे मुन्नू को खींचकर ले चली जाती है ।

दोनों अवाक ! किसी को कुछ समझ में नहीं आया । नितिन की भी हिम्मत नहीं होती वह मां से पूछे— यह सब क्या है । तब उसने गौर से देखा— सुमिता की वे सब साड़ियां जो उसकी डैथ के बाद उसने एक अटैची में बंद कर दी थीं और रीमा को घर लाने से पहले अब उसने वह अटैची मां को थमाकर कहा था— "इन्हें एक तरफ रख लो मां" । इससे अधिक और कुछ नहीं कहा था । परसों जब उसे छोटी भाभी को वह साड़ी पहने देखा तो एकाएक उसके मन में टीस-सी उठी । सुमिता उसकी आंखों में झूल गयी और उसकी आंखें भर आयीं । वह रीमा से कह बैठा ।

"यह जो साड़ी भाभी पहने हैं न, सुमिता को बहुत पसंद थी ।... पता नहीं क्यों मैं बर्दाश्त नहीं कर पा रहा कि उसे कोई और पहने ।"

बात सुनते-सुनते मां ऊपर से आ गयी थी । रीमा साड़ियों को देख चुप हो गयी थी । मां ने दिन में यही साड़ियां उसके सामने फेंक काफी कुछ कहा था । वह चुपचाप सुनकर उठ आयी थी । किसी हंगामे से बचने के लिए नितिन उठे, रीमा को तैयार होने को कहा और दोनों बाहर निकल आये ।

बस उस दिन से एक विद्रूपता सबके चेहरे पर विराजमान हो गयी । पंद्रह-बीस दिन तक भाभी ने एक-एक कर सुमिता की साड़ियां रोज बदल-बदल कर पहनी ।

नितिन संवेदनशीलता की हद तक संवेदन शून्य हो गया ।

★ ★ ★

सीलन में लिपटी जीवन दृष्टियां सीमित हो रही हैं । या मन के अंधेरे बाहर की दुनिया को



छोटा कर रहे हैं— मैं उदार क्यों नहीं हो पा रही— रीमा सोचती है । जिन्हें मैं घर-गृहस्थी में होनेवाली मामूली-सी घटना कहकर टाल सकती हूं वे मेरे लिए इतनी अहम क्यों होती जा रही हैं । मुन्नू का टिफिन खोल मां नितिन के सामने रख देती है—

"एक दिन टिफिन खाकर नहीं आया बेचारा । ऐसी सूखी रोटी होती हैं, क्या खाये वह ।"

"तो तू खुद बना दिया कर टिफिन । बच्चे को भूखा थोड़े ही न रखना है"— पिताजी के आदेशात्मक स्वर के साथ ही मां बुलंद हो उठी—

"नहीं वो मां बनी है न दो दिन में आकर । उसी को बनाने दो । कुछ कहो तो सही कैसे मुंह फूल जाता है । मैं तो नहीं कहती कुछ—सुमिता की और बात थी । सब सुन लेती थी । बहू थी— खरा सोना । अब तो नितिन ही जाने ।

रीमा ने आंचल से आंखें पोंछी और अपने कमरे में चली गयी— बता नहीं सकी कि मुन्नू ने आज स्कूल में इडलियां खायी थीं ।

"क्या खाता टिफिन ?....

उसके कर्त्तव्य की सीमा आखिर थी कहां ?

"देखो रीमा, तुम धीरे-धीरे उसके काम करने लगोगी, वह तुम पर छोटी-छोटी बातों के लिए भी निर्भर करने लगेगा तो तुम्हारे निकट अपने आप आएगा । उसका बस्ता ठीक करना, उसका टिफिन बना देना, उसकी पसंद पूछ लेना— यही तो छोटी-छोटी बातें हैं । बस धैर्य रखो, वक्त तो लगेगा ही ।" और तब से वह धैर्य ही तो रख रही थी । आज उन सब बातों के आगे भी सीमा रेखा लग गयी । कितने मन से उसने कमरे में अगरबत्ती जलायी थी जिसके धुएं से कमरा खुशबू से भर गया था । चंदन की अगरबत्ती कितनी ठंडक देती है न । उसने उठकर अगरबत्ती ही बुझा दी और अपने धुले बालों को कंघी से रौंदना शुरू कर दिया । हर बार ऐसा होता है । जब स्थितियां रीमा पर निर्मम होती हैं, वह हर चीज पर निर्मम हो उठती है जो उसे बहुत प्रिय होती है ।

रीमा ने जिंदगी में इतने शून्य इकट्ठे कर लिये थे, इससे ढेर— जानती थी उनका कोई अर्थ नहीं होता फिर भी संख्या बढ़ाती रही हमेशा और एक दिन नितिन आ गये उसके जीवन में एक खड़ी पाई आगे आकर लग गयी— रीमा हतप्रभ थी । वह कितनी बड़ी हो गयी सैकड़ा, हजार और लाख । और अब ? किसी ने आकर उसके सारे शून्य ही काटने शुरू कर



दिये । सबके सब । वह रह गयी बाकी वही तिरछी खड़ी पाई ।

नितिन आज उदास क्यों हैं— रीमा नहीं जानती । घर के बाकी लोग आज अत्यधिक प्रसन्न क्यों हैं— यह भी रीमा नहीं जानती । हां, मां सुबह चार बजे से उठ गयी है और रसोई धो-पौंछकर खाना पकाना हो रहा है । नितिन भी जाग रहे हैं । तब से रीमा भी जाग रही है । शायद नितिन जानते हों कि आज घर में विशेष क्या है पर वह पूछ ही नहीं पा रही । उसकी सहायता की आवश्यकता तो कभी भी किसी को नहीं होती वह जाए भी उठकर तो क्या करें । कितना निरर्थक-सा लगता है सब कुछ तिनके की तरह जल के बहाव के साथ बहते चले जाना । जहां लहर ने किनारे की रेत पर फेंक दिया उसी को गंतव्य मान लिया । अपना तो— जैसे कोई आशय होता ही नहीं कुछ । ठहरे हुए पानी के नीचे जमीन शैवाल के नीचे भी एक जमीन होती है एक आधार होता है । उसमें भी इतनी सामर्थ्य होती है कि एक रंग, एक तरलता पैदा कर सके । मैं तो कहीं कुछ अर्थ उत्पन्न नहीं कर पा रही— रीमा का भीतर उसे झंकझोरता है । वह दर्पण जिसके पीछे का रोगन ही उतर गया है और उसका अपना प्रतिबिंब तक नहीं बनाता ।

मुन्नू आकर पापा से लिपट जाता है— मुन्नू तो नहा-धोकर तैयार भी हो गया है इतनी जल्दी ।

"चलो पापा मंदिर चलो मेरे साथ ।"

नितिन ने कोई प्रतिकार नहीं किया— "अच्छा बेटे तुम चलो मैं अभी आता हूं ।"

तभी पिताजी की आवाज आयी— "मुन्नू बेटे, आओ इधर जल्दी, देर नहीं होनी चाहिए ।"

किस चीज में देर नहीं होनी चाहिए, नितिन भी कुछ क्यों नहीं बताते— रीमा की सुबह क्यों इस तरह शुरू होती हैं ।

नितिन बेमन से उठे, नहाये और मुन्नू की उंगली पकड़ मां के साथ मंदिर चले गये ।

नितिन जल्दी ही लौट भी आये । मां और मुन्नू से पहले ही, और आकर रीमा के ताने-बाने को तोड़ा ।

"उठो रीमा इस तरह क्यों बैठी हो ? नहाना-धोना नहीं है क्या ?"

रीमा उठकर अलमारी की [illegible] पूछ गयी, "आज मंदिर जाने का [illegible] आया । मैं भी चलती साथ अगर इच्छा थी तो ।"

रीमा की बात पूरी ही न हुई थी कि मुन्नू किलकता कमरे में आ गया— "पापा यह सारे फ्रूट और खाना जो हमने पंडितजी को दिया है मेरी मम्मी को मिल जाएगा न ? है न पापा बड़ी मम्मा ने बताया था ।"

"हां बेटे, अब जाओ नाश्ता कर लो, स्कूल को देर हो रही है न ।"

"आज मैं देर से जाऊंगा न पापा... अभी पंडितजी आएंगे खाना खाने, मुझे ही खिलाना चाहिए न ।"

'बड़ी मम्मा ने कहा है बेटे का दिया हुआ
कुछ मां को मिल जाता है ।''
ीमा के लिए बाकी समझने को कुछ नहीं
। संयोग की ही बात है कि पिछले साल
ही के दिन जब नितिन ने पांच सौ रुपये
विद्यालय में दिये थे तो वह साथ थी । ऐसे
सने पूछ लिया था— ''हर साल किसी
कारण या यूं ही— आज ही देना चाहते
''

हां रीमा दरअसल आज सुमिता का श्राद्ध
 मुन्नू के नाम से कुछ दे देना चाहता हूं ।
होकर जब समझने लगेगा तो जो यह कर
 कर लेगा । मैं ज्यादा विश्वास नहीं करता
ब मैं, पर दान करने में कोई हर्ज भी नहीं
र मुन्नू को अभी कुछ नहीं कहना
 ।''

ाज मां ने पिताजी ने मुन्नू को सब समझा
है । घर में पंडित को बुलाना है उसे अपने
खिलाना है । एक भावना को मजबूत
है । इसमें भला कहां कुछ गलत है ?

 भी कितना
मनोविज्ञान है— किस तरह
करने जैसे पवित्र आयोजन के माध्यम से
ौर तिरस्कार का एक वातावरण तैयार
सकी उपेक्षा की जा सकती है— वह
 ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकती थी ।
भी तो सही खाचों में हैं— मुन्नू की बड़ी
 अपना कर्त्तव्य पूरा किया इतनी
सास कहां मिलेगी जो बहू के लिए इतना
श्राद्ध करे । मुन्नू को तो अपनी मां को ही
र रहा है— इसमें गलत कहां है कुछ ।
तिन ? अपनी दिवंगत पत्नी के लिए
रखना— कितने पुरुष रख पाते हैं
ऐसा ?

गलत खांचा है तो रीमा का है— वही उसमें फिट नहीं बैठ पा रही ।

सुनो नितिन, मुझे गलत मत समझना । मैं जान गयी हूं कि उस प्लेटफार्म का निर्माण हम कभी नहीं कर सकते जिस एक बिंदु पर हम दोनों मिल सकते हैं । तुम्हें पुकारने के लिए तो शायद मुझे पूरी जिंदगी रियाज करना पड़े और फिर भी गले से ऐसा सुर ही न निकले जो तुम तक पहुंच सके । छोटी-छोटी घटनाएं मेरे लिए बहुत बड़ा भय-सा बन गयी हैं नितिन । लगता है हर गाड़ी मुझे छोड़कर आगे निकल जाएगी और मैं अकेली छूट जाऊंगी या पूरी भीड़ मुझे धकेलकर रोंद देगी । इसलिए मैं हमेशा अपने पांव की चप्पल में पांवों को कसकर जमीन पर गढ़ा देती रही हूं— नहीं मुझे जमीन से उखड़ना नहीं है । जमीन से जुड़े रहने की यही अदम्य इच्छा और उससे उखड़ जाने का भय निरंतर मेरे भीतर युद्ध करते रहे हैं इतने दिनों से । इस युद्ध की उठा-पटक ने मुझे हमेशा बेचैन किया है । एक युद्ध की आवाज मेरी पदचाप में हमेशा रही है । एक आहट को मेरे चौकन्ने कान हमेशा सुनते रहे हैं । आहटों का समुद्र आता है और मुझे अस्त-व्यस्त कर जाता है । मैं अपने उलटे लटके प्रतिबिंब को देख आहत होती रहती हूं । मैं इस त्रासदायक प्रक्रिया से और नहीं गुजर सकती नितिन— चाहती हूं यह सारा युद्ध समाप्त हो जाए ।

मैं जा रही हूं नितिन— जल तोड़ने के निरर्थक प्रयास में मैं थक गयी हूं । कोई सृजन करना होता, कोई बांध बनाना होता तो मैं तुम्हारे साथ चलती पर किसी मासूम बच्चे को विकृत करने का मैं कारण नहीं बनना चाहती ।

गीत

छिल न जाएं,
नेह के अनुबंध,
है बहुत मुश्किल सिमटना दूरियों का ।
कर्ज है इन पर बड़ी मजबूरियों का ।

× × × ×

जिंदगी तरुवर
दिवस सूखी हुई-सी डाल ।
पूरती हैं मकड़ियां
जिस पर दुखों का जाल ।
छिन गया है
फूल का मकरंद,
और उतरा है नशा कस्तूरियों का ।

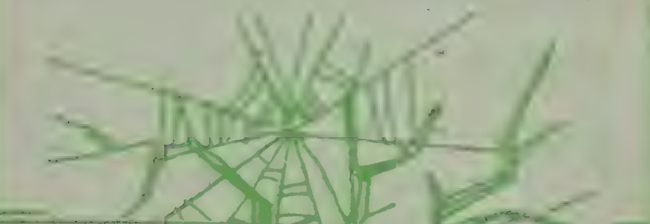
× × × × ×

इक अपेक्षित को
मिली अंधी प्रतीक्षाएं ।
अजाने नील कंठी-सी
सहज कड़वी समीक्षाएं ।
आंख, आंसू के
तस्करी संबंध,
हो न जाए ये शहर दस्तूरियों का ।

× × × × ×

दीप बाती मौन है
लेकर अनावृत्त आस्थाएं
देख शव-यात्रा शलभ की
कांपती हैं तम शिराएं ।
जुगनुओं का
गान है स्वछंद
गीत-गोविंद सा है मन सन्तूरियों का ।

● ब्रजेश भट्ट
जी-१०६, पटेल नगर-३, गाजियाबाद (उ.प्र.)



कोई भी तो किसी बात का कारण
बनना चाहता— मां कहां चाहती है वि
कारण बने । वह तो बस बच्चे को बीच
लेना चाहती है और मुक्त छोड़ देती है
रीमा तक को, दायित्वहीन ।

★ ★ ★

मैं जल में अपनी परछाई ढूंढ़ रहा
किसी ने कोई वादा तो नहीं किया
आप से ही एक बंधन नसों को सिकोड़
गया था और रीमा और मैं कस गये थे
खिंचाव में । पर मैं भी कहां कारण बन
चाहता हूं । पत्र पहुंचा दिया है रीमा को
मुक्त हो रीमा ।'

....

और अब ? मैं लौट चला हूं अपन
पर । अब अपने ही कबूतर खाने में बै
तीर गिनता हूं, तरकश साधता हूं रुमा
खोलता हूं । रुमाल बांधता हूं । अपनी
पूंजी का हिसाब गिनता हूं ।

और अचानक पाता हूं मैं कितना ख
कितना...विपन्न अपनी फटी झोली को
लगता है... यहां न कुछ डाला जाना है
ठहरना है ।

मुन्नू अब मेरे पास सोता है, मुझसे
चिपटकर—

पर मैं उसके पास नहीं होता हूं ।

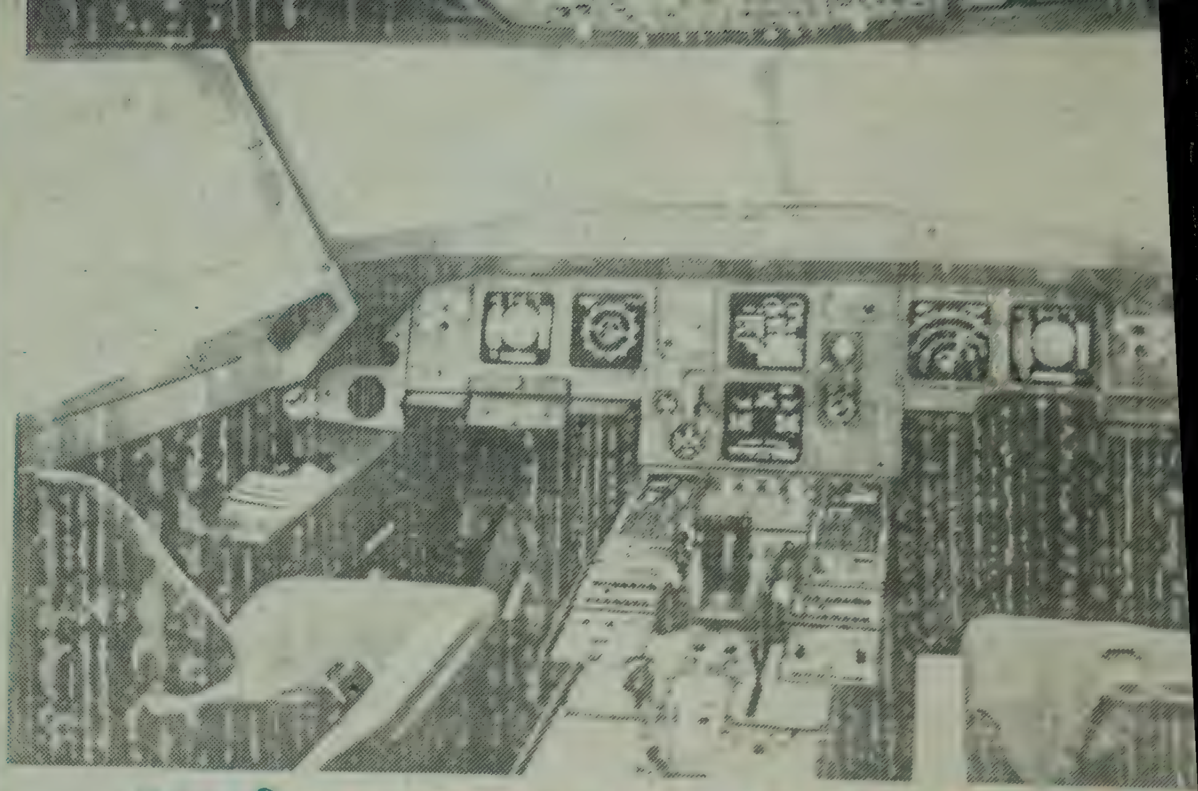
—स्टील अथॉरिटी ऑ
हिन्दुस्तान टाइम
१४वीं मंजिल, कस्तूरबा गां
नयी दिल्ली-

व्यावसायिक विमानों के युग में कुछ नये वैमानिक सितारे आकाश में
[illegible]य-समय पर उभरते रहे हैं जिनके कारण इस [illegible] में नयी क्रांति की लहरें-सी आती रही हैं।
सबसे पहले वर्ष १९४९-५० के दौरान एक [illegible]ा ही नया सितारा उभरा था जिसका नाम [illegible]मेट' था। ब्रिटेन द्वारा तैयार किया यह [illegible]ला व्यावसायिक जेट विमान था जो यात्रियों [illegible]साथ जेट इंजनों की सहायता से उस समय [illegible]मौजूदा विमानों की तुलना में लगभग तीन गुनी अधिक गति (अर्थात लगभग ९५० कि. मी. प्रति घंटे) से उड़ान भरने में सक्षम था। वैसे यह विमान कुछ कारणों से इतना सफल तो नहीं हो पाया था, किंतु इसके लगभग एक दशक के बाद वर्ष १९५८ में एक और वैमानिक सितारा आकाश में उतरा जो बहुत सफल हुआ था। यह था अमरीका द्वारा निर्मित नया परिष्कृत विमान 'बोइंग ७०७'। यह विमान लगभग १५० यात्रियों के साथ विश्व के एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक बिना रुके

[illegible]विमान : जो विमान चालक की गलती पकड़ लेता है!

● बिमल श्रीवास्तव

ए-३२० के यानकक्ष (काकपिट) को कई लोग 'क्लीन काकपिट' अर्थात 'साफ़-सुथरा यान कक्ष' कहते हैं। इसका कारण यह है कि जहां अन्य विमानों के यानकक्ष में चालकों के सामने छोटे-बड़े अनेक प्रकार के सैकड़ों यंत्रों तथा डायलों का जाल-सा बिछा रहता है, वहीं ए-३२० विमान के यानकक्ष में उनके स्थान पर केवल छह 'कैथोड ट्यूबों' का उपयोग किया गया है जिन पर टी वी के परदे की तरह सभी यंत्रों के चित्र तथा उन पर पढ़े जाने वाले पाठ्यांक दिखते हैं। इनके अलावा किसी यंत्र में खराबी आ जाने पर न केवल संबंधित चेतावनी परदे पर आ जाती है, बल्कि उस यंत्र की खराबी की अवस्था में चालक द्वारा किये जानेवाले कार्यों के लिखित विवरण भी परदे पर दिखते हैं।



ए-३२० विमान का साफ सुथरा कॉकपिट जिसमें यंत्रों की संख्या बहुत कम है

हुए जेट स्पीड से सफलतापूर्वक उड़ान भर सकता था तथा इस प्रकार वैमानिक टेक्नालाजी का एक क्रांतिकारी प्रयास था। बोइंग ७०७ विमान इतना लोकप्रिय हुआ था कि आज भी अनेक एयरलाइनें इस विमान का प्रयोग कर रही हैं।

विमान : ध्वनि से भी तेज

इस क्षेत्र में एक बड़ी लहर फिर उभरी थी जब जंबो जेट (अर्थात बोइंग ७४७) तथा कंकार्ड विमानों का अलग-अलग देशों द्वारा लगभग एक साथ निर्माण किया गया था। जहां यूरोपीय देशों द्वारा मिलकर बनाया गया कंकार्ड विमान ध्वनि से भी तेज अर्थात २२०० कि. मी. प्रति घंटे की गति से उड़ान भर सकता था (तथा इस प्रकार यूरोप से अमरीका के बीच की दूरी तीन घंटे से भी कम समय में पूरी कर सकता था), वहीं दूसरी तरफ अमरीका द्वारा निर्मित जंबो जेट (बोइंग ७४७) नामक दुमंजिला विमान यात्रियों की एक बड़ी फौज को लेकर (अर्थात ४०० से ५०० यात्रियों की अविश्वसनीय संख्या के साथ) नभ द

लिए जा सकता था।

तत्पश्चात वैमानिक क्रांति के इसी दौ और क्रांति लगभग १५-१६ वर्षों बाद आयी जब 'फ्लाई बाई वायर' टेक्नालाजी आधारित विमानों का पदार्पण हुआ औ बाई वायर' टेक्नालाजी का नाम आते ही सुपरिचित विमान ए-३२० की छवि तो के सामने स्वतः ही आ जाती है। क्या 'ए-३२०' विमान का निर्माण इसी टेक्ना आधार पर किया गया है।

फ्लाई बाई वायर टेक्नालाजी क्या

'फ्लाई बाई वायर' शब्द आजकल ए विमान के संदर्भ में इतना अधिक प्रयुक्त लगा है कि अनेक लोग 'फ्लाई बाई वायर ए-३२० को एक-दूसरे का पर्यायवाची म लग गये हैं। किंतु बहुत लोग अभी भी बाई वायर टेक्नालाजी के सही अर्थ से पू से परिचित नहीं हैं।

वास्तव में 'फ्लाई बाई वायर' वाक्य अ

...दिक अर्थ अर्थात 'तार (विद्युत) द्वारा ...' के लिए प्रयुक्त होता है। 'तार द्वारा ...' से तात्पर्य है कि उड़ान के लिए प्रयोग ... जानेवाले संयंत्र विद्युत अथवा ...ानिक प्रणालियों (अथवा कंप्यूटर) द्वारा ... किये जाते हैं, पारंपरिक शैली अर्थात ...रों द्वारा नहीं। अथवा दूसरे शब्दों में ... जा सकता है कि 'फ्लाई बाई वायर' ...जी के अंतर्गत चालक, विमान का ...ण कंप्यूटर द्वारा करता है। इस कारण यह ...यंत्रण अत्यंत विश्वसनीय, त्रुटिहीन, सशक्त ...था मानवीय गलतियों से अप्रभावित रहता ...।

सुधार तथा नयी प्रणालियां

कुछ समय पश्चात वायुयानों में सुधार हुआ ...था अब यांत्रिक प्रणाली के अलावा कुछ अन्य ...णालियों—जैसे चल-जलीय (अथवा ...यड्रोलिक), वाययीय (अथवा न्यूमैटिक), ...द्युतीय (इलैक्ट्रिकल) प्रणालियां भी प्रयोग ...लायी जाती हैं जिससे आधुनिक युग के ...शालकाय विमानों जैसे बोइंग ७४७, ...रबस, डी. सी. १० आदि को नियंत्रित करना ...च्चों का खेल-सा हो जाता है। उल्लेखनीय है ... इन विमानों की नियंत्रण सतह (रडर, ...लीवेटर, एलेरान, फ्लैप) आदि इतने बड़े तथा ...री-भरकम होते हैं कि यांत्रिक साधनों द्वारा ... संचालित करना या तो संभव नहीं होगा या ... विमान चालक को बहुत अधिक श्रम ...ना पड़ेगा। इसी कारण जब अन्य प्रणालियां ...ग में लायी जाती हैं तो इन सतहों का ...ालन बहुत सरल हो जाता है। यहां यह भी ...ना आवश्यक है कि आवश्यक नियंत्रण ...हों के संचालन के लिए एक से अधिक प्रणालियों का उपयोग किया जाता है ताकि यदि किसी कारणवश एक प्रणाली विफल हो जाए तो दूसरी प्रणाली उस नियंत्रण सतह को संचालित कर सके। उदाहरण के लिए जंबो जेट के अवतरण गियर (लैंडिंग गियर) सामान्यतः चल जलीय (हायड्रोलिक) प्रणाली द्वारा नीचे किये जाते हैं। किंतु इस प्रणाली के खराब हो जाने की अवस्था में उन्हें यांत्रिक लीवर द्वारा नीचे किया जा सकता है। इसी प्रकार बोइंग ७०७ के ब्रेक चल-जलीय (हायड्रोलिक) प्रणाली द्वारा संचालित होते हैं किंतु उसके विफल हो जाने पर उन्हें वाययीय प्रणाली द्वारा संचालित किया जा सकता है।

'फ्लाई बाई वायर' टेक्नालोजी में यांत्रिक, चल जलीय अथवा वाययीय प्रणाली के स्थान पर विद्युतीय, इलैक्ट्रानिक या कंप्यूटर साधनों का प्रयोग किया जाता है। और यही है 'फ्लाई बाई वायर' का अंदरूनी रहस्य।

फायदे ही फायदे

इस प्रकार कंप्यूटरयुक्त प्रणाली के अनगिनत लाभ हैं। सबसे पहले तो इसमें विमान का भार बहुत ही कम हो जाता है क्योंकि जहां सामान्य विमानों में यांत्रिक तारों, नलिकाओं, लीवरों आदि धात्वीय वस्तुओं का जाल पूरे विमान में फैला रहता है। किंतु फ्लाई बाई वायर टेक्नालाजी, एक विमान में इन भारी वस्तुओं के स्थान पर पतले विद्युत तार लगे होते हैं जो भार में बहुत कम होते हैं। अतः इस प्रकार के विमान के भार में अन्य विमानों की अपेक्षा खासी कमी हो जाती है। भार की इस कमी के फलस्वरूप ईंधन की बचत तो होती ही है साथ ही विमान में यात्रियों की संख्या भी बढ़ायी जा सकती है।

इसके अलावा चल जलीय तथा वाययीय प्रणाली की नलिकाओं में बहुत अधिक दबाव पर द्रव अथवा वायु प्रवाहित होती है (चल-जलीय प्रणाली के द्रव (स्काईड्राल) का दबाव तो वायु मंडल के दबाव से लगभग २०० गुना अधिक रहता है ।) इतने अधिक दबाव के कारण यदि किसी नलिका में कहीं जरा-सा भी छिद्र हो जाए तो द्रव के बाहर निकल जाने की आशंका रहती है । किंतु विद्युत तारों में ऐसा नहीं होता है ।

कंप्यूटर युक्त प्रणाली में एक लाभ यह भी रहता है कि विमान की उड़ान से संबंधित सभी आंकड़ों की गणना कंप्यूटर द्वारा की जाती है तथा उन्हीं के आधार पर उड़ान से संबंधित निर्देश भी कंप्यूटर द्वारा दिये जाते हैं ताकि विमान की उड़ान कम से कम ईंधन के खर्चे में तथा अधिक सुरक्षित तरीके से हो सके । जैसे ए-३२० विमान का इलैक्ट्रानिक सेंट्रलाइज्ड एयरक्राफ्ट मानीटरिंग (ई. सी. ए. एम.) जो कंप्यूटर द्वारा संचालित होता है, प्रति सेकंड लगभग ५०,००० गणनाएं करके इस विमान के लिए लगातार उड़ान संबंधी आंतरिक आदेश जारी करता रहता है । और यदि इस बीच विमान के किसी भाग में कभी किसी तरह की खराबी आ जाए तो क्षणभर में ये कंप्यूटर यान कक्ष में विमान चालक को चेतावनी तथा संकेत दे देते हैं ।

फ्लाई बाई वायर का अद्वितीय उदाहरण—ए-३२०

"फ्लाई बाई वायर' टेक्नालोजी के सिद्धांत पर तैयार किया गया पहला नागरिक विमान (ध्वनि से कम चलनेवाले विमानों की श्रेणी में) ए-३२० है (ध्वनि से भी अधिक तीव्र चलनेवाले विमानों में पहला नागरिक वि 'फ्लाई बाई वायर' टेक्नालाजी पर आधा 'कंकार्ड' है) । इसी टेक्नालाजी के कार ए-३२० विमान अपने असली नाम (ए के स्थान पर 'फ्लाई बाई वायर' के नाम अधिक प्रचलित है ।

ए-३२० विमान में इसी इलैक्ट्रानिक के कारण इसके सारे यंत्र तथा प्रणालिया कंप्यूटर द्वारा संचालित होते हैं । इस प्रक अन्य विमानों में स्थित धात्वीय नलिका भारी-भरकम लीवरों तथा पाइपों के स्थान ए-३२० में हल्के तथा पतले विद्युत तारों उपयोग किया गया है जिससे विमान का



अत्यधिक हल्का हो गया है, जिससे ईंधन बचत होती है ।

साफ सुथरा यान कक्ष

ए-३२० के यानकक्ष (काकपिट) को लोग 'क्लीन काकपिट' अर्थात 'साफ-सु यान कक्ष' कहते हैं । इसका कारण यह है जहां अन्य विमानों के यानकक्ष में चालक सामने छोटे-बड़े अनेक प्रकार के सैकड़ों तथा डायलों का जाल-सा बिछा रहता है, ए-३२० विमान के यानकक्ष में उनके स्था केवल छह 'कैथोड ट्यूबों' का उपयोग कि गया है जिन पर टी वी के परदे की तरह स यंत्रों के चित्र तथा उन पर पढ़े जानेवाले पाठ्यांक दिखते हैं । इनके अलावा किसी

राबी आ जाने पर न केवल संबंधित
नी परदे पर आ जाती है, बल्कि उस यंत्र
राबी की अवस्था में चालक द्वारा किये
ाले कार्यों के लिखित विवरण भी परदे पर
हैं । इसलिए चालक भारी-भरकम उड़ान
लों तथा ग्रंथों को देखने के झंझट से बच
है तथा उड़ान को परिचालित करने में
ध्यान केंद्रित कर सकता है ।
र के उपयोग के कारण एक अन्य लाभ
ोता है कि सभी सूचनाओं के आधार पर
र प्रति क्षण यह निर्णय लेने में सफल
है कि विमान की ऊंचाई, गति, दिशा
को किस प्रकार नियंत्रित किया जाए ताकि
की अधिक से अधिक बचत की जा सके
विमान सुरक्षित तरीके से उड़ान भर सके ।
सके अलावा 'फ्लाई बाई वायर' टेक्नालाजी
नेक दूसरे लाभ भी हैं । जैसे यदि विमान
उड़ान में कोई गलती करे या गलत यंत्रों
योग करे तो विमान का कंप्यूटर उसे ऐसा
से रोक देता है और वे गलत यंत्र चालू
र भी चालू नहीं होते हैं । इसी प्रकार उन
में फ्लाई बाई वायर टेक्नालाजी (अथवा
र) के कारण ऐसे कई नये उपयोगी यंत्रों
मावेश किया गया है जो पहले विमानों में
ते थे । उदाहरण के लिए ए-३२० में
के भारी-भरकम परिचालन संबंधी
जों तथा संदर्भ पुस्तकों को यानकक्ष में
प्यूटर में रिकार्ड कर लिया जाता है तथा
यकता पड़ने पर चालक संबंधित पृष्ठों को
एक बटन दबाकर पढ़ सकता है । इसके
अन्य विमानों में ये दस्तावेज पुस्तकों के
लादे जाते हैं तथा संदर्भ के लिए चालक
पुस्तकों का अवलोकन करना पड़ता है ।
इसी प्रकार दूसरे भी कई नये यंत्र इनमें लगे हैं ।

ए-३२० की अन्य विशेषताएं

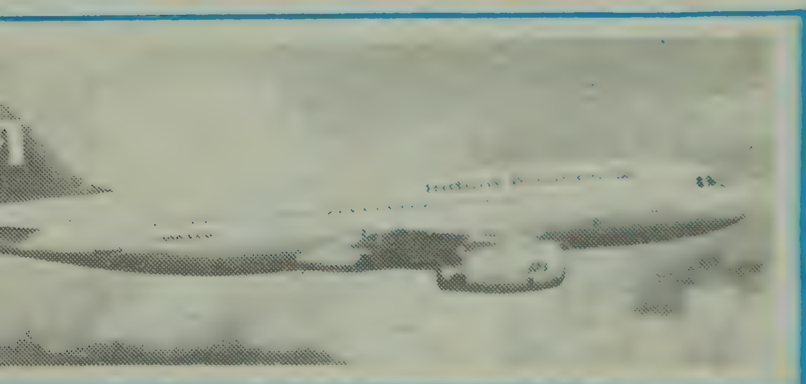
ए-३२० विमान यूरोप की 'एयरबस इंडस्ट्रीज' नामक विमान उत्पादक कंपनी द्वारा बनाया गया है । 'एयरबस इंडस्ट्रीज' वास्तव में यूरोप के छह देशों ब्रिटेन, फ्रांस, जरमनी, स्पेन, हालैंड तथा बेल्जियम द्वारा मिलकर बनायी गयी कंपनी है । एयरबस कंपनी ए-३२० के अलावा एयर बस तथा ए-३१० विमानों का भी निर्माण करती है ।

ए-३२० की प्रमुख विशेषता यह है कि इस विमान के विभिन्न भाग भिन्न-भिन्न देशों में बनाये जाते हैं । जैसे विमान का मुख्य शारीरिक भाग (पिछला फ्यूजलाज) जरमनी में बनता है । ब्रिटेन विमान के पंखे बनाता है । नीदरलैंड नियंत्रण के भाग तथा स्पेन पूंछ का निर्माण करता है । फ्रांस में यानकक्ष तथा विमान के अगले शारीरिक भाग (अगला फ्यूजलाज) का निर्माण होता है, इसके अलावा यहीं पर अन्य सभी भागों को आपस में जोड़कर संपूर्ण ए-३२० का निर्माण किया जाता है ।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि वायुयान के एक हिस्से में दूसरे हिस्से के पूरी तरह से समिश्रण के लिए अत्यधिक बारीकी तथा तालमेल की आवश्यकता होती है क्योंकि किसी भी हिस्से के जरा-सा भी बेमेल होने पर वह काम नहीं करेगा । किंतु ये हिस्से इतने कुशलता तथा सतर्कतापूर्वक बनाये जाते हैं कि इनका सम्मिलन आसानी से हो जाता है । (ए-३२० के इन हिस्सों को विभिन्न देशों से विशेष विमान द्वारा फ्रांस लाया जाता है तथा वहीं पर इन्हें आपस में जोड़ा जाता है) ।

स्पर्धा में विजयी

एयरबस इंडस्ट्रीज वास्तव में पहली यूरोपीय कंपनी थी जिसने अमरीकन विमान निर्माताओं से टक्कर ली थी (एयरबस इंडस्ट्रीज द्वारा निर्मित एयरबस विमान पहला व्यावसायिक गैर अमरीकी विमान था जिसे अमरीका के बाजार में प्रवेश मिला था) । अभी तक लगभग सभी प्रमुख व्यावसायिक विमान उत्पादक कंपनियां जैसे बोइंग, मैकडामेल, डगलस तथा लाकहीड आदि अमरीका में ही स्थित थीं तथा उनसे स्पर्धा करना एयरबस इंडस्ट्रीज के लिए काफी कठिन कार्य था । किंतु एयरबस इंडस्ट्रीज ने अपनी लगन तथा परिश्रम द्वारा इस स्पर्धा में उन सभी स्थापित विमान उत्पादकों को मात-सी दे दी है ।



ए-३२० की एक अन्य विशेषता यह है कि जिस प्रकार विमान को यूरोप के छह देशों द्वारा मिलकर बनाया गया है उसी प्रकार इसका 'वी-२५००' नामक इंजन भी 'इंटरनेशनल एयरो इंजन' कंपनी द्वारा बनाया गया है जो पांच देशों (रौल्स रायस—ब्रिटेन, प्रैह और हिटनी—अमरीका, जे. ए. ई. सी. 'जापान, एम. टी. यू.—जरमनी तथा फियट एवियाजोन-इटली) द्वारा मिलकर बनायी गयी कंपनी है ।

इस प्रकार ए-३२० विमान अनेक देशों के आपसी तालमेल तथा मिले-जुले सहयोग का जीता-जागता नमूना है ।

आधुनिक टेक्नालाजी : कुछ शंका

वैसे ए-३२० को आरंभ से ही अनेक कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा है ।

सबसे बड़ा झटका इसे उस समय लग २५ जून, १९८८ को फ्रांस में अपने प्रथम प्रदर्शन के दौरान ही यह विमान दुर्घटनाग्रस गया । यह उस समय हुआ जब हजारों लो विमानों का प्रदर्शन देखने के उद्देश्य से फ्रां मुलहाउस नामक स्थान पर आये थे । विम कर्मियों सहित कुल १२९ व्यक्ति सवार थे जैसे ही उसने हवाई अड्डे से उड़ान भरी वह गिर गया तथा दुर्घटना व आग लग जाने के कारण पूर्ण रूप से नष्ट हो गया । किंतु सुख आश्चर्य की बात यह थी कि इसमें केवल त व्यक्तियों की ही मृत्यु हुई, जबकि सामान्यत ऐसी दुर्घटनाओं में हताहतों की संख्या बहुत अधिक होती है ।

दूसरा बड़ा धक्का ए-३२० की प्रतिष्ठा व १४ फरवरी, १९९० को पहुंचा जब इंडियन एयरलाइंस का बंबई से बंगलौर जानेवाला ए-३२० विमान बंगलौर हवाई अड्डे पर अवतरण के समय ध्वस्त हो गया और उस सवार १४६ व्यक्तियों में से ९२ व्यक्तियों व मृत्यु हो गयी । इस दुर्घटना के पश्चात इंडिय एयरलाइंस के ए-३२० विमानों की उड़ाने स्थगित कर दी गयीं जिससे कंपनी को करो रुपये का घाटा होने लगा तथा वैमानिक क्षे इस कारण खलबली-सी मच गयी । ये इसलिए रोक दी गयीं थीं ताकि यदि विभि दुर्घटना किसी तकनीकी कमी के कारण हुई तो भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो जाए ए-३२० विमान की तीसरी दुर्घटना २१ ज ९२ को घटी थी जिसमें एयर इंटर हवाई कं

का विमान मांट सेंट आडील (फ्रांस) नामक स्थान पर खराब मौसम में अवतरण के समय पेड़ों से टकरा गया था जिसमें ८७ व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी थी । ये उड़ानें अप्रैल ९२ तक बंद रही थीं और इस प्रकार लगभग सवा साल के बाद दुबारा ए-३२० विमानों को उड़ाने की अनुमति दी गयी ।

ए-३२० विमान के बारे में शंकाएं व्यक्त की जा रही थीं कि क्या मशीनों तथा कंप्यूटर के भरोसे शत-प्रतिशत सुरक्षित विमान उड़ाना संभव है ? इन दुर्घटनाओं के बाद ये भी प्रश्न उठे कि क्या ये दुर्घटनाएं केवल मशीनी कारणों से घटी थीं तथा क्या विशिष्ट परिस्थितियों में अथवा संकट के समय कंप्यूटर बचाव के लिए आवश्यक कार्यवाही करने में सक्षम है ? किंतु ए-३२० के उत्पादकों का कथन है कि आधुनिक युग में कंप्यूटर द्वारा ये सारे कार्य अधिक सरलता तथा सुरक्षित रूप से किये जा सकते हैं । उनका यह भी मत था कि पहली दुर्घटना में मृतकों की संख्या में कमी का कारण विमान का 'रुक्षित' होना ही था । उत्पादकों का कहना था कि केवल ए-३२० ही नहीं बल्कि इससे पहले का कंकार्ड विमान (जो पराध्वनि से चलनेवाला प्रथम विमान था) भी 'फ्लाई बाई वायर टेक्नालाजी' पर आधारित था । इसके अलावा अंतरिक्ष में उड़नेवाले राकेट तथा अन्य यान तो इसी टेक्नालाजी पर कार्य करते ही हैं । उनका विश्वास है कि इस विमान के संचालन में जो भी कठिनाईयां आ रही हैं वे अस्थायी हैं तथा वे केवल इसलिए आ रही हैं क्योंकि विमान चालक यंत्रीय युग से कंप्यूटर युग में प्रवेश कर रहे हैं और कुछ समय उपरांत जब विमान चालक कंप्यूटर टेक्नालाजी से पूर्ण रूप से परिचित हो जाएंगे तो ये कठिनाईयां स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी । यही नहीं बल्कि उनका यह भी विश्वास है कि जब विमान चालक ए-३२० उड़ाने लग जाएंगे तो उन्हें पुराने ढंग के विमान पसंद नहीं आएंगे ।

वैसे अब यह देखा जा रहा है धीरे-धीरे ए-३२० पर हवाई कंपनियों तथा विमान चालकों का विश्वास लौट रहा है तथा यह विमान बहुत तेजी से बाजार में बिक रहा है । इस प्रकार अब यह देखना है कि भविष्य के विमान भी इसी कंप्यूटर टेकनालाजी पर आधारित होंगे या प्रचलित तरीके की यांत्रिक टेक्नालाजी पर ।

—डी-१५, आई. एन. ए. कॉलोनी, नयी दिल्ली-११००२३

आणुविक तकनीक

जल-स्रोतों का पता लगाने के लिए चीन ने एक आणुविक तकनीक का विकास कर लिया है । भूमि के नीचे कहां-कहां जल-स्रोत अधिक गहराई पर नहीं हैं, कुएं खोदने के लिए, इस नयी पद्धति से मालूम किया जा सकता है । पिछले चार वर्षों में चीन ने हेनान प्रांत में ऐसे ३३९ जल-स्रोतों का पता लगा कुएं खुदवाये हैं ।

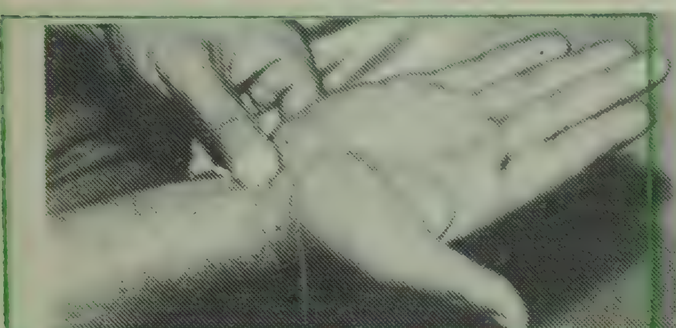
विशेषज्ञों का कहना है कि इस नयी आणुविक पद्धति से भूमिगत जल-स्रोतों का बड़ा आसानी से पता लग जाता है ।

अपना इलाज स्वयं कीजिए

-५०

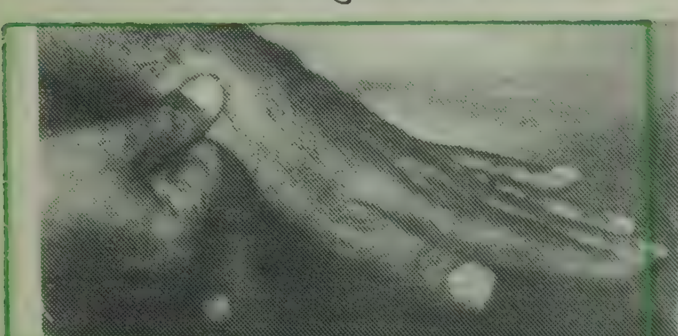
रोग : आर्थराइटिस, मिरगी, लकवा, अनिद्रा, मानसिक तकलीफ, उच्च रक्त चाप, सामान्य थकान ।

अंदरूनी कलाई की क्रीज पर मध्य अंगुली की सीध में स्थित बिंदु पर दबाव दें ।



रोग : सांस की तकलीफ, ब्रोंकाइटिस, कलाई का आर्थराइटिस ।

कलाई की बाहरी क्रीज से दो अंगुल दूर अंगूठे की सीध में स्थित बिंदु पर दबाव दें ।



दबाव कितनी देर डालें ?

१. दबाव एक मिनट में दो बार ।

२. दबाव एक मिनट तक दिया जा सकता है, एक बिंदु पर साठ बार ।

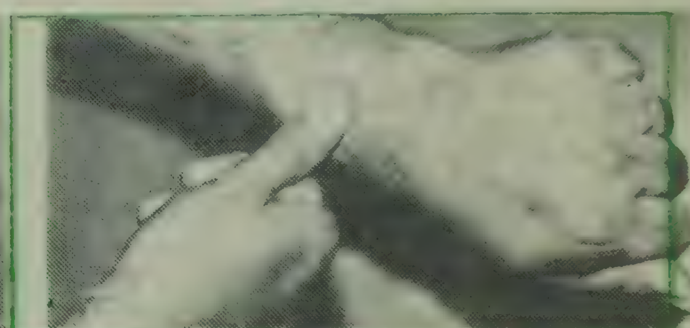
३. भोजन के एक घंटे पूर्व अथवा एक घंटे बाद ।

४. दबाव सहनीय होना चाहिए और अंगूठे के अग्रभाग से दिया जाना चाहिए ।



रोग : कंधा, कोहनी एवं हाथ का दर्द, डायरिया, चक्कर आना, हाथ का लकवा ।

कोहनी की क्रीज से दो अंगुल नीचे अंदर की ओर स्थित बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

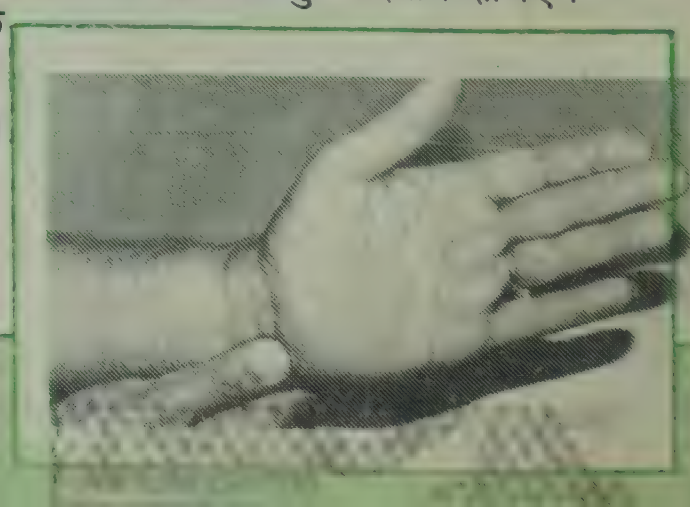


रोग : हाथ के ऊपरी भाग का दर्द, सिरदर्द, बहरापन, गरदन का दर्द, अंगुलियों और कलाई का आर्थराइटिस, बुखार ।

हाथ की बाहरी कलाई पर अनामिका की सीध में स्थित बिंदु पर दबाव देना चाहिए ।

रोग : धड़कन बढ़ना, चिंता-फिक्र, हिस्टीरिया, अनिद्रा, मानसिक परेशानी, बार-बार सपने आना, मिरगी, शराब की लत ।

कलाई की अंदरूनी क्रीज पर छोटी अंगुली की सीध में स्थित बिंदु पर दबाव दीजिए ।





यह भी एक जिन्दगी है!

● सुमन आदित्य

गां व हो या नगर, पैतृक पेशे को आज भी लोग अपनाये हुए हैं। मगर इस
नीयुग में अब यह जरूरी नहीं है कि लोहार
बेटा लोहारी, बढ़ई का बेटा बढ़ईगिरी या
का बेटा तैल पिराई कोल्हू पर ही काम
। फिर भी अभी कुछ ऐसे काम हैं, जो
परंपराओं पर ही चल रहे हैं।
-भेंड़ियारा का लड़का भेड़ों को चराने और
कार का लड़का बांस से सामान तैयार करने
ही काम करता है। बिल्कुल ऐसी ही एक
है, सिरखीवाले बंजारों की। 'मुड्डा' बनाना
नकी रोजी-रोटी है, वैसे गांवों में यह
बाड़ी भी करते हैं। शहरों और कस्बों में
की बहुतायत होती है, तो ग्रांवों में 'तूली'
ी सिरखी की खपत ज्यादा होती है। गांव
पड़ी और खपरैल पर यह सिरखी डाली
है। सामान खरीदकर लाना, मुड्डे-मुड्डियां
और उन्हें बेचकर बच्चों व परिवार का
लना, अब इनकी आदत में आ गया है।
जस्थान का एक खूबसूरत शहर है, बूंदी।
बूंदी नगर की देवपुरा बस्ती में इनके
वार परिवार रहते हैं। सरदी गरमी हो या
त, पूरे बारह महीने यह सड़क के किनारे
बनी अपनी झुग्गी-झोंपड़ियों के आसरे दिन काटते हैं। हरदम इन्हें 'तूली' की खपच्चियों के साथ उलझा हुआ देखा जा सकता है। इनके जीवन का मुख्य आधार ही तूली है, जिससे यह मुड्डे-मुड्डियां व सिरखी बनाते हैं। आसपास तो यह तूली मिलती नहीं है, इसलिए जयपुर, अजमेर या फिर उत्तरप्रदेश जाना पड़ता है इन्हें, तूली खरीदने। तूली की कीमत भी इन्हें किस्म के मुताबिक चुकानी पड़ती है। २५ रुपये से लेकर ५० रुपये तक प्रति मन के हिसाब से लाते हैं, इसे यह। तूली के आते ही पहले स्त्री-पुरुष, बच्चे, बूढ़े, जवान सभी उसे साफ करने में जुट जाते हैं और फिर उसे मुड्डे के हिसाब से काटते हैं। उसके बाद जैसा सामान

बनाना होता है, उसी के मुताबिक तूली की खपच्चियों पर इनकी अंगुलियां दौड़ने लगती हैं ।

सादा मुड्ढे-मुड्ढियों से लेकर कलात्मक (डीलक्स) मुड्ढियां भी तैयार करते हैं, यह । सारे परिवार के सदस्य दिन-रात मेहनत करते हैं और इसीलिए यह धंधा गृह-उद्योग के रूप में चल रहा है । बड़ी पूंजी लगाये बिना कोई काम नहीं होता, लेकिन इस धंधे से जुड़े परिवार छोटी-छोटी पूंजी लगाकर भी उद्योग चला रहे हैं । दरअसल, यह रोजाना कुंआ खोदते हैं और पानी पीते हैं । इनके पास सामान बनाने और आमदनी व लागत का कोई हिसाब नहीं है, इसलिए सही आंकड़ा तो है नहीं, पर फिर भी अनुमान है कि यह हर साल तकरीबन एक लाख रुपये का सामान तैयार कर लेते हैं । इनके द्वारा तैयार माल को ज्यादातर व्यावसायी खरीदते हैं । मेहनत के मुताबिक पूरा पैसा इन्हें मिलता नहीं है, इसलिए परिवार के छोटे-बड़े सदस्य का गुजारा भी बड़ी मुश्किल से चल पाता है ।

यह लोग बड़े मेहनती होते हैं । इनके द्वारा बनायी गयी वस्तु में उनकी कला भी झलकती है । एक-एक सरकंडे को रस्सी से बट लगाकर बैठने के लिए इस सस्ते व आम लोगों की पहुंचवाले उपयोगी साधन को बनाने में सारा परिवार जुट जाता है । सरकंडे के घेरे पर रस्सी का बट लगाने का काम महिलाएं बड़ी मुस्तैदी से करती हैं, जबकि इन पर साइकिल के पुराने टायरों का घेरा डालकर टांका लगाने का काम पुरुषों के जिम्मे होता है । सूरज की रोशनी फैलने के साथ ही घरों के सामने संकरे स्थान पर अपने साधन व औजार लेकर बैठ जाते हैं, यही इनकी कार्यशाला है । सड़क की पटरियां भी इनके कारखानों के स्थल हैं । इस उद्योग का विकास किया जा सकता है, पर अभी तक ऐसा हुआ नहीं है । इनका आर्थिक, सामाजिक स्तर बहुत नीचे है ।

पिछले बीस बरस से यह पुश्तैनी धंधा कर रहा ३८ साला डालूराम बताता है कि मुड्ढा व सिरखी बनाने को बैंक उद्योग नहीं मानती । दस से ज्यादा बार वह बैंक अफसरों से मिला, पर कर्जे के नाम पर दो टके नहीं मिल सके । आखिर जैसे-तैसे २० साल से बनिये से कर्जा लेकर पेट पाल रहे हैं । अगर सरकार इन्हें कर्जा सुलभ कराये, तो वे अधिक कच्चा माल खरीदकर इस धंधे को बढ़ा सकते हैं । परिवार के वयोवृद्ध मुखिया मन्नाजी (८०) ने रोष

इनकी अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक परंपराएं भी हैं । बाल-विवाह भी इनमें प्रचलित है । शादी-ब्याह के अवसरों पर फिजूलखर्ची होती है । अंधविश्वासों से जकड़े हैं ।

खाकर कहा कि आप कर्जे की बात करते हो, यहां तो सरकारी अधिकारी ही तंग करते हैं और हमारी झुग्गी-झोंपड़ियों तक को यह नही बख्शते और उन्हें तोड़ जाते हैं। माल भी उठाकर ले जाते हैं, ऊपर से रौब भी पूरा जमाते हैं। हम ठहरे गरीब आदमी, देने लेने को कुछ है नहीं ?

यह पूछे जाने पर कि इस धंधे में मुनाफा कितना हो जाता है ? बुजुर्ग मन्नाजी कहते हैं—यही कोई पेट भर जाए। अगर ज्यादा मुनाफा होता तो मकान क्यों नहीं बना लेते, इन झुग्गी-झोंपड़ियों में क्यों रहते। मन्नाजी बताते हैं कि महंगाई की मार का उनके धंधे पर भी असर हुआ है। ३५ रुपये किलो तो सूतली (बाण) रस्सी हो गयी है, बाकी चीजें अलग हैं। फिर भी बना रहे हैं और बेच रहे हैं, तरह-तरह की मुड्डियां। अब वह साधारण मुड्डियों के अलावा आकर्षक कवर पूरी तरह रैंगजीन के कपड़े से ढंकी मुड्डियां भी बनाने लगे हैं। इन पर मन-माफिक कवर व गद्दी लगाने से इनकी कीमत तीन से चार गुना तक बढ़ जाती है। इन्हें वे कहते हैं—'डीलक्स मुड्डियां'। साधारण तो नहीं, पर बड़े-बड़े बंगलों व कोठियों में यह मुड्डियां आसानी से देखी जा सकती हैं। इनकी ट वैसे तो मिल जाए जो है, फिर भी ये ३० से ३५ रुपये का जोड़ा आसानी से बेच लेते हैं। यहां तो बिकती कम हैं, पर बाहर के लोग ज्यादा खरीदकर ले जाते हैं। इन्हें वैसे छोटे दुकानदार, होटलवाले या साधारण तबके के लोग ज्यादा खरीदते हैं।

इनका काम १२ महीने एक समान नहीं चलता है। बरसात के महीनों में मंदी रहती है। इन दिनों 'सिरखी' ज्यादा बिकती है। इसलिए यह मुड्डे-मुड्डी बनाना छोड़ यह बनाने लग जाते हैं। जाड़ा व गरमी के महीनों में काम होता है। आषाढ़ व सावन में कारोबार 'सिरखी' का ज्यादा बढ़ जाता है। यह परिवार गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। यदि किसी के पास कहने को पक्का मकान भी है, तो एक-दो कमरों का है। वरना इस कौम के ज्यादातर लोग झुग्गी-झोंपड़ियों में रहते हैं और निवास के नाम पर उनके पास बस इतनी-सी जगह है कि रोजमर्रा का गुजर-बसर हो जाए। इनके रहन-सहन की एक झलक यह भी है कि पुरुषों के शरीर पर सिर्फ कमर से बंधी धोती होती है। बच्चे नंग-धड़ंग घूमते रहते हैं।

इनकी अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक परंपराएं भी हैं। बाल-विवाह अभी भी इनमें प्रचलित है। शादी ब्याह के अवसरों पर फिजूलखर्ची होती है। अंधविश्वासों से जकड़े हुए हैं। शराब का सेवन भी इनमें अधिक प्रचलित है। पुरुषों की भांति ही महिलाएं भी मदिरा के जाम छलकाती हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते भी रहते हैं। बिरादरी का अपना कानून चलता है। लड़की वालों से रकम लेकर शादी-विवाह कर देते हैं। परिवार में मुखिया का हुक्म चलता है। शिक्षा का प्रसार तो इनके बीच नहीं के बराबर है। ये लोग निरक्षरता के अंधकार में ही जीवन की रोशनी ढूंढ़ रहे हैं। बच्चों को पढ़ने के लिए भेजकर उनकी पढ़ाई के लिए धन जुटाना व्यर्थ मानते हैं। परिवार बड़े हैं और बच्चे भी उनके कामों में हिस्सा बंटाकर उत्पादन में सहयोग करते हैं। गरीबी से परेशान हैं, लेकिन ज्यादा बच्चों का पैदा होना ही उनके लिए उत्पादन में वृद्धि है।

द्वारा— श्रीराम स्वरूप शर्मा, सेठजी का चौक,
मदार स्ट्रीट, बूंदी (राज.)-३२३००१

राहुल सांकृत्यायन : शतवार्षिकी के अवसर पर

वे सचमुच महापंडित थे !

● डॉ. देवव्रत जोशी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन का जन्म शताब्दी वर्ष है यह। उन पर लिखते हुए संकोच और रोमांच का अनुभव होता है एक साथ। वे महापंडित तो थे ही— बहुश्रुत, बहुपठित, लिखा भी उन्होंने विपुल मात्रा में। लेकिन सर्वोपरि वे एक महामानव थे— जलकमलवत् उनका जीवन रहा।

आस्तिकता से नास्तिकता तक उनकी जीवनयात्रा अद्भुत है। वे गृहस्थ केदार थे, वे बाबा रामोदर बने और अंततः सारे कर्मकांड, जप-तप छोड़कर कम्युनिस्ट बने। बौद्ध धर्म उन्होंने स्वेच्छा से अंगीकार नहीं किया। विद्यार्जन की उत्कट इच्छा उन्हें श्रीलंका ले गयी। कारण कुछ ऐसे बने कि बिना बौद्ध मत में दीक्षित हुए उनका वांछित कार्य पूरा नहीं हो सकता था। आचार्य नरेन्द्रदेव के माध्यम से तार द्वारा उन्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित किया गया था, यह बात बहुत कम लोगों को ज्ञात होगी।

भारतीय दर्शन और साहित्य का यह पुरोधा अहं और प्रदर्शन से दूर, सर्वथा निर्लिप्त व्यक्ति था। हिंदी और लोकभाषाओं के घोर समर्थक थे राहुलजी। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं के अतिरिक्त वे अंगरेजी, फ्रेंच, जरमन आदि कई विदेशी भाषाओं के निष्णात थे।

समझौतावादी नहीं

हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद पर



स्मृतिशेष राहुलजी नयी प्रतिभाओं को सदैव प्रोत्साहित करते थे । अस्वस्थ निराला से मिलने के बाद उन्होंने कहा था— "साहित्यकार की दरिद्रता उस भाषा के लोगों की दरिद्रता है— वैचारिक दरिद्रता । इसे दूर करना चाहिए ।"

वे निर्वाचित हुए, तो भारतीय साम्यवादी ने आपत्ति की । राहुलजी ने कम्युनिस्ट पार्टी यागपत्र दे दिया । वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के था अनुकूल मानते थे । सिद्धांतों के साथ ने कभी समझौता नहीं किया ।

विनम्र होने के साथ-साथ वे स्वाभिमानी भी ब के थे । 'मध्य एशिया का इतिहास' ग्रंथ जब उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला, वे बड़े असमंजस में थे । कमला बहन नकी पत्नी) ने पूछा— "क्या बात है ? गे न पुरस्कार लेने ?"

उन्होंने कहा— "वहां मुझे सिर झुकाकर हर भाई से पुरस्कार लेना पड़ेगा ।" कमला ने उन्हें देहरादून से दिल्ली भेजा— बहुत नय-विनय करके ।

राहुलजी के पुराने अंतरंग मित्र, अकादमी अध्यक्ष, प्रधानमंत्री जवाहरलाल ने पुरस्कार न करने के पूर्व उन्हें गले लगाते हुए कहा — "तुम तो अभी भी जवान लगते हो !" राहुलजी का संकोच दूर हो गया था ।

औघड़ महामानव

कलकत्ता के एक अस्पताल के जनरल वार्ड में थे राहुलजी । चिकित्सा चल रही थी । सरकार बाखबर होकर भी बेखबर थी । मैंने उनकी अनुमति के बिना उनकी समुचित चिकित्सा के लिए एक आंदोलन चलाया था । स्मृति-दोष से पीड़ित राहुलजी ने कमला बहन से लिखवाया था तब मुझे— "देवव्रत को कहो, मुझे किसी सहायता की जरूरत नहीं ।"

राहुलजी निराला की भांति औघड़ दानी थे । वे महापंडित के पूर्व महामानव थे । सड़क पर बैठे 'ज्योतिषियों' की पुकार उन्हें सुन पड़ती और वे एक या दो रुपये उनकी चादर पर डालकर चल पड़ते ।

"आप तो ज्योतिष को नहीं मानते । फिर ये तो ठग हैं ।" मित्र/शिष्य कहते । राहुलजी हंसकर टाल जाते— "गरीब हैं । रोटी कमा रहे हैं ।"

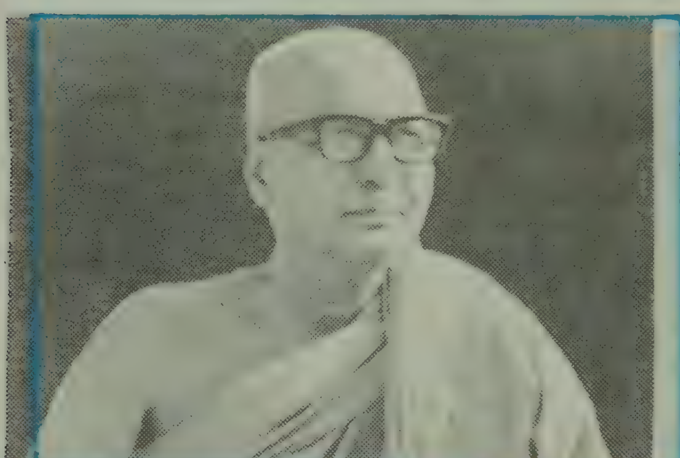
देहरादून में उनके निवास पर सामान ढोनेवाले कुली उन्हें आज भी याद करते हैं । १० की जगह २० रु. वे बिना मांगे दे देते थे । "कितनी मेहनत करते हैं ये !" राहुलजी कहते ।

यायावर महामानव

विश्व-भ्रमण उन्होंने २-३ बार किया । रूस

और श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में वे प्राध्यापक रहे । 'तीन धर्म, तीन पत्नियां !'... कहने को उनके विरुद्ध बहुत कुछ कहा/लिखा गया, लेकिन यह सच है कि शंकराचार्य की विद्वत्ता, विवेकानंद की ओजस्विता और मंडन मिश्र की-सी वाक्पटुता इस शताब्दी में भारतीय भाषाओं के किसी आचार्य में थी, तो सिर्फ राहुलजी में थी ।

उनके तर्क अकाट्य होते थे । डॉ. राधाकृष्णन, भगवानदास, गांधीजी, पं. नेहरू, करपात्री महाराज... सबसे उनके अंतरंग संबंध रहे, किंतु मतभेद बराबर बने रहे ।



बहुमुखी प्रतिभा

राहुलजी ने उपन्यास लिखे, नाटक, कहानियां लिखीं और यात्रा वर्णन की शुरूआत तो हिंदी में उन्होंने ही की । इसके अतिरिक्त मार्क्सवादी विचारधारा को पल्लवित करनेवाले ग्रंथ, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व-संबंधी हजारों पृष्ठों की सामग्री (प्रकाशित-अप्रकाशित) उन्हीं की देन है ।

वे किसान-आंदोलन (बिहार के) अगुआ थे । कांग्रेस में रहे, जेल यात्राएं कीं । विदेश-यात्राएं उनका शौक थीं । तीन बार तिब्बत जाकर असहनीय कष्ट सहकर वे खच्चरों पर लादकर दुर्लभ बौद्ध धर्म ग्रंथ लाये थे । उनके इस कार्य की प्रशंसा नेहरू, नरेन्द्रदेव देश के उच्चकोटि के पुराविदों-लेखकों-धर्मशास्त्रियों-साहित्यकारों की थी ।

एक कालजयी लेखक

धैर्य इतना था कि रात-रातभर जागकर धीरे-धीरे टाइप करते रहते । स्वास्थ्य जर्जर हो चला गया, किंतु वे कहते थे, "देशवासियों अपनी मनीषा का आधा भी नहीं दे सका हूं ।

'भागो नहीं दुनिया को बदलो', 'वोल्गा से गंगा तक', 'दर्शन-दिग्दर्शन' जैसे ग्रंथ उन्हें कालजयी लेखक सिद्ध करते हैं । अंगरेजी में भी उन्होंने काफी लिखा । किंतु हिंदी के वे आजीवन पक्षधर/प्रचारक रहे ।

किताबों की रायल्टी और पत्र-पत्रिकाओं पारिश्रमिक से उन्होंने जीवन-यापन ही नहीं किया, एक छोटा-सा मकान भी बनवाया, जो उस युग को देखते हुए विस्मयकारी ही लगता है ।

स्मृतिशेष राहुलजी नयी प्रतिभाओं को सदै प्रोत्साहित करते थे । अस्वस्थ निराला से मिल के बाद उन्होंने कहा था— "साहित्यकार की दरिद्रता उस भाषा के लोगों की दरिद्रता है— वैचारिक दरिद्रता । इसे दूर करना चाहिए ।"

बालकवत् निर्मल, निश्छल, महाप्राण राहुलजी प्रगतिशील आंदोलन के जन्मदाताओं में से एक थे । उनके समग्र साहित्य का मूल्यांकन/आकलन शेष है । जन्म-शतवार्षिक पर यह काम पूरा करके ही उनसे उऋण हुआ जा सकता है ।

—९, सुभाष मार्ग, रतला



महापंडित राहुल सांकृत्यायन

जन्म : १८९३, निधन : १९६३

त्रिपुरा के दक्षिणी भाग में घने जंगलों के बीच रहते हैं रियांग आदिवासी, बेहद गरीब पर अपने में मस्त। बस्तर के आदिवासियों की भांति रियांग आदिवासियों में भी लमसेना प्रथा है, जिसके अनुसार विवाह पक्का हो जाने के बाद वर को वधू के घर नौकरों की भांति काम कर वधू-मूल्य चुकाना पड़ता है।

दूल्हा बने नौकर शादी के बाद

● दिनेश कण्डवाल

बांस, साल और सागौन के जंगलों से घिरा हुआ रियांग— आदिवासियों का एक गांव-गंडाचेरा, यह त्रिपुरा राज्य के दक्षिणी जिले में राजधानी अगरतला से लगभग १८० कि.मी. दूर, बंगलादेश की चटगांव पहाड़ियों की सीमा के समीप स्थित है।

बांस का हुक्का



पारदर्शी : दिनेश कण्डवाल

रियांग आदिवासी-त्रिपुरा राज्य की उन्नीस कार की आदिवासी जनजातियों में से एक हैं। त्रिपुरा में कब आये इसका कोई विस्तृत तिहास उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है कि हले ये मैयाथिलांग इलाके के लुसाई पहाड़ पर सते थे। यह पहाड़ अराकन-वर्मा सीमा पर थत है और विश्वास किया जाता है कि उस मय ये लोग आस्ट्रो-ऐसपारिक भाषा से बंधित थे। इसके बाद चौदहवीं सदी में ये टगांव की पहाड़ियों पर आकर बसे। तब पुरा में राजा रत्न मानिक्य का राज्य था। फिर यहां से तिपराह की पहाड़ी पर आकर बसे, त्रिपुरा राज्य के अमरपुर के पास से शुरू ती है।

एक अलग दुनिया

इनकी अपनी एक अलग दुनिया है। द-काठी में ये आम आदमी की तरह मशील व मेहनती हैं, परंतु गरीबी की रेखा के चे जीवन-यापन कर रहे हैं। अभाव व गरीबी यद ही कभी इनका पीछा छोड़े। ये जंगलों खास तरह से आश्रित हैं, वहीं से लकड़ी, स, पत्ते, फल-फूल व जड़ों का ये खूब तेमाल करते हैं।

रियांग पुरुषों का परिधान गंजीनुमा कुरता व ती है। महिलाएं अपने हाथ का बुना 'पचरा' तुंगीनुमा धोती) पहनती हैं, तथा ऊपर ब्लाउज जगह 'रिया' पहनती हैं जो सिर्फ वक्षस्थल ढकने का काम करती है। आजकल ये उज पहनने लगी हैं। महिलाएं चांदी के सिक्कों जेवर खूब पहनती हैं, विशेषकर माला। लों में फूल लगाने का प्रचलन है। फूल, न व नाक में भी पहनती हैं।

खान-पान

रियांग मांसाहारी हैं। इनमें सभी तरह के मांस का प्रचलन है। जंगली जानवरों से लेकर भैंस, बकरी, मुरगी, मछली, सुअर सभी के मांस का ये सेवन करते हैं।

ये लोग घर-घर में चावल की बीयरनुमा शराब बनाते हैं, जिसे लांगी कहते हैं। इसे पुरुष-स्त्री सभी प्रयोग करते हैं। यह इनके दैनिक जीवन का मुख्य पेय है और यही कारण है कि इनका विकास की तरफ कोई ध्यान ही नहीं।

ये लोग अपने घर जमीन से ऊपर बांस के बनाते हैं, जिसे 'टांग घर' कहते हैं। नीचे का हिस्सा ये जानवरों के लिए काम में लाते हैं और ऊपर अपने लिए।

> गरीब होते हुए भी रियांग कला-संस्कृति के धनी हैं। महिलाएं अपने हाथ से सुंदर-सुंदर पचरा व रिया बुनती हैं। बांस की सुंदर चटाइयां, टोकरियां, खिलौने बनाती हैं। सभी स्त्री-पुरुष मिलकर काम करते हैं।

भाषा और धर्म

रियांग जनजाति हिंदू धर्म मानती है। इनकी अपनी भाषा है, जिसे 'ककबोरक' कहते हैं। परंतु इसकी कोई लिपि विकसित नहीं है। अभी इस पर शोध कार्य चल रहा है। कक्षा पांचवीं तक बंगला माध्यम से आदिवासी बच्चों को पढ़ाया जाता है। शहर में, बाजार आदि आने पर बंगला भाषा ही माध्यम के काम आती है।

पूजा-पाठ व भगवान में इनका अत्यंत विश्वास है। नदी, पहाड़, जंगल तक के

देवी-देवता हैं । जैसे— 'तुईमा'—नदी की देवी, 'गराई-कलाई'—पहाड़ का देवता,
'खुलगंमा'—कपास की देवी,
'माईलागमा'—धन की देवी,
'बुराछा'—जंगल (वन) की देवी,
'लम्पारा'—आकाश का देवता आदि प्रमुख हैं ।

भूत-पिशाचों में भी इनका विश्वास है, इसके लिए गांव की सीमा पर ये 'बुरईशवो' देवता की पूजा करते हैं । उनका विश्वास है कि यह देवता गांव में बुरी नजर व भूत-प्रेत को नहीं आने देता । इसी तरह से जादू-टोना को भी मानते हैं । गांव-घर में किसी के बीमार होने पर, वैद्य जड़ी-बूटी की दवाइयों से पहले झाड़-फूंक ही करता है । इसे 'अचाई' कहते हैं ।

त्योहारों में पौष संक्रांति का मेला प्रमुख है, जो यहां की मुख्य नदी 'गुमटी' के उद्गम स्थल पर, जिसे 'तीर्थमुख' कहते हैं, लगता है । यह नदी पूजा है । इसके अलावा 'गरिया पूजा' है जो देश के अन्य भागों में बैशाखी का पर्व है । लक्ष्मी पूजा, खैर पूजा, त्रिपुरासुंदरी पूजा भी हर साल अन्य आदिवासी लोगों के साथ सामूहिक रूप से आयोजित की जाती है ।

रियांग लोग मरने पर दाह-संस्कार करते हैं । बची हुई अस्थियां एक वर्ष तक एक शेड के नीचे मिट्टी में दबाकर सुरक्षित रखी जाती हैं । साल पूरा होने पर इन्हें बाहर निकालकर कुछ धार्मिक अनुष्ठान किया जाता है । बाद में नदी जाकर एक बांस का बेड़ा बनाकर उसमें रखक प्रवाहित कर दिया जाता है । इन लोगों का मत है कि जमीन में अस्थियां रखने पर आत्मा दो भाग में बंट जाती है—एक तो मिट्टी में मिल जाती है, दूसरी जल में ।

विवाह-पद्धति

रियांग में शादियां मुख्यतः माता-पिता द्वारा तय की जाती हैं । ये प्रेम-विवाह को भी बुरा नहीं मानते । विवाह को 'कईलईमी' कहते हैं । विवाह की रस्म पंडित, जिसे 'अचाई' कहते हैं, पूरी करता है । इस विवाह रस्म में पंडित कुछ मंत्र पढ़कर लड़की के ब्रेस्ट-क्लाथ 'रिया' पर तीन बूंद पानी छिड़कता है और उसके बाद लड़के के सिर पर । बस फिर खाना-पीना और शादी पक्की । शादी की यह शर्त होती है कि इस रस्म के पूरी होने के बाद दूल्हे (लड़के) को तीन साल तक लड़की (दुलहन) के घर पर रहकर काम करना होगा, एक नौकर या श्रमिक बनकर । इस अवधि का कार्य 'वधू-मूल्य' माना जाएगा । इस बीच यह दंपत्ति पति-पत्नी



रियांग आदिवासियों का एक गांव



रियांग आदिवासी (पति-पत्नी) जब शहर में आते हैं



रियांग महिला कपड़ा बुनती हुई

की तरह रह सकते हैं । लड़का अगर तीन साल से पहले काम छोड़कर चला गया तो फिर लड़की अन्यत्र कहीं भी शादी करने को स्वतंत्र होती है । इस बीच इनका कोई बच्चा होता है, तो उसे नया पिता स्वीकार कर लेता है । आजकल इस 'मेहनत' के बदले नकद रुपया भी देने लगे हैं । 'तलाक' लेना भी आसान है । इसे गांव का सरदार तय करता है । गांव सीमित होने पर चाचा-मामा आदि रिश्तों में शादी होना आम है ।

कला और संस्कृति

गरीब होते हुए भी रियांग कला-संस्कृति के धनी हैं । महिलाएं अपने हाथ से सुंदर-सुंदर 'पचरा' व 'रिया' बुनती हैं । बांस की सुंदर चटाइयां, टोकरियां, खिलौने बनाती हैं । सभी स्त्री-पुरुष मिलकर काम करते हैं ।

इनमें नाच-गाने का भी खूब शौक है । रियांग नृत्य व गरिया नृत्य तो इनके प्रसिद्ध लोकनृत्य हैं ।

झूमखेती पर आश्रित

मुख्यतः इनका पेशा झूमखेती है । यह एक प्रकार की शिफ्टिंग आधार पर की जानेवाली खेती है, जो एक साल पहाड़ की इस ढलान पर तो अगले साल दूसरी ढलान पर की जाती है । इसी से इनकी आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है । मुख्य फसल धान है । अनानास, हल्दी, मिर्च की खेती भी होती है । ये जंगल पर आधारित वस्तुएं भी बेचने का काम करते हैं ।

आजकल सरकारी मदद से रियांग सुअर पालन, मुरगी पालन, कपड़े बुनना, रबर की खेती करना आदि व्यवसाय भी करने लगे हैं ।

सरकारी स्तर पर किये गये कार्य सराहनीय हैं । इनके लिए 'त्रिपुरा ट्राइबल एटोमॉनस डिस्ट्रिक्ट कौंसिल' है जो एक स्वायत्त संस्था के रूप में इनके उत्थान के लिए कार्य कर रही है । फिर भी इनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक विकास के लिए अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है ।

—ए/१५६ ओ.एन.जी.सी. कॉलोनी,
अगरतला-९९८०१४



राष्ट्रपति भवन : पत्थरों पर अंकित कविता

• एच.वाई. शारदा प्रसाद

राष्ट्रपति भवन की प्रसिद्धि के कई कारण हैं। भारत के राष्ट्रपति के निवास के रूप में यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की सत्ता का प्रतीक है। यह विश्व के सबसे बड़े दो या तीन निवास स्थानों में से एक है। यह वास्तुशिल्पीय कला की अनुपम और उत्कृष्ट कृति है। एक लेखक के शब्दों में पिछले दो सौ वर्षों के दौरान निर्मित भवनों में यह सर्वोत्तम है।

लेकिन राष्ट्रपति भवन एक विरोधाभास भी है, मानव इतिहास की विडंबना का दृष्टांत भी है। इसका निर्माण ब्रिटेन की शाही शक्ति की सर्वोच्चता और स्थायित्व की घोषणा करने के लिए किया गया था। इसके निर्माण में सत्रह वर्ष लगे, लेकिन निर्माण पूरा होने के अठारह

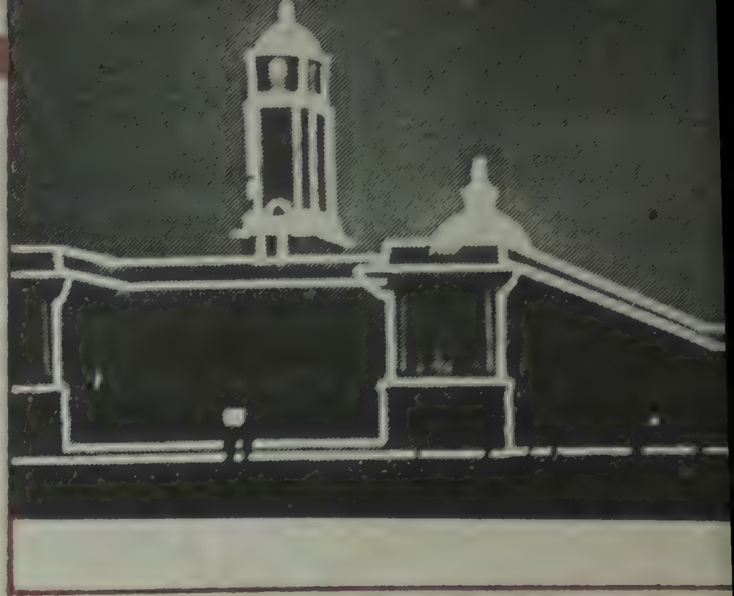
वर्षों के भीतर, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का अंत हो गया। एडविन लैंडसीर ल्यूटंस द्वारा अपने नरेश के सम्मान में निर्मित इस इमारत ने नार्थकोट पार्किनसन के इस कथन की पुष्टि कर दी कि "केवल समाप्ति होने को उद्यत संस्थाएं ही योजनाबद्ध अभिन्यास की पूर्णता प्राप्त कर सकती हैं।"

इस विशाल प्रासाद में पैर रखनेवाले महानतम व्यक्ति मोहनदास करमचन्द गांधी थे। वह पहली बार वाइसराय हाउस में तब गये, जब उसे खुले केवल दो दिन हुए थे। लार्ड इर्विन उस समय भारत के गवर्नर जनरल थे। विंसटन चर्चिल को यह भेंट पसंद नहीं आयी। उन्होंने अपनी विशिष्ट गद्य शैली में लिखा, "यह बात भय पैदा करनेवाली और साथ ही घृणा पैदा करनेवाली है कि श्री गांधी, जो मिडल टेंपल से निकले एक विद्रोही वकील हैं, और अब पूर्वी देशों में आमतौर पर पाये जाने वाले फकीरों के वर्ग में होने का ढोंग रचते हैं, वाइसराय के प्रासाद की सीढ़ियों को लंबे कदम रखते हुए पार करते नजर आये, उस समय भी जब वह सरकार के विरुद्ध असहयोग आंदोलन चला रहे हैं और सम्राट के प्रतिनिधि के साथ बराबरी के दरजे पर बातचीत करें।" सम्राट ने स्वयं भी एक पत्र लिखकर "अधनंगे बदन धार्मिक कट्टरपंथी को आपके सुंदर नये आवास में प्रवेश दिये जाने की" निंदा की।

चर्चिल का जगत प्रसिद्ध भारत विरोध तब भी कम नहीं हुआ, जब वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश राष्ट्र का नेतृत्व कर रहे थे। उनका उद्देश्य न केवल हिटलर की पराजय था, बल्कि साम्राज्य की रक्षा करना भी था, क्योंकि उन्होंने दृढ़ता के साथ यह घोषणा की थी कि मैं ब्रिटिश साम्राज्य की समाप्ति की अध्यक्षता करने के लिए नरेश का प्रधानमंत्री नहीं बना हूं। वे भी, जो इतिहास का निर्माण करते हैं और अलंकारमयी शैली में इतिहास लिखते हैं, मानव-इतिहास की धारा क्या मार्ग अपनाएगी, इसकी सही भविष्यवाणी नहीं कर सकते। वह साम्राज्य, जिसके निर्माण में दो शताब्दियां लगी थीं, दो ही दशक में समाप्त हो गया। यह भूमिका सम्राट के एक और प्रतिनिधि, अर्ल माउंटबेटन ने निभायी, जो उनका रिश्तेदार भी था। १४-१५ अगस्त की अर्ध-रात्रि में जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्रता के आगमन की घोषणा इन प्रेरणादायक शब्दों में की थी, "वर्षों पहले हमने नियति को मिलन का वचन दिया था, और अब वक्त आ गया है, जब हम उस वचन को पूरा करेंगे।"

उन जादुई क्षणों में एक प्राचीन सभ्यता ने आधुनिक लोकतंत्र का रूप धारण किया। इस बीच जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को

दिल्ली की रायसीना पहाड़ी पर स्थित राष्ट्रपति भवन एक अद्भुत और अनुपम इमारत है। यह वास्तुशिल्प की उत्कृष्ट कृति है। एच.वाई. शारदा प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रपति भवन' में इस इमारत के निर्माण की कथा का जीवंत वर्णन किया है। प्रस्तुत हैं पुस्तक के चुने हुए अंश।



अंतिम रूप देने का प्रयत्न कर रहे थे । पुरानी कटुता को भुलाकर ब्रिटेन के साथ मेल-मिलाप का नया युग शुरू करने के लिए सद्भावना प्रदर्शन के रूप में, ब्रिटिश वायसराय को स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल के रूप में बने रहने का निमंत्रण दिया गया । माउंटबेटन को यह निमंत्रण संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने दिया, जो बाद में भारतीय गणतंत्र के पहले राष्ट्रपति बने । लेकिन जब लार्ड माउंटबेटन को औपचारिक रूप से इस प्रस्ताव की सूचना देने का समय आया, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भावनाओं के ज्वॉर में इतने बह गये कि वह क्या बोलना है, यह ही भूल गये । यह समारोह वाइसराय हाउस, जिसे गवर्नमेंट हाउस नाम दे दिया गया था, के दरबार हाल में हुआ । लार्ड माउंटबेटन ने फिर जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलायी ।

स्वतंत्रता की प्राप्ति

दस महीने बाद लुई फ्रांसिस अलबर्ट विक्टरी निकोलस माउंटबेटन स्वदेश रवाना हुए और चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने उनका स्थान ग्रहण किया । ब्रिटिश नौसेना की वरदी के व्यक्ति और हाथ की कती-बुनी खादी पहने वयोवृद्ध व्यक्ति के बीच का अंतर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनुपम स्वरूप को प्रकट करता है । अहिंसा की भट्टी में तपे हृदयों और खाली हाथों ने अंततः सैन्य बल से निर्मित विश्व सबसे बड़े साम्राज्य पर विजय प्राप्त की ।

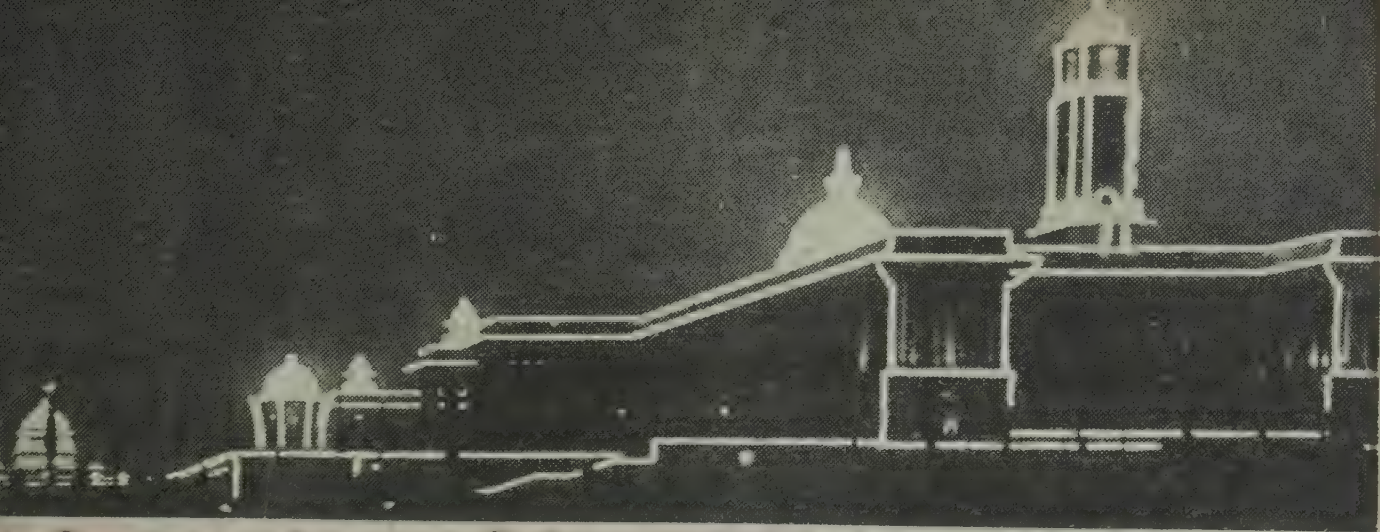
संविधान सभा ने २६ नवंबर, १९४९ को अपना काम पूरा किया । उसने भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए कार्य करने का संकल्प किया ।

ठीक दो महीने बाद, २६ जनवरी, १९५० को भारतीय गणराज्य की घोषणा की गयी । गवर्नमेंट हाउस का नाम एक बार फिर बदला गया— वह राष्ट्रपति भवन बन गया । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति बने ।

अनुपम दृश्यावलि

राष्ट्रपति भवन की भव्य सीढ़ियों के मध्य खड़े होकर सामने राजपथ नजर आता है । यह लगभग दो किलोमीटर लंबा है । इसके दोनों ओर कोई इमारतें नहीं हैं । पेड़ों के समूह और नहरें हैं । राजपथ रायसीना पहाड़ी के नीचे विजय चौक पर शुरू होता है । इसी के पहले हरबर्ट बेकर द्वारा निर्मित केंद्रीय सचिवालय के नार्थ और साउथ ब्लाक हैं, जो एडविन ल्यूटन द्वारा निर्मित भव्य राष्ट्रपति भवन के साथ अनुपम दृश्य उपस्थित करते हैं ।

जब इस इमारत के निर्माण का विचार पैदा हुआ, जार्ज पंचम गद्दी पर बैठे ही थे । कोई कल्पना भी नहीं करता था कि विश्व युद्ध निकट



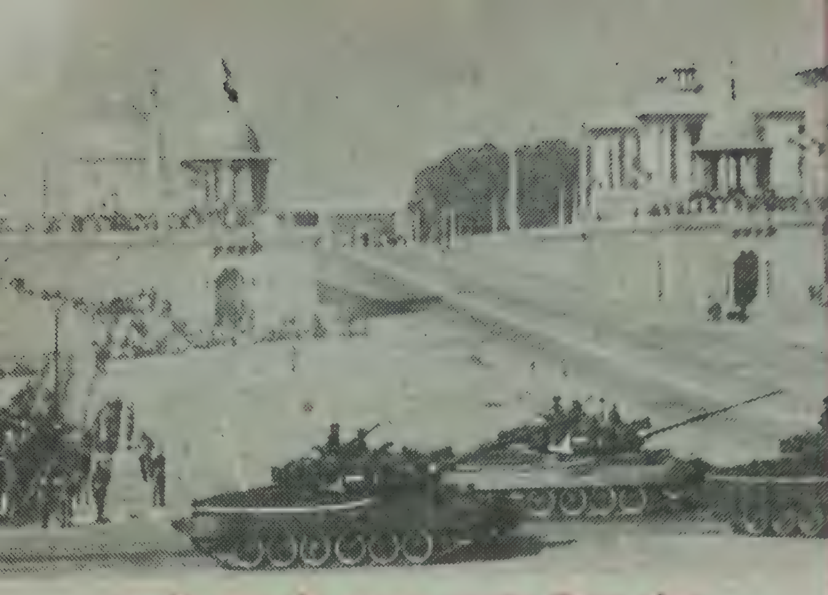
ंत्र दिवस पर राष्ट्रपति भवन की सुंदर प्रकाश व्यवस्था।

। उन दिनों ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूर्यास्त हीं होता था। ब्रिटिश साम्राज्य की तीन चौथाई नता भारत में रहती थी। तब वे क्षेत्र भी, न्हें पाकिस्तान, बंगलादेश और बर्मा म्यानमार) कहा जाता है, भारत में शामिल । सम्राट के प्रतिनिधि के निवास स्थान की जना शाही हिसाब से बनायी गयी। वास्तव कुछ दशक पहले ब्रिटेन से आये हुए एक त्री ने कलकत्ता में वाइसराय की शानो शौकत देखकर कहा था, 'अपने एजेंट के ठाठ-बाट खकर सम्राट भी ईर्ष्या करने लगेंगे'।

राष्ट्रपति भवन एक चार तल्ले वाली इमारत । इसमें अलग-अलग आकार के ३४० मरे, ३७ सैलून (बाहरी कमरे), ७४ प्रतीक्षा क्ष, एक किलोमीटर लंबे गलियारे, १८ ढ़ियां और ३७ फव्वारे हैं। अगर इन सभी मरों, बाहरी कमरों, गलियारों, प्रांगणों, थिकाओं, छतों, सैलून, सीढ़ियों और प्रकोष्ठों पैदल चक्कर लगाया जाए तो उसमें तीन घंटे गेंगे। इसमें रसोईघरों, रसोई भंडारों इस्तरी ने के कमरे और छापेखाने के कमरे शामिल हैं। राष्ट्रपति भवन का फर्श-क्षेत्रफल २ ख वर्गफुट (लगभग १८५८० वर्ग गज) । इसके निर्माण में ७० करोड़ ईंटें और ३० ख घन फुट पत्थर लगा है, लेकिन अपेक्षाकृत कम लोहा— क्योंकि एडविन ल्यूटन प्राचीन सुस्थापित वास्तु शैली के अनुयायी थे और इस्पात एवं सीमेंट के पक्षधर नहीं थे। जब निर्माण कार्य पूरे जोरों पर था, उसमें हर रोज २३ हजार पत्थर काटने, तराशनेवाले लगे थे।

अन्य प्रासादों और भवनों की तरह इसके साथ अन्य इमारतें नहीं हैं। वे बाद में बनायी गयीं। ल्यूटन के शब्दों में इस इमारत की कल्पना एक पूर्ण अविभक्त संघठित शरीर रचना की तरह की गयी थी। ल्यूटन ने अपने नक्शों में किसी को कोई परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने वाइसराय और यहां तक कि ब्रिटिश सम्राट के साथ बहस की, लेकिन किसी को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। सबको उनकी बात माननी पड़ी। इस इमारत की पूरी संकल्पना और निर्माण उनका था। इस इमारत के अनुपात और संतुलन के विचार उनके थे। वह इस विषय में कोई समझौता करने को तैयार न थे। वह उन वर्ग के लोगों में थे जिनका लक्ष्य सदैव सर्वोत्तम होता है।

ल्यूटन आजीवन पत्थरों से जुड़े रहे। उन्होंने मुगलों द्वारा बड़े पैमाने पर प्रयुक्त लाल पत्थर और राजपूतों द्वारा प्रयुक्त सफेद पत्थर के गुणों को समझा। दोनों दिल्ली की जलवायु के



राष्ट्रपति भवन के सम्मुख गणतंत्र दिवस परेड

उपयुक्त हैं । लाल पत्थर के रंग में धीरे-धीरे मामूली परिवर्तन होता है— प्रकाश की तीव्रता को देखते हुए, वह गुलाबी फिर रूबाव (रेवतचीनी-पीलाई लिए हुए भूरा) और फिर गहरा भूरा हो जाता है । लाल पत्थर उन्हीं खानों से लाया गया, जिनके पत्थरों से अकबर ने फतेहपुर सीकरी का निर्माण किया था । धौलपुर पत्थर का प्रयोग सुंदर विरोधाभास को प्रकट करता है । ऊंची कुरसी के लिए लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है, दीवारें और खंबे धौलपुर पत्थर के हैं । छज्जे लाल पत्थर के हैं और उनके नीचे के स्थान को मुगल शैली में सजाया गया है । छज्जों के ऊपर सफेद पत्थर की मुंडेर हैं । इस सबके ऊपर गुंबद हैं— नीले आकाश के नीचे काली । गुंबद के ऊपर तांबे की चादरें मढ़ी हुई हैं, जो समय के साथ काली पड़ गयी हैं । ल्यूटन ने इन रंगों और आकृतियों की व्यवस्था ऐसे ही की थी जैसे कोई संगीतज्ञ स्वरों के उतार-चढ़ाव की व्यवस्था करता है ।

मुगल उद्यान

राष्ट्रपति भवन के पीछे छह एकड़ भूमि में फैला प्रसिद्ध मुगल उद्यान है । मुगल उद्यान अपने नाम के अनुरूप पूरी तरह मुगल नहीं है । इसमें ब्रिटेन की उद्यान कला के अनेक तत्व शामिल हैं ।

ल्यूटन का विचार पहले दो पृथक उद्यान बनाने का था । एक केवल वाइसराय और दूसरा आम जनता के लिए । लेकिन लेडी हार्डिंग के अनुरोध पर उन्होंने मुगल उद्यान का विचार अपना लिया । उन्होंने सावधानी के साथ फारसी और भारतीय लघु चित्रों, ताजमहल के उद्यानों और लाहौर और श्रीनगर के शालीमार उद्यानों का अध्ययन किया । ल्यूटन ने उद्यान के आयोजन में संगठित ब्रिटिश स्वतंत्रता का, ज्यामितीय नमूनों और पानी के प्रयोग के साथ संगम किया है, जो मुगल उद्यान की जान है । विभिन्न स्तरों पर मुगल नहरें और सीढ़ियां और फूलदार-झाड़ियां यूरोपीय शैली की पुष्प वाटिकाओं, 'लान' और बाड़ के साथ पूरी तरह एक हो जाती हैं ।

उद्यान के सिरे पर प्रासाद के नीचे २०० फुट लंबा और २० फुट चौड़ा अथवा ३७०० वर्ग मीटर का घास का एक गलीचा है । इसमें से एक नहर निकलती है जो धीरे-धीरे अनेक स्तरों पर गुजरती हुई नीचे पहुंचती है । सुदूर एक कोने पर एक गोलाकार कुंड है । यह चारों ओर से फूलों की क्यारियों से घिरा है । नहर के दूसरी ओर विभिन्न आकार के घास के आयत हैं । आयत के किनारों पर और उद्यान की सीमा पर फूलों की क्यारियां हैं । जो एक विशाल कालीन पर रंगीन गांठों का आभास देते हैं । कमल की पंखुड़ियों की आकृति के लाल पत्थर के फव्वारों से निकली जल धारा से आंखें उठाये नहीं उठतीं । गोलाकार कुंड का रास्ता दो मंडपों के मध्य में होकर है । मध्य में पत्थर की शहतीरें हैं, जो आगे को निकलकर हाथी की सूंड का आभास देती हैं । उद्यान के चारों ओर पत्थर की

जालियां हैं और वह मजबूत दीवारों से घिरा है। दीवारों के बाहर पेड़ हैं जो अलग-अलग समय पर खिलते हैं।

रंग-बिरंगे फूल ही फूल

मुगल उद्यान वर्ष के शुरू में अनुपम लगता है। इसे फरवरी-मार्च में जनता के लिए खोल दिया जाता है। हजारों लोग नित्य आकर इसके रंग-बिरंगे फूलों की प्रचुरता और महक की प्रशंसा करते हैं। १५ मार्च, १९९१ को २ लाख १५ हजार लोग मुगल-उद्यान देखने गये थे। मुगल उद्यान में २५० से अधिक किस्म के गुलाब हैं। इनमें सभी गुलाबों का जनक वेनकिनसियन भी है। उद्यान में ६० किस्म के वोगेनविलिया भी हैं।

प्रारंभ में अनुमान लगाया गया कि वाइसराय के भवन-निर्माण पर ४ लाख पौंड लागत आएगी और इतनी राशि की व्यवस्था की गयी। फिर प्रथम विश्व युद्ध की महंगाई को देखते हुए अनुमानों में संशोधन किया गया। भवन-निर्माण के लिए निर्धारित राशि ८ लाख पौंड कर दी गयी। अंततः मुगल उद्यान और कर्मचारियों के निवास-स्थान सहित परियोजना की निर्माण लागत ११ लाख ५३ हजार पौंड कूती गयी। कुछ क्षेत्रों में इस बात की कठोर आलोचना की गयी कि एक व्यक्ति के निवास स्थान पर इतनी अधिक राशि खर्च की जा रही है। परियोजना के समर्थकों का कहना था कि यह राशि दो युद्ध-पोतों के मूल्य से कम थी।

ल्यूटन की अद्‌भुत परियोजना

परियोजना की स्वीकृति मिलने और उसका काम शुरू होते ही प्रथम महायुद्ध शुरू हो गया। युद्ध के कारण निर्माण कार्य के नये तखमीने बनाये गये। इस दौरान मंद गति से काम चलता रहा। जब ल्यूटन पहली बार भारत आये। वाइसराय को उन्हें ३० शिलिंग प्रतिदिन भत्ता देने और उनके लिए १५०० रु. में एक कार खरीदने के लिए भारत मंत्री से अनुमति लेनी पड़ी।

ल्यूटन ने इस परियोजना से विशेष पैसा नहीं कमाया। उन्हें इससे कुल ५ हजार पौंड (वर्तमान मुद्रा विनिमय दर २ लाख ९१ हजार २५० रु.) मिले। ल्यूटन ने निर्माण कार्य की प्रगति देखने के लिए भारत की १८ यात्राएं की। ये सभी यात्राएं पानी के जहाज से की गयी थीं। इमारत का निर्माण पूरा होने के बाद २३ जनवरी १९२९ को वाइसराय लार्ड इर्विन ने उसमें प्रवेश किया। उसी दिन एक शानदार रात्रि भोज का आयोजन किया गया। उसमें दिल्ली में रह रहे वरिष्ठ नागरिक, सैनिक अधिकारियों, गण्यमान्य नागरिकों के अलावा परियोजना के निर्माण कार्य से जुड़े महत्त्वपूर्ण लोगों को बुलाया गया था। ल्यूटन भोज में सम्मिलित हुए। लेकिन भोज समाप्त होने के बाद उन्होंने वाइसराय से औपचारिक विदा नहीं ली। वाइसराय के भव्य प्रासाद को छोड़ने के पूर्व ल्यूटन ने उसकी दीवारों को चूमा, और फिर वह वहां से चुपचाप खिसक गये।

ल्यूटन भारतीय और मुगल वास्तु शिल्प को नापसंद करते थे। इसके बावजूद उन्होंने अपनी इमारत में भारतीय शिल्प के अनेक प्रतीक शामिल किये। राष्ट्रपति भवन की प्रमुख विशेषता उसका गुंबद है। अनेक आलोचकों का कहना है कि इसका निर्माण करते समय ल्यूटन सांची के स्तूप से प्रभावित हुए हैं।

प्रस्तुति : नवीन पंत





ईश्वर

तुम्हें तलाश थी ईश्वर की
तुम भटकते रहे वेदों की ऋचाओं से, गीता के
श्लोकों तक
हिमालय की चोटियों से कन्याकुमारी तट तक
मुझे मिल गया—बिना ढूंढ़े ही
पवित्र मुसकान लिए, चीथड़ों में लिपटा कूड़े के ढेर
पर
बंद थीं उसकी आंखें, मैंने खोलीं चमकीली थीं

नहीं जाना पड़ा मुझे हिमालय, कन्याकुमारी के तट
पर
नहीं रटने पड़े श्लोक-ऋचाएं
नहीं ढूंढ़ना पड़ा नाम जाति-संप्रदाय के अनुसार
उसकी पवित्र मुसकान रहेगी हमेशा मेरे सामने
तो मुझे मुक्ति की कामना क्यों होगी ?
चमकीली आंखों का बंधन प्रिय है मुझे
मुझे नहीं चाहिए—ईश्वर, कोई और

—प्रतिभा पांडेय

पता : द्वारा डॉ. श्रीकांत पांडेय शांतिपुरम्-१, नेहरू रोड बड़ौत (मेरठ) पिन-२५०६११
शिक्षा : एम. ए. इतिहास (अध्ययनरत)
आत्मकथ्य : काव्य का स्फुरण आकस्मिक है, सप्रयास नहीं । कोई भी घटना या स्थिति जब मन को छू लेती है, तब कविता स्वतः उद्‌भूत हो जाती है । कविता मन की अंतर्दशा की ही रूपाकृति है ।

'संशय'

हर तरफ
स्वार्थ छिपा बैठा है
भूखा, रक्त लोलुप
जंगली कुत्ते-सा
चीर-फाड़कर खा जाने को व्याकुल
एक-दूसरे के प्रति
मनों में गहराती
...संशय...ऊब...
नफरत की सड़ांध ।
घुटती-दबती भावनाओं में
सिसकती है मौन आत्मा
और...मेरी कलम सहमकर
ठिठक जाती है—
कौन-सा शब्द दूं
जो कि हो—
निस्वार्थ, आत्मीय
स्नेहयुक्त

—रश्मि शर्मा

पता : द्वारा श्री सत्यनारायण बियांला बजाज हिंदुस्तान लिमिटेड, गोला गोकर्णनाथ (खीरी) उ. प्र.
जन्म : १५ दिसंबर १९६८
शिक्षा : एम. ए. (अर्थशास्त्र) अध्ययनरत
आत्मकथ्य : अपने परिवेश की विसंगतियों से मन में उठते अनगिनत भाव कविता का रूप ले लेते हैं । कविताएं ही मेरे जीवन का माध्यम है ।





मन-रेगिस्तान

अपने आस-पास
और वहां सड़क पर
ल की यात्रा हो
या बस का सफर
र मोड़ पर
खड़ी है भीड़
कुल्हाड़ी लेकर

इस भीड़ से होकर
गुजरता हूं
तो पाता हूं
कि मन में
रुस्थल और बढ़ गया है

हुत दिन बाद
मझ पाया यह बात
कि आज कल
आंखों से
रसात क्यों नहीं होती

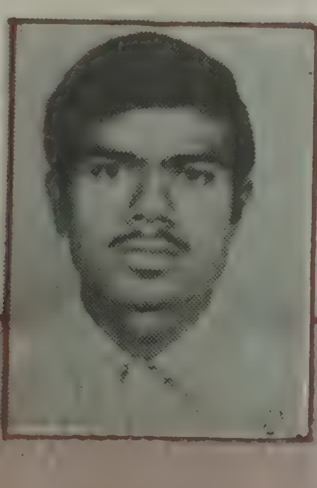
इंतजार

लाऊड स्पीकर पर
चिल्लाता है कोई
देता है आश्वासन
'विकास ले आएंगे
दे दो हमें सिंहासन'

देकर उन्हें सिंहासन
गांव बैठ गया
पीपल की छांव
अब छोड़ चुका वह
चलना पांव-पांव
विकास की
राह निहार रहा

—बाबूलाल रावत

ता : ३१, प्रिंस ब्लॉक मेडिकल होस्टल, इंदौर (म.
.)
प्रति : एम. बी. बी. एस. अंतिम वर्ष अध्ययनरत
न्मतिथि : ९ जुलाई १९७०
आत्मकथ्य : समाज की दुर्व्यवस्थाओं के प्रति मन में आक्रोश उत्पन्न होता है, कविता उसी से अंकुरित होती ।



शहर

जहां,
सुबह शाम बरपा हो कहर
जहां
सड़कों पर चलती हो भीड़ की लहर
जहां,
कानों में गूंजता हो हार्न का स्वर
जहां,
आदमी पीता हो धुएं का जहर
जहां
इनसानियत बंद हो हर पहर
शायद
इसी का नाम है शहर

यादों में

तुम्हारी यादों में
खोया मेरा मन
जैसे मैके की याद में
खोयी ससुराल में
नयी दुल्हन

जिंदगी में

मेरी जिंदगी में
तुम्हारे आने की खुशी
जैसे किसी अधनंगे को
जाड़े में कंबल मिली

—मनोज

शिक्षा : एम. ए. (इतिहास), एल. एल. बी.
उम्र : २५ वर्ष
पता : चन्द्र भवन, न्यू जक्कनपुर
पटना-८००००१
संप्रति : लेखा परीक्षक, उत्तर रेलवे, इलाहाबाद
आत्मकथ्य : जिंदगी में जो कुछ खोता हूं, उसे कविता के माध्यम से पाना चाहता हूं । मेरी कविता, मेरी तन्हाइयों की दोस्त है ।



सड़क

थक जाते हैं हमारे पांव
पर
सड़क
कभी नहीं थकती
अंतर्युद्ध में व्यस्त
दौड़ते लोग
प्रकाशित लैंप-पोस्ट
संवेदना के धरातल पर
धरते हैं—
आस्था के दीप
और
कभी न थकने का संदेश
यही है
मार्ग की
अंधी यंत्रणा का
प्रकाश मंच ।

घर

घर
था
प्रेम का मंदिर,
खंडित कर दी है
उसमें स्थापित
आस्था की देव-मूर्ति
अब घर
रह गया है—
मात्र
दीवारों की लाश बनकर
विलीन हो जाएंगे
तुम्हारे संबोधन
शून्य खंडहर में
उसके ठंडे कान
नहीं कर पाएंगे—
तुम्हारे भावुक स्पंदन
का संस्पर्श ।

—राजेश हजेला

शिक्षा : प्री एम. ए. का छात्र
पता : ४/१०, तकिया नशरत शाह
फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)
पिन-२०९६२५
आत्मकथ्य : जब शब्दों की किरचें हृदय को विदीर्ण कर देती हैं, तब भावनाओं की स्याही से प्रस्फुटित होते हैं कुछ शब्द । यही शब्द मेरे जीवन का आधार हैं ।



लहरें

लहरो, तुम
मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
अब किनारे पहुंचोगी,
अब किनारे पहुंचोगी,
इस आशा से दौड़ती, तुम
मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
जो, मन जल रहा है,
उसी को नया दिन दोगी
नया जागरण दोगी
तुम मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
जब आलस में घिरूंगी मैं, तो
जागने की आकांक्षा दोगी,
तुम मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
ओ, मेरी प्यारी दोस्त
लेतीं, कुछ विश्राम क्यों नहीं, तुम
मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
किस वय में हो ? शैशव या यौवन में
या बुढ़ापे में हो ?
तुम मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
देखेगा जो भी तुम्हें
पुलकित होगा वह देखने से,
तुम मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।
गर्जन करती जल्दी-जल्दी दौड़ रही हो ?
खोजती हो क्या किसी गहरे दोस्त को ?
तुम मेरे जीवन की लय-ताल-जैसी हो ।

— जोमोल के. जैकब

शिक्षा : स्नातक
पता : द्वारा केरल हिंदी प्रचार सभा, वड़तकाड़ू,
तिरुअंतपुरम (केरल)
आत्मकथ्य : आसपास के दृश्यों, व्यक्तियों, घटनाओं से जो संवेदनाएं उपजती हैं, उन्हें कविता के रूप में लिखती हूं । अपनी इस कविता का मलयालम से मैंने स्वयं अनुवाद किया है ।





अहमियत ऑपरेशन की

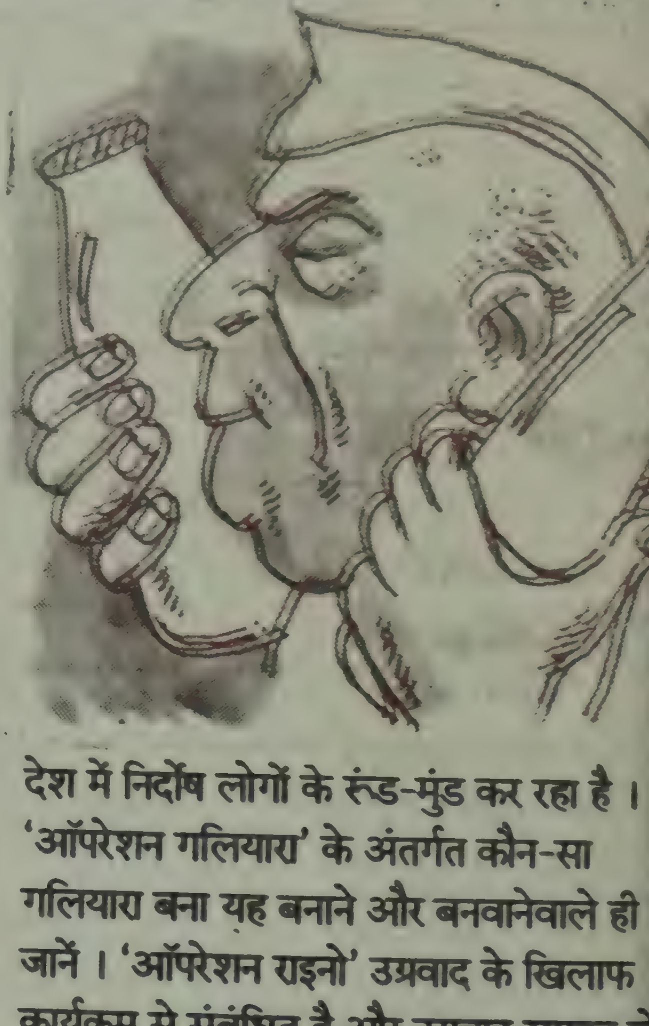
● उमाशंकर चतुर्वेदी

अगर आपको शोहरत चाहिए तो लगे हाथ कोई-न-कोई ऑपरेशन करा लीजिए । दि किसी योजना की शोहरत फैलाना हो तो सके पहले ऑपरेशन शब्द लगा दीजिए । ॉपरेशन शब्द ही ऐसा है, जो आपका नाम जागर कर देता है, आदमी और योजना की ज्जत में चार चांद लगा देता है, अभियान लाने में हमें हल चलाने-जैसी शरम मालूम ड़ती है और उसके स्थान पर ऑपरेशन चलाने करने में देश को चलाने जैसा फक्र महसूस ता है । ऑपरेशन करा के तो देखिए, कैसी हरत चारों ओर फैलती है । ऑपरेशन चाहे रिवार कल्याण का वी.टी. हो या टी. टी., फोड़े का हो या फुंसी का, दिल का हो या दिमाग का, पेट का हो या पीठ का, मेजर हो या माइनर, ऑपरेशन तो आखिर ऑपरेशन ही है, और इज्जत बढ़ाने, शोहरत फैलाने के लिए काफी है । देश में न कराकर विदेश में ऑपरेशन कराइए तो कसम खुदा की, फिर तो कहना ही क्या है, विदेश जाने की खबर से ही आपका नाम आग की तरह फैलेगा और लोग मुबारकबाद देंगे और सहानुभूति भी प्रकट करने आएंगे । वापस लौटने पर 'फॉरेन रिटर्न' कहाएंगे सो अलग । अगर किसी प्रकार सरकारी खर्चे पर ऑपरेशन की जुगाड़ फिट हो जाए तब तो कहना ही क्या है, सोने में सुहागा

तथा एक पंथ तीन-तीन काज अर्थात शोहरत, सहानुभूति और विदेश पलट की ख्याति । इसी प्रकार यदि किसी कार्यक्रम या योजना को अहमियत देना हो और उसका प्रचार-प्रसार ज्यादा करने की इच्छा हो तो उस कार्यक्रम के पहले ऑपरेशन शब्द फिट कर दीजिए, फिर देखिए बंगाल के जादू-जैसा कमाल । ऑपरेशन शब्द का जादू जनता के सिर पर चढ़कर बोलेगा । कार्यक्रम की इतनी पब्लिसिटी होगी कि बिना काम किये आधी से अधिक फतह तो पहले ही हो जाएगी ।

अब यों ही देखिए कि डॉक्टरों के कहे अनुसार परिवार कल्याण संबंधी आदमियों का वी.टी. ऑपरेशन और महिलाओं का टी.टी. ऑपरेशन सिर्फ दो-दो मिनट के हैं और माइनर (छोटे) ऑपरेशन हैं, लेकिन 'आपरेशन' शब्द तो अपना कमाल दिखाता ही है सो आपात काल में ऐसा कमाल दिखाया कि दुनिया जान गयी थी । परिवार कल्याण के इन ऑपरेशनों ने देश की तत्कालीन सरकार का ही कल्याण कर दिया था और सरकार खिसकाने में इन ऑपरेशनों का जबरदस्त हाथ था । अपने देश में जबरदस्ती नहीं चलती है । प्रेम से तो लोग गला कटवा लेते हैं, काट लेते हैं, लेकिन जबरदस्ती से नस भी काटना, कटवाना मुश्किल होता है । अतः आपातकाल के बाद जो सरकार बनी उसे दूसरों की नसों की पकड़ ढीली करनी पड़ी थी । एक तो ऑपरेशन फिर वो भी जबरदस्ती ऐसा कैसे हो सकता है ? ऑपरेशन ही काफी है, फिर जबरदस्ती से तौबा-तौबा !

ऑपरेशन ब्लूस्टार ने देश में तहलका मचा दिया था । सन बासठ का ऑपरेशन चाइना फिर सन पैंसठ का पाकिस्तान से युद्ध फिर बांगला देश के लिए युद्धों के परिणाम जो हुए वो सभी जानते हैं, लेकिन ऑपरेशन ब्लू स्टार आनुषांगिक परिणाम काफी भुगतने पड़े । ऑपरेशन काली आंधी (ब्लेक थंडर) ने तो बवंडर ही मचा दिया था, जिसके तहत छिपे आतंकवादी निकाले गये । काली आंधी ऑपरेशन के बाद भी आतंकवादियों के कारनामे जारी रहे । आतंकवाद को समाप्त करने का एक और कार्यक्रम 'ऑपरेशन मुंडा' चलाया गया । ऑपरेशन मुंडा से क्या हुआ य तो नहीं मालूम, लेकिन आतंकवाद आज भी



देश में निर्दोष लोगों के रूंड-मुंड कर रहा है । 'ऑपरेशन गलियारा' के अंतर्गत कौन-सा गलियारा बना यह बनाने और बनवानेवाले ही जानें । 'ऑपरेशन राइनो' उग्रवाद के खिलाफ कार्यक्रम से संबंधित है और उग्रवाद समाप्त हो या नहीं हो, 'ऑपरेशन राइनो' तो चर्चित हो गया ।

'ऑपरेशन ग्रीन' सारे देश को एवरग्रीन (सदाबहार) करने की योजना है । देश की हरियाली खतम हो रही है सो 'ऑपरेशन ग्रीन'

चालू करना पड़ा । ऑपरेशन ग्रीन ने सारे देश में ग्रीनरी फैला दी है । अब अगर हरियाली आपको या हमें न दिखे तो इसमें 'ऑपरेशन ग्रीन' का क्या दोष है ? योजना को विफल करने के लिए ऊपरवाला अगर सूखा भेजता रहता है, तो हम क्या कर सकते हैं ? हम तो ऑपरेशन ठीक देते हैं, अब ऑपरेशन सेप्टिक हो जाए, मरीज भी कभी-कभार मर जाए तो डॉक्टर क्या करें ? सब भाग्य की बात होती है । अगर किसी को ऑपरेशन में ही मरना है, तो मरे, उसे कैसे बचाया जा सकता है ?जो साइकिल का पंचर सुधारते हैं वे जब ऑपरेशन करेंगे तो हस्र ऐसा ही होगा । हम तो हर साल करोड़ों पेड़ लगाते हैं, उन पर खर्चा-पानी होता है, जिससे संबंधित लोगों का भी खर्चा-पानी चलता है । जो पेड़ जिंदा रह जाते हैं वे लहलहाते हैं, जो मर गये सो अपने भाग्य से, अगले प्रयास में दूसरे लग जाएंगे । हर साल करोड़ों बच्चे भी तो पैदा हो रहे हैं और उनमें बहुत-से मर रहे हैं, फिर पेड़ों को कौन पूछता है ? 'ऑपरेशन ग्रीन' के बाद हरियाली न दिखे तो हमारी आंखों का ही दोष माना जाएगा । जब सावन के अंधे को हरा ही हरा दिख सकता है, तो दो आंखोंवालों को कैसे नहीं दिख सकता है ? कोशिश कीजिए तो सब दिखेगा और न देखना हो तो आपकी मरजी, 'ऑपरेशन ग्रीनरी' को क्यों दोष देते हो ?

'ऑपरेशन फ्लड' के अंतर्गत दूध की नदियां बहाने की दूधिया योजना चालू की गयी । जब कोई 'ऑपरेशन फ्लड' नहीं चलता था, तब अपने देश में दूध, घी की नदियां बहती थी, 'ऑपरेशन फ्लड' के बाद नदियों का पानी ही सूख रहा है । ऊपर के लोग तो दूधिया कपड़े पहनते हैं, दूधिया रोशनी में रहते हैं, दूध पीते हैं और दूध-भात के भोजन करते हैं । 'ऑपरेशन फ्लड' से गरीबों और बच्चों को भी चाय के लिए ही दूध मिल जाए तो ऑपरेशन की सार्थकता पता चलेगी ।

ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना ने तो शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ही ला दी है ।

प्राथमिक स्कूलों को सर्व सुविधा संपन्न बनाने की इस योजना का नाम अगर हिंदी में होता, तो बिल्कुल मजा नहीं आता । नाम ऐसा होना चाहिए जो जोरदार हो और साधारण रूप में सीधी-सादी स्थिति में किसी की समझ में न आये । साधारण तौर पर लोग उस विषय पर ज्यादा बहस भी न कर सकें । कुछ दिन तक तो लोगों ने सोचा कि ब्लैक बोर्डों का ऑपरेशन होगा और जब श्याम पटों की शल्यक्रिया हो सकती है तो शिक्षकगण कैसे बच सकते हैं ? ऑपरेशन के डर की वजह से ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना को अभी तक लोग याद रखे हुए हैं । इस योजना का नाम इतना प्रसारित और प्रचारित हो गया है कि इसे ताजिंदगी नहीं भुलाया जा सकता है । सही भी है, शुरुआत अच्छी हो, तो आधा काम हो गया समझिए । योजना का नाम अच्छा रख दीजिए तो उसमें ज्यादा काम करने की जरूरत नहीं पड़ती है ।

भोपाल गैस त्रासदी, जो मानव निर्मित सबसे बड़ी त्रासदी थी, उसे भोगने के बाद ऑपरेशन फेथ (आस्था अभियान) चलाया गया । आस्था अभियान का नाम सुनकर सारे भोपाल के लोग भागने लगे थे, लेकिन जब उस अभियान का नाम 'ऑपरेशन फेथ' प्रचारित हुआ, तो लोगों के दिलों में पक्का फेथ पैदा हो गया था । वह फेथ (आस्था) किस बात में

थी, मरने में या दुःख भोगने में, यह किसी को नहीं मालूम ।

एक और योजना 'ऑपरेशन क्लीन' चालू हुई । कई क्लीन लोग थे, जिनकी दाढ़ी उग आयी है । आदमी को क्लीन करना मुश्किल है फिर भी प्रदेश और देश को क्लीन करने का ठेका दिया जाता है । प्रदेश और देश की राजधानियों में अफसर जाकर अपनी-अपनी अफसरी दिखाते हैं । उन्हें पता नहीं कि राजधानी में तो अफसरी कम करने के लिए बुलाया जाता है अथवा यों कहें कि उन्हें अटैच किया जाता है और ये मुगालता पालकर अफसरी शुरू कर देते हैं । उन्हें यह मालूम ही नहीं रहता कि राजधानियों में तो एक से एक आला अफसर, आला मंत्री, आला कमान, अभिनेता, सेठ, साहूकार, बड़ों के रिश्तेदार, संगी-साथी, चमचे-चमचियां, चिमटे-चिमटियां, राग, रागनियां हैं, फिर अफसरी किस पर झाड़ोगे ? अभी तक कौन-सी गंदगी थी, जो अब क्लीन करने का ऑपरेशन चलाया जा रहा है ? इससे एक तो पहले के लोगों पर कीचड़ उछलती है कि वे गंदगी पसंद थे, दूसरी बात यह है कि जिन्हें गंदगी फैलाने की आदत है और ऊपर से भी गंदगी फैलाने की शह मिली है, वे सफाई पसंद कैसे करेंगे ? लेकिन ऑपरेशन तो ऑपरेशन है वो तो होकर रहेगा, मरीज कुछ भी कहे । वैसी सफाई होती तो मालूम पड़ता कि देशी ढंग से सफाई हो रही है, शुद्ध बांस की झाडू से । ऑपरेशन क्लीन में दिल फूलनेवाली बात होती है और यह महसूस होता है कि अंगरेजी ढंग से वातावरण क्लीन हो रहा है ठीक वैसे ही जैसे कैंसर का इलाज अपने देश में न होकर न्यूयार्क में हो रहा हो । बुखार तो हम लोगों को अक्सर आता है, लेकिन ऑपरेशन कभी-कभार ही होता है । राजधानियां क्लीन हो जाएं तब समझिए कि ऑपरेशन कैसा हुआ ? विभागों को क्लीन करने की योजनाएं अनेक बार बनीं, लेकिन विभाग क्लीन हुए या क्लीन करानेवाले ही विलीन हो गये, कुछ पता ही नहीं चलता है । गंदगी फैलना और फैलाना सरल है, लेकिन क्लीन करना कठिन होता है ।

आप भी कोई योजना बनाकर या खोजकर उसके साथ ऑपरेशन लगा दीजिए और चर्चित हो जाइए । हो सकता है लगे हाथ कोई पुरस्कार भी मिल जाए । कुछ न हो तो छोटा-मोटा ऑपरेशन ही करा लीजिए । आस-पड़ोस के, नाते-रिश्तेदार, देखने तो आएंगे । अगर आप किसी पद पर हैं तब तो बिल्कुल मत चूकिए, ऑपरेशन कराइए और को-ऑपरेशन (सहयोग) लीजिए ।

— एफ ४९/९ साउथ टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) ४६२००३

हेलमा और लूसी

सानदिआगो का चिड़ियाघर दर्शकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र बना हुआ है । यहां एक विचित्र साढ़े तीन फुट लंबी सांपिन प्रदर्शन के लिए रखी गयी है । इस सांपिन के दो सिर हैं । एक सिर का नाम रखा है हेलमा और दूसरे का नाम लूसी । प्रकृति का यह आश्चर्य कभी-कभी ही देखने को मिलता है ।

'अंतर-व्यथा'

● बाला शर्मा

'कुछ खास नहीं—बस थोड़ा-सा ब्लडप्रेशर हाई है' स्टैथिस्कोप कानों से लटकाकर ब्लड प्रेशर मापने की पट्टी खोल ली । अभी उसे तह कर, रख भी नहीं पाये हैं, कि ये क्या, रोगिणी का पीला चेहरा भक्क सफेद हो गया है । आंखों के आगे चारों ओर सियाह घेरे, सूजे हुए लाल पपोटे और सूखे पपड़ी पड़े होंठ, शायद बहुत लंबे समय से बीमार हैं । कलाई हाथ में लेकर नाड़ी परखने का अभिनय भर करते रहे हैं, डॉक्टर भट्टाचार्य । फिर उठकर बरामदे तक चले आये हैं ।

पिछले बीस बरस से इस घर में डॉक्टर की हैसियत से उनका आना-जाना है, बल्कि एक प्रकार से राय दंपत्ति के निकट मित्रों में से एक बन गये हैं वे ! बेटे-बेटी के ब्याह की बात हुई, अथवा जमीन-जायदाद की समस्या या अन्य कई राज की बातें हुईं, सभी में साझीदार रहे हैं डॉक्टर । तब फिर कितनी अजीब बात है कि इतना विशेष प्रकरण वे नहीं जान पाये, जो उन्हीं के कार्य से संबंधित है ।

इस घर के कमरों, बरामदों का फर्नीचर, परदे, कार्पेट या क्राकरी से लेकर बाहर लान में फूलों की क्यारियों तक सब कुछ करीने से कटा-संवरा रहता है । घड़ी की टिकटिक से दिन की आंखें खुलती हैं । रात की तन्हाइयों में भी टाइम टेबल सजग रहता है । घर की एकछत्र-मालकिन हैं, अणिमा जी । जैसे राज महर्षि की गरिमा लिपटी हो उनके व्यक्तित्व से । तब फिर कौन-सा दुःख हो सकता है, भला उन्हें ... और क्या कारण है, उसका । सतीश राय जैसे पति, दो बेटे एक बेटी—अविनाश और उसकी बहू कितने आज्ञाकारी हैं, दोनों । लवी शायद बचपन से ही लाड़ के कारण थोड़ा लापरवाह हो गया है । पर बहन के ब्याह की पूरी जिम्मेदारी तो उसी ने निबाही है, भले ही उसकी पत्नी उस सबसे नाराज रहती हो ।

'लवी, बहू ने क्यों नौकरी कर ली बेटा—क्या चाहिए उसे—' अणिमा को बहू का यूं इतना कष्ट झेलना अच्छा नहीं लगा था ।

'आप रहने दें मम्मी . . . उसे खाली बैठना पसंद नहीं, फिर दो-तीन घंटे कॉलेज में पढ़ाकर चली आती है, वे निरुत्तर रह गयीं, पर व्यंग्यभरी तीखी दृष्टि उन्हें साल जाती है . . . बहू उनसे रुष्ट है, शायद ।

'मि. राय योर वाइफ इज इन ए क्रिटिकल कंडीशन . . . मतलब ब्लड प्रैशर बहुत हाई है—कभी भी दबाव बढ़ सकता है—और हैमरेज—' शब्द बीच में ही रोक लिए हैं, डॉक्टर मुखर्जी ने । राय साहब, जो साथ-साथ चलकर उनकी बात सुनते आ रहे थे, एकाएक उनके हाथ पकड़कर विचलित हो उठे ।

'नहीं—नहीं—डॉक्टर साहब ऐसी अशुभ



बात मुंह से मत निकालिए', वे बरामदे में पड़ी कुरसी पर धम से बैठ गये, तो स्वयं डॉक्टर को अपनी गलती का अहसास हुआ ।

'मेरा मतलब—होगा नहीं—पर-पर आप लोगों को केयरफुल तो रहना ही चाहिए न—'

'लेकिन डॉक्टर साहब ये सब हुआ कब—क्यों हुआ ये—' राय साहब असहायता से हाथ मलते जैसे स्वयं से ही प्रश्न कर रहे थे ।

'यह तो मैं नहीं बता सकता कि कब से हुआ होगा—पर इनके मन पर कोई बोझ है—क्रोध है, किसी प्रकार की कोई टेंशन है, जिसे ये दबा रही हैं । अब आप ही खोज सकते हैं, कारण तो— । घर के हालात तो आप से अधिक कौन समझेगा भला', डॉक्टर ने लाचारी से हाथ हिलाते हुए असमर्थता प्रकट की ।

अंदर कमरे में रोगिणी की पीली क्लांत देह, कंपकंपाते हाथ-पांव और माथे पर झलमलाते स्वेद बिंदु अच्छा संकेत नहीं दे रहे हैं । सेवा-सुश्रुषा में कहीं कोई कसर नहीं है । नौकरों-आयाओं की भीड़ जुटा दी है, सतीश राय ने पत्नी के लिए ! डॉक्टर मुखर्जी हर समय फोन पर बुलाये जा सकते हैं—पत्नी को हर सुख देने का प्रयत्न करते हैं ।

दो बेटों, एक बेटी का परिवार आज के संदर्भ में भले ही बहुत फैला हुआ है । परंतु अणिमा तो सदा से ही उस अपने सुख-संसार को सहेजती, संवारती बहुत लिप्त रही है, उस सब में । जिसे कि वे स्वयं केवल कर्त्तव्य के रथ पर चलाते रहे हैं . . . बेटों को स्वयं अपने से ऊंची शिक्षा दिलायी, चाहे कितना भी श्रम और धन लगा था । बेटी के ब्याह में अपने सुख-साधनों को तिलांजलि देकर लुटाया । तब फिर कहां हो गयी चूक—कहां कुछ हुआ, जो अणिमा की इच्छा के विपरीत हुआ हो । तब

फिर कारण । 'पापा आपका नाश्ता लगा दिया है' रज्जू की बहू उनका बहुत ध्यान रखती है . . . छुरी कांटे, तह किया हुआ नेपकिन सब टेबल पर लगा है । टोस्ट, अंडा, जैम सब उनकी पसंद का ही बनता है, विशेष कर जब से अणिमा बीमार हुई हैं और बड़ी बहू ने नौकरी कर ली है ।

घर-भर को अकेले ही संभालती है, बेचारी । नौकर-आयाओं की भीड़, माली, धोबी की शिकायतें सभी से निपटना क्या आसान बात है, झाड़ू बरतन का छोकरा चला गया तो आधा काम स्वयं ही करती रही । दो-चार दिन में अणिमा ने ही बताया और फिर पूछने पर 'जाने दीजिए पापा' और फिर अणिमा का भी चुप्पी साध जाना ।

क्या कारण था । रज्जु जो फोन सुनता था, उसका न जाने क्या, अंट-शंट जवाब बोलता था । क्या संकेत दे रहा है, ये सब— ? पर अब पूछने का अवसर नहीं, सो स्वयं भी चुप लगा गये हैं । मुंह का स्वाद टोस्ट कुतरते-कसैला हो उठा । ओह कहां खो गये । जिस कुरसी पर अणिमा बैठकर नाश्ता करती थी, उन्हें किसी अन्य का वहां बैठ जाना पसंद नहीं । यहां तक कि इरा का भी बैठना नहीं सुहाता—'तुम्हारी मम्मी का नाश्ता हो गया बेटी' प्रकट में स्वयं को नार्मल रखने का प्रयत्न कर रहे हैं, पर अंदर जो झंझावात चल रहे हैं, इसे रज्जू की बहु भी समझती है शायद । जब से इस घर में आयी है, मम्मी-पापा को कभी एक दिन को भी अलग नहीं देखा । स्नेह का ऐसा बंधन, इतनी अंडरस्टेंडिंग, बहुत कम दुर्लभ बात है ।

'सी योर पैरेंटस, कुछ सीखो उनसे' कभी-कभी रज्जू को ताना देने से वह नहीं चूकती । जब वह आफिस से सीधा उठकर, टेनिस खेलने चला जाता है और उसे सारी सांझ लान में चहलकदमी करते तन्हाइयों के सन्नाटे भरे, घर में कैद होकर बितानी होती है । मम्मी के चुप्पे-स्वभाव से परिचित थी वह, अथवा कहिए कि किसी ने मीठी छुरी चलाकर घर में दरार डालनी चाही थी ।

'तेरी सास बहुत सीधी-सी लगती है—पर घुन्नी है ध्यान रखना' इरा की बुआ मम्मी की सहेली थी । पर ब्याह में ही बुआ ने जो सीख दी थी, सो आज तक खराश बनकर चिलक उठती है, उसके मन में । भले ही सास ने बेटी-जैसा दुलार दिया है, अपने जीवनभर की कमाई, अपना होनहार बेटा गहने-घर सब उसे सौंप दिये हैं, पर इरा को कभी अपनत्व नहीं मिला । अणिमा का ममता भरा उत्फुल्ल स्नेह करकती सूखी रेत बन जाता है ।

'जी-जी-अभी ले जाती हूं—' सहसा वर्तमान में लौट आती है । इरा— । छोटी रोज बुड की ट्रे में बिना चीनी का दलिया और ऑरेंज जूस का ग्लास लगाकर उठने का उपक्रम करती है । उसे मालूम है कि रोजबुड का फर्नीचर मम्मी को बहुत पसंद है तभी न कितनी भी साफ-कीमती साड़ी पहने हों, उन्हें अपने आंचल से संवारते देखा है, जैसे सारी ममता उस टेबल तिपाई पर उड़ेल रही हों । तब जो इन बेजान वस्तुओं को भी इतना सहेज संवारकर रखती हों, वो स्वयं तो अपने लिए क्या चाहती है एवज में, इसे कोई नहीं सोच पाया इस घर में । इरा समझती है, ये सब । वह जो होती हैं न एक तीसरी आंख, कि पापा का वह अतिरिक्त स्नेह प्रदर्शित करना, वह व्यावहारिकता क्या है, उस

सबके पीछे। शायद एक ढोंग, एक दिखावाभर। वरना जो चालीस बरस का साथ बन गयी हो, उनसे अथवा कहें देह का भी अभिन्न अंग बन गयी हो, उनसे उतना शिष्टाचार कि कभी आपसे तुम पर भी नहीं आये पापा।

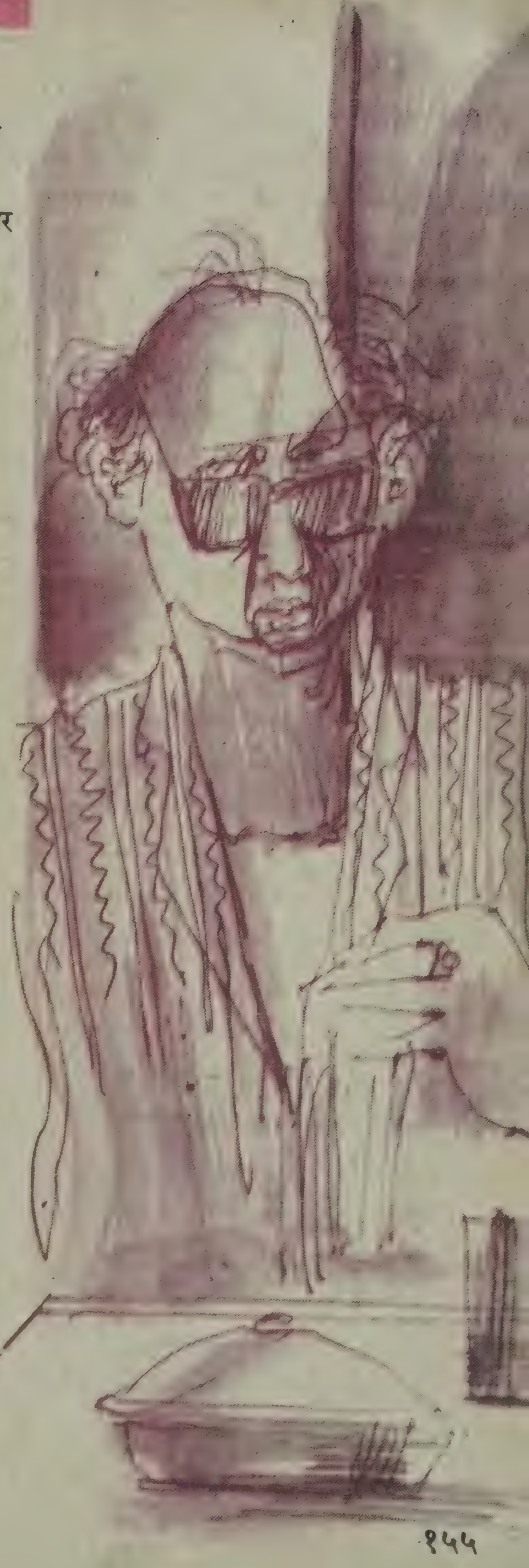
क्या कारण है, जो रज्जू का तू तड़ाक करना भी उसे मीठा लगता है, अथवा लवी का 'अरे यार' कह देना भी उसे बुरा नहीं लगता। क्यों उतनी बड़ी नकली दीवार बना लेते हैं लोग अपने चारों ओर।

क्यों हो जाता है ऐसा कि अपने ही हाड़, मांस से उपजे अपने हाथों पले-बढ़े नन्हीं कोपलों से पौधे जब बट-वृक्ष में परिवर्तित होते हैं, तो यूं पराये हो जाते हैं। अणिमा रात की वीरानियों में भी सो नहीं पाती।

'अरे . . . अभी तक जाग रही हो' रात के न जाने कितने बजे लौटे थे। क्लब में कोई खास मीटिंग थी। जब से रोटरी की मैंबरशिप ली है, न जाने कितने-कितने काम निकल आये हैं।

'अं हां . . . नींद नहीं आ रही—। आपका खाना रखा है, टेबल पर—। मैं लाती हूं गरम करके—। वे उठने का उपक्रम करने लगीं।

'नहीं—नहीं हमने खा लिया है। तुम लेटी रहो न।। उठना नहीं, डॉक्टर ने मना किया है। वे नाइट सूट पहनकर साथवाले पलंग पर आकर लेट गये। हल्की नीली रोशनी में कुछ मिनट बाद ही नींद भरे खर्राटे सुनायी देने लगे। अणिमा के गले में जैसे बड़ा-सा थक्का जम गया था। सांझ को न तो भूख लगी थी और न ही कभी उनसे पहले खाया था। इरा ने आग्रह भी किया था पर चालीस बरस जो नियम धरम



निबाहा, सो छूट नहीं पा रहा । पेट में बगूला उठ रहा है । शायद भूख का हो अथवा, दुःख की जो कचोटन होती है कलेजे में सो पेट आंत सभी को कष्ट देती है । सिरहाने से तकिया निकाल कर मुंह पर रख लेती हैं कि सिसकारी न निकल जाए और इनकी नींद न खुल जाए ।

रात के सन्नाटों में झींगुर बोलते रहे, सांय-सांय करती हवा—अंधेरों में भटकती हू हा हू हा जैसे प्रेत रौदन कर रहे हों या शमशान गान हो रहा हो । चौकीदार की लाठी की टक्टक । जागते रहो—जागते रहो । एक चेतावनी कि समय आ रहा है—जागते रहो । अथवा वर्तमान के प्रति खबरदार करते स्वर ।

'डेडी क्या कहीं डिनर पर जा रहे हैं कल' लवी ने एक दिन पहले ही पूछा था । अथवा आगाह कर दिया था । 'क्यों हमें तो कुछ नहीं बताया, कैसे मालूम हुआ तुम्हें' अणिमा एक-दो शब्द कहते हांफने लगी, स्वेद-बिंदु चेहरे पर झलमला आये । 'कुछ नहीं यूं ही पूछा' 'दृष्टि घुमाकर तथ्य को छुपा लेने का प्रयत्न करता रहा है, इसे समझ रही हूं । शायद कोई राज की बात है, जो उनसे कह नहीं पा रहा और लज्जा आने-जैसी स्थिति को नकार रहा है ।

कलेजे में खट से कुछ बजा था । तब क्या हंसी-ठिठोली के दो-चार शब्द, जो कानों में पड़े थे, कि जवानी लौट आयी—कि बूढ़े तोते—प्रेम गान अथवा दिल जवां—सब जवां— । वे इस सबको बहू-बेटों के बीच हंसी-मजाक समझ चुप साधे पड़ी रही थीं । डॉक्टर ने, जो इस बिस्तर, इस कमरे, इस घर में कैद कर दिया है और वे स्वयं पति-परमेश्वर, घर-बच्चे, बहू-पोते, उतने बड़े जंजालों की पकड़ में कैद हुई माथा धुनती रही हैं उस

सांझ को न तो भूख लगी थी और न ही कभी उनसे पहले खाया था । इरा ने आग्रह भी किया था पर चालीस बरस जो नियम-धरम निबाहा, सो छूट नहीं पा रहा । पेट में बगूला उठ रहा है । शायद भूख का हो अथवा, दुःख की जो कचोटन होती है, कलेजे में, सो पेट, आंत सभी को कष्ट देती है ।

दीवानगी को कहां समझ पायीं हैं—कि रमा मुखर्जी की गाड़ी की गति बहुत तीव्र हो रही है । पति का त्याग नौकरी स्टेटस—महिला स्वातंत्र्य— आदि-आदि उस सबकी प्रशंसा करते, जो उनके नेत्रों की चमक बढ़ जाती है, शायद इसी में कहीं कुछ दुरभि-संधि बन चुकी है । —क्यों—क्यों पूछ रहे हो तुम लवी— । एकाएक ऊंचे स्वर में जैसे बेटे से ही जवाब तलब करने लगी थीं ।

'कुछ नहीं—यूं ही पूछ लिया—मम्मी आप आराम करो'—बिना पृष्ठभूमि के उठकर चला गया । एक सनाका एक तीर छोड़ गया, जो दिल के आर-पार तक चला गया है— ।

'आराम—हां—आराम ही तो— । सब यही तो सलाह देते हैं— । अपने ही घर में मेहमान बनी, वे आराम कर रही हैं । लवी जान गया है सब— । रात के तन्हा पलों में उन शब्दों को पुनः-पुनः दोहराती हैं, जो वे अकेले में बाथरूम में गुनगुनाने लगे हैं ।

'ओह डियर हाऊ स्वीट आर यू—योअर प्रिंजैंस योअर स्वीट चार्मिंग प्रिंजैंस—ओह डियर—'

नहीं, कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं हो

रहा— । कोई अंतर इस घर को नहीं आता । लवी को टेलीफोन पर यह मैसेज मिला कि दो लोगों के लिए टेबल रिजर्व करा दी गयी है—और उनके बताने पर कि कहीं वह तो नहीं जा रहीं डिनर पर— । कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की— । शायद सब कुछ जानता है पहले से ही जो कि न जाने कितने दिनों—शायद सालों से वे जानकर अनदेखा करती आ रही थीं ।

दर्द की हल्की चुभन, जो बहुत कष्ट देती थी अब सुकून देती है, शायद । आदत पड़ गयी है । रात में हूं हूं करता पागल प्राण-वायु अब चिर यात्रा पर चलने लगा है । झींगुरों की आवाज, सन्नाटों के साये, उन्हें साथ ले जा रहे हैं । अणिमा के पेट, आंत, कलेजे सब में मरोड़ उठती है । परंतु प्राण पन से दबाने का प्रयत्न कर रही हैं । तकिया दोनों हाथों से मुट्ठी में भींचकर मुंह पर दबा लिया है ।

'रात में दो बजे के करीब प्राण निकले होंगे—पर बहुत चुपचाप दर्द सहती रही हैं—' डॉक्टर ने निर्जीव कटकता ठंडी कलाई पर से हाथ हटाकर कहा, तो उन्होंने चेहरे और आंखों पर कसकर रुमाल दबा लिया— । बहुएं और बेटे हल्के सिसकी भर रहे हैं । बड़ा बेटा सामने वटवृक्ष-सा तना खड़ा है—उन्होंने रुमाल चेहरे पर से नहीं हटाया कि कहीं आंखें चार न हो जाएं— । और वो राज—वह एक चोरी सामने न आ जाए कि जिसे अणिमा ने भी दिल की तहों में छुपा कर रख लिया था— । वह रमा मुखर्जी का बार-बार फोन पर आवाज बदल कर बोलना और उनकी ओवर ऐक्टिंग कि आफिस के काम का डिस्कशन—सांझ की मीटिंग—और रोटरी क्लब के काम न जाने, कितने झमेले— । अणिमा उन सब से मुक्त हो चुकी है—'मम्मी ने रात में खाना भी नहीं खाया' उसका पश्चाताप भरा स्वर—सब कुछ हवा में तैरता, लांछन—कैसे झेल पाएंगे वे— !

—७३, बनारसी स्टेट, लखनऊ रोड, दिल्ली-११०००७

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (४००), २. क. भीष्म पितामह-१० दिन, ख. द्रोणाचार्य-५, कर्ण-२, शल्य-१ दिन, ३. अगस्त्य (३००० ई.पू.), ४. क. २३.७ करोड़ अर्थात २९.९ प्रतिशत, ख. १९.५९ करोड़ गांवों में, ४.१७ करोड़ शहरों में, ग. उत्तर प्रदेश-४.४८ करोड़, ५. क. विशाखापत्तनम में, ख. लागत-८५ अरब रु., क्षमता ३० लाख टन, ६. क. सितारवादक पं. रविशंकर, ख. ३ हजार अमरीकी डॉलर, ७. क. जार्जिया, ख. १७९, ८. क. ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ, लगभग ५.३ अरब पौंड की निजी संपत्ति, ख. फ्रांस की ज्यां लुई कामैंट-११७ वर्ष, ९. कोंकण रेलवे लाइन पर रत्नगिरि के निकट, ६.५ कि.मी. लंबी, १०. सौर-ऊर्जा से चालित भविष्य की कार

वैद्य की सलाह

बी.सी. साहू, भोपाल

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष । एक वर्ष से एड़ी में दर्द होता है । सुबह उठने पर बहुत परेशानी होती है । स्थायी लाभ के लिए दवा लिखें ।

उत्तर : वात्तगजांकुश रस एक वटी, केशोर गूगल दो वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें । गरम पानी में नमक डालकर रात्रि के समय आधा घंटा पैर रखें ।

कु. सुरेखा, रूद्रपुर

प्रश्न : उम्र २७ वर्ष । नवंबर १९९१ से आवाज बंद-सी है । बोलने में बहुत परेशानी होती है । नींद भी कम आती है । डॉक्टर लोग एलर्जी बताते हैं ।

उत्तर : तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम, टंकणभस्म दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । व्योशादि वटी एक-एक कर तीन गोलियां चूस लें । तीन माह नियमित औषधियां लें । दही, चावल, खटाई, अरवी, भिंडी आदि वस्तुएं सेवन न करें ।

श्रीमती सुमन, कुलपहाड़

प्रश्न : उम्र २१ वर्ष । शादी के बाद गर्भधारण होने पर गर्भ निरोधक खाने पर गर्भ गिर गया । किंतु तब से मासिक के समय दर्द बहुत होता है, कमर में असहनीय दर्द हो जाता है । समय पर भी मासिक नहीं होता । तीन वर्ष विवाह को हो गये पुनः गर्भ धारण भी नहीं हुआ । कृपया इलाज लिखें ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच, अशोकारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद सम भाग पानी मिलाकर पीयें ।

राम नारायण मांडवी, सरगुजा

प्रश्न : उम्र १२ वर्ष । जन्म के ६ माह बाद से सिर से लेकर सारे शरीर में छोटी-छोटी गांठ बनी हैं । उनमें कभी-कभी सूजन व दर्द हो जाता है । अनेक दवाओं का प्रयोग किया है लाभ नहीं है ।

उत्तर : कांचनार गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । रसमाणिक्य दो ग्राम ले तीस मात्रा बनायें । एक मात्रा रात शहद से लें ।

रामाशीष, चंपारन

प्रश्न : उम्र ५८ वर्ष । लगभग चार वर्ष से बीमार हूं । रीढ़ की हड्डी से लेकर जांघ में बहुत असहनीय दर्द है, नैरोलोजिस्ट का इलाज कराया, उन्होंने कंधे से लेकर घुटने तक प्लास्टर कर दिया । विशेष लाभ नहीं हुआ । अन्य डॉक्टर का परामर्श कर उनकी सलाह पर ऑप्रेशन कराया । अनेक डॉक्टर वैद्यों से परामर्श कर चुका हूं । विशेष लाभ नहीं है । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : अश्वगंधादि चूर्ण साठ ग्राम, महायोगराज गूगल दस ग्राम, त्रयोदशांग गूगल पंद्रह ग्राम, साठ मात्रा बनायें । सुबह-रात दूध से लें । समीरपन्नग रस पांच ग्राम, रसराज रस पांच ग्राम, गिलोय सत्व दस ग्राम साठ मात्रा बनायें । दिन में दो बार शहद से लें । दो चम्मच दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें । आहार-विहार का परहेज कर छह माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

किशोर हिनोरे, देवास

प्रश्न : उम्र २३ वर्ष । दुबला-पतला युवक हूं । बहुत कुछ आहार लेता हूं शरीर बन नहीं पा रहा है । कृपया ऐसा उपाय बतायें जिससे चुस्ती व फुरती

अनुभव करूं ।

उत्तर : सुबह घूमना शुरू करें । लोहासव १ चम्मच, द्राक्षासव २ चम्मच सम भाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें । ब्रह्म रसायन एक चम्मच रात दूध से लें । तीन माह नियमित सेवन करें ।

नीलिमा, आसनसोल

प्रश्न : मेरे सारे चेहरे पर, खासकर नाक पर छोटे-छोटे मस्से हो गये हैं । सर्जरी करवाना नहीं चाहती ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो वटी भोजन बाद पानी से एक वर्ष नियमित औषधियां सेवन करें ।

रमणीक, जौनपुर

प्रश्न : हमारी सहधर्मी आयु ३८ वर्ष । लगभग २० वर्ष से शांत बादी बवासीर है । दीर्घकाल से कब्ज भी है । पीड़ा बनी रहती है ।

उत्तर : अर्शोधनी वटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । अभयारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । आहार-विहार का परहेज कर तीन माह औषधियां सेवन करें ।

नसरुद्दीन, जम्मू

प्रश्न : उम्र ६० वर्ष । पेट अक्सर खराब हो जाता है । रोज-सुबह गुड़गुड़ कर पतला दस्त होता है । ३-४ बार जाना ही पड़ता है । अधिक दिन दवा लेने पर कब्ज भी बन जाता है । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : सिद्ध प्राणेश्वर रस एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । चित्रकादिवटी एक-एक वटी भोजन बाद पानी से । तीन महीने दवा का प्रयोग करें ।

हवलदार, डी. द्विवेदी

प्रश्न : पत्नी की उम्र ३० वर्ष । प्रसव के बाद ऑप्रेशन करा दिया गया । उसके बाद से वह बीमार है । मासिक के समय बहुत भयंकर दर्द होता है तथा प्रदर की शिकायत बनी है । कमजोर हो गयी है समाधान करें ।

उत्तर : अशोकारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

विनोद कुमार स्वामी, रतन नगर

प्रश्न : माताजी की उम्र ६७ वर्ष । दो वर्ष से श्वास रोग से पीड़ित हैं । प्रायः कब्ज बना रहता है ।

उत्तर : व्याघ्री हरीत्तकी एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । द्राक्षासव दो चम्मच, कनकासव दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें ।

आर.के. सिंह, उल्हास नगर

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष । सादा नियमित जीवन है । कई वर्षों सेहुंआ (सेहुली) से पीड़ित हूं । ग्रीष्म व वर्षा ऋतु में बहुत परेशान रहता हूं ।

उत्तर : गंधक रसायन दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो वटी भोजन बाद पानी से लें ।

संजय गुप्ता, जालंधर

प्रश्न : उम्र २७ साल । पैरों के तलवों व पिंडलियों में दर्द व जलन रहती है । चलने-फिरने में थकान मालूम पड़ती है । अनेक चिकित्सकों से इलाज कराया, लाभ नहीं है ।

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी, चंद्रप्रभा वटी एक वटी सुबह-शाम दूध से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

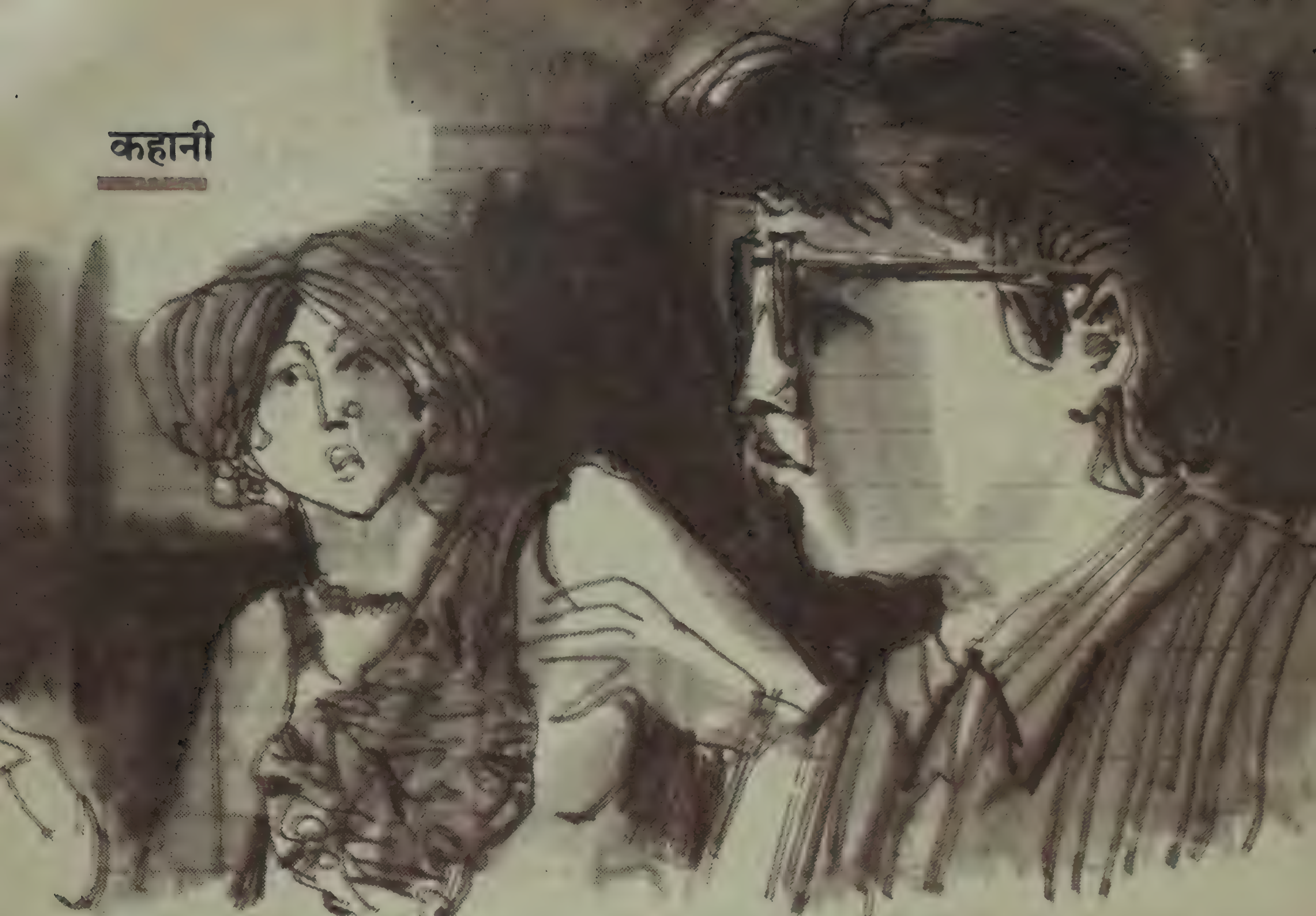
प्रदीप वधवा, झज्जर

प्रश्न : मुझे काफी समय से जुकाम है । कई प्रकार की दवा ले चुका हूं, लाभ नहीं ।

उत्तर : चित्रक हरीत्तकी एक-एक चम्मच सुबह-रात गरम पानी से छह माह प्रयोग करें । दही, चावल, शीतल पेय सेवन न करें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७ कृष्णनगर
दिल्ली-११००५१



खोयी हुई यादें

• सिराज कुरैशी

'उफ, इस सिगार में दम ही नहीं', विलियम ने आधे से ज्यादा सिगरेट ऐश ट्रे में डालते हुए कहा।

रात के दो बजने पर भी डॉ. गौतम की कार की कोई आवाज़ सुनायी नहीं दे रही। उन दुष्टों की पार्टी तो १२ बजे ही तक खतम हो जानी थी। 'फ्रांस से उनके चेयरमैन आये हुए हैं। उनके स्वागत में डॉ. गौतम के घर में पार्टी है, मुझे भी दावतनामा है रात ९ बजे तक मैं आ जाऊंगी। शायद वह ही मुझे छोड़ जाएंगे। आपके लिए और बच्चों के लिए मैंने खाना बनाकर रख दिया है।' उनके लैटर से यह तो मालूम हो गया था। उसके अनुसार वीना और सतीश स्कूल से आने के बाद खाना खाकर और स्कूल का काम करके सो गये थे। बच्चों ने मां के बारे में कोई प्रश्न नहीं पूछा। 'बस—खाना खाओ, स्कूल का काम करो,' और वह अपने बस्ते खोलकर बैठ गये।' बस—अब सो

विलियम का सारा संदेह दूर हो गया । तब उसे लगा कि उसे ज्यादा गुस्सा नहीं आता । उसमें सहिष्णुता है, संदेह करने की प्रवृत्ति भी नहीं है । वैसे संदेह की आग में जलकर राख होने में कौन-सा पुरुषार्थ है ! उस पागल मूर्ख ओथेलो का अंत में क्या हुआ, यह मालूम है न ?

जाओ,' कहते ही बगैर कुछ मुंह से निकाले, बिस्तर बिछाकर सो गये । ऐसे सीधे-साधे बच्चों पर भी विलियम को गुस्सा बहुत आया था । जीवन में यह आगे क्या तरक्की कर पाएंगे । "जी, हां" कहकर क्लर्क बनने, जो दें उसी से सब्र करनेवाले, मास्टर की बीबी बनने लायक, बच्चे हैं यह....

बारह बजते ही डॉ. गौतम के घर फोन करना था, परंतु बिलकुल ध्यान नहीं रहा । अब वह बहुत फिक्रमंद था । गुस्से में उसका मन भुन रहा था ।

उसके आते ही 'यू डर्टी बिच' कहकर गाल पर तमाचा जमाना चाहिए । और कहना चाहिए 'तुझे शौहर के घर बाल-बच्चे नहीं चाहिए तो यहां से दफा हो जा । जा कुतिया यहां से भाग जा ।'

'उस डॉ. गौतम की गाड़ी में कुतिया-सी कूं-कूं कर !' ऐसा कहकर उसको घर से भगा दूंगा ऐसा मन हुआ । अब रात के एक बजे गुस्सा ठंडा हुआ और पुनः उसके बारे में फिक्र सताने लगी । और यह अंदेशा होने लगा कि कहीं रास्ते में कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी । पर दिल्ली में अगर कोई दुर्घटना हो जाती है तो परिवारजनों को २०-२५ मिनट में ही पता लग जाता है । आनंद निकेतन से कनाट प्लेस की दूरी भी काफी है ।

उसने ऐसा क्यों किया होगा ? यह सब सोचकर विलियम सिगार पी-पीकर बुरी तरह बेहाल हो गया । आखिर में एक बार अपने सारे जीवन का सिंहावलोकन करके देखा । आगरा से आकर दिल्ली में अंगरेजी में एम. ए. करके स्टेट बैंक में नौकरी लगी । और बाद में क्लासमेट पार्थसार्थी के जरिए मधु का 'प्रपोजल' आया । दिल्ली की लड़की खूबसूरत थी, स्टीफन कॉलिज से बी. ए. किया और दिल्ली के एक दफ़्तर में सैक्रेटरी हो गयी थी । भाग्य जाग उठा और उसे देखकर ही 'हां" कह दिया । उसका नसीब अच्छा था । उसके चाचा की वजह से आनंद निकेतन में अच्छी कोठी भी मिल गयी थी । सर्विस में उन्नति भी होती गयी । सिनेमा-नाटक के पार्ट की तरह दो खूबसूरत बच्चे—एक लड़का और एक लड़की ।

डॉ. गौतम के नर्सिंग होम में अच्छी नौकरी, इस प्रकार सब व्यवस्थित था । विलियम का जीवन आराम से कट रहा था । जो भी मिला, वह 'गॉड गिफ्ट' के रूप में है । अतः अब किसी की चिंता क्यों ?

बीबी और बच्चों के अलावा उसे कोई विशेष कष्ट नहीं था....

हां, जीवन को इस प्रकार सरल रूप दे दें तो जीवन से समस्याओं का नाम ही मिटाया जा सकता है । ऐसी समस्याओं को हल करने में ही सुख है, शांति है तथा तृप्ति है...

विवाह से पहले उसे एक गुमनाम लैटर मिला था । 'जिस स्त्री से आप शादी करने जा रहे हैं वह इससे पहले प्रोफेसर देशपांडे की लवर थी । क्या यह बात आपको मालूम है ?' उस लैटर को देखकर विलियम बहुत हंसा था । उसे उसने यह लैटर भी दिखाया था । उसने केवल इतना ही कह दिया था—''किसी ने जलन के मारे लिखा है । आप उस पर यकीन करना चाहें तो कर लीजिएगा,'' यह कहते समय उसकी हंसती आंखों को देखकर विलियम ने 'जाने दो यार' कहकर उस समस्या को वहीं खत्म कर दिया था ।

आगे एक दिन बैंक के काम के लिए रिजर्व बैंक की ओर बस में जाते समय फाउंटेन के पास उसने उसको किसी गैर आदमी के साथ बात करते देखा था, उसे संदेह हुआ कि वह प्रोफेसर देशपांडे तो नहीं । ''अपनी एक सहेली के साथ पिक्चर देखने आऊंगी''कहकर वह गयी थी । प्रो. देशपांडे के साथ कैसे ? यह सोचकर वह जरा चिंतित हुआ था । घर पर आकर पूछने पर वह कहने लगी, ''पिक्चर गयी थी, पर भीड़ काफी होने की वजह से टिकट नहीं मिली, लौटते वक्त हमारे पुराने सर देशपांडे मिल गये थे । वह चाय के लिए ताज होटल ले गये ।'' यह बात उसने मुक्त हृदय से कही थी । विलियम का सारा संदेह दूर हो गया । तब उसे लगा कि उसे ज्यादा गुस्सा नहीं आता । उसमें सहिष्णुता है, संदेह करने की प्रवृत्ति भी नहीं है । वैसे संदेह की आग में जलकर राख होने में कौन-सा पुरुषार्थ है । उस पागल मूर्ख ओथेलो का अंत में क्या हुआ, यह मालूम है न ?

एक बार उसके अपने बैंक के कैशियर मिस्टर वर्मा ने कहा, ''आपकी मिसेज को मैंने कल शाम 'इंडियागेट' पर शायद देखा था ।'' उस पर विलियम ने ''हो सकता है वह वहां घूमने गयी हो,'' कहकर वर्मा का मुंह बंद करने का प्रयास किया । आगे ''उनके साथ'' अभी उसने इतना ही कहा था कि 'हमारे चाचा का एक रिश्तेदार होगा' कहते हुए उसने सिगार सुलगायी और ''वर्मा जी सिगरेट लीजिए, आज शीला में अच्छी पिक्चर चल रही है, आप चलते तो मैं भी चला चलता'' कहकर उसने बात बदल दी थी । घर पहुंचकर उसने पूछा, ''कल तुम इंडिया गेट गयी थीं'' इस सवाल पर उसकी बीबी ने कहा,''नहीं तो, आफिस के बाद मिश्राजी के घर सौभाग्यवती पूजा को गयी थी । क्यों, तुम्हीं ने तो कहा था ?''

यह जवाब उसके लिए संतोषजनक था । बीबी की मोहब्बतभरी बातों को वह ऐसे संतोषपूर्वक पचा लेता, जैसे अपने को हिलानेवाले पत्थर को कुएं का पानी निगल लेता है ।

बच्चे पैदा हुए । बड़े हुए । एक अच्छा पेड़ जैसे जड़ जमाकर फलता-फूलता है, उसी प्रकार वह अपने काम, अपने बाल-बच्चे और घर-गृहस्थी में मगन रहता । आगे आंखों के सामने कष्ट देनेवाले कीड़े-मकोड़ों को तो वह बेलिहाज होकर कुचल डालता था ।

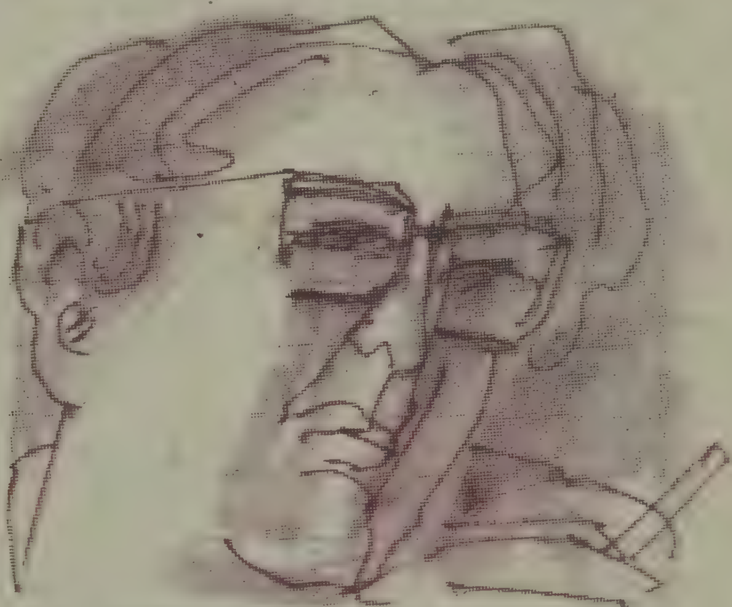
यह अंबरीश गौड़ चतुर एवं अच्छा अभिनेता है, कहानीकार भी है—उसने पड़ोस

में ही एक कमरा ले रखा था । बार-बार उनके घर आकर उसको अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करता । विलियम की गैर मौजूदगी में उस के साथ कहानी, उपन्यास व नाटकों की चर्चा करता । कितनी बेरुखी दिखाने पर भी अंबरीश ने घर आना नहीं छोड़ा । विलियम के सामने ही वह सीधा रसोईघर में घुस जाता और उससे गप्पें लगाने लगता । कभी-कभी 'चलिए घूम आएं' कहकर दोनों को ले जाता । एक बार विलियम ने "मैं जरा थक गया हूं । आप ही लोग हो आओ ।" कह दिया था । इस पर वह और अंबरीश चले ही गये थे । उस दिन उसने वीना को हिसाब सिखाते हुए उस बेचारी के गाल पर जोरदार तमाचा जड़ दिया था ।

एक दिन जब वह आफिस जा रहा था, तब महल्ले के लड़कों ने पीठ पीछे उसका मजाक उड़ाया था, "हमारे घर के आंगन के पौधों के फूल पड़ोसी के आंगन में गिरते हैं," यह कहकर लड़के जोर से हंस दिये थे । उसी दिन विलियम ने आफिस से अंबरीश को एक पत्र लिखा, "माई डियर अंबरीश कृपा करके हमारे घर आना बंद कर दीजिएगा ।" दो दिन बाद उसने पूछा, "क्यों जी, उस बेचारे अंबरीश को घर आने के लिए मना किया ?" विलियम के "हां" कहने पर उसकी बीबी ने कहा, "वाह क्या वह आपकी,पत्नी को भगा ले जाता ?" तब "किसे मालूम" कहकर विलियम ने बात बंद कर दी थी । विलियम को जीवन में किसी तरह की उलझन पसंद नहीं थी । सब कुछ आराम से चल रहा था । तब इस अंबरीश का कहीं से आकर उसके जीवन के दूध में नमक मिलाना उसे एकदम पसंद नहीं आया । उसने उस विषय को एक पत्र द्वारा खत्म कर दिया । उसके मन को बहुत संतोष हुआ था । वह भी आगे कोई चर्चा न करके चुप रह गयी थी ।

इससे विलियम के मन को बहुत शांति मिली थी । 'जाने दो ! एक फिजूल का प्रसंग खत्म हो गया ।' कहकर उसने एक लंबी सांस छोड़ी थी...

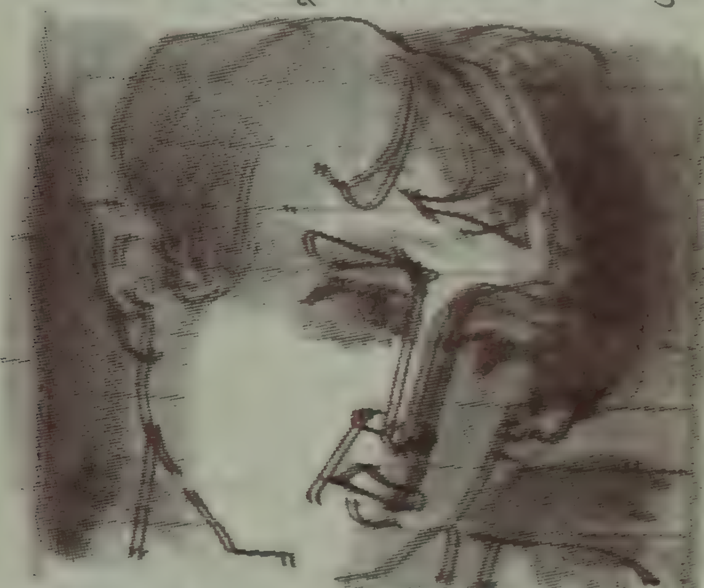
अब कोई नया अध्याय शुरू होने को है क्या ? डॉ. गौतम की आंख उस पर पड़ गयी है । उसी ने बताया था कि डॉ. गौतम भ्रष्ट हैं... । 'आज आफिस में जरा काम ज्यादा था, क्योंकि आज स्टाफ में एक साथी का विदाई समारोह भी था, आज डॉ. गौतम की जन्म दिन



पार्टी भी थी ।' ऐसे एक या दो बार ही नहीं बल्कि वह हफ़्ते में एक दिन जरूर ही देर से आती ।

यह सब देखकर विलियम ने कहा था, "तुम्हारे आफिस का काम कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है ।" तुम नौकरी छोड़ क्यों नहीं देतीं ? पर उसने उसको चुप करते हुए कहा, "मैंने कब यह कहा है कि मैं काम से घबरा गयी हूं । सब कुछ ठीक ही तो चल रहा है, महीने में पांच सौ रुपये कुछ कम नहीं होते ।" एक बार उसने और कहा था, "आजकल तो तुम्हारा बॉस

तुमको कुछ ज्यादा ही लिफ्ट दे रहा है । जरा ध्यान से रहना ।" तब वह बोली, "अब जाने भी दीजिए । आपने क्या समझा है उसे ? टाइपिस्ट लड़कियों की कमी है, जो मेरे-जैसी बाल-बच्चेदार बूढ़ी के पीछे पड़े ? कभी-कभी जब वह मुझे देख लेता है तो बुला लेता है तो मुझे जाना पड़ता है ।" विलियम को उसके उत्तर से संतोष हुआ था पर मालूम नहीं उसे अपना शरीर एकदम सुन्न- जैसा लगने लगा था । लेकिन आज बात ही कुछ और थी । विलियम के पास जितने सिगार थे, वह सब समाप्त होने जा रहे थे अब उसके आने पर "देर क्यों हो गयी ?" पूछने पर अगर वह उसके मुंह



पर सत्य ही थप-से थूक डाले तो ? विलियम को विचित्र-सा भय लगा । 'देर क्यों हुई ?' 'डा. गौतम के साथ थी । आपकी मोटी अक्ल में इतनी-सी बात भी नहीं आनी चाहिए ।' अगर वह दो टूक बात कर दे तो ? तब मुझे कहना ही पड़ेगा, 'तो उसी के साथ चली जाना था । यहां क्यों आयी ?' यह सोचते-सोचते उसे बहुत बेचैनी हुई ।

सिगरेट केस में अंगुली डालकर देखा । 'अगर वह सचमुच ही चली जाए तो ?' यह बात दिमाग में आते ही विलियम ने सिर थाम लिया, और आंखें बंद करके सोचने लगा । पता नहीं कब उसे नींद आ गयी ।

दरवाजे की घंटी बजने पर ही उसकी नींद खुली ।

"कौन ?"

"मैं आपकी..."

"अभी आया" कहकर उसने जाकर दरवाजा खोला ।

"बहुत देर हो गयी, सॉरी ! पार्टी बहुत देर से खत्म हुई । डॉ. गौतम मुझे यहां आकर छोड़ गये ।"

"घर तक आये थे ? भीतर तो बुलाना था ?"

"बुलाया था, फिर कभी आऊंगा कहकर चले गये ।"

"पार्टी कैसी रही ?"

"अच्छी थी.... बच्चों ने ठीक से खाया ?"

"हां" !

"आप अब तक क्यों नहीं सोये, मेरे घर न आने से चिंता हुई क्या ?"

"नहीं ! कुछ ऐसे ही दिमाग परेशान था । नींद नहीं आयी । लगता है पलंग में खटमल हो गये हैं ।"

"चलो । इतनी सिगरेट नहीं पीनी चाहिए । तबीयत तो ठीक है न ? बाहर कितनी सरदी है, मालूम है ? चलो बिस्तर में गरम होकर सो जाएं ।" कहते हुए उसने उसके बालों में अंगुलियां फिरायीं ।

विलियम को बहुत आराम मिला । और वह यादों में खो गया ।

—१८/११५ मंटोला,
आगरा-२८२००३

मुझे अपने विचारों पर अफसोस हुआ, वाकई इंसान-इंसान पर विश्वास नहीं करता । आखिर क्यों ?

—कु. प्रभा राय

द्वारा—श्री सुरेश चंद्र राय
टिकरापारा, हटरी रायपुर (म. प्र.)

दस्तक

अविश्वास

हमारे घर कुछ दिन से एक चनेवाली आती थी, वह दूर गांव से आती थी । मेरी छोटी बहन 'डॉली' उससे हिली हुई थी वह चनेवाली उसे मुफ़्त में भी चने दे जाती थी ।

एक बार उसने मेरी बहन को अपने घर घुमाने ले जाने की इच्छा प्रगट की । मम्मी ने सहर्ष अनुमति दे दी, मेरी इच्छा न होते हुए भी मैं कुछ न कह सकी । सुबह से शाम हो गयी मगर वे वापस न लौटे, सब बेहद परेशान । अब मुझे उस औरत पर शक ही नहीं बल्कि विश्वास हो गया कि वह बच्चा चुरानेवाले दल की है । मैंने तो पुलिस में खबर देने को भी कहा पर मम्मी ने मना कर दिया । उस रात, रात जैसे बड़ी हो गयी, सुबह होते ही मैंने पापाजी से पुलिस स्टेशन जाने की जिद लगा दी । अभी पापा तैयार हो ही रहे थे कि वे लोग वापस आ गये ।

आते ही उस औरत (महिला) ने माफी मांगते हुए बताया कि रात पानी के कारण उनके गांव की नदी में बाढ़ आ गयी । यहां तक कि उनके घर भी उजड़ गये । रात उन्होंने तालाब के पास स्थित मंदिर के चबूतरे पर बितायी । उसने बताया अब वह अपने ससुराल (दूसरे गांव) में जाकर रहेगी और शायद अब फिर न आ पाये । मैंने देखा उसकी आंखों में आंसू थे ।

अनोखी दस्तक

एक विद्यार्थी होने के नाते, अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने कभी अपनी या अपने माता-पिता की आकांक्षाओं को पूरा नहीं किया । पढ़ाई में अगर मैं कमजोर नहीं थी तो अव्वल भी नहीं आती थी । मुझे हमेशा मध्यम दरजे की छात्रा के रूप में गिना जाता था और शायद इसी कारण मुझमें हीनभावना पैदा हो गयी थी ।

किशोरावस्था में क़दम रखते-रखते यह पता ही नहीं चला कि लेखन का बीज मेरे मन में कब से प्रस्फुटित हो गया । मुझे अकेलापन बहुत भाता था और अब भी भाता है । ऐसे ही एक दिन बैठे-बैठे समाचार-पत्र में एक निबंध प्रतियोगिता के बारे में पढ़ा और लिखकर भेज दिया । विश्वास ही नहीं हुआ, जब कुछ दिनों बाद समाचार-पत्र में मेरा नाम छपा और मुझे पता चला कि प्रतियोगिता में मुझे तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है । एक के बाद एक सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के पश्चात यह खबर हुई कि इंदौर में 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' का आयोजन होनेवाला है । मेरी बड़ी इच्छा हुई कि एक बार भाग लेने में हर्ज ही क्या है ? जीतने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है प्रतियोगिता में भाग लेना । पर आयु सीमा देखकर सारी हिम्मत पस्त हो गयी । १६ से ३५ वर्ष ! इतना बड़ा समूह और उसमें

सबसे छोटी मैं । फिर भी परिवार के सदस्यों द्वारा समझाने पर मैं आई. के. कॉलेज गयी । अपने विद्यालय से एकमात्र छात्रा । वहां उपस्थित लोगों को देखकर सारा आत्मविश्वास बिखरने लगा । कहां लेखन क्षेत्र के इतने अनुभवी लोग और कहां मैं । फिर भी कोशिश की, पर विश्वास जरा भी नहीं था कि मैं कुछ कर पाऊंगी । परंतु पुरस्कार ग्रहण करने के बाद खुद पर विश्वास हुआ कि मैं भी कुछ कर सकती हूं । कहना न होगा, कि इस पुरस्कार की वजह से मुझ में नये आत्मविश्वास का संचार हुआ और मेरे जीवन का लक्ष्य निर्धारण भी इसी कारण हुआ । 'कादम्बिनी' की इस दस्तक से ही मेरे मन-मस्तिष्क का नया द्वार खुला ।

—कु. बिनी मैथ्यू
एच—९२, एम. आई. जी.
इंदौर-४५२००८ (म. प्र.) ।

वो लहरें

बात उन दिनों की है जब मैं नशीली दवाओं का उपयोग करती थी । एक दिन अनायास उद्विग्नता में सागर तट पर जा पहुंची । क्या मनोरम दृश्य था । विशाल सागर में उठती-गिरती लहरें जो अपने साहिल को छूकर पुनः लौट जाती थीं । और पीछे छोड़ जाती थीं अपनी पहचान, सीपिकाओं के रूप में ।

निसर्ग की इस घटना ने मेरे हृदय द्वार पर दस्तक देते हुए कहा 'प्रकृति अमंगलों के द्वारा मंगल का निर्माण करती है ।' ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वो ही प्रत्यावर्तित लहरें, पुनः असीम ऊंचाई तक उठकर जयघोष करती हुई कह रही हों—"देखो हमने कितनी सीपिकाएं तुम्हारे लिए छोड़ रखी हैं निकालो उनसे अब बहुमूल्य मोती । प्रतीत हो रहा था कि हर क्षण एक नवीन तरंग अनेकानेक सीपिकाओं को छोड़े जा रही है, मेरे अनवरत कार्य का विषय बनाकर ।

सच, वह दिन मेरे जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिन था, जब लहरों ने मुझे प्रकृतिसत्य से साक्षात्कार करवाया और एक सफल जिंदगी का मार्ग प्रशस्त किया ।

—स्वीटी
कैम्पस हॉस्टल एस. एम. कॉलेज भागलपुर

- *भारत की विशृंखल अध्यात्मिक शक्तियों के एकीकरण में ही भारत की राष्ट्रीय एकता निहित है । भारत में राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है, उन हृदयों का भी एकीकरण जिनके स्पंदन से एक ही अध्यात्मिक लय झंकृत हो रही है ।*
- *अगर हम सब वीरवृत्ति को धारण कर, दृढ़ अंतःकरण के साथ पूर्ण प्रमाणिकता को अपनाकर कर्मक्षेत्र में कूद पड़ें तो पचीस साल के भीतर सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा और ऐसा कोई प्रश्न शेष न रह जाएगा जिसके लिए जूझते रहना पड़े, तब संपूर्ण भारत फिर एक बार आर्यत्व से परिपूर्ण हो जाएगा ।*
- *कलियुग में दान ही एकमात्र धर्म है ।*

— स्वामी विवेकानंद

कब्रगाह जो ऐशगाह बनती जा रही है !

● गीता पदम

किसी शायर ने क्या खूब कहा है—

आके जो मेरी कब्र पर दिया जला दिया तुमने
मैं चैन से सो रहा था ये क्या गजब किया तुमने

तो जिनकी नींद में दिया जल जाने से खलल पड़ता हो, वहां दिन-रात रासलीला हो या शराबियों की मंडली जमे तो सोचिए क्या होगा !

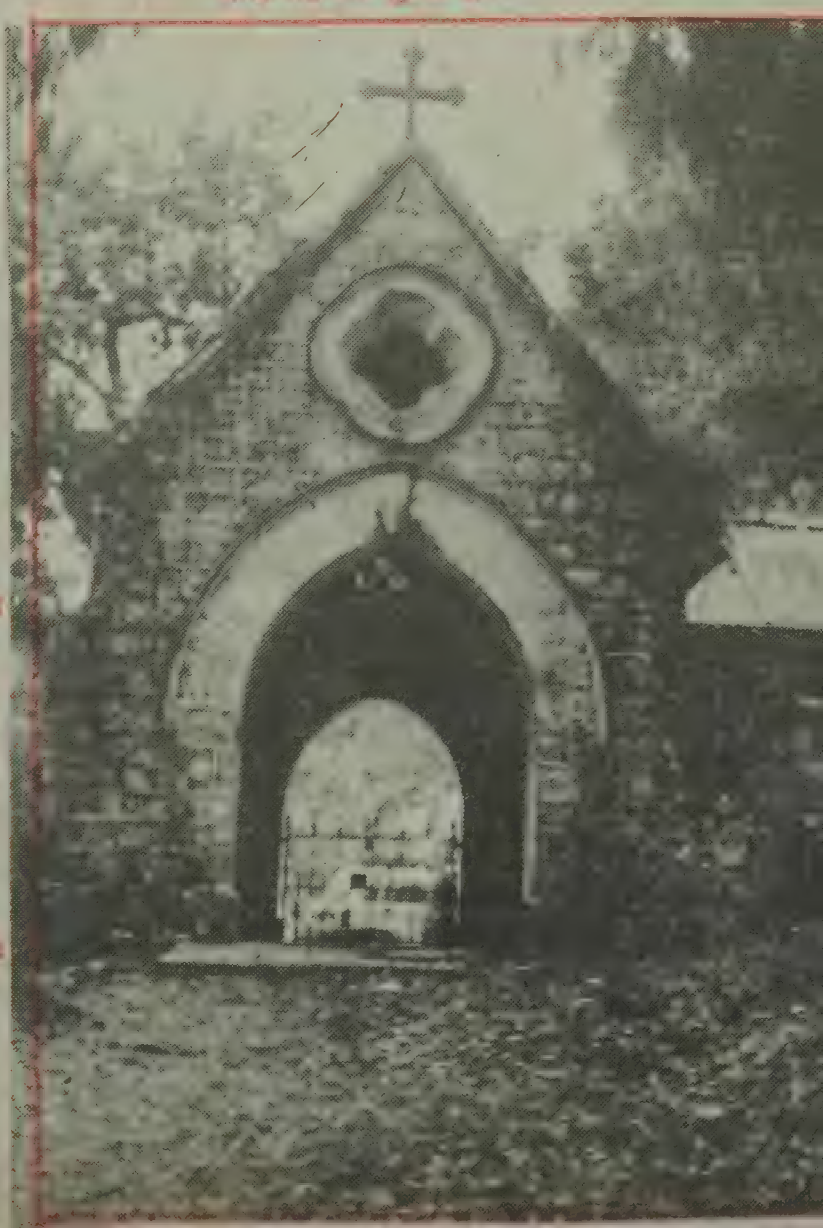
पर्वतों की मलिका मसूरी के सीने पर कैमलबैक रोड है और उसके पीछे है एक कब्रस्तान । कब्रस्तान यानि वह 'घर' जिसमें मरणोपरांत बसर किया जाता है । बसर कुछ यों होता है कि दूर-दूर तक चारों ओर शांति ही शांति होती है । पर आज कैमलबैक रोड का कब्रस्तान सैलानियों के लिए ऐशगाह बन गया है ।

फनीतू ने कहा, ''जी नहीं, ये तो आराम से ना टूटनेवाली नींद सो रहे हैं । डर तो यहां आनेवाले लोगों से लगता है ।''

यूं ही आते-जाते जब लोगों से सुना कि मसूरी में कब्रगाह ऐशगाह बनता जा रहा है, तो इस बात पर यकीन नहीं हुआ और सच्चाई जानने के लिए मैं पहुंच गयी मसूरी ।

मसूरी में जब मैंने कब्रस्तान में प्रवेश किया

कब्रगाह का मुख्य द्वार



तो सड़क के ऊपर बने घरों से कुछ बच्चे चिल्लाकर बोले, ''उधर मत जाओ । उस तरफ चौकीदार रहता है, आप इस तरफ से सीधे नीचे चले जाओ ।'' मैंने जवाब दिया, ''हां, मुझे चौकीदार से ही मिलना है ।'' और मैं अपने भाई दीपक के साथ चौकीदार के घर की तरफ चल पड़ी ।

चौकीदार फजीतू से बातें कीं, तो सार ये निकला कि सचमुच कब्रस्तान में लोग गुंडागर्दी करते हैं, शराब पीते हैं, जुआ खेलते हैं, और लड़कियां भी लाते हैं । फजीतू पहाड़ी है । पहले उसके पिता यहां चौकीदारी करते थे, अब वह करता है और शायद आगे चलकर यही काम उसका बेटा करेगा ।

फजीतू ने बताया ''मेमसाब, यहां तो बड़ी परेशानी है । लोग मानते ही नहीं । यहां आकर





शराब पीते हैं, जुआ खेलते हैं । रात-रात भर हर गलत काम यहां आकर करते हैं । मना करो तो मुझे मारने-पीटने पर उतारू हो जाते हैं । यहां के इनचार्ज एक पादरी हैं । उनसे भी कहा, पुलिस स्टेशन भी गया शिकायत लेकर । लेकिन कोई उन लोगों को नहीं रोक सका । कभी-कभी सोचता हूं कि जो हो रहा है, होने दो, पर क्या करूं ? चौकीदार हूं । यहां कुछ गायब हो गया या कोई यहां गैरकानूनी लाश गाड़ गया, तो फिर पूछा तो मुझे ही जाएगा ना !''

पूछने पर कि तुम्हें तनख्वाह क्या मिलती है ? फजीतू ने बताया, ''दो सौ रुपया महीना ।'' अर्थात सिर्फ दो सौ रुपये महीने पर कब्रस्तान की चौकीदारी । अपना गुजर फजीतू व उसकी पत्नी अपनी खेती-बाड़ी से करते हैं । बेटी व बेटे की शादी हो चुकी है । यह पूछने पर कि—'तुम्हें कब्रों के बीच में रात को डर नहीं



कैमलबैक रोड से दिखता कब्रस्तान

लगभग १८३२ में जब अंगरेज फौज मसूरी में जाकर बस गयी थी तब ये कब्रस्तान बना था । आज वहां की कब्रों की स्थिति बेहद शोचनीय है ।

लगता ?' फजीतू ने कहा, "जी नहीं, ये तो आराम से ना टूटनेवाली नींद सो रहे हैं । डर तो यहां आनेवाले लोगों से लगता है । यहीं से मेरी बेटी की डोली गयी और यहीं बेटे की बारात भी सजी ।"

फजीतू ने बताया कि बारह साल पहले कब्रस्तान के इनचार्ज मिस्टर घाला एक अंगरेज थे । तब तक बंदोबस्त बहुत अच्छा था ।

लगभग १८३२ में जब अंगरेज फौज मसूरी में जाकर बस गयी थी तब ये कब्रस्तान बना था । आज वहां की कब्रों की स्थिति बेहद शोचनीय है । अधिकतर कब्रें टूट-फूट गयी हैं । जगह-जगह क्रॉस गिरे पड़े हैं और चारों तरफ घास उग आयी है । सबसे दुखद स्थिति तो यह है कि लोगों ने कब्रगाह को ऐशगाह बना छोड़ा है ।

—बी १/२४२, रेलवे आफिसर्स फ्लैट
पंचकुइयां रोड, नयी दिल्ली

यह महीना और आपका भविष्य

● **पंडित शिवप्रसाद पाठक**

मेष : मास में साहस तथा पुरुषार्थ से अपूर्ण कार्यों की पूर्ति होगी । नवीन योजनाओं से भाग्यवृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु-पक्ष का शमन होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । आमोद-प्रमोद अथवा अति उत्साह से पीड़ा होगी । धर्म, रहस्य अथवा कलात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रवास में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । व्यर्थ विवाद टालें ।

वृषभ : मास में उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों की पूर्ति होगी । शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । संपत्ति विवाद का मनोनुकूल हल होगा । मास के उत्तरार्द्ध में आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा । प्रियजन से भावनात्मक पीड़ा होगी । धैर्य तथा संयम से सफलता मिलेगी ।

मिथुन : मास में श्रम व साहस से सफलता मिलेगी । स्वजनों से व्यर्थ विवाद टालना हितकर होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से भाग्योदयी योजनाओं का शुभारंभ होगा । परिवार में मांगलिक अथवा धार्मिक कार्य पूर्ति से प्रसन्नता होगी । आध्यात्मिक यात्रा से मन प्रसन्न होगा । व्ययों की अधिकता होगी । संपत्ति संबंधी समस्या का समाधान होगा । वाहनादि से सावधानी रखें । संतुलित संभाषण हितकर होगा ।

कर्क : मास उत्साहवर्धक एवं सफलतादायी होगा । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा । परोपकारी कार्यों में धन व्यय होगा । शत्रु-पक्ष के प्रभाव से उच्चाधिकारी खिन्न होंगे। प्रवास में व्यय की अधिकता होगी । संपत्ति विवाद में सुलह होगी । अतिथि समागम से प्रसन्नता होगी ।

सिंह : मास में नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी । विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से संपत्ति के कार्य की पूर्ति होगी । प्रवास में नवीन मित्रों का समागम लाभदायी होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु-पक्ष का शमन होगा । परोपकारी प्रयासों से यश वृद्धि होगी । पारिवारिक विरोधाभास टालना हितकर होगा ।

कन्या : मास संघर्षपूर्ण एवं विषमतादायी होगा । कार्यों की अधिकता के बावजूद यश प्राप्ति का अभाव होगा । उच्चाधिकारियों से संयमित व्यवहार रखें । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से बने कार्य बिगड़ेंगे । पारिवारिक विवादों से चिंता का सामना करना होगा ।

[illegible] भ्रमण करेंगे ।

पर्व और त्योहार

१. अक्तूबर उपांग ललिता व्रत, २. गांधी जयंती, ४. दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, ५. श्री दुर्गा नवमी (चिंताहरण पंचांग के अनुसार विजया दशमी), ६. विजया दशमी, नीलकंठ दर्शन, ७. पापांकुशा एकादशी, ९. प्रदोष व्रत, ११. शरद पूर्णिमा, १५. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी करवा चौथ, १८. अहोई अष्टमी, १९. कालाष्टमी, २३. प्रदोष, धन त्रयोदशी, २४. नरक चतुर्दशी, २५. दीपावली, स्नानदान श्राद्धादि की अमावस्या, २६. अन्नकूट गोवर्धन पूजा, २७. भ्रातृ द्वितीया, २९. वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, ३१. सूर्य षष्ठी डाला छठ।

वाहन, भवन अथवा संपत्ति कार्यों में प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। प्रवास में स्वास्थ्य के प्रति सावधानी हितकर होगी।

तुला : नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी। संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु-पक्ष का शमन होगा। राजकीय कार्यों में वांछित सफलता मिलेगी। प्रवास से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक संसाधनों में आकस्मिक वृद्धि होगी। धार्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा।

वृश्चिक : मास मध्यम फलदायी होगा। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। कार्यों की अधिकता होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से इच्छित कार्य पूर्ण होगा। परोपकारी कार्यों से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शत्रु-पक्ष के प्रयासों से मानसिक तनाव का सामना करना होगा। आमोद-प्रमोद में सावधानी हितकर होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

धनु : मास में उल्लेखनीय उपलब्धियां होंगी। राजकीय कार्यों में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। पदोन्नति अथवा नवीन पद स्थापना होगी। पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा। संपत्ति विवाद में स्वजनों का सहयोग मिलेगा। संपत्ति समस्या का समाधान होगा।

मकर : मास उत्तम फलदायी होगा। आर्थिक योजनाओं में सफलता मिलेगी। पारिवारिक अस्वस्थता से चिंता होगी। स्वजनों के सहयोग से राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। लंबित कार्यों में अनपेक्षित प्रगति होगी। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। साहस तथा परिश्रम से प्रतिकूल स्थिति अनुकूल होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन दायित्व अथवा पद प्राप्ति होगी।

कुंभ : मास में उल्लेखनीय उपलब्धियां होंगी। राजकीय कार्य में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्रोतों में वृद्धि होगी। परिवारजनों का सहयोग उत्साहदायी होगा। प्रियजन की अस्वस्थता से प्रवास होगा। व्ययों की अधिकता होगी। शत्रु-पक्ष आंतरिक षड्यंत्र करेगा। सावधानी हितकर होगी।

मीन : मास विशिष्ट सफलतादायी होगा। आकस्मिक धन लाभ होगा। स्वजनों से भेंट होगी। राजकीय कार्यों में उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। संपत्ति समस्या का समुचित समाधान होगा। प्रियजनों के कारण भावनात्मक कष्ट का सामना करना होगा।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल, मध्यप्रदेश

छह पत्नियों वाला पति

● श्रीधर बर्वे

सोलहवीं शताब्दी के प्रथम दशक से लगातार उसी शताब्दी के मध्य तक इंगलैंड का शासक हैनरी (अष्टम) अपने स्त्री अनुराग के कारण इतिहास में विशेष प्रसिद्ध है।

हैनरी को राजसिंहासन का उत्तराधिकार अपने बड़े भाई आर्थर के असामयिक निधन के बाद प्राप्त हुआ था। आर्थर का विवाह स्पेन की राजकुमारी कैथरीन (आरेगन) से हुआ था। विवाह में आर्थर को असीम दहेज प्राप्त हुआ था। इस धन के प्रलोभन और कैथरीन के सौंदर्य से अभिभूत होकर हैनरी ने अपने भाई की विधवा से विवाह कर लिया। इस विवाह से राजपरिवार के साथ-साथ देश की जनता को भी प्रसन्नता ई। कैथरीन सुंदर तो थी ही, बुद्धिमती ी थी। हैनरी उसकी बौद्धिक शक्ति से भी प्रभावित था। पारिवारिक मामलों से लगाकर राजकाज तक में वह अपनी पत्नी से परामर्श करता था। ऐसे ही बीतते समय में प्रतीत हो रहा था कि वे 'दो शरीर-एक आत्मा हैं, लेकिन सुख के दिन अधिक नहीं चले। कैथरीन से उसे एक पुत्री की प्राप्ति हो चुकी थी, परंतु उसे पुत्र की अपेक्षा थी।

विवाह के कई वर्ष बाद भी कैथरीन उसे पुत्र नहीं दे पायी तो, हैनरी का मन उससे उचटने लगा। एक प्रकार का अपराध बोध भी उसके मन में घर करने लगा कि अपने दिवंगत भाई की विधवा से विवाह करने के कारण ही उसे पुत्र की प्राप्ति नहीं हो रही है। इस अवधारणा के प्रबल होते जाने के कारण उसने कैथरीन से मुक्ति पाने का निश्चय किया। इस कार्य में उसने अपने मंत्री वुलसे की सहायता ली।

वुलसे राजप्रासाद और राजा की गतिविधियों से भलीभांति परिचित था, उसे समझते देर नहीं लगी कि हैनरी की आंखें अब 'ऐन बोलिन' नामक सुंदरी पर टिक गयी हैं। हैनरी को ऐन के गुप्त प्रणय से संतुष्टि हो सकती थी, किंतु ऐन विवाह से कम की किसी स्थिति पर सहमत नहीं



हुई । ऐसी स्थिति में हैनरी के समक्ष एक ही विकल्प था, कि कैथरीन से किसी भी प्रकार छुटकारा पाया जाए । उसने कैथरीन को समझा-बुझाकर (धार्मिक) मठ में उसे साध्वी (नन) बनाकर भेजने का प्रयत्न किया, परंतु वह इसके लिए तैयार नहीं हुई । हैनरी ने उसे पृथक से पूर्ण स्वतंत्र जीवन बिताने की व्यवस्था भी सुझायी, कैथरीन ने यह भी ठुकरा दिया । लाचार हो हैनरी ने एक उपाय और किया । धर्म का सहारा लेकर उसने कैथरीन को आश्वस्त करने का प्रयास किया कि उनका विवाह 'अपवित्र' रहा है, इसलिए इससे मुक्त होना चाहिए । कैथरीन अपने दांपत्य जीवन को कैसे अपवित्र मानती ? अतः उसने यह भी अस्वीकार कर दिया । निरंतर असफलता पाते हैनरी के क्रोध की सीमा नहीं रही ।

इसी बीच ऐन बोलिन हैनरी को समर्पण कर गर्भवती हो चुकी थी । अब तो हैनरी ने बलपूर्वक कैथरीन को बिंडसर राजप्रासाद से हटाकर और वुलसे के पुराने आवास में बंद कर दिया और चुपके से ऐन से विवाह कर लिया । कुछ समय बाद जब कैथरीन को इस घटना से अवगत कराया गया तो उसने कहा कि 'मैं चाहे जहां रहूं, मेरा पति सुखी रहे । मैं ईश्वर से उसकी भलाई की प्रार्थना करती हूं । ऐन को कोई दोष मत दो...वह निरपराध है । हो सकता है कि वह भाग्य के दुष्चक्र का शिकार हो गयी हो ।'

दूसरी ओर ऐन पूर्ण रूप से एकाकी रही हो, ऐसा भी नहीं था । परसी नामक एक युवक से उसका प्रणय पूर्व से चला आ रहा था । इस बार भी हैनरी ने वुलसे की सहायता ली तथा परसी को ऐन से हमेशा के लिए पृथक करा दिया । इस घटना को ऐन कभी नहीं भूली और

कैथरीन पार ने हैनरी के अभिमानी पुरुष मन को शिष्ट और सुसंस्कृत बनाया और उसे एक सुखद गृहस्थ जीवन बिताने योग्य पति तथा उत्तरदायी पिता के रूप में भी रूपांतरित किया ।

न ही उसने वुलसे को कभी क्षमा किया। रानी बनने पर सबसे पहला काम ऐन ने वुलसे से प्रतिशोध लेने का किया। वुलसे की पद्मुक्ति के साथ-साथ जीवन से भी मुक्ति कर दी गयी।

दूसरे विवाह के छह वर्ष बीत गये, उम्र का प्रभाव हैनरी पर होने लगा। युवा ऐन की तुलना में हैनरी अशक्त प्रमाणित हो रहा था। इसलिए उसने प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त हो कदम-कदम पर अपने पति को अपमानित करने का बीड़ा उठाया। ऐन को विशेष ईर्ष्या अपनी सौत कैथरीन और उसकी पुत्री मेरी से थी, क्योंकि हैनरी को अपनी पुत्री से विशेष स्नेह था।

ऐन निरंतर हावी होती चली गयी, यद्यपि हैनरी राजा था, स्वेच्छाचारी शासक। उसे ऐन के व्यवहार से कष्ट होने लगा। इसी बीच ऐन ने एक पुत्री को जन्म दिया। परिस्थिति ऐसी निर्मित होती चली गयी कि वह हैनरी के हृदयासन से उतर गयी। दूसरी बार ऐन जब गर्भवती हुई तो वह अपना अधिकांश समय पूजा-अर्चना में व्यतीत करने लगी, इस आशा में कि पुत्र प्राप्ति हो जाए। ये प्रार्थनाएं चल रही थीं कि एक दिन उसने हैनरी को एक अन्य नवयौवना सिमौर के साथ प्रणयावस्था में देख लिया। सिमौर का हैनरी से परिचय एक नृत्य पार्टी में हुआ था, तभी वह उसके पीछे दीवाना-सा हो गया था। इस प्रणय लीला के बाद हैनरी और ऐन के बीच भारी झगड़ा हुआ। झगड़े का प्रभाव ऐन के तन और मन दोनों पर गहराई से पड़ा— उसे गर्भपात हो गया।

हैनरी ऐन से भी कैथरीन के समान पूरा छुटकारा चाहता था, इसके लिए उसने ऐन पर दुश्चरित्रता का आरोप लगाया। आरोप के साथ ही उसने ऐन को कारागृह में भिजवा दिया। कानूनी रूप से उसने ऐन पर मुकदमा भी चलाया। अपनी प्रतिरक्षा में ऐन ने आरोप का जोरदार खंडन किया। यह खंडन व्यर्थ गया, क्योंकि सम्राट द्वारा उसके भाग्य का फैसला पहले ही ले लिया गया था। जीवन के अंतिम दिन ऐन ने लंदन टॉवर में बंदी अवस्था में बिताये। इसी टॉवर में हैनरी के साथ उसका प्रेम पल्लवित हुआ और अपने जीवन के आरंभिक सुखद वर्ष भी बिताये थे। विडंबना यह रही कि इसी टॉवर में उसे अपने प्राण भी खोने पड़े। मृत्यु दंड के अनुसार ऐन का सिर तलवार द्वारा धड़ से अलग कर दिया गया। कहते हैं कि जब उसका कटा हुआ सिर बालों से पकड़कर उठाया गया तो उसके होंठ तब भी हिल रहे थे और उसकी विषादपूर्ण आंखें अपने क्षतविक्षत धड़ को देख रही थीं।

हैनरी की तीसरी पत्नी सिमोर के मुख्य आकर्षण का कारण उसकी युवावस्था थी। वह अपनी अन्य पूर्ववर्ती सहपत्नियों के समान सुंदर नहीं थी और वह अधिक समय तक जीवित भी नहीं रही। हैनरी की पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा को उसने पूरा किया। उसने जो पुत्र जन्मा उसकी नाम एडवर्ड रखा गया। सिमोर का प्रसूतावस्था में ही निधन हो गया था।

तीसरी पत्नी के असमय निधन के कारण ही हैनरी को चौथी पत्नी की खोज करनी पड़ी। इस बार उसका भाग्य ऐन (क्लीव्ज) से जुड़ा। विवाह पूर्व हैनरी ने ऐन के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा सुनी थी, किंतु वास्तविकता इसके विपरीत थी। अब तक स्त्रियों को छलनेवाला स्वयं छला गया। विवाहोपरांत हैनरी और ऐन दोनों एक-दूसरे से अप्रसन्न और आशंकित

रहे । यों भी ऐन को अपनी प्रथम दो सौतों के हश्र का पता था ही, इसलिए उसने प्राणरक्षा के लिए, स्वेच्छा से विवाह से मुक्ति ले ली ।

हैनरी की पांचवीं पत्नी बनने का सौभाग्य कैथरीन होबर्ट को प्राप्त हुआ । इस विवाह से हैनरी दुःखी हो गया । यह पांचवीं पत्नी सुंदर अवश्य थी, किंतु विवाह पूर्व उसके अनेक प्रेमी थे जिन्हें वह उपकृत करना चाह रही थी । विवाह होते ही कैथरीन होबर्ट ने अपने पूर्व प्रेमियों को उच्च राजपदों पर नियुक्त कर दिया । हैनरी अपनी ढलती उम्र के कारण नयी रानी के आदेशों को रद्द कर सकने में असमर्थ प्रमाणित हो रहा था । कैथरीन के यौवन और सौंदर्य के मोहपाश ने उसे अशक्त कर रखा था । फिर भी हैनरी ने अपनी अशक्तता और विवशतता पर शीघ्र ही नियंत्रण कर लिया । उसने कैथरीन होबर्ट से भी मुक्ति प्राप्त कर ली ।

हैनरी की अंतिम पत्नी बनने का सौभाग्य मिला कैथरीन पार को । कैथरीन के दो पूर्ववर्ती पति क्रमशः मर चुके थे । दो-दो दुःखद विवाहों के बाद हैनरी उसे पति के रूप में मिला । इस विवाह से ऐसा लगा, मानो वे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने थे । दोनों का शेष जीवन सुखमय बीता । कैथरीन पार ने हैनरी के अभिमानी पुरुष मन को शिष्ट और सुसंस्कृत बनाया और उसे एक सुखद गृहस्थ जीवन बिताने योग्य पति तथा एक उत्तरदायी पिता के रूप में भी रूपांतरित किया । हैनरी के अंतिम दिनों में, जब वह रुग्णावस्था में था, कैथरीन ने उसके आखिरी क्षण तक उसकी सेवा की ।

—प्राचार्य, शास. कन्या उ.मा. विद्यालय, राजगढ़, जिला—धार पिन ४५४११६(म.प्र.)

हंसिकाएं

अंतर

अध्यापक से बच्चों ने पूछा,
''बोझ और भार में क्या अंतर है
कृपया बतायें''
स्पष्ट करते समय उन्हें कहना पड़ा
''बेटी की विदाई के बाद
भार तो उतरा,
लेकिन दिल पर बोझ आ पड़ा''

सतर्कता

उन्होंने मित्र से कहा,
''दीवाली की रात द्वार खुले रखना
लक्ष्मीजी पिछवाड़े से आएंगी-याद रखो ।''
तथा फिर कड़ककर
अपनी लक्ष्मी से बोले...
खबरदार दहलीज से बाहर पांव रखा तो

उपलब्धि

उन्होंने पड़ोसी से कहा है—
''आपके नन्हें बेटे ने मुझे गधा कहा है
पड़ोसी ने नन्हें की पीठ थपथपायी
बोले अभी तो यह पशुओं को पहचानता भी नहीं
फिर भी गधे और उल्लू की
खूब पहचान है भाई ।''

उलूक

पत्नी बोली
''वे मुझे लक्ष्मी मानते हैं...
उनकी बात तो मान लूं ?
किंतु स्वयं को क्या समझने लगे हैं
यह भी तो जान लूं ?''

कद

वह बताता है
कोई कितना ही ऊंचा क्यों न हो
मुझे हरेक का कद मापना आता है ।

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

सूरत और सीरत के संदर्भ में सूफी महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी भारतीय महर्षि अष्टावक्र थे । वे सीरत की साकार प्रतिमूर्ति थे, किंतु जायसी का बाह्य रूप आकर्षक न था । जायसी कुरूप और काने थे । कुछ लोगों का विचार है कि वे जन्म से ही ऐसे थे । किंतु अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि शीतला अथवा अर्द्धांग रोग के कारण उनका शरीर विकृत हो गया था । कवि ने अपने एकाक्ष होने का स्वयं भी वर्णन किया है :

एक नयन कवि मुहम्मद गुनी
सोइ बिमोहा जेइ कवि सुनी

एक आंखवाले मुहम्मद का काव्य जिस भी सहृदय ने सुना, वही मुग्ध हो गया ।

सब-कुछ दाहिनी ओर ही

एक जनश्रुति के अनुसार बालक मुहम्मद पर शीतला का भीषण प्रकोप हुआ था । बालक की इस दुर्दशा से माता-पिता बहुत हताश हो गये । मुहम्मद की मां ने बहुत ही पवित्र मन से शाहमदार से मनौती मानी । पीर की कृपा से

जायसी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में

बहेलिया की भूल : महाकवि की मौत

• डॉ. दर्शन सेठी

जायसी वाम-मार्ग के विरोधी थे । कदाचित इसी कारण उन्होंने बायीं दिशा ही त्याग दी । जब से उनका 'प्रियतम' उनके दाहिने हुआ अर्थात अनुकूल हुआ तब से उन्होंने दाहिनी दिशा की एक ही दृष्टि तथा एक ही श्रवण की वृत्ति अपना ली ।



अमेठी स्थित जायसी की समाधि

ालक मुहम्मद तो बच गया किंतु इस भयंकर ोग के कारण उसकी एक आंख की रोशनी समाप्त हो गयी । और बायीं ओर के कान से ी बालक मुहम्मद को सुनायी देना बंद हो या । इस प्रकार बालक मुहम्मद काना और हरा हो गया ।

जायसी वाम-मार्ग के विरोधी थे । कदाचित सी कारण उन्होंने बायीं दिशा ही त्याग दी । ब से उनका 'प्रियतम' उनके दाहिने हुआ र्थात अनुकूल हुआ तब से उन्होंने दाहिनी शा की एक ही दृष्टि तथा एक ही श्रवण की ति अपना ली । इस संबंध में कवि का यह तःसाक्ष्य उल्लेखनीय है:

हम्मद बायीं दिसि तजी
क सरवन एक आंखि
ब से दाहिन होइ मिला
लु पपीहा पांखि

जायसी ने अपने काव्य में अपने इस एकांगी र एकनिष्ठ रूप तथा आस्था की अत्यंत ोरम व्याख्या की है । जायसी का यह अटल विश्वास था कि विधाता जिसे अभिशाप देता है, उसे कुछ वरदान भी अवश्य देता है । चंद्रमा के कलंक के समान ही यह अभिशाप जायसी के संदर्भ में भी उनकी उज्ज्वल कीर्ति का कारण बना और उनके व्यक्तित्व की 'भृगांक' संज्ञा को ही सार्थक करता है । जायसी के जीवनकाल में ही बड़े-बड़े रूपवान इस एक आंखवाले शुक्राचार्य के चरणों का स्पर्श किया करते थे और उसकी कविता सुनकर उनकी आंखों से टप-टप आंसुओं की झड़ी लग जाती थी । जायसी के काव्य से आंदोलित और उद्वेलित होनेवाले सहृदयों की ओर संकेत करते हुए जायसी ने लिखा है कि :

मुहम्मद सायर दीन दुनि, मुख, अंब्रित बैनान
बदन जहस जग चंद सूपरन, सूक जहस नैनान

मिट्टी पर हंसे या कुम्हार पर

जायसी की कुरूपता के संबंध में एक अत्यंत रोचक, तथा प्रसिद्ध प्रसंग है कि मलिक मुहम्मद जायसी एक बार शेरशाह सूरी के

दरबार में गये थे। बादशाह उनकी कुरूपता पर हंस पड़ा। सम्राट शेरशाह सूरी के हंसते ही सारा दरबार सामंतों के ठहाकों की ध्वनि से प्रतिध्वनित हो उठा। सूफी महाकवि जायसी ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक संयत, मधुर और मार्मिक वाणी में शेरशाह से प्रश्न किया :

मटिया हससि कि कुम्हारा

अर्थात, 'आप मिट्टी पर हंसे हैं अथवा उस कुम्हार (गढ़नेवाले/परमात्मा) पर ? यह सुनते ही बादशाह पानी-पानी हो गया और जायसी के चरणों में गिरकर क्षमा-प्रार्थना की।

इस वृत्तांत को लेकर 'मीर हसन देहलवी' ने एक नज़्म भी लिखी है जो इस प्रकार है:

थे मलिक नाम मुहम्मद जायसी
वह कि पदमावत जिन्होंने है लिखी

मर्द आरिफ[१] थे वह और साहबे कमाल
उनका अकबर ने किया दरयाफ़्त हाल

हो के मुश्ताक बुलवाया सिताब[२]

ताकि हो सोहबत से उनकी फैजयाब[३]
साफ बातिन थे वह और मस्त अलमस्त

लेकिन दुनिया तो है यह जाहिर प्रस्त[४]
थे बहुत बदशक्ल और वह बदकुल्वी
देखते ही अकबर उनको हंस पड़ा
जो हंसा वह तो उनको देखकर

यों कहा अकबर को हो के चश्मेतर[५]
हंस पड़े माटी पर ऐ तुम शहरयार
या कि मेरे पर हंसे बे-अख्तियार

कुछ बासन[६] तू हुआ और मैं स्याह
असल में माटी तो है सब एक जात
अख्तियार उसका है जो है उसके साथ

कोई दिन के रंग हैं कोई रात के
रंग हैं दोनों यह उसके हाथ के
सुनते ही ये हर्फ रोया दादगर
गिर पड़ा उनके कदम पर आन कर
अलगरज उनको बा एहजाजे तमाम
उनके घर भिजवा दिया फिर बालस्लाम
साहिबे तासीर जो है ए हसन
दिल पे करता है असर उनका सुखन[७]

समाज सेवा को समर्पित सनातन साहित्य

चाहे इस जनश्रुति का संबंध दिल्ली अथवा अवध के किसी राजा अथवा सामंत से हो अथवा यह जनश्रुति ही क्यों न हो ? किंतु इससे इतना तो निर्विवाद है कि जायसी का बाह्य रूप आकर्षक न था। वे काने, बहरे और कुरूप अवश्य थे। मगर इस प्रसंग के संबंध में एक और उर्दू कवि का यह कलाम काबिल-ए-ताजीम है :

सीरत के हम गुलाम हैं
सूरत हुई तो क्या
सुर्ख व सफेद मिट्टी की
मूरत हुई तो क्या

□

माटी मोल न किछु लहै और माटी सब मोल
दिस्टि जौ माटी सौं करे माटी होइ अमोल

मनुष्य देह के संबंध में जायसी की यह दृष्टि स्तुत्य है। मिट्टी से निर्मित यह मानव शरीर अनमोल हो जाता है, जब हम विनम्रतापूर्वक इसका सदुपयोग समाज सेवा के लिए करते हैं और साथ ही इस संसार को अपनी कुछ

१. साधक-पुरुष, २. शीघ्र, ३. लाभान्वित, ४. बाह्य रूप की पुजारी, ५. अश्रुपूर्ण नेत्रों से, ६. रंग ७. वाणी

सनातन धरोहर सौंप जाते हैं । जायसी का समाज तथा संसार की सेवा में समर्पित सनातन साहित्य ही उनकी अमर कीर्ति का कारण है ।

कोढ़ी के साथ भोजन

जायसी मानवपूजा को ही परमात्मा की उपासना मानते थे । जायसी 'वेद' की इस दिव्य-वाणी के कायल थे कि 'अकेला खाना पाप है ।' जायसी एक विद्वान भी थे । उनका यह नियम था कि जब वह अपने खेतों में काम करते तो अपना भोजन वहीं मंगवा लिया करते थे । और खाना कभी अकेले नहीं खाते थे । एक दिन खाने के समय उन्हें अपने आस-पास कोई व्यक्ति दिखायी नहीं दिया । लंबी प्रतीक्षा के बाद उन्हें एक कोढ़ी दिखायी दिया । जायसी ने अत्यंत सत्कारपूर्वक उसे खाने के लिए आमंत्रित किया । दोनों एक साथ एक ही थाली में खाना खाने लगे । कोढ़ी के शरीर से कुछ मवाद चूकर खाने में गिर गया । जायसी ने उसे भोजन के साथ खाने के लिए उठा लिया । किंतु कोढ़ी के मना करने पर भी जायसी वह निबाला खा गये । इस घटना के साथ ही वह कोढ़ी अदृश्य हो गया । जायसी यह सब देखकर आश्चर्यचकित हो गये और परमात्मा के प्रति उनकी आसक्ति और अधिक तीव्र हुई । जायसी ने अपने ग्रंथ 'अखरावट' में इस आश्चर्यजनक घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है :

बुंदहि समुद समान, यह अचरज कासौ कहौं
जो हेरा सो हेरान, मुहम्मद आपुहि आप मंह

सात पुत्रों के बदले चौदह रचनाएं

जायसी के संबंध में एक और प्रसिद्ध जनश्रुति है कि जायसी के सात पुत्र थे । जायसी एक, हंसमुख और विनोद-प्रिय व्यक्ति थे । जायसी ने 'पोस्ती नामा' की रचना की और



मलिक मुहम्मद जायसी

इसके कुछ अंश बड़े ही व्यंग्य तथा विनोदपूर्ण थे । जायसी के गुरुदेव वैद्यों के परामर्श के परिणामस्वरूप पोस्त के पानी का सेवन किया करते थे । जिससे नींद कम आये और भूख भी कम लगे । जायसी ने इस पुस्तक के कुछ अंश अपने गुरु को सुनाये । जायसी की व्यंग्योक्ति को सुनकर जायसी के गुरु आग बिगूला हो गये और आक्रोशवश सहसा बोल उठे— "अरे ! निपूते, तुझे विदित नहीं कि तेरा पीर पोस्ती है ।" यह प्रसिद्ध जनश्रुति है कि उसी समय एक व्यक्ति ने आकर जायसी को यह सूचना दी कि उनके सातों पुत्र एक साथ खाना खा रहे थे कि अचानक गुरु के इस अभिशाप से उनके ऊपर छत गिर गयी और वे सब उसके नीचे दबकर मर गये । इस हृदय-विदारक दुर्घटना को सुनकर जायसी शोक-सागर में डूब गये । किंतु साथ ही गुरु का हृदय भी व्यथा से द्रवित हो

गया । व्यथित हृदय गुरु ने जायसी से संवेदना एवं सहानुभूतिपूर्वक पूछा कि 'तुम मृत पुत्रों का पुनर्जीवन चाहते हो अथवा अपनी चौदह रचनाओं द्वारा अमरत्व के आकांक्षी हो ?' यह कहा जाता है कि विधि के विधान के प्रति अटूट आस्था रखनेवाले जायसी ने अपनी भावनाओं और संवेदनाओं का गला घोंटते हुए दूसरे विकल्प को स्वीकार किया ।

गढ़ अमेठी के घने वन में

जायसी के जीवन-संबंधी एक और अत्यंत रोचक प्रसंग भी उल्लेखनीय है । इस प्रसंग का संबंध जायसी के अमेठी पहुंचने से है । यह एक प्रख्यात जनश्रुति है कि जब शागिर्दी करते हुए बहुत दिन व्यतीत हो गये तो जायसी और उसके एक गुरु भाई हजरत निजामुद्दीन 'बंदगी' की यह इच्छा हुई कि हम भी अपनी गद्दी स्थापित करें और शिष्य बनाएं । इस अभिलाषा को लेकर दोनों मुरीद गुरु-चरणों में उपस्थित हुए । और अपनी यह इच्छा प्रकट की । इनके गुरु ने आदेश दिया कि अमेठी चले जाओ । यह सुनते ही दोनों शिष्य अवाक रह गये । समस्या यह बन गयी कि एक ही स्थान पर दो गुरु किस प्रकार रह सकते हैं ? जायसी बहुत ही प्रतिभा संपन्न शिष्य थे । उन्होंने गुरु की आज्ञा में तर्क-वितर्क उचित नहीं समझा और अपनी कुशाग्र बुद्धि और विवेक से इस समस्या का समाधान खोज निकाला । गुरु स्थान के दो द्वार थे । एक पूर्व की ओर और दूसरा पश्चिम की ओर । पश्चिमवाले द्वार से जायसी ने बंदगी मियां को भेजा कि तुम लखनऊ वाली अमेठी जाओ । मियां बंदगी ने वहां जाकर अपनी गद्दी स्थापित की और अमर सुयश प्राप्त किया । वह अमेठी अभी तक 'बंदगी मियां की अमेठी' के नाम से जानी जाती है । जायसी स्वयं पूर्व द्वार गढ़ अमेठी की ओर चल दिये और वहां पास के एक घने वन में अपना स्थान बनाया ।

एक अन्य जनश्रुति के अनुसार जायसी अपने समय के एक सिद्ध-पुरुष तथा सुख्यात सूफी-संत थे । उनके शिष्यों की संख्या भरपूर थी । उनके शिष्य 'पदमावत' के अंशों को गा-गाकर भिक्षा मांगा करते थे । एक दिन जायसी के एक शिष्य ने तत्कालीन अमेठी नरेश रामसिंह को नागमती के बारहमासा-प्रसंग का यह दोहा सुनाया :

कंवल जो बिगसा मानसर बिभुजल गयेउ सुखाइ
सूखि बेलि पुनि पल्लुहै, जो पिउ सींचै आइ

राजा यह दोहा सुनकर मुग्ध हो गया और उन्होंने गायक से पूछा कि 'शाहजी ! यह किसका दोहा है ?' जायसी का नाम सुनकर राजा उन्हें सादर अमेठी ले आये । और वह अंत समय तक वहीं रहे । ऐसा भी प्रसिद्ध है कि निस्संतान अमेठी नरेश को जायसी के आशीर्वाद से पुत्र-रत्न भी प्राप्त हुआ था । इससे राजा रामसिंह की जायसी के प्रति श्रद्धा और अभिवृद्धि हुई ।

मृत्यु संबंधी पूर्व ज्ञान

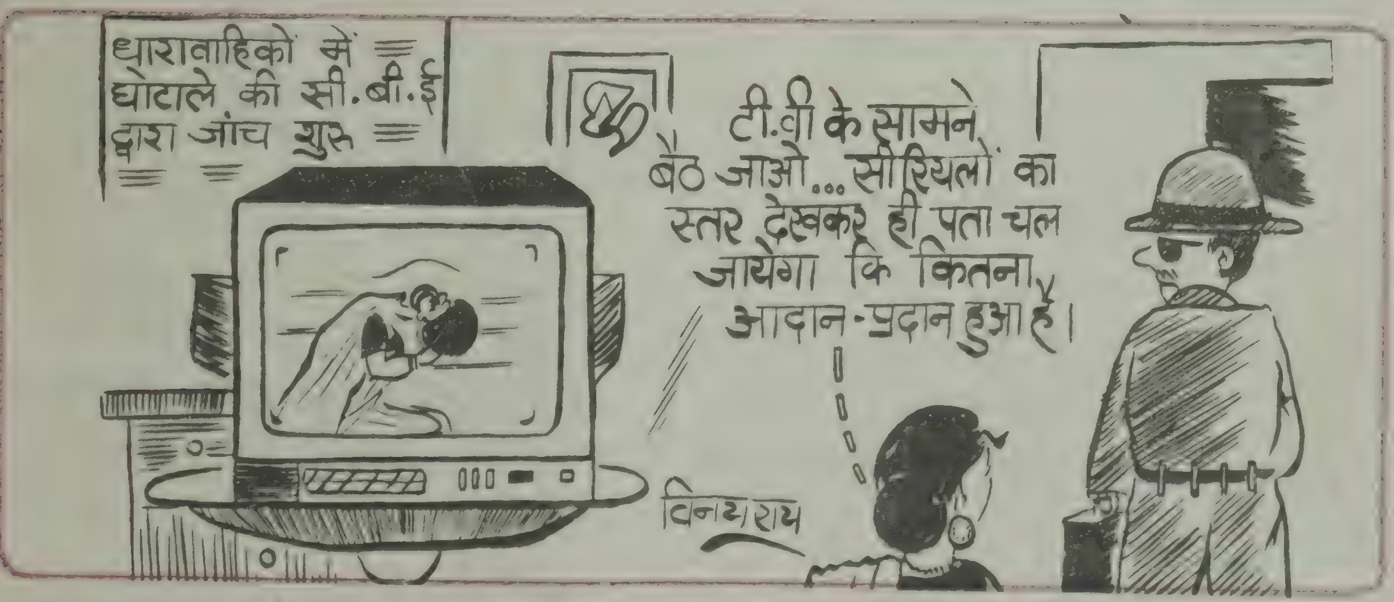
जायसी की मृत्यु के संबंध में अत्यंत रोचक जनश्रुति प्रचलित है । अनेक विद्वानों ने अपने जायसी-संबंधी ग्रंथों में इस प्रसंग का उल्लेख किया है । कहते हैं कि जब अमेठी नरेश जायसी की सेवा में उपस्थित होते थे, तो उनका एक बंदूकधारी अंग-रक्षक और बहेलिया (तुफंगची) भी उनके सदा साथ रहता था । जायसी उस बहेलिये का विशेष सम्मान किया करते थे । जब कुछ शिष्यों ने इस विशिष्ट, सम्मान का कारण पूछा तो जायसी ने कहा कि

यह मेरा कातिल है । यह सुनकर सब आश्चर्यचकित हो गये । बहेलिए ने राजा से प्रार्थना की कि 'इस दुष्कर्म से पूर्व ही मुझे मृत्यु-दंड दिया जाए । ताकि मैं इस महान पाप से बच जाऊं ।' राजा ने इस प्रस्ताव को उचित समझा । किंतु जायसी के अनुरोध पर राजा ने बहेलिये की हत्या का आदेश वापस ले लिया किंतु साथ ही यह आदेश दिया कि उस समय से उस बहेलिये को किसी भी प्रकार का अस्त्र या शस्त्र अर्थात बंदूक, तलवार आदि न दिया जाए ।

परंतु विधि के विधान को कौन टाल सकता है ? एक अंधेरी रात को जब बहेलिया राजभवन से अपने गांव को जाने लगा तो उसने दारोगा से निवेदन किया कि 'रात का समय है और मेरी राह जंगल से होकर जाती है अतः मुझे रातभर के लिए एक बंदूक दे दें, मैं प्रातःकाल ही लौटा दूंगा ।' दारोगा ने बहेलिये की प्रार्थना मान ली और एक बंदूक उसे दे दी । जब बहेलिया जंगल से होकर जा रहा था तो उसे शेर के दहाड़ने की ध्वनि सुनायी दी । बहेलिये ने शेर को समीप समझकर उसके शब्द पर गोली दाग दी । शब्द बंद हो गया । बहेलिये ने शेर को मृत जानकर घर की राह ली । कहते हैं कि इसी समय राजा ने एक स्वप्न देखा कि कोई कह रहा है कि 'आप तो सो रहे हैं और आपके बहेलिये ने मलिक साहब को मार डाला ।' राजा सुनते ही चौंक पड़ा वह नंगे पांव जायसी के स्थान पर दौड़ता हुआ पहुंचा और देखा कि जायसी के मस्तिष्क पर गोली का दाग है और उनका शरीर निर्जीव पड़ा है, यह शोक समाचार सुनकर राजभवन तथा सारे नगर में शोक छा गया ।

इस प्रकार बहेलिये की गोली से 'जायसी के मानस' और अपने युग में 'मुहकक-ए-हिंद' (भारतीय सत्य के अन्वेषक) की सम्मानपूर्ण संज्ञा से सुविख्यात जायसी की मृत्यु १४ अक्तूबर, सन १५४२ ई. को हुई थी । जायसी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए अमेठी नरेश रामसिंह ने जायसी की समाधि रामनगर में अपने कोट से लगभग २५० गज की दूरी पर बनवायी थी । जो आज भी विद्यमान है और भारतीय भावात्मक एकता और सांप्रदायिक सद्भाव का एक सनातन स्मारक है ।

— 'आकाशदीप'-१५८ वैशाली,
दिल्ली-११००३४



ज्योतिष : समस्या और समाधान

—अजय भाम्बी

बृजेन्द्र सिंह, गंगानगर
प्रश्न : मातृ या ससुराल पक्ष से जायदाद में कुछ मिलेगा ? कब तक ?
उत्तर : मातृ पक्ष से अधिक लाभ की संभावना ।

विष्णु प्रभाकर, इलाहाबाद
प्रश्न : विज्ञान पढ़ने से सफलता मिलेगी या वाणिज्य से ?
उत्तर : विज्ञान ।

राकेश जैन, गुड़गांव
प्रश्न : संतान योग कब तक ? निजी या दत्तक ?
उत्तर : पत्नी की कुंडली के बिना यह बताना कठिन है ।

रश्मि तिवारी, दमोह
प्रश्न : विवाह कब ? घर-वर कैसा ?
उत्तर : अगले वर्ष ।

सुधाकर स्वरूप शर्मा, दिल्ली
प्रश्न : मुकदमे का फैसला कब तक ?
उत्तर : अभी और इंतजार करें ।

सुशांत, कानपुर
प्रश्न : क्या १९९३ में इंजीनियरिंग में प्रवेश होगा ?
उत्तर : संभावना प्रबल है । प्रयासों में गति लायें ।

अभिरुचि तायल, ग्वालियर
प्रश्न : वर्तमान बीमारी से छुटकारा कब तक ?
उत्तर : योग्य चिकित्सक का परामर्श लें, बीमारी तंग करनेवाली है ।

वीरेन्द्र पाल चौहान, इलाहाबाद
प्रश्न : प्रेम-विवाह कब तक ? सफल होंगे या नहीं ?
उत्तर : प्रेम विवाह होने की संभावना है ।

रवि कुमार असंग, पटना
प्रश्न : खेल कूद में मेरा भविष्य कैसा है ?
उत्तर : मेहनत करें । सफलता मिलेगी ।

बिंदू कुमारी, बीकानेर
प्रश्न : तलाक अथवा वैधव्य योग है ?
उत्तर : वैधव्य योग नहीं है ।

मीरा त्रिपाठी, सस्तमपुर (गोरखपुर)
प्रश्न : राजपत्रित अधिकारी बनने का योग कब तक है ?
उत्तर : अगले वर्ष के उत्तरार्द्ध में संभावना बनती है ।

सुमनलता अग्रवाल, लुधियाना
प्रश्न : घर में स्थानांतरण कब तक होगा ?
उत्तर : आठ माह के भीतर ।

ममता कल्ला, बारमर (राजस्थान)
प्रश्न : मेडिकल में प्रवेश की संभावना है कि नहीं ?
उत्तर : बहुत अधिक प्रयत्नों की आवश्यकता है ।

डॉ. के.एस. भारद्वाज, नयी दिल्ली
प्रश्न : वर्तमान परेशानियों से मुक्ति एवं पदोन्नति कब तक ?
उत्तर : पुखराज पहनें, आपकी स्थितियों में शनैः-शनैः परिवर्तन आना प्रारंभ हो जाएगा ।

विजय कुमार शर्मा, हरिद्वार
प्रश्न : शेयर मार्किट का काम अनुकूल रहेगा या नहीं ? नग कौन सा पहनें ?
उत्तर : शनि की महादशा में अनुकूल रहेगा ।

महेन्द्र सिंह नेगी, मायापुर (चमोली)
प्रश्न : क्या मैं अध्यापक बनूंगा ? कब तक ?
उत्तर : जी हां, जल्दी बन जाएंगे।

माधुरी गुप्ता, जयपुर
प्रश्न : धन योग कब और कितना ?
उत्तर : अच्छा धन योग है लेकिन इसका प्रारंभ ४२वें वर्ष से होगा।

गिरीश जैन, शाहदरा (दिल्ली)
प्रश्न : क्या मैं सी.ए. पूर्ण कर सकूंगा, यदि हां तो कब तक ?
उत्तर : कर लेंगे, प्रयास जारी रखें।

किटी कॉव, सहारनपुर
प्रश्न : विवाह कौन-से साल व महीने में होगा ?
उत्तर : विवाह अगले वर्ष सितम्बर से पहले होगा।

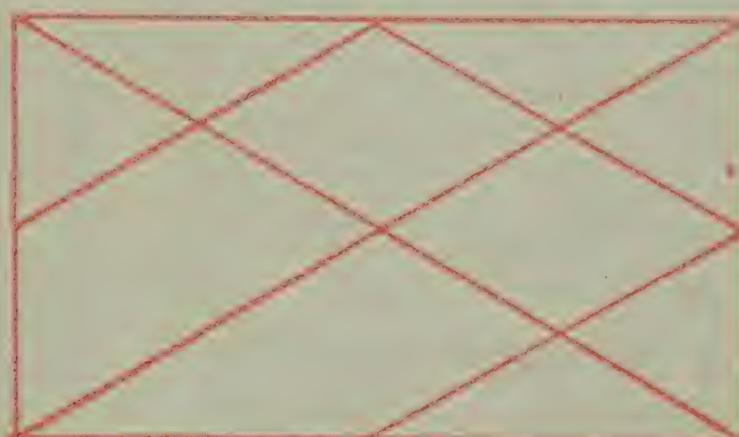
उमेश चन्द्र, बंबई
प्रश्न : केस कोर्ट में है तलाक कब तक ?
उत्तर : अगले वर्ष निसंदेह तलाक संपन्न होगा।

आमोद कुमार माथुर, जयपुर
प्रश्न : कर्ज मुक्ति व सुख-शांति वैभवपूर्ण जीवन कब ?
उत्तर : दो वर्ष और लगेंगे।

कन्हैया मिश्र, मैरवा सिवान
प्रश्न : विदेश यात्रा कब तक होगी ?
उत्तर : मार्च '९३ के बाद संभावना बनती है।

—नक्षत्र निकेत,
९४४/३, दूसरी मंजिल, हरिसिंह नलवा मार्ग फेज रोड, करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

१२८



नाम

जन्म-तिथि (अंग्रेजी तारीख) .... महीना .... सन ....

जन्म-स्थान .... जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ....

पता ....

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १२८) 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० अक्तूबर १९९२

नये कविता-संग्रह

यदि आजकल के 'प्रोजैक' (गद्यमय) —जीवन में कोई प्रकाशक साहित्य की आदिम विधा कविता के प्रति समर्पित है और एक के बाद एक कविता-संग्रह प्रकाशित करता चला जाता है, तो कविता-प्रेमियों के लिए यह हर्ष का विषय है। **६, तनसुक लेन कलकत्ता-७ में स्थित स्वर समवेत के पांच कविता-संग्रह यहां पुस्तक-परिचय के लिए प्रस्तुत हैं।** कविता में जीने का सुख **(पृष्ठ संख्या ६७; मूल्य २० रुपये)** के कृतिकार छविनाथ मिश्र के लिए, कविता की संस्कृति की खोज के साथ कविता में जीने का सुख उनके होते रहने का मर्म भी है, और मजबूरी भी है। वे मानव-जाति के भविष्य के प्रति आश्वस्त हैं। कहते हैं—**"पिछली रात का अंधेरा/ न जाने कब पिघल गया।/ समय का अनाम दर्द रोशनी में बदल गया/ सुबह-सुबह ही/ पड़ोसी के नन्हे बच्चे ने दस्तक दी/ दरवाजा खुल गया।"**

कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह अपने कविता-संग्रह बबुरी-वन (पृ. सं. ६३; मूल्य २० **रुपये)** की कविता-नुमा भूमिका में लिखते हैं, **"कविता/ विध्वंस से अधिक/ निर्माण पर बल देकर चलती है। उसका एकमात्र लक्ष्य/ मनुष्य की बेहतरी होता है।"** उनकी कविता में कौवा गौरय्या से कहता है कि वह सावधान रहे, बहेलिया जाल डालकर उसे ले जाएगा। गौरय्या जवाब देती है, 'हमने जाल काटना सीख लिया है, अब कोई बहेलिया हमें फंसा नहीं पाएगा।'

कल फिर खिलेंगे फूल : (पृ. सं. ६४; **मूल्य ३० रुपये)** में कवि **सुरेश कुमार शर्मा** के अनुसार, आज का सचेतन कवि राजनीति के जुझारू पक्ष से विमुख नहीं हो सकता। उन्हें साहित्य में राजनीति की चर्चा से कोई परहेज नहीं है। परंतु राजनीति को ही साहित्य बना देने से परहेज है। उनकी प्रस्तुत कविता में श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं—**"यह यात्रा/ मात्र वियोगिनी प्रिया सीता के रक्षार्थ नहीं है। किसी भी स्तर पर कलुष या स्वार्थ नहीं है। गति को कैद कर लेने की नीयत के विरूद्ध यह एक शुभ संकल्प है।"** राजनेता राम अपनी प्रिया सीता को वापस लाने और शोषित साधारण जन को रावण के दानवी चंगुल से बचाने के लिए युद्ध करने को तत्पर होते हैं। कविताओं में व्यंग्य का पुट उन्हें सशक्त बना देता है। **'हलफनामा'** कविता में एक निर्दोष व्यक्ति न्यायाधीश से कहता है, **"गरीबदास का कत्ल मैंने ही किया, हुजूर! मैं उसकी जवान बीबी के शीलहरण का भी इल्जाम कबूल करता हूं। 'लालू भाई' ने यह सब नहीं किया। आज यह सब उनके 'माथे मढ़ने' से भी नहीं बचूंगा। आप छोड़ देंगे, वे बाहर मेरा गला मरोड़ देंगे।"**

जो व्यथा इस छोटी कविता में व्यक्त हो पायी है, वह एक बड़ी कथा-कहानी में भी शायद ही व्यक्त हो पाती। कविता थोड़े में बड़ी बात कहने का हुनर है। यह बात मृत्युंजय उपाध्याय के **आत्मोपनिषद (पृष्ठ सं. ९२; मूल्य ३० रुपये)** से बखूबी जाहिर है। उनकी इस लंबी कविता में वेद, पुराण, शास्त्र और उपनिषद सार-रूप में निहित हैं। वे आत्म-विश्लेषण करते हुए कहते हैं, **"माना/**

तूने शेषनाग-सा/ नहीं धरा का भार उठाया/ मुक्त न कर पाया बलि को पाताल लोक से/...तू सक्षम है/ कर सकता है/ इनके लिए न जाने क्या-क्या/ शक्ति और प्रतिभा है तुझमें ।''

उनकी कविता में पानी की-सी रवानी है ।

शंकर माहेश्वरी का **ऋतुपर्व** (पृ. सं. ७२; मूल्य बीस रुपये), मौसम-विज्ञान का अथवा भूगोल-ज्ञान का कविता-संकलन नहीं है । नाना ऋतुओं का प्रभाव मानव के मन पर ही नहीं प्रकृति के तन पर भी दृष्टिगोचर होता है । ये कविताएं प्रकृति और मानव के तादात्म्य का लयात्मक गायन हैं । कलकत्ता—जैसे महानगर में रहते हुए भी, शंकर माहेश्वरी उसकी यांत्रिकता और कोलाहल से आक्रांत नहीं हैं और मुक्ति की हांक लगाते हुए गाते हैं, ''**यहां-वहां यह कैसी सुगबुग/ कैसा यह परिवेश !/ हवा घूम फहलाती दुखती हुई कथा/ किसने समझी कोयल की यह मर्मव्यथा/ झरते पत्तों की शाखों में/ यह कैसा आवेश !''**

कहना न होगा, स्वर समवेत द्वारा प्रकाशित ये पांचों कविता-संग्रह जीवन को कविता से फिर जोड़ते हैं और मानव को उसके बाहरी रंग तक ही सीमित नहीं रखते, उसकी भीतरी गंध तक पहुंचते हैं ।

पंख रेशमी । (कवयित्री—शकुंतला श्रीवास्तव; प्रकाशक—आकांक्षा प्रकाशन, कॉलेज रोड, लुधियाना, पृ. सं. ११२; मूल्य—८० रुपये) में पंजाब-कोकिला शकुंतला श्रीवास्तव के गीत व गजलें संकलित हैं । यह उनका छठा कविता-संग्रह है, जिसमें उनकी परिपक्व कला और भावप्रवणता परिलक्षित हैं । उनकी रचनाओं में मानव की आदिम वासनाओं का निरूपण ही नहीं, अपितु उसके आज के सरोकारों का भी दिग्दर्शन हुआ है । एक गजल में वे कहती हैं—

शिकवा है कि क्यों हमने कुछ प्रश्न उछाले हैं,
ठहरे हुए पानी में पत्थर ही तो डाले हैं ।

× × × ×

गुमराह किये जाती इनसान को पूजा ही,
ये कैसी मसजिद हैं, ये कैसे शिवाले हैं ।

प्रकाश की तलाश में : (कवयित्री—प्रतिभा; प्रकाशक—वरुण प्रकाशन, जनकपुरी, नयी दिल्ली-५८; पृष्ठ सं. ६४; मूल्य—३० रुपये) में नवोदित कवयित्री प्रतिभा की पैंतीस कविताएं संकलित हैं । १९७० में जन्मी प्रतिभा की कविताओं को देख-पढ़कर लगता है कि हिंदी-कविता का भविष्य समुज्ज्वल है । उनका संवेदनशील मन समय की पहचान करने में लगा है और वे कहती हैं, **पिछले वर्ष की तरह/ अधूरी रही व्याख्या/ पाप और पुण्य की/ इस वर्ष भी । भले-बुरे का भेद/ बना रहा अनजाना/ चलती रही गोलियां/ मरते रहे लोग/ जारी रहे बंद और दंगे/ पिछले वर्ष की तरह ।**

राष्ट्र शत्रु : (कवि—पोद्दार रामावतार अरुण; प्रकाशक— किरण प्रकाशन, समस्तीपुर; पृ. सं. १५०; मूल्य—७५ रुपये) समकालीन हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है । इसमें सुप्रतिष्ठित कवि अरुण ने इस प्रश्न पर चिंता व्यक्त की है कि स्वतंत्र भारत में गलत लोग सही लोगों पर हावी क्यों हो रहे हैं और वे सही लोग इस अन्याय पर चुप्पी क्यों साधे हुए हैं । आज किस प्रकार खुले आम भ्रष्टाचार है, यह हम सबसे छिपा नहीं है । कवि की वाणी इस भ्रष्टाचार को नंगे रूप में ला खड़ा करती है । वे कहते हैं, ''**ईमानदारी का इतना अवमूल्यन हुआ/ कि वह दस प्रतिशत रह गयी !/ विकास ऐसा हुआ/ कि देश के एक प्रधानमंत्री ने/ खुले आम घोषणा की/ कि दिल्ली से भेजे गये विकास के सौ रुपये/ देहात तक आते-आते/ मात्र**

दस रुपये बच पाते हैं ।''

ऐसी महत्त्वपूर्ण कविता-पुस्तक पुस्तकालयों के लिए ही संग्रहणीय नहीं, अपितु देश के पुनर्जागरण के लिए सब जगह प्रचारित-प्रसारित होनी चाहिए ।

हिंदी के मुसलमान कवियों का कृष्ण काव्य : यह निर्विवाद सत्य है कि राम की अपेक्षा कृष्ण का माधुर्यपूर्ण चरित्र भारत के मुसलमान कवियों को भी प्रिय रहा है । प्रस्तुत ग्रंथ में लेखिका ने हिंदी के मुसलमान कवियों के कृष्ण-काव्य का समग्र दृष्टि से विवेचन किया है । उन्होंने जहां एक ओर हिंदी कृष्ण-काव्य का विकासात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया है, वहां दूसरी ओर हिंदी के मुसलमान कवियों के समस्त कृष्ण-काव्य पर दृष्टिपात किया है ।

कहना न होगा कि जायसीकृत पद्मावत में कृष्ण-कथा के सूत्र विद्यमान थे । पद्मावत में कृष्ण-चरित्र का स्मरण करते हुए जायसी ने लिखा था, ''**लेइगा कृष्नहि गरूड़ आलोपी । कठिन बिछोह जियहिं किमि गोपी** । कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियां कठिन वियोग में तडप उठी थीं । नागमती की विरह-कथा को गहरा रंग देने के लिए कवि ने यह साम्य-चित्र प्रस्तुत किया । इस कृष्ण-काव्य की अंतिम कड़ी थे मुबारक बिलग्रामी, जिन्होंने अपने कवित्तों द्वारा माधुर्यभाव को खूब सजाया—संवारा । एक जगह वे लिखते हैं—''**हमको तुम एक, अनेक तुम्हें, उनहीं के विवेक बनाय रहौ ।**''

इस ग्रंथ के अंतिम अध्याय में भारतीय भावात्मक एकता के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के मुसलमान कवियों के कृष्ण-काव्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है । पूरा ग्रंथ ज्ञान-सम्मत परिश्रम का एक सुंदर सुग्राह्य उदाहरण है ।

हिंदी के मुसलमान कवियों का कृष्ण-काव्य
लेखिका—डॉ. साधना निर्भय,
प्रकाशक—साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद; १९९१; मूल्य—पचपन रुपये ।

— डॉ. मोतीलाल जोतवाणी

एक नया आसफुद्दौला : सुपरिचित कथाकार एवं कवि कौशलेन्द्र पांडेय की लघुकथाओं का संकलन है । एक लंबी कहानी लिखना जितना आसान है, एक लघुकथा लिखना शायद उतना ही कठिन । कम से कम शब्दों में घटनाओं, स्थितियों और प्रसंगों के माध्यम से लघुकथाएं कभी-कभी बहुत बड़ी बात कह देती हैं । इन लघुकथाओं का वैशिष्ट्य यही है कि वे मात्र मनोरंजन नहीं करतीं, हृदय को झकझोर कर कुछ सोचने के लिए भी विवश करती हैं । वे लघु कथाएं हमारे समसामयिक जीवन के सुख-दुखों की विडंबनाओं को भी बड़ी कुशलता से चित्रित करती हैं ।

एक नया आसफुद्दौला
लेखक— कौशलेन्द्र पांडेय, प्रकाशक— वर्तिका प्रकाशन सी-१३/१ पेपर मिल कॉलोनी, लखनऊ, मूल्य—छियहत्तर रुपये ।

राजुला-मालूशाही :

लेखक—जुगल किशोर परेशाली, प्रकाशक—तक्षशिला प्रकाशन, २३/४७६२, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य-एक सौ पच्चीस रुपये ।

राष्ट्र पताका :

लेखक—डॉ. विनोद, प्रकाशक—कान्ह समृति साहित्य समिति कानपुर, मूल्य—पैतालीस रु. ।



प्रिंस चार्ल्स, राजकुमारी डायना और २१वीं सदी का नरेश

राजकुमारी डायना और प्रिंस चार्ल्स तलाक की ओर ?

● भगवती प्रसाद डोभाल

ब्रिटिश राज परिवार पर मंडरा रहे काले बादलों की यह कहानी है । दुनिया से जब राजशाही खत्म हो चुकी है, तब ब्रिटेन अपनी परंपरा को ओढ़े हुए है । दुनिया के संसदों की जननी कहे जानेवाली ब्रिटेन की संसद भी मूक होकर राजशाही के खेल देख रही है । मंत्रियों के प्रेम प्रसंगों पर तो उन्हें अपने मंत्रिपद से त्यागपत्र देना पड़ता है । ऐसा कितनी ही बार ब्रिटेन में हो चुका है, उसमें प्रफ्यूमो जैसे मंत्रियों को सार्वजनिक जीवन से हाथ धोना पड़ता है । लेकिन जब यह स्थिति ताज के आस-पास घूम रही हो तो उसका वहां की जनता क्या करे ? यह एक विचारणीय प्रश्न है । इस लेख में इन प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित किया गया है ।

'मैं तुमसे प्यार करता हूं, प्यार करता हूं, प्यार करता हूं ।'

इस आवाज को ब्रिटेन में 'सन' अखबार के कार्यालय में १० पौंड देकर सुना जा रहा था । सभी का अनुमान है कि इस आवाज के साथ गुफ़्तगू करनेवाली दूसरी आवाज है डायना की । डायना का ३५ वर्षीय प्रेमी जो कि स्पोर्ट्कार का सेल्समैन है, चाहता है कि डायना उसकी बनकर रह जाए । आधा घंटे के इस वार्ता लाप को टेप किया है साइरिल रीनन ने । यह सज्जन सन १९८९ में नये वर्ष की संध्या पर रेडियो संकेत सुन रहे थे, तुरंत उन्होंने 'टेप' का सहारा लिया और पूरी आधे घंटे की बातचीत को रिकॉर्ड कर दिया । आज लगभग तीन वर्ष होने को हैं, उन्हें भी लगता है डायना से कुछ हिसाब चुकाना है । इसलिए मौके का फायदा उठाकर पूरा का पूरा कैसेट 'सन' अखबार के सुपुर्द कर दिया ।

जनता ने टेप सुनकर उस प्रेम की गुहार करनेवाली आवाज को पहचान लिया है, वह हैं जेम्स गिल्बी, वह अभी तक कुंवारे हैं । इन ३५ वर्षीय सज्जन ने ३१ वर्षीय राजपरिवार की दो बच्चों की मां को अपनी ओर आकर्षित करने का पूरा मौका नहीं चूका है । शायद वह इस इंतजार में हैं कि कब डायना को चार्ल्स से छुट्टी मिले ?

डायना पर दो पुस्तकें

इससे पूर्व राजपरिवार पर डायना को लेकर दो पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं । एक 'डायना इन प्राइवेट : दि प्रिंसेस नो बडी नोज' । इसकी लेखिकाहैं लेडी कॉलिन कैंपबेल । और दूसरी पुस्तक है 'डायना : हर ट्रू स्टोरी' इसके लेखक हैं ऐंड्रयू मार्टन ।

यह पुस्तकें आजकल खूब चर्चित हो रही हैं । क्योंकि राजपरिवार के व्यक्तिगत संबंधों को मसाले के साथ उछाला जा रहा है । यह बातें भी सामने आयीं कि जब चार्ल्स व डायना की शादी होनेवाली थी, तब शारीरिक रूप से यह भी परीक्षण किया गया था कि डायना भविष्य में मां बनने योग्य है भी या नहीं । इस परीक्षण में खरी उतरने के बाद फिर उसके कौमार्य पर बात चली, तो उसमें उसके मामा दो कदम आगे निकले उन्होंने प्रेस को बुला-बुलाकर बतलाया कि डायना का शीलभंग नहीं है । डायना एकदम कुंवारी है । यह बात भी अजीब लग रही है कि डायना का मामा अपनी भांजी के शरीर के उन हिस्सों के छेड़छाड़ न होने की सफाई दे रहा है जो उसके मुंह से शोभा नहीं देता ।

डायना का राजमहल के एक सार्जेंट बेरी मंकी की ओर आकर्षित होने का किस्सा भी सामने आया । जब यह बात प्रिंस चार्ल्स को पता चली, तब उस सार्जेंट को वहां से बदल दिया गया । बाद में पता चला कि वह किसी सड़क दुर्घटना का शिकार हो गया है । दूसरी ओर प्रिंस चार्ल्स के किस्से भी सुनने को मिले कि उसके सेना के एक अधिकारी की पत्नी से अवैध प्रेम संबंध हैं । वह उसके साथ रंगरेलियां करता है । और बेचारी डायना चुपचाप महल में या कहीं अलग शहर में अपनी किस्मत पर रोती है ।

लेडी कैंपबेल ने शाही परिवार के



१९३७ में किंग जार्ज षष्ठम के अभिषेक के समय, रानी एलिजाबेथ द्वितीय तब छोटी थीं

तौर-तरीकों को सीखते हुए डायना को बताया है । कैसे खाते हैं, कैसे लोगों से मिलते हैं ?

ऐंड्रयू मार्टन ने काफी कुछ 'स्कूप' पकड़ा है ।

राजपरिवार के प्रति घृणा

राजकुमारी इसे समझ चुकी । अब वह शुरू से ही राजपरिवार के प्रति अपनी घृणा का वर्णन करती है । १९६० से रानी ऐलिजाबेथ द्वितीय शीत के मौसम में उपयोग होनेवाला घर, जो उत्तर पूर्व लंदन से १२० मील दूरी पर है, के ठीक पड़ोस में डायना स्पेंसर का परिवार रहता था । यह एक संयोग ही था । स्पेंसर परिवार की सबसे छोटी बेटी डायना २० वर्ष की होते ही राजपरिवार की बहू बन बैठी । रानी पड़ोसी होने के नाते उसे बुलाती तो थीं पर डायना को शाही परिवार का वातावरण दम घोटू लगता था । ऐसा उसका अब कहना है, तब वह छोटी-सी मुन्नी रानी के बड़े घर से घृणा करती थी ।

लगभग पैदा होने के ३० वर्ष बाद, १० वर्ष से अधिक शाही परिवार की सदस्य होकर भी राजकुमारी डायना ने अपना अजनबीपन राज परिवार के प्रति जताया है । आज डायना एक कहानी बन चुकी है, उसका आत्म हत्या का प्रयास, फिर जहर बाहर उल्टी द्वारा निकलवाने का, यानी अपने पति चार्ल्स के प्रति गुस्सा जताने की ये कहानियां दुनिया सुन व पढ़ रही है । 'डायना : हर टू स्टोरी' पुस्तक के लेखक ब्रिटिश पत्रकार एंड्रयू मॉर्टन ने अपनी पुस्तक के माध्यम से एक प्रकार की डायना की अपील तलाक के लिए तैयार की है । डायना की यह अपील पूरी तरह एकपक्षीय है । या यों कहें कि यह पूर्वाग्रह से पीड़ित पुस्तक है, इस प्रकार से लिखी गयी पुस्तक अक्सर ऐसी ही मिलेंगी । लेकिन पुस्तक के अंदर की कुछ कहानियां तो प्रामाणिक लगती हैं । क्योंकि डायना के भाई व किसी अन्य बुजुर्ग ने लेखक को अपने साक्षात्कार दिये हैं । उन्होंने पुस्तक के अंशों को 'संडे टाइम्स' में धारावाहिक आने से पूर्व १० जून को अपने साक्षात्कार के वक्तव्य पर हस्ताक्षर भी किये हैं । राजकुमारी डायना ने अपने मित्र केरोलिन बारथोलोम्यू के घर का दौरा भी किया है । यह उनमें से पुस्तक के लिए



सामग्री देनेवालों में से एक था ।

यह अब सभी जानते हैं कि राजपरिवार के एक सदस्य ने उस छोटी-सी जगह का दौरा किया, जहां पर फोटोग्राफरों को बुलाया गया था और इस भ्रमण को प्रामाणिक करने का पूर्ण यत्न किया गया था ।

राजपरिवार की प्रतिष्ठा

जब यह कहानी ब्रिटिश राज परिवार की हो और साथ ही उसमें आत्महत्या करने के डायना के प्रयासों को खूब जोर-शोर से उछाला गया हो, तब एंड्रयू मोर्टन की यह कृति मात्र सहायता के लिए चिल्लानाभर है । उसके अलावा जीवनी लिखने के गंभीर हिस्सों को नहीं उठाया गया है । लेकिन राजकुमारी डायना का संदेश इससे एकदम साफ मिल रहा है कि उसे उसके पति चार्ल्स ने धोखा दिया है । और उसने इस शादी को मृतप्रायः घोषित कर दिया है । वह चाहती है कि इस बात को दुनिया भी जाने । चाहे इसके लिए राजपरिवार की प्रतिष्ठा दांव पर क्यों न लगे ।

डायना जिसे राजपरिवार के साथ जुड़ने से अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली उसके रोमांस ने लोगों के मन में उथल-पुथल मचा दी थी और लोगों ने उसे सर आंखों लिया और मात्र कुछ दिनों में वह लोगों की आंख का तारा बन गयी । लेकिन राजकुमारी डायना के दिमाग में जो उथल-पुथल थी और उसको हल्का करने के लिए उसने जिस माध्यम को चुना, उससे लगता है कि अपने निजी जीवन को सार्वजनिक करने की उसकी इच्छा के पीछे उसका पारिवारिक जीवन का खुश न रहना ही है और शायद यह शादी के दिन से ही उसके साथ ग्रहण लग गया था । उसकी यह सच्ची कहानी परियों की कहानी की तरह थी जो अब एक त्रासदी बनकर रह गयी है । राजकुमार ब्रिटेन में ही रहकर अपनी पुरानी महिला मित्र के साथ मजे करता रहा, जो कि एक शादी-शुदा औरत भी है । दूसरी ओर राजकुमारी शहर में रहकर ही अपने विश्वसनीय मित्रों के साथ संतोष करती रही ।

एक समय था जब दो भावुक हृदयों का मिलन हुआ और आज दोनों अलग-अलग रास्तों पर हैं । यदि यह शादी ब्रिटिश ताज से जुड़ी न होती तो तलाक की नौबत बहुत पहले आ गयी होती ।

राजतंत्र और मीडिया

लेकिन यदि सार्वजनिक समारोह में निकलना आवश्यक होता है तो उसके लिए वह रस्म अदायगी अवश्य करते हैं । यद्यपि डायना राजपरिवार के नियमों को नहीं जानती हैं या फिर जानबूझकर उनकी अनदेखी करती हैं । डायना को ज्यादातर परंपरावादियों ने आलोचना का केंद्र बिंदु बनाया है । यदि राजतंत्र के इतिहास का प्रेस के साथ संबंधों पर दृष्टि डालें तो मीडिया डायना के प्रति सहानुभूति का रुख अपना रहा है । क्योंकि राजपरिवार के जटिल

राजशाही की इस कड़ी को अपने पास समेटकर डायना मध्यकालीन राजपरिवार की तरह व्यवहार करने में भी नहीं चूकेगी और उसका प्रयोग वह कर भी रही है । शेक्सपीयर के पास भी ऐसा प्लॉट नहीं रहा होगा । डायना एक समय शरमीली मैकियावलियन थी अब वह कठोर मैकियावलियन है ।

नियमों को डायना नहीं समझ सकी है ।

यह रानी ऐलिजाबेथ थीं रानी की मां जिन्होंने सन १९३० में जब वह योर्क की डच थीं, तब राजमहल की कहानी को नये ढंग से सार्वजनिक किया था । उस समय बकिंघम पैलेस में रानी के देवर ने एक कांड किया था जो कि विंडसर का ड्यूक होने ही वाला था । उस दौरान लेखों और पुस्तक के माध्यम से राजमहल की रक्षा की गयी थी । ड्यूक और डचेज की लड़की उस समय नन्हीं थी । वह छोटी-सी बिटिया थी आज की एलिजाबेथ द्वितीय । उस दौरान डचेज ने राजमहल के दरवाजे उन लेखकों के लिए खोल दिये थे जो शाही परिवार की छवि को बना सकते थे ।

क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय



इसी प्रकार ऐलिजाबेथ द्वितीय ने भी सन १९६० के अंतिम दिनों में टी.वी. कैमरा को महल में आमंत्रित कर राजपरिवार पर पहला औपचारिक वृत्तचित्र तैयार करवाया गया । दर्शक तब रोमांचित हो उठे जब राजकुमार फिलिप को 'बारबीक्यू' को तैयार करते हुए दिखाया गया था और रानी सलाद तैयार करती हुई दिखायी गयी थी ।

यह एक सोची-समझी शाही व्यक्तिगत तौर-तरीकों को खत्म करने की ओर कदम था । सन १९७१ में प्रिंस फिलिप की छवि को सुधारने के लिए जीवनीकार बेसिल बूथरॉयड के साथ लंबा साक्षात्कार करवाया गया था । और जीवनीकार को महल के अंदर ही अपने कार्यालय को खोलने के लिए जगह दी गयी थी । दस वर्ष बाद राजकुमारी माग्रेट ने गपशप स्तंभ के स्तंभकार नील डेम्पस्टर से राजकुमारी के रोमांस व शादी की चटकारेभरी कहानियां लोगों को पढ़वायी जो बेस्ट सेलर के तौर पर दुनिया में बिकी । लेकिन १९८० में ब्रिटिश प्रकाशन संस्थान बगैर शाही परिवार के उल्लेखों के गुजरा । प्रिंस चार्ल्स, प्रिंस एंड्रयू, राजकुमारी माइकेल, डचेज फर्गी पर ज्यादा कुछ नहीं लिखा गया । इस बीच लेखकों ने शाही मिस्ट्रेसेस (बगैर ब्याहता) के ही बारे में कलम



राजकुमारी डायना न्यूजीलैंड के दौरे पर

उठायी। कभी यह व्यक्तिगत फायदे के लिए लिखा जाता और किसी समय सार्वजनिक हित के लिए। यानी सब हल्का-फुल्का ही चलता रहा।

लेकिन दुश्मनी विंडसर की औरतों में धीरे-धीरे विकसित हुई। और शाही महल से बाहर विभिन्न प्रकार की कहानियां छनने लगीं।

इस तरह का प्रचार जुलाई १९९१ के बाद तेजी पर आया। जब राजकुमार और राजकुमारी की शादी की १०वीं साल गिरह मनायी जानेवाली थी, साथ ही डायना का तीसवां जन्मदिन भी मनाया जाने वाला था। अखबारों में छपने लगा कि राजकुमार चार्ल्स इस अवसर पर कोई पार्टी नहीं देंगे। तब चार्ल्स के दोस्तों ने अखबारी दुनिया को यह बताना चाहा कि प्रिंस चार्ल्स तो पार्टी देना चाहते थे पर डायना ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसी के जवाब में जीवनीकार ऐंड्र्यू मॉर्टन ने डायना पर लिखना शुरू किया कि राजकुमारी अपने पति से झगड़ रही है। डायना का व्यक्तिगत सारा सार्वजनिक हो गया।

डायना की यह नयी छवि दुनिया को मिली, जिसमें डायना के जीवन का नया अंदाज सामने आया। यह भी छवि निखार का एक तरीका समझा जा रहा है। समाचार माध्यमों के विश्लेषक डायना के खान-पान से लेकर शादी के बाद के तौर-तरीकों पर आये दिन लिखने लगे। लेकिन राजमहल के भीतर होनेवाली सुगबुगाहटें डायना के नये नाटकीय अंदाज को चार्ल्स के साथ भिड़ने का एक और तरीका सोच रहे हैं। डायना के ससुरालवाले डायना की मित्र मंडली से खुश नजर नहीं दिखते। उसके इन कारनामों को राजशाही नहीं पचा पा रही है। और दांपत्य सूत्र के टूटने के आसार नजर आ रहे हैं।

डायना की सच्ची कहानियों के बावजूद राजपरिवार उसे माफ कर देता, लेकिन डायना के व्यवहार से शाही परिवार की प्रतिष्ठा का जो छक्के पर छक्के लगते आ रहे हैं उससे यह साफ लगता है कि डायना को नहीं छोड़ा जा सकता

है । छोटी बहू फर्गी के रोमांस से पहले ही शाही परिवार की गरिमा धूमिल हो चुकी है । अब इस स्थिति में डायना को अधिक समय तक अपनी बहू मानने में शायद रानी एलिजाबेथ को भी कष्ट हो ।

यद्यपि फर्गी की तरह डायना पर अभी निशाना नहीं साधा जा सकता है । क्योंकि शाही कार्यों को औपचारिक रस्में अदा करनी होती हैं । सार्वजनिक कार्यों के प्रति जिम्मेदारी निभानी पड़ती है । इसलिए डायना का चार्ल्स के साथ न चाहते हुए साथ रहना आवश्यक होता है । वैसे डायना इस फन में माहिर है कि कैसे आम आदमी के दिल को जीता जा सकता है, इसीलिए अब तक शादी के बाद से वह दुनिया में अखबारों की सुर्खियों में देखी जाती रही है । यह उसकी असाधारण योग्यता है । सन १९८७ में एक बार अचानक शाही सफेद दस्तानों को हाथ से उतार कर डायना ने एड्स के रोगियों से हाथ मिलाया तो दुनिया की नजरें उसके इस व्यवहार से रोमांचित हो उठीं । यह कहने में अतिश्योक्ति न होगी कि पूरा सन ८० का दशक डायना के नये-नये क्रियाकलापों का रहा है ।

बच्चों के लिए डायना का किया कार्य याद किया जाता रहेगा । हो सकता है अपने व्यक्तिगत जीवन की कटुता को समाप्त करने के लिए उसने सार्वजनिक जीवन में ज्यादा रमना उचित समझा हो । यह इस बात को ज्यादा उपयोगी नहीं मानती कि चार्ल्स के साथ उसके संबंधों को पुनः पटरी पर लाया जाए ।

ग्यारह वर्ष पहले की डायना जो अपने पति का साया समझी जाती थी और जिससे दुनिया के अखबार कुछ न कुछ लिखने को आतुर रहते थे, से अब कटती जा रही है । वह पूरी तरह पति से दूर हो गयी है । जो खूबी प्रेस को अपनी ओर आकर्षित करने की थी उसका उपयोग अब डायना दूसरे रूप से कर रही है ।

राजकुमारी की लड़ाई

आज अपनी अकेली लड़ाई हाउस ऑव विंडसर के विरुद्ध राजकुमारी लड़ रही है । उसमें उसके पास एक विशेष अस्त्र हैं । वह है डायना का बड़ा बेटा विलियम । अपने छोटे भाई के साथ डायना ने उनकी अच्छी देखभाल की है । वह एक कठोर परिश्रमी मां के रूप में भी उभरी है । जबकि चार्ल्स उससे एकदम भिन्न बाप है । उससे बच्चे खुलकर नहीं खेल सकते । जबकि मां से बच्चे खूब घुले-मिले हैं । डायना आनेवाले किसी भी कठिन समय में तुर्प के पत्ते अच्छी तरह खेल सकती है । क्योंकि वह भविष्य के राजा की मां है ।
राजशाही की इस कड़ी को अपने पास समेटकर डायना मध्यकालीन राज परिवार की तरह व्यवहार करने में भी नहीं चूकेगी और उसका

प्रिंस चार्ल्स के बाद मैं नहीं कह सकता क्योंकि मेरे पास कोई ऐसा पैमाना नहीं है जिससे मैं कोई फैसला ले सकूं कि उसके बाद कौन आएगा । बादशाहीयत रातभर में ही समाप्त हो सकती है । क्योंकि गलत व्यक्ति के ताज पहनने से किसी भी क्षण यह नौबत आ सकती है ।



पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

(गृह मंत्रालय)

पुलिस से संबंधित हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों के लिए

पं. गोविन्द बल्लभ पंत पुरस्कार योजना

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार न्यायिक विज्ञान, पुलिस प्रशिक्षण, पुलिस प्रशासन, पुलिस अन्वेषण, अंगुलिछाप, अपराध शास्त्र तथा अन्य पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी में उत्कृष्ट मूल पुस्तकें लिखने अथवा अनुवाद करने के लिए सृजनशील लेखकों और अनुवादकों को उपर्युक्त योजना के द्वारा प्रोत्साहित करता है। इस योजना के निम्नलिखित दो भाग हैं:–

भाग– I:–

पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों के लिए निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं:–

1. मूल पुस्तकें :– सात-सात हजार रुपए तक के पांच पुरस्कार।

2. अनूदित हिन्दी पुस्तकें :– तीन-तीन हजार रुपए के दो पुरस्कार।

भाग- 2

ब्यूरो किसी एक पुलिस-विषय पर पुस्तक लिखवाने के लिए प्रति वर्ष **दस हजार रुपए** तक का एक पुरस्कार भी प्रदान करता है जिसके लिए इस वर्ष का विषय है–

"समग्र न्याय व्यवस्था में पुलिस का स्थान एवं भूमिका"।

इस पुरस्कार योजना में भाग लेने के लिए निम्नलिखित शर्तें हैं :–

1. इस योजना में भारत के सभी नागरिक भाग ले सकते हैं।
2. योजना के प्रथम भाग में वे सभी पुस्तकें शामिल की जाएंगी जो **वर्ष 1991** तक प्रकाशित हुई हैं।
3. पुंडुलिपियां भी प्रविष्टि के रूप में भेजी जा सकती हैं परन्तु यदि विचार करने के बाद इन्हें पुरस्कार के लिए अनुमोदित किया गया तो पुरस्कार राशि केवल पांडुलिपि के प्रकाशन के बाद ही दी जाएगी। प्रकाशन करवाने की व्यवस्था स्वयं लेखक/अनुवादक को करनी होगी।
4. पुस्तकों/पांडुलिपियां की तीन-तीन प्रतियां निर्धारित प्रपत्र के साथ इस ब्यूरो को भेजी जाएंगी। यह पुस्तकें/पांडुलिपियां वापस नहीं की जाती हैं। पांडुलिपि की तीन प्रतियां टाइप होनी चाहिए।
5. पुस्तकें लगभग **100** पृष्ठों की अवश्य होनी चाहिए।
6. योजना के भाग- 2 के लिए आवश्यक है कि लेखक उपर्युक्त विषय पर अपनी-अपनी विस्तृत रूपरेखाएं और बायोडेटा की तीन-तीन प्रतियां भेजें।
7. इस योजना में वे पुस्तकें शामिल नहीं की जाएंगी जिन पर पहले ही भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा अन्य किसी सरकारी एजेंसी द्वारा कोई पुरस्कार प्रदान किया जा चुका हो अथवा इसके लिए कोई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई हो।

योजना के अंतर्गत प्राप्त पुस्तक/रूपरेखाओं का मूल्यांकन एक मूल्यांकन समिति द्वारा किया जाता है जिसका निर्णय अंतिम और बाध्यकर होगा। यदि समिति निर्णय लेती है कि कोई पुस्तक अपेक्षित स्तर की नहीं है तो उसे अधिकार है कि वह कोई भी पुरस्कार घोषित न करे अथवा पुस्तक के स्तर को ध्यान में रखते हुए पुरस्कार की राशि कम कर दे।

भेजने की अंतिम तिथि : उपर्युक्त संदर्भ में पुस्तक अथवा पांडुलिपियां अथवा रूपरेखाएं ब्यूरो के कार्यालय में 31.12.1992 तक अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें :–

संपादक हिन्दी
पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो,
ब्लाक- 11, 3/4 मंजिल,
लोदी रोड केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
नई दिल्ली- 110003.

प्रपत्र

1. पुस्तक का नाम और विषय :
2. पुस्तक का संस्करण व वर्ष :
3. लेखक/अनुवादक का नाम और पूरा पता :
4. प्रकाशक का नाम और पता :
5. रायल्टी पाने वाली संस्था अथवा व्यक्ति का नाम और पूरा पता :
6. (क) क्या यह रचना मूल अथवा अनूदित है? :
   (ख) यह अनूदित कृति है तो मूल पुस्तक और उसके लेखक और प्रकाशक का पूरा पता
7. प्रमाणित किया जाता है कि यह अनूदित कृति है तथा इसके लेखक और प्रकाशक से हिन्दी अनुवाद तथा प्रकाशित करने की अनुमति ले ली गई है।
8. प्रमाणित किया जाता है कि इस पुस्तक की मूल कृति, अनुवाद अथवा पांडुलिपि पर भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा किसी अन्य एजेंसी द्वारा परिचालित कोई पुरस्कार अथवा अन्य किसी तरह की कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई है।

हस्ताक्षर (लेखक/अनुवादक)



स्कॉटलैंड में रानी एलिजाबेथ द्वितीय का परिवार बाग में घूमते और एलिजाबेथ, राजकुमारी एनी, और एलिजाबेथ द्वितीय, प्रिंस चार्ल्स

प्रयोग वह कर भी रही है । शेक्सपीयर के पास भी ऐसा प्लॉट नहीं रहा होगा । डायना एक समय शरमीली मैकियावलियन थी अब वह कठोर मैकियावलियन है । यह वह अच्छी तरह जानती है कि तलाक उसके सार्वजनिक और शाही स्थिति को भंग नहीं कर सकता है । क्योंकि वह विलियम की मां है जो उसे नैसर्गिक अधिकार के रूप में मिल चुका है ।

संविधान के अनुसार चार्ल्स डायना से अलग हो सकता है । तलाक दे सकता है । फिर भी ताज का हकदार है । चार्ल्स दूसरी शादी कर सकता है । लेकिन वह और गुत्थियां उलझायेगा । धार्मिक रूप से इंगलैंड का चर्च और राज सत्ता इसे मान सकती है, परंतु वह फिर राजपरिवार में विद्रोह के और बीज बो सकता है । यह सब शायद आनेवाले समय में ब्रिटेन की जनता नहीं चाहेगी ।

तलाक का परिणाम

तलाक का एक परिणाम यह भी हो सकता है कि प्रिंस चार्ल्स ताज का हकदार न बने । यदि वह ताज पहन भी ले, फिर भी नहीं लगता कि वह अधिक समय तक ब्रिटेन का राजा बना रहे, क्योंकि अभी भी ६६ वर्षीय एलिजाबेथ राज चला सकती है । यहां तक कि ९२ वर्षीय उसकी मां भी अभी जिंदा है । ऐसी स्थिति में राजकुमार विलियम ही २१वीं सदी में ऐसे व्यक्ति होंगे जिनके चरित्र और अनुभव पर राज परिवार अपनी मर्यादा कायम रख सकेगा ।

एक बार लार्ड मांउटबेटन जो राजपरिवार के कट्टर हिमायती थे, से पूछा गया था जब डायना और चार्ल्स विवाह सूत्र में बंधने जा रहे थे कि ब्रिटिश ताज कब तक जिंदा रहेगा । यद्यपि माउंटबेटन शादी तक जिंदा नहीं रह पाये थे, पर उत्तर में उन्होंने जबड़े भींचते हुए कहा था कि हमेशा ताज जिंदा रहेगा । आगे उन्होंने कहा प्रिंस चार्ल्स के बाद मैं नहीं कह सकता क्योंकि मेरे पास कोई ऐसा पैमाना नहीं है जिससे मैं कोई फैसला ले सकूं कि उसके बाद कौन आएगा । बादशाहीयत रातभर में ही समाप्त हो सकती है । क्योंकि गलत व्यक्ति के ताज पहनने से किसी भी क्षण यह नौबत आ सकती है ।

राजशाही पर विश्वास यथार्थपरक होना चाहिए । और भावनाएं जनता के लिए छोड़ देनी चाहिए । वेल्स की लड़ाई से मुख्य असर विलियम पंचम पर पड़ेगा । और इस सब में डायना न्याय की भूमिका निभायेगी ।

सांस्कृतिक समाचार

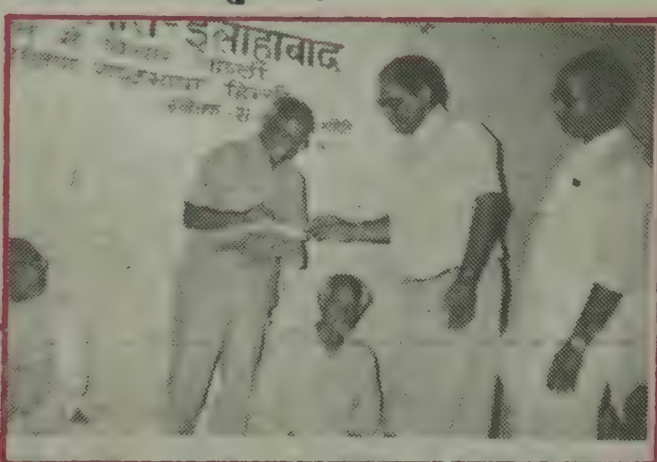


'त्रिजटा' का विमोचन समारोह

इलाहाबाद हिन्दुस्तानी अकादमी के सभागार में मद्रास के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. एम. शेषन ने हिंदी के चर्चित कवि एवं एन. पी. टी. सी. इलाहाबाद के वरिष्ठ प्रबंधक श्री शिव बचन चौबे द्वारा लिखित महाकाव्य त्रिजटा का विमोचन किया। इस अवसर पर उन्होंने शांति प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित त्रिजटा महाकाव्य को एक कालजयी रचना बताया।

समारोह के अध्यक्ष पद से हिंदी के साहित्यकार श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने त्रिजटा महाकाव्य को इस युग की सर्वोत्कृष्ट रचना की संज्ञा दी। सभा का संचालन करते हुए श्री हरिशंकर द्विवेदी अज्ञान ने राम कथा में त्रिजटा को सर्वोत्कृष्ट समन्वयवादी चरित्र घोषित किया।

पत्रकार श्री बालकृष्ण पांडेय ने त्रिजटा को स्वप्न दृष्टा और भविष्य दृष्टा नारी के रूप में चित्रित करते हुए कहा कि वस्तुतः वह एक त्रिवेणी है एक ऐसा संगम, जहां राम और रावण की दो विपरीत धाराएं एक साथ प्रवेश करती हैं वह लंका के भीतर भी है और लंका के बाहर भी, समर्पण का ऐसा सुंदर उदाहरण विश्व में दुर्लभ है।



भजनों की शाम राजीव के नाम

'श्री राजीव गांधी को संगीत में गहरी दिलचस्पी व लगाव था।' यह उद्‌गार कांग्रेस (आई) के प्रवक्ता श्री विट्ठल गाडगिल ने २० अगस्त को आइफैक्स सभागार, रफी मार्ग पर राष्ट्रीय एकता एवं मैत्री संघ, नयी दिल्ली द्वारा भजनों की शाम— श्री राजीव गांधी के नाम आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उज्जैन, मध्य प्रदेश के लता मंगेशकर पुरस्कार विजेता श्री राजीव-संजीव शर्मा, झांसी (उ. प्र.) के श्री राजेश शर्मा, पार्श्वगायिका सुश्री अश्विनारांगनेकर व दिल्ली के बाल कलाकार दीपक द्वारा भजन व गीतों ने श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया।

कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि श्री गाडगिल ने स्वतंत्रता सैनानी डॉ. रघुनाथ पापरीकर (ग्वालियर), श्री जगदीश लाल शर्मा (दिल्ली), दूरदर्शन समाचार वाचिका, सुश्री सलमा सुलतान, वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेन्द्र अवस्थी संपादक, कादम्बिनी, श्री विजयशंकर चतुर्वेदी संपादक, राष्ट्र टाइम्स, श्री सुनील नेगी, अध्यक्ष, उत्तराखंड जर्नलिस्ट फोरम को राष्ट्रीय एकता एवं मैत्री अवार्ड से सम्मानित किया।

संघ के अध्यक्ष श्री विनोद मिश्र व महामंत्री सुश्री ज्योत्सना घोष ने आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया।





मित्र मनीषी सम्मान समारोह

निम्बाहेड़ा उद्गार साहित्यिक संस्था ने 'मित्र मनीषी सम्मान' समारोह में केंद्रीय प्रसारण उप मंत्री डॉ. गिरजा व्यास के मुख्य आतिथ्य में प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार श्री मदन मदिर, शिक्षा विद् भाई भगवती लाल व्यास, डॉ. प्रभा वाजपेयी तथा उर्दू जगत के जाने-माने शायर भाई मैकश अजमेरी तथा राष्ट्रीय स्तर के लिए डॉ. रेखा व्यास को पत्र व मेवाड़ी मीरा स्मृति चिह्न भेंट किया गया । समारोह का आयोजन प्रदेश के गीतकार श्री अशोक पुरी ने किया । श्री पुरी ने घोषणा की है कि हर वर्ष इसी तरह नौ अगस्त को लेखन को बढ़ावा देने के लिए प्रकाशित कृति पर पांच हजार एक रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा ।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान पत्रिका के संस्थापक श्री कर्पूर चंद कुलिश ने की ।

पर्यटन स्थलों की प्राकृतिक शोभा अक्षुण्ण रहे !

नयी दिल्ली । ''पर्यटन स्थलों का विकास जरूरी है, पर उससे उसका मूल स्वरूप नष्ट न हो, इस पर भी जोर दिया जाना चाहिए । पर्यटन व्यवसाय से जुड़े अर्थ का महत्त्व है । पर पर्यटन स्थलों की प्राकृतिक शोभा भी अक्षुण्ण रहनी चाहिए ।'' ये उद्गार प्रख्यात राजनेता एवं कवि श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पत्रकार श्रीमती मयूरी भारद्वाज की नवीनतम कृति 'नैसर्गिक सैरगाहों और धार्मिक स्थलों की आकाश गंगा : उत्तर प्रदेश' का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किये । समारोह की अध्यक्षता करते हुए सूचना एवं प्रसारण उपमंत्री डॉ. गिरिजा व्यास ने कहा कि उनका मंत्रालय पर्यटन को सही 'कांसेप्ट' में 'प्रोजेक्ट' करने में पीछे नहीं रहेगा ।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मयूरी भारद्वाज के भाई श्री मोहन भारद्वाज ने किया । समारोह में राजधानी के अनेक गणमान्य नेता, पत्रकार आदि उपस्थित थे ।

डेनमार्क में साहित्यकारों का सम्मान

कोपेनहेगन, डेनमार्क में इंडियन आर्ट्स प्रोमोशन कौंसिल के तत्वावधान में उर्दू के साहित्यकार पद्मश्री प्रो. गोपीचंद नारंग, पत्रकार सुरेशचन्द्र शुक्ल, गीतकार शबाब अलावलपुरी तथा गायिका काजल बनर्जी को संयुक्त रूप से सम्मान दिया गया ।

इस अवसर पर भारतीय राजदूत श्री लाल ने प्रो. नारंग को पांच हजार रुपये एवं एक शाल प्रदान की ।

लोकप्रिय उर्दू-पंजाबी भाषा के कवि एवं इंडियन आर्ट्स प्रोमोशन कौंसिल के अध्यक्ष शमशेर सिंह 'शेर' ने स्वागत भाषण दिया ।●



समस्या पूर्ति—१५७

उड़ रहे

प्रथम पुरस्कार

यह कवि की कोमल कविता-सी, शिशिर बूंद-सी स्वयं विभाषित
चंदन की चंचल प्रतिमा-सी, अंग-अंग सौरभ से अंकित
स्वर्णमयी चंपा-सी निखरी, लिये श्वेतिमा हलके-हलके
नवल भंगिमा में सुहासिनी की आंखों में सपने छलके
अपने नभ को खोज रहे, सुरबाला के मन-मोर उड़ रहे
मुदित विहग-दल कलरव करते नभ की ओर विभोर उड़ रहे

—कैलाश चन्द्र

अयोध्या निकेतन, पो.- इसरी बाजार, जिला—गिरिडीह (बिहार)—८२५१०७

द्वितीय पुरस्कार

कल्पित दृश्य, अकल्पित कविता, दोनों का संबंध अनोखा
रुचि-एकांत भंग कर देता, मस्त पवन का परिचित झोंका
दिन उड़ गया, शाम घिर आयी, स्मृतियों के तार जुड़ रहे
मधुर मिलन के, मधुर क्षणों में, मुक्त गगन में, विहग उड़ रहे

—सुरेशकुमार संभव गधियावां, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

तृतीय पुरस्कार

ये सूने से नयन स्वप्न कुछ नये बुन रहे
छूने को आकाश हृदय के पंख चुन रहे
कर्ण मधुर भावों से प्रेरित गीत सुन रहे
अधर प्रणय-बंधन का कोई राग गुन रहे
पर आशा के पंख लगा उर-पंछी मेरे
इस अनंत अंबर पर देखो कहां उड़ रहे

—स्वाति

पुत्री— श्री वीरेन्द्र कुमार गुप्त (एडवोकेट)
पंजाबी मंदिर के सामने, म.—कोट पूर्वी संभल, जिला— मुरादाबाद (उ.प्र.)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित



समस्या-पूर्ति—१५९

सावधान

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है। हमने उसे फिर से जीवित किया है। यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध कविता ही नहीं लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य भी आवश्यक है। रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए।

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें।

२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें।

३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है—

प्रथम—१२५ रु., द्वितीय—१०० रु. और तृतीय—७५ रु.

अंतिम तिथि : २० अक्तूबर, १९९२



दी हिन्दु के मानदंड पर
क एकदम खरा
एकमात्र ज़र्दा

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है!